Centre for Distance & Online Education
(CDOE)

Bachelor of Arts
(B.A.) SEM. VI

HIST-304

MODERN WORLD
(Option-II)

Guru Jambheshwar University of Science & Technology, HISAR-125001

CONTENT

Sr. No.	Title Name	Author	Page No.
	Unit -(इकाई) -I		
1.	अमेरिका की क्रान्ति, 1776 ई० **(American Revolution, 1776)**	Mr. Ashwani Mr. Mohan Singh Baloda	3
2.	फ्रांस की 1789 ई0 क्रान्ति **French Revolution of 1789**	Ms. Jyoti	30
	Unit -(इकाई) -II		
3.	साम्राज्यवाद का उदय **(Rise of Imperialism)**	Ms. Jyoti	69
4.	प्रथम विश्व युद्ध **World War-I**	Ms. Jyoti	108
	Unit -(इकाई) -III		
5.	रूस की क्रांति **(The Russian Revolution)**	Mr. Mohan Singh Baloda	133
6.	तानाशाह का उदय : फांसीवाद व नाजीवाद **(Rise of Dictatorship : Fascism & Nazism)**	Mr. Mohan Singh Baloda	155
	Unit -(इकाई) -IV		
7.	द्वितीय विश्व युद्ध (**WORLD WAR - II**)	Mr. Hari Singh Mr. Mohan Singh Baloda	180
8.	**प्रथम विश्वयुद्ध से पूर्व देशों का ध्रुवीकरण (Polarization of Countries before World War-I)**	Mr. Mohan Singh Baloda	208
9.	**द्वितीय विश्वयुद्ध से पूर्व देशों का ध्रुवीकरण (Polarization of Countries before World War-II)**	Mr. Mohan Singh Baloda	223

B.A. III[rd] Year Semester VI[th]	
HIST – 304	Author : ASHAWANI
LESSON- 1	UPDATED: MOHAN SINGH BALODA
अमेरिका की क्रान्ति, 1776 ई० (American Revolution, 1776)	

अध्याय की सरचना **(Lesson Structure**)

1.1 अधिगम उद्देश्य **(Learning Objectives)**

1.2 परिचय **(Introduction)**

1.3 विशय वस्तु के प्रमुख बिन्दु **(Main Body of Text)-** अमेरिका बस्तियों का उद्भव **(Emergence of American Colonies)**

1.3.1 अमेरिकी बस्तियों में भिन्नताऐं तथा समानताऐं **(Similarities and dissimilarities in American Colonies)**

1.4 विशय वस्तु का पुनः प्रस्तुतीकरण **(Futrther Main Body of Text)** क्रान्ति के कारण **(The Causes of American Revolution)**

1.4.1 राजनैतिक कारण **(Political Causes)**

1.4.2 इग्लैंण्ड की दोषपूर्ण शासन प्रणाली **(Defective Administrative system of England)**

1.4.3 अमेरिकी बस्तियो तथा इग्लैण्ड की धारणाओं तथा विचारों में मतभेद **(Ideological differences Between American Colonies and England)**

1.4.4 बस्तियों का स्वतन्त्रता के प्रति दृष्टिकोण – **(Colonies Towards Freedom)**

1.4.5 सप्तवर्षीय युद्धों का प्रभाव **(Impact of Seven Years' war)**

1.4.6 आर्थिक कारण **(Economic Causes)**

1.4.7 अमेरिकन बस्तियों का आर्थिक शोषण **(Economic Exploitation of American Colonies)**

1.4.8 बस्तियों पर आर्थिक भार **(Economic burden on Colonies)**

1.4.9 सामाजिक कारण **(Social Causes)**

1.4.10 इग्लैण्ड तथा अमेरिकी बस्तियों में सामाजिक भिन्नता **(Social Differences between England and American can Colonies)**

1.4.11 बस्तियों में इग्लैण्ड के प्रति प्रेम का न होना **(Lack of Love among Colonies)**

1.4.12 बस्तियों तथा इग्लैण्ड में धार्मिक मतभेद **(Religious bifurcation between colonies and England)**

1.4.13 बौद्धिक चेतना की भूमिका **(Role of Intellectual Awakeing)**

1.4.14 जार्ज तृतीय तथा उसके मन्त्रियों की नीतियाँ **(Policies of George III and his Ministers)**

1.4.15 तात्कालिक कारण – लार्ड नार्थ चाय एक्ट तथा बोस्ट्न चाय पार्टी **(Immediate Causes- Lord North Tea Act and Boston Tea Party)**

1.4.16 बस्तियों के विरूद्ध कानून **(Laws Against Conlonies)**

1.4.17 फिलाडेल्फिया के दो सम्मेलन **(Two Conferences of Philadephia)**

1.4.18 क्रान्ति की घटनाऐं **(Events of Relalution)**

1.4.19 पेरिस की सन्धि तथा अमेरिका का संविधान **(Treaty of Paris and constitution of America)**

1.4.20 अमेरिकी बस्तियों की सफलता के कारण **(Causes of success of American Colonies)**

1.4.21 अमेरिका की क्रान्ति के प्रभाव तथा महत्व **(Effects and importance of American Revolution)**

1.4.22 अमेरिका पर प्रभाव **(Effects of America)**

1.4.23 नव अमेरिका का जन्म **(Birth of New America)**

1.4.24 अमेरिका का नया संविधान **(New Constitution of America)**

1.4.25 परिवर्तित सामाजिक अवस्था **(Changed Social condition)**

1.4.26 शिक्षा का महत्व तथा विकास **(Importance and progress of Education)**

1.4.27 पूंजीवादी व्यवस्था का विकास **(Rise of Capitalism)**

1.4.28 कृषि का विकास **(Development of Agriculture)**

1.4.29 उद्योगों का विकास **(Development of Industry)**

1.4.30 व्यापार का विकास **(Development of Trade)**

1.4.31 जनतन्त्रतात्क विकास **(Birth of Demoratic system)**

1.4.32 इग्लैण्ड पर प्रभाव **(Effectson England)**

1.4.33 जार्ज तृतीय के भाासन का अन्त **(End of George 111's Rule)**

1.4.34 इग्लैण्ड की व्यापारिक हानि **(Commercial loss of England)**

1.4.35 नऐ उपनिवेशों की स्थापना **(Establishment of New Colonies)**

1.4.36 ईस्ट इण्डिया कम्पनी पर सरकारी नियन्त्रण **(Governmental control over East India Company)**

1.4.37 अन्य देशो पर प्रभाव **(Effects on other countries)**

1.4.38 फ्रांस पर प्रभाव **(Effects on France)**

1.4.39 आयरलैण्ड पर प्रभाव **(Effects on Ireland)**

1.4.40 स्पेन पर प्रभाव **(Effects on Spain)**

1.4.41 अन्य विश्व पर प्रभाव **(Effects on other world)**

1.5 प्रगति समीक्षा **(Check Your Progress)**

1.6 सारांश (Summary)

1.7 संकेतक भाब्द (Key Words)

1.8 स्वय मूल्यांकन परीक्षा (Self Assesement Test)

1.9 प्रगति समीक्षा हेतु उत्तर (Answer to check your progress)

1.10 संदर्भ / सहायक अध्ययन सामग्री (References and Suggested Study Material)

1.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

अमेरिका की क्रान्ति के अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य है:–

- यह जानना कि किसी भी देश अथवा समाज में कौनसी परिस्थितयां क्रान्ति को जन्म देती है।
- किसी प्रकार जनता की मनोदशा में विद्रोह के विचार उत्पन्न होते है।
- अमेरिका की यह क्रान्ति आधुनिक विश्व की विशिष्ट घटना कैसे बन गई।
- अमेरिका क्रान्ति के दौरान उत्पन्न विचार क्या थे? यह विचार अमेरिका तक समिति रहे या अन्य वि"व में भी फैले।
- किन लोकंतात्रिक मूल्यों का जन्म इस क्रान्ति के दौरान हुआ। इन्होंने कैसे विश्व को प्रभावित किया।
- क्या समाज में पनपने वाले विद्रोहो या क्रान्ति को समय से पहले रोका जा सकता है। इन सभी जिज्ञासाओ को शान्त करने के लिए हम अमेरिकी क्रान्ति का अध्ययन करेंगे ताकि अतीत की यह घटना वर्तमान में भी उपयोगी बन सकें।

1.2 परिचय (Introduction)

1776 ई0 में अमेरिकी की 13 बस्तियों ने इग्लैण्ड के विरूद्ध विद्रोह कर दिया जो 1783ई0 तक चला। इस विद्रोह को अमेरिका की क्रान्ति अथवा स्वतन्त्रता संग्राम कहा जाता है। इस प्रकार अमेरिका का स्वतन्त्रता संग्राम इग्लैण्ड के अधिपत्य से मुक्ति का संघर्षपूर्ण इतिहास है। यह क्रान्ति आधुनिक विश्व की एक विशिष्ट घटना है। यह क्रान्ति भूखमरी या गरीबी की कारण उत्पन्न नही हुई। अमेरिकी बस्तियां स्वतन्त्रता प्रेमी थी उन्हें इग्लैण्ड का हस्तक्षेप पसन्द नही था इसी कारण क्रान्ति का जन्म हुआ। इस समय शोषण के विरोध में या

स्वतन्त्रता के लिए विद्रोह करने के विचार को जन्म दिया कि अगर शोषण बढेगा तो क्रान्ति का जन्म होगा इसलिए इस घटना को आधुनिक वि''व में स्वतन्त्रता रूपी विचार की सुबह कहा जा सकता है। स्वतन्त्रता की इस किरण ने किसी न किसी रूप में पूरे वि''व को प्रका''ात किया। इस तरह अमेरिका की क्रान्ति एक प्रेरक घटना बन गई। इग्लैण्ड को अमेरिकी बस्तियों के सामने झुकना पड़ा और एक नवीन अमेरिका का उद्भव हुआ।

1.3 विशय वस्तु के प्रमुख बिन्दु (Main Body of the Text)- अमेरिकन बस्तियों का उद्भव (Emergence of American Colonies)

अमेरिकी बस्तियों की स्थापना से पहले यह जानना आव''यक है कि अमेरिकी की खोज कैसे हुई और वि''व को इस दे''ा की जानकारी कैसे प्राप्त हुई। यह कहानी आरम्भ होती है स्पेन के एक साहसी व्यक्ति क्रिस्टोफर कोलम्बस से। अपनी साहसिक यात्रा के बाद वह 1492 ई0 में अमेरिका में पहुंचा लेकिन इस नए क्षेत्र का नाम 'अमेरिका' इटली के अमेरिगो बेस्पुची के नाम पर पड़ा। 1501 ई0 में अमेरिगो बेस्पुची ने उसी मार्ग की यात्रा की जिसकी यात्रा कोलम्बस ने की थी। उसने अपनी यात्रा के बाद इस नऐ क्षेत्र कि जानकारी विश्व को दी तथा उसी के नाम इस क्षेत्र का नाम अमेरिका पड़ा। यह वाणिज्यवादी विचारो का समय था अतः अमेरिका नामक नवीन क्षेत्र में कई देशों ने आर्थिक रूचि लेनी आरम्भ कर दी जिनमें इग्लैण्ड, हॉलैण्ड, स्वीडन, स्पेन तथा पुर्तगाल प्रमुख थे। इस कार्य में इग्लैण्ड आगे रहा। 1606ई0 में इग्लैण्ड के राजा जेम्स प्रथम ने इस क्षेत्र अथवा अमेरिका में उपनिवेश स्थापित करने तथा व्यापार की अनुमति दे दी। 1607 ई0 में कप्तान क्रिस्टोफर न्यू फोर्ट के नेतृत्व में 120 अग्रेंजो ने वर्जीनिया क्षेत्र में जेम्स नदी के तट पर 'जेम्स टाऊन' नामक प्रथम बस्ती स्थापित करने के बाद धीरे–धीरे इग्लैण्ड ने 1775ई0 तक अमेरिका में 13 बस्तियां स्थापित कर ली जिन्हें इग्लैण्ड के उपनिवेश भी कहा जाता है।

ये 13 उपनिवेशों के नाम थे (1) न्यू हैम्पशायर, (2) मेसाचुसेटस, (3) रोड़ द्वीप, (4) कनेक्टिकट (5) न्यूयार्क (6) न्यूजर्सी , (7) पेनसिलवेनिया (8) डेलावेयर (9) मेरीलैण्ड (10) वर्जीनिया (11) उत्तरी कैरोलिना (12) दक्षिणी कैरोलिना (13) जार्जिया।

इन बस्तियों में 90प्रतिशत अग्रेंज थे और शेष 10प्रतिशत में डच, जर्मन, फ्रांसीसी और पुर्तगाली थे। इस तरह अमेरिकी बस्तियों की स्थापना हुई। इन बस्तियो की स्थापना का उद्देश्य आर्थिक लाभ प्राप्त करना था।

1.3.1 अमेरिकी बस्तियों में भिन्नताऐं तथा समानताऐं (Similarities and dissimilarities in American Colonies)

अमेरिकी बस्तियों में युरोपीय जाकर बसने लगे थे इन बस्तियों में काफी भौगोलिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक भिन्नताऐं थी। अमेरिका की इन बस्तियों में अन्य दे"ाों से लोग आकर रहना आरम्भ करते है जिनके कई कारण थे।

1- युरोप में होने वाले निरन्तर जन–सहारक युद्धो से मुक्ति की आशा ने बस्तियों में आने के लिए प्रेरित किया।

2- निर्धन लोगों को दास बनाकर युद्धों में भाग लेने के लिए अमीरों तथा सताधारियों के हाथें बेच दिया जाता था। इससे बचने के लिए उन्होंने अमेरिकी बस्तियों में बसना उचित समझा।

3- बहुत से लोग अमेरिकी बस्तियों में आर्थिक लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से भी आऐ।

4- अनेक बाहरी लोगो की यह भी धारणा थी कि धार्मिक तथा साम्प्रदायिक अत्याचार से मुक्त होकर रहेगे इसी कारण बस्तियों मे बसे।

ये सभी कारण सिद्ध करते है कि अमेरिकी बस्तियो की प्रमुख समानता यह थी कि यहाँ बसने वाले लोग पुराने दे"ा या क्षेत्र से सन्तुष्ट नही थे। इग्लैण्ड तथा अन्य क्षेत्रों से जाने वाले लोग किसी न किसी रूप में अपने मूल राष्ट्र में असुविधा महसूस कर रहे थे। अमेरिकी बस्तियों में भौगोलिक दशा में भी भिन्नता थी। उतरी अमेरिकी बस्तियों का क्षेत्र पहाड़ी था तथा खेती के योग्य नही था। मेसाचुसेटस, न्यूहैम्पा"ाायर, रोड़ द्वीप आदि इसी प्रकार की बस्तियां थी। मध्य बस्यिों में उद्योग न्यूयार्क, न्यूजर्सी तथा मैरीलैण्ड इस प्रकार की बस्तिया थी। दक्षिण बस्तियों में उतरी केरोलिना, दक्षिण केरोलिना, वर्जीनिया आदि थे। यह क्षेत्र कृषि के लिए योग्य था। इन बस्तियों की संस्कृति अलग होते हुऐ भी एक मिश्रित संस्कृति का जन्म हुआ। यहाँ एक तत्व अव"य विद्यमान था कि सभी लोग पीड़ित थे तथा जब वह बाहरी क्षेत्रों से आऐ तब उनको अमेरिका मूल निवासी 'रेड–इण्डियनों' के विरोध का सामना भी करना पड़ा था। धीरे–2 संघर्ष रूपी तत्व ने बस्तियों की बीच की दरार को समाप्त कर दिया तथा एक ऐसी एकता उत्पन्न हुई जिसने इग्लैण्ड के शोषणकारी चरित्र को चुनौती दी।

1.4 विशय वस्तु का पुनः प्रस्तुतीकरण (Further Main Body of the Text) क्रान्ति के कारण (The Causes of American Revolution)

कभी भी कोई क्रान्ति अचानक प्रकट नही होती तथा न ही किसी एक कारण अथवा परिस्थिती का परिणाम होती है। लम्बे समय से चली आ रही राजनैतिक, आर्थिक धार्मिक तथा सामाजिक दशा में विद्रोह के बीज होते हैं। अमेरिकी की क्रान्ति निःसन्देह इग्लैण्ड तथा बस्तियों के मध्य विभिन्न प्रकार के मतभेदों के कारण हुई जिसमें मुख्य

भावना था अमेरिकी बस्तियों की स्वतन्त्रता की भावना। वैसे तो अमेरिका की क्रान्ति का आरम्भ 4 जुलाई 1776 ई0 को हुआ किन्तु इसकी पृष्ठभूमि जनता की मनोदशा में थी। क्रान्ति के लिए उत्तरदायी विभिन्न परिस्थितियों अथवा कारणों को समझना आवश्यक है जो निम्नलिखित हैः–

1.4.1 राजनैतिक कारण (Political Causes)

किसी भी दे''ा में व्यवस्था स्थापित करने की शक्ति शासन में होती है अगर शासको की दृष्टिकोण सकारात्मक हो तो विकास होता है। परन्तु अगर सता के नियत में परिवर्तन आ जाऐ अर्थात नकारात्मक तथा स्वार्थका का दृष्टिकोण उत्पन्न हो जाये व इसका आभास जनता को हो जाये तो क्रान्ति का जन्म होता है यही नियम अमेरिकी बस्तियों पर लागू होता है क्योकि बस्तियों पर इग्लैण्ड का शासन था। इस शासन का मुल उद्दे''य था न कि बस्तियों का विकास । शासन में कई दोष थे–

1.4.2 इग्लैंण्ड की दोषपूर्ण शासन प्रणाली (Defective Administrative system of England)

जैसा कि पहले बताया गया है कि अमेरिका बस्तियों पर इग्लैण्ड का शासन था। इस शासन व्यवस्था के तीन प्रमुख अंग थे– (1) गवर्नर (2) गवर्नर की कार्यकरिणी समिति (3) असेम्बली अथवा विधायक सदन। गवर्नर की नियुक्ति इग्लैण्ड की सरकार द्वारा की जाती थी जिसका स्पष्ट अर्थ था कि गवर्नर इग्लैण्ड का वि''वासपात्र होता है तथा वह इग्लैण्ड के आर्थिक या राजनीतिक हितो के लिए कार्य करता था न कि अमेरिकी बस्तियों के विकास के लिये। कार्यकारिणी के सदस्य भी गवर्नर द्वारा मनोनीत किये जाते थे अतः वे गवर्नर के लिए ही कार्य करते थे। असेम्बली अथवा विधायक सदन के सदस्य लोगो द्वारा चुने जाते थे। अतः बस्तियो के शासन की यह संरचना विद्रोह का कारण बनती है। गवर्नर तथा उसकी कार्यकारिणी इग्लैण्ड के हितो के लिए कार्य करती थी तथा असेम्बली बस्तियों की प्रतिनिधि के रूप में थी। इसी कारण गवर्नर तथा असेम्बली के मध्य तनाव रहता था। असेम्बली को कानून बनाने का अधिकार तो था किन्तु वह इग्लैण्ड के कानूनों के प्रतिकुल कानून नही बना सकती थी। शासन की अधिकतर शक्तियां इस तरह गवर्नर के पास थी जो इग्लैण्ड के इशारे पर कार्य करता था। अमेरिकी बस्तियां इस राजनैतिक ढांचे से असंतुष्ट थी।

1.4.3 अमेरिकी बस्तियो तथा इग्लैण्ड की धारणाओं तथा विचारों में मतभेद (Ideological differences between American Colonies & England)

अमेरिकी बस्तियों की धारणा तथा विचार विचित्र थे। वे इग्लैण्ड से पूर्णतः मुक्त नही होना चाहते थे अपितु ऐसी धारणा थी कि बस्तियों की स्थापना इग्लैण्ड के सम्राट की अनुमति से हुई थी अतः बस्तियां इग्लैण्ड की उपनिवेश

नही है, वह इग्लैण्ड का ही एक भाग है जिसको सभी अधिकार मिलने चाहिए। उनका विचार था कि बस्तियों की शासन व्यवस्था में इग्लैण्ड की सरकार का हस्तक्षेप नही होना चाहिए जबकि इग्लैण्ड का उद्देश्य स्पष्ट था कि बस्तियों की स्थापना इग्लैण्ड के हितों की सुरक्षा के लिए की गई है अतः यहां पर शासन भी इग्लैण्ड के अनुसार चलना चाहिए। दोनों तरफ से धारणाऐं व विचारों में मतभेद तनाव का कारण बनता है।

1.4.4 बस्तियों का स्वतन्त्रता के प्रति दृष्टिकोण – (Colonies Attitude Towards Freedom)

बस्तियों का अगर मनौवैज्ञानिक विश्लेषण किया जाऐ तो यह संकेत मिलता है कि ये सभी वह लोग थे जो किसी प्रकार के उत्पीड़न तथा परतन्त्रता को पसन्द नही करते थे इसी कारण विभिन्न क्षेत्रों से स्वतन्त्र रहने के लिए बस्तियों में आकर रहने लगे थे। ये सभी लोग मौलिक अधिकारों के पक्षधर थे तथा निरकुशता के विरोधी थे। इसका एक उदाहरण 1618ई0 के वर्जीनिया के प्रथम अधिकार पत्र में देखा जा सकता है, जिसमें कहा गया था कि बस्तियों को मताधिकार एवं स्वतन्त्रता सम्बन्धी वे सभी रियायते या सुविधाऐं प्रदान की जाऐंगी जो इग्लैण्ड में जन्म लेने वाले लोगों का प्राप्त है। मेरीलैड तथा पेन्सिलवेनिया के अधिकार पत्रों में भी कानूनों की रचना जनसमति से करने का प्रावधान था जिसे इग्लैण्ड के सम्राट ने मान्यता भी दे दी थी। इस प्रकार बस्तियों के लोग आरम्भ से ही स्वतन्त्रता के पक्षधर थे जब इग्लैण्ड ने राजनैतिक हस्तक्षेप करके इनके अधिकारों को कम करने का प्रयास किया तो क्रान्ति का वातावरण तैयार होने लगा।

1.4.5 सप्तवर्षीय युद्धों का प्रभाव (Impact of Seven Years' war)

सप्तवर्षीय युद्ध 1756ई0 से 1763 ई0 तक इग्लैण्ड तथा फ्रांस के मध्य साम्राज्वादी भावना के कारण हुआ जो कि मध्य युरोपीय देशों के अतिरिक्त इग्लैण्ड और फ्रांस के बीच यूरोप, अमेरिका और भारत मे लड़ा गया था। इन युद्धों में फ्रांस को पराजित मिली। सप्तवर्षीय युद्धों के दौरान तथा बाद में कई तरह के लाभ अमेरिकी बस्तियों को प्राप्त हुऐ। युद्ध के दौरान अमेरिकी बस्तियों ने इग्लैण्ड का साथ दिया तथा अपना व्यावपारिक व औद्योगिक विकास भी करते रहे। सप्तवर्षीय युद्ध के दौरान इग्लैण्ड ने ओहियो तथा मिसिसिप्पी नदियों के पूर्वी प्रदेशों के अधिकतर भाग पर विजय प्राप्त कर ली तथा उस पर अधिकार कर लिया था। अमेरिकी लोग इन प्रदेशों को अमेरिका में शामिल करना चाहते थे परन्तु इग्लैण्ड अपना अधिकार रखना चाहता था परिणामस्वरूप अमेरिका बस्तियों तथा इग्लैण्ड में तनाव उत्पन्न हो गया। इग्लैण्ड ने कनाडा पर भी अधिकार कर लिया।

सप्तवर्षीय युद्धों का व्यापक प्रभाव अमेरिकी बस्तियों पर पड़ा। सबसे अधिक दो तरह के प्रभाव इस समय दिखाई पड़ते है कि बस्तियों को अपनी योग्यता तथा शक्ति का अहसास हुआ क्योंकि बस्तियों के अनेक व्यक्तियो ने सैनिको के रूप में इग्लैण्ड की सहायता की थी। बस्तियां इस निष्कर्ष पर पहुंच चूकी थी कि अकेला इग्लैण्ड इतना शक्ति''ाली नही है। दूसरा जो बड़ा प्रभाव या परिणाम था वह यह था कि फ्रांस के पराजित होने के बाद बस्तियों

पर फ्रांसीसी खतरे का अन्त हो गया जिसका भय दिखकर इग्लैण्ड बस्तियों का शोषण करता था। इस समय बस्तियों ने कूटनीति व दूरदर्शिता का परिचय दिया इग्लैण्ड का साथ इसलिए नही दिया कि वह इग्लैण्ड की जीत चाहते थे की अपितु इस लिये दिया की वह फ्रांसीसी खतरे का अन्त चाहते थे। लेकिन दूसरी तरफ इग्लैण्ड की जीत ने बस्तियों में निराशा भी उत्पन्न कर दी फिर भी इन युद्धो ने बस्तियों में संघर्ष के लिए आत्मबल अवश्य उत्पन्न किया। एक महत्वपूर्ण परिवर्तन युद्ध के बाद यह हुआ कि फ्रांस इग्लैण्ड से पराजय का बदला लेना चाहता था इसलिए उसने इग्लैण्ड के विरोध में अमेरिकी बस्तियों को उकसाना आरम्भ कर दिया व भविष्य में सहायता का भी वचन दिया जिसके बाद बस्तियों के हौसले बढने लगे थे। अतः सप्तवर्षीय युद्धो के परिणामों ने बस्तियों मे आत्मबल उत्पन्न कर संघर्ष के लिए प्रेरित किया।

1.4.6 आर्थिक कारण (Economic Causes)

अमेरिका की क्रान्ति इग्लैण्ड तथा बस्तियों के आर्थिक हितों के टकराव का परिणाम कही जा सकती है। बाहरी क्षेत्रों से अमेरिकी बस्तियो में आकर बसने का कारण आर्थिक भी था। जब इस लक्ष्य को प्राप्त करने में इग्लैण्ड बाधक बना तो विद्रोह हो गया। अतः यह जानना महत्वपूर्ण है कि किस प्रकार इग्लैण्ड ने बस्तियो के आर्थिक विकास को रोका तथा शोषण किया।

1.4.7 अमेरिकन बस्तियों का आर्थिक भाोशण (Economic Exploitation of American Colonies)

विश्व में इस समय वाणिज्यवादी विचारधारा आगे बढ रही थी जिसकी जन्मभूमि इग्लैण्ड था। इस विचारधारा के अनुसार विभिन्न राष्ट्र आर्थिक हितों की सुरक्षा के लिए योजना बना रहे थे अतः विभिन्न देशो की राजनैतिक नीति आर्थिक लक्ष्यों के अनुसार ही निर्धारित होती है। इग्लैण्ड ने भी अपने आर्थिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अमेरिका बस्तियों के सन्दर्भ में कई नियम अथवा कानून बनाऐ जो बस्तियों के विकास के विरूद्ध थे। इन कानूनों का संक्षेप में वर्णन इस प्रकार है।

1- नौ संचालन कानून(Nine operational laws) :–

इस कानून के माध्यम से 1651ई0 में यह व्यवस्था की गई कि अमेरिकी बस्तियां अपना माल या तो अपने जहाजो मे या केवल इग्लैण्ड के जहाजों में ही भेज सकती थी। बस्तियों के अपने जहाज नही होते थे इसी कारण उनको अपना माल अग्रेजी जहाजों मे भेजना पड़ता था जिसका किराया अधिक होता था। 1663ई0 में एक अन्य नौ परिवहन कानून के द्वारा यह व्यवस्था की गई कि यूरोप से अमेरिकी बस्तियों में निर्यात किया जाने वाला माल पहले इग्लैण्ड के बन्दगाहो पर लाया जाऐगा। अतः इस प्रकार के कानूनो ने बस्तियों का आर्थिक विकास रोका।

2- व्यापारिक अधिनियम(Mercantile Act) :–

इन नियमो के अनुसार अमेरिकी उपनिवेशो में उत्पादित कुछ वस्तुओ का निर्यात केवल इग्लैण्ड को ही हो सकता था। ये वस्तुएँ थी–चावल तम्बाकु, लोहा, लकड़ी, कच्चा चमड़ा तथा नौसनिक सामान। परिणाम स्वरूप अमेरिकी किसानों को अपना उत्पादन केवल इग्लैण्ड के व्यापारियो के बेचने के लिए विवश होना पड़ा जिसके बदले उनको बहुत कम मूल्य मिलते थे जिसके कारण बस्तियों का किसान व अन्य उत्पादनकर्ता नाराज थे।

3- औधोगिक अधिनियम(Industrial Act) :–

इन नियमों के माध्यम से बस्तियों के औधौगिक विकास को रोकने का षड़यन्त्र रचा गया। उदाहरण के लिए 1689ई0 के एक कानून द्वारा अमेरिका से ऊनी माल के निर्यात को बन्द कर दिया गया। 1732ई0 में तैयार और अर्द्धतैयार दोनों प्रकार के टोपों के निर्यात पर रोक लगा दी गई। 1750 ई0 में जब इग्लैण्ड के लोहा व्यापारियो और उत्पादको को अमेरिकी स्पर्धा चुभने लगी, तब एक अधिनियम द्वारा बस्तियों में लोहे के कारखाने स्थापित करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। इन सभी कानूनो ने सिद्ध कर दिया था कि इग्लैण्ड बस्तियों के आर्थिक विकास का शत्रु है।

1.4.8 बस्तियों पर आर्थिक भार (Economic burden on Colonies)

इग्लैण्ड अपना आर्थिक विकास करने तथा बस्तियों का आर्थिक शोषण करने का ढांचा तैयार करता रहता था। इग्लैण्ड की धारणा थी कि वह अमेरिकी बस्तियों की सुरक्षा करता है इस कार्य के बदले बस्तियों को उनकी आर्थिक सहायत करनी चाहिए। इसी उद्देश्य से आर्थिक भार बस्तियों पर लाद दिया गया जो बस्तियों को इग्लैण्ड का विरोधी बना देता है।

1.4.9 सामाजिक कारण (Social Causes)

अमेरिका क्रान्ति के कारणों पर अध्ययन करने के बाद कुछ इतिहासकारो का विचार है कि क्रान्ति के मूल कारण सामाजिक थे न कि आर्थिक। जे0 एस0 वाटसन के अनुसार इग्लैण्ड तथा अमेरिकी बस्तियों के बीच संघषे के मौलिक कारण आर्थिक नही, अपितु मुख्य रूप से सामाजिक थे। दोनो के समाजो में भिन्नता ही विद्रोह का कारण बनी थी। आइए जानते है अमेरिका तथा इग्लैण्ड के समाज की ऐसी कौन सी भिन्नताऐ तथा विशेषताऐ थी जो टकराव का कारण बनी।

1.4.10 इग्लैण्ड तथा अमेरिकी बस्तियों में सामाजिक भिन्नता (Social Differences between England and American Colonies)

इग्लैण्ड तथा अमेरिकी समाज में बड़ा अन्तर था। बस्तियों में आने वाले परिवर्तन को पसन्द करते थे वे व्यक्ति के विकास तथा स्वतन्त्रता के पक्षधर थे तभी उन्होने अपने पुराने क्षेत्र को छोड़ा था जबकि इग्लैण्ड का समाज बनावटी था जो शोषण में विश्वास रखता था। वह केवल अपना विकास चाहते थे न कि सभी का इस प्रकार एक तरफ सकारात्मक सोच का समाज था जो बस्तियों में दिखाई पड़ता था तथा दूसरी तरफ इग्लैण्ड का बनावटी व नकारात्मक समाज जो शोषण के आधार पर विकास करना चाहता था अतः दोनो का टकराव स्वभाविक था।

1.4.11 बस्तियों में इग्लैण्ड के प्रति प्रेम का न होना (Lack of Love among Colonies)

अमेरिका बस्तियों के समाज की प्रमुख विशेषता यह है इन बस्तियों मे जिनको उनका पुराना दे"ा या क्षेत्र सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक या आर्थिक रूप से अनुकूल नही लगा। दूसरे शब्दो में कहा जा सकता है कि अधिकतर व्यक्तियों ने तंग होकर अपना पुराना क्षेत्र छोड़ा था। ऐसे लोग अपने पुराने दे"ा या क्षेत्र से प्रेम नही करते थे। यही कारण था कि इग्लैण्ड छोड़कर अमेरिकी बस्तियों में बसने वाले लोगों में इग्लैण्ड के प्रति प्रेम नही था इसी मनोदशा ने विद्रोह की स्थिती को जन्म दिया।

1.4.12 बस्तियों तथा इग्लैण्ड में धार्मिक मतभेद (Religious bifurcation between colonies and England)

अमेरिकी बस्तियों तथा इग्लैण्ड में धार्मिक मतभेद भी क्रान्ति का प्रमुख कारण था। इग्लैण्ड में रानी द्वारा प्रोटोस्टेंटो पर तथा रानी एलिजाबेथ द्वारा कैथोलिक लोगो पर किए गए अत्याचारों से परेशान होकर बहुत से लोग अमेरिकी बस्तियों में आकर बस गऐ थे। इन परेशान लोगों में एक सहन"ीलता पैदा हो गई थी। उनकी पीड़ा का मूल कारण इग्लैण्ड था जिसके कारण इग्लैण्ड तथा बस्तियों में दरार उत्पन्न हो गई। सता में अगर साम्प्रदायिक चरित्र उत्पन्न हो जाऐ तो विद्रोह का जन्म स्वाभाविक होता है। जिसका परिणाम इग्लैण्ड को भुगतना पड़ा।

1.4.13 बोद्विक चेतना की भूमिका (Role of Intellectual Awakeing)

किसी भी समाज अथवा देश का लम्बे समय तक चाहे शोषण होता रहे लेकिन शोषण से मुक्ति के लिए बौद्धिक चेतना आवश्यक होती है। बौद्धिक चेतना ही व्यक्ति को शक्ति का अहसास करवाती है। विश्व की सभी क्रान्तिकयों पर यह मनौविज्ञानिक नियम लागू होता है। अमेरिकी बस्तियों में भी धीरे–धीरे बौद्धिक चेतना का विकास हुआ। सबसे पहले पेनसिलवेनिया नामक बस्ती में बच्चो के लिए शिक्षण संस्थाएं चर्च की देख रेख में स्थापित की गइ। 1636ई0 में मेसाचूसेटस के कैम्ब्रिज नगर मे हारवर्ड कॉलेज की स्थापना की गई थी। 1693ई0 में वर्जीनिया में

विलियम एण्ड मेरी कॉलेज शिक्षा का प्रसिद्ध केन्द्र बना। कुछ लोगों के व्यक्तिगत प्रयासों से भी शिक्षा का विकास हुआ। बैजामिन फ्रेकलिन ने एक विचार केन्द्र की स्थापना की जो बाद में 'अमेरिकन फिलोसोफिकल सोसायटी' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसी प्रकार 1701ई0 में येल, 1746ई0 में प्रिंसटन 1764ई0 में ब्राउन, 1769ई0 में डार्टमथ, 1754ई0 में किग्स कॉलेज आदि कई कॉलेज बस्तियों में स्थापित हुए जिन्होने f"ाक्षा का प्रसार किया अमेरिका के कैम्ब्रिज नगर मे पहला छापारवाना स्थापित किया गया और 1704 ई0 में में बोस्टन से प्रथम समाचार पत्र प्रकाशित हुआ जिसका नाम था– 'बोस्टन न्यूज लेटर' इसके सम्पादक जॉन कैम्बेल थे। यह समाचार पत्र स्वतन्त्र लेखन का कार्य करता था। 1719 ई0 में ऐंड्रयू ब्रेडफर्ड ने 'अमेरिकन मर्करी' और 1725ई0 में 'न्यूयार्क गजट' प्रकाशित किऐ। 1765ई0 तक लगभग 25 समाचार पत्र प्रकाशित होने लगे थे। इन समाचार पत्रों ने स्वतन्त्रता तथा राष्ट्रीयता का विचार फैलाया।

टॉमस पेन ने 1776 ई0 में अपनी पुस्तक 'Common Sence'(कॉमन सेंस) के माध्यम से अमेरिकी जनता में राष्ट्रीय भावना जाग्रत की उसने अपनी पुस्तक में कहा, ''यह मानना कि कोई महाद्वीप लम्बे समय तक किसी विदेशी शक्ति के अधीन रहेगा, किसी प्रकार भी तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता– ऐसा समझना कि कोई द्वीप सदा ही एक महाद्वीप पर शासन करता रहेगा, बिल्कुल असंगत है। उसने अपनी पत्रिका 'द अमेरिका क्राइसिस' (The American Crisis) में प्रकाशित लेखो द्वारा जनता का तथा सैनिकों का मनोबल बढाया। अमेरिका में बौद्धिक चेतना के विकास में जेम्स ओटिस, पेट्रिक हेनरी तथा सेम्युअल एडमस का भी काफी योगदान था। ये इग्लैण्ड द्वारा बनाऐ गऐ शोषणकारी कानूनों का विरोध करते थे। पेट्रिक हेनरी ने युवाओं के अन्दर प्रेरणा व जोश उत्पन्न किया वह कहता था ''या तो मुझे स्वतंत्रता दो वरना मृत्यु दो'' इन सभी समाचार पत्र, पत्रिकाओ तथा क्रान्तिकारी युवाओं ने अपने विचारो द्वारा अमेरिकी बस्तियों की जनता को इग्लैण्ड से मुक्ति के लिए प्रेरित किया।

1.4.14 जार्ज तृतीय तथा उसके मन्त्रियों की नीतियाँ (Policies of George III and his Ministers)

यह सत्य है कि इग्लैण्ड लम्बे समय से अमेरिका बस्तियों का प्रयोग अपने आर्थिक व राजनीतिक हितों की सुरक्षा के लिए कर रहा था परन्तु फिर भी 1763 ई0 तक अमेरिकी बस्तियां इग्लैण्ड से मुक्ति की योजना नही बना रही थी अर्थात शोषण को सहन कर रही थी। जार्ज तृतीय ने 1760 से जनवरी 1820ई0 तक शासन किया। लगभग 59वर्षो के शासनकाल में जार्ज तृतीय ने अनेक उतार–चढाव देखें। जहाँ सात वर्षीय युद्ध में इग्लैण्ड को जीत मिली वहीं इनके शासन काल में इग्लैण्ड ने अपने हाथो से अमेरिका भी खो दिया। यह एक ऐसा– शासक था जो परिस्थितियों के अनुसार निर्णय नही लेता था। यह शासन का ऐसा ढाँचा नहीं खड़ा कर पाया जिससे जनता

के विरोध को रोका जा सकता। इनके शासन के 1713 से 1775 ई0 के दौरान आर्थिक शोषण बढ़ा व इनके मन्त्रियों के द्वारा बनाई शोषणकारी नीतियों से जनता भड़क उठी।

ग्रिनविले की नीतिः–

ग्रिनविले 1763 ई0 से 1765 ई0 तक इग्लैण्ड का वितमन्त्री रहा वह घमण्डी व्यक्ति था। सात वर्षीय युद्ध के बाद इग्लैण्ड की अर्थव्यवस्था लड़खड़ा रही थी ग्रेनविल चाहता था कि इग्लैण्ड को आर्थिक संकट से निकालने के लिए अमेरिका पर भी आर्थिक भार डाला जाऐ। उसने आय बढाने के लिए कुछ नऐ कठोर कानून बनाए। 1764ई0 में उसने चीनी सम्बन्धी एक्ट अमेरिकी बस्तियों पर लागू किया जिसके अनुसार अमेरिका में चीनी के निर्यात पर कर लगाया गया। इसी वर्ष मुद्रा एक्ट के अनुसार बस्तियों को कागज के नोट जारी करने पर मनाही कर दी गई। ऐसा इसलिए किया गया ताकि व्यापार मे केवल इग्लैण्ड की मुद्रा का प्रयोग किया जा सके। 1765ई0 में रिहायश सम्बन्धी कानून बनाया गया जिसके अनुसार अमेरिकी लोगो के लिए अपनी बस्तियों में अग्रेज सैनिको को घरों में निवास देना तथा उनके भोजन का प्रबन्ध करना अनिवार्य कर दिया गया।

1765ई0 में ग्रेनविल ने स्टाम्प बिल की भी घोषणा कर दी। इसके अनुसार बस्तियों के लोगो को कानूनी समझौतों, बसीहतों तथा विवाह सम्बन्धी कागज पत्रों पर स्टैप लगानी पड़ती थी जिससे प्राप्त होने वाली आय इग्लैण्ड के सरकारी खजानें में जाती थी। ग्रेन विल को लगता था कि उसके द्वारा लागू किऐ गऐ कानूनों का विरोध नही होगा परन्तु जनता ने विरोध आरम्भ कर दिया। बस्तियों में कानूनों का विरोध करने के लिए समितियां बनने लगी। 'स्वाधीनता के पुत्र' 'स्वाधीनता की पुत्रियां संगठन बनें। इस समय बुद्धिजीवियों ने अपने भाषणो तथा विचारो के माध्यम से विरोध को तेज किया तथा बस्तियों में जोश भरा। अमेरिकी यह मानते थे कि इग्लैण्ड की सरकार को कर लगाने का कोई अधिकार नही है। उन्होने तर्क दिया कि संसद में उपनिवेशो का कोई प्रतिनिधित्व नही है, इसलिए उनकी अनुमति के बिना नऐ कानून नहीं लागू किऐ जा सकते। इसी समय नारा दिया गया कि ''बिना प्रतिनिधित्व के कर नही''। स्टाम्प एक्ट के विरोध ने बस्तियो में नया जोश उत्पन्न किया। इस कानून के विरोध में 1765ई0 में नौ उपनिवेशो ने मिलकर न्यूयार्क में प्रस्ताव पारित किया। इस घटना ने इग्लैण्ड को सोचने पर विवश किया तथा 9 फरवरी 1766ई0 को स्टाम्प कानून को निरस्त करना पड़ा। यह बस्तियों की एक जीत थी। जनता ने संकेत दे दिया कि वह अब शोषण को सहन नही करेंगे।

राकिंघम का डेक्लेटरी एक्टः–

1765 ई0 में ग्रेनविल सरकार के पतन के बाद रांकिघम के सरकार का गठन किया। इससे स्टाम्प एक्ट को समाप्त कर दिया किन्तु एक अन्य एक्ट पारित किया जिसे 'डेक्लेटरी एक्ट' कहा जाता है। जिसके अनुसार घोषणा की गई कि अमेरिकी बस्तियां इग्लैण्ड के सम्राट तथा संसद के अधीन है अतः सम्राट तथा संसद को सभी प्रकार के नियम पारित करने का अधिकार है। इस घोषणा का अमेरिका ने पूरा विरोध किया।

टाऊनसैंड की कर योजनाः–

राकिधम के बाद टाऊशैण्ड खजाने का चांसलर बना। उसने जनता के विरोध को देखते हुऐ आंतरिक करो की अपेक्षा सीमा कर लगाऐ। उसने 20 जून 1767 को पहला कानून बनाया जिसके अनुसार चाय, शीशा, कागज, रंग आदि पर सीमा शुल्क लगाया, जिसका आयात अमेरिका इग्लैण्ड से करता था। दूसरा कानून यह बनाया कि अमेरिकी बस्तियों में उत्पादित सभी वस्तुओं पर चुंगी की वसूली सम्राट द्वारा नियुक्त कमिशनर ही करेंगे, 2 जुलाई 1767ई0 को चाय अधिनियम पास किया गया जिसके द्वारा उस चुंगी को निरस्त कर दिया गया, जो ईस्ट इण्डिया कम्पनी अमेरिका को भेजी जाने वाली चाय पर लगाती थी। इस सभी कानूनों का अमेरिका में विरोध हुआ। अतः इस प्रकार कर योजना ने क्रान्ति का वातावरण तैयार किया।

1.4.15 तात्कालिक कारण–लार्ड नार्थ चाय एक्ट तथा बोस्ट्न चाय पार्टी (Immediate Causes-Lord North Tea Act and Boston Tea Party)

इग्लैण्ड द्वारा किऐ गए शोषण तथा भेदभाव से अमेरिकी बस्तियो में नाराजगी बढ रही थी। मानवीय स्वभाव है कि वह इस आ''ाा में रहता है कि शायद व्यवस्था में सुधार हो जाऐ या पहल कौन करे। किसी भी घटना के दौरान जब जनता यह आ''ाा छोड़ देती है कि सुधार होगा तथा जब इस भावना या विचार का जन्म हो जाता है कि उनकी समस्याओं का अन्त तभी होगा जब शोषणकर्ता का अन्त होगा तब वह घटना तात्कालिक कारण बन जाती है और तब क्रान्ति का बिगुल बज जाता है। तात्कालिक कारण शोषण का चरम माना जाता है। जंहा किसी एक व्यक्ति या समूह की शोषण को सहन करने की शक्ति भी समाप्त हो जाती है। अमेरिकी क्रान्ति पर भी यह मनोवैज्ञानिक नियम लागू होता है और तात्कालिक कारण लार्ड नार्थ का चाय एक्ट तथा बोस्टन चाय पार्टी बनता है। आइऐ इसको विस्तार से समझते है। 1770ई0 में लार्ड नार्थ खजाने का चांसलर बनता है। उसने अमेरिकी बस्तियो को संतुष्ट करने के लिए यह सुझाव रखा कि चाय को छोड़ कर शेष सभी वस्तुओं से सीमा कर हटा लिया जाये। संसद ने उसका यह सुझाव स्वीकार कर लिया तथा यह समाचार अमेरिकी बस्तियों तक पहुंच गया। इस निर्णय पर अमेरिकी बस्तियों के लोग दो भागों मे विभाजित हो गऐ। गरम विचारधारा के लोगों का मानना था कि इग्लैण्ड का विरोध जारी रहना चाहिए। इस प्रकार की विचार धारा के पक्षधर सैमुअल एडमस, पेट्रिक हेनरी

आदि थे। इनकी मांग थी कि बस्तियों के विरूद्ध सभी एक्ट रद्द होने चाहिए किन्तु नरम विचारों के लोगो ने संघर्ष को स्थगित करने का निर्णय किया। इस प्रकार अमेरिकी बस्तियां इस समय विचित्र संकट से गुजर रही थी। 1770 ई0 से 1773 ई0 के इस समय को शान्ति के वर्ष कहा जाता है परन्तु शायद यह धर्मसकंट का समय था। अन्दर ही अन्दर इग्लैण्ड पर से जनता का वि’’वास उठ चुका था। 1773ई0 में इग्लैण्ड में चाय एक्ट पारित हो गया इसके बाद ईस्ट इण्डिया कम्पनी को अमेरिकी बस्तियों में सीधे चाय भेजने का अधिकार दे दिया। इस कानून से पहले भारत की चाय पहले इग्लैण्ड और बाद में अमेरिका में आती है इस पूरी व्यापारिक प्रक्रिया में चाय की लागत बढ जाती थी तथा अमेरिका में चाय मंहगी मिलती थी यहां पर स्पष्ट कर दे कि इग्लैण्ड सरकार या लार्ड नाथ का चाय एक्ट बनाकर अमेरिका को सस्ती चाय उपलब्ध कराना नही था। जैसा कि नई व्यवस्था से चाय सीधी भारत से अमेरिका में जाने लगी और बस्तियों को चाय सस्ती मिलने लगी। वास्तव में इस समय ईस्ट इण्डिया कम्पनी आर्थिक रूप से अच्छी दशा में नही थी इसी कारण कम्पनी का व्यापार बढाने के उद्देश्य से चाय एक्ट पारित किया था ताकि व्यापारिक प्रक्रिया आसान हो सकें। अब प्र’’न उठता है फिर अमेरिका ने इस एक्ट का विरोध क्यों किया। दरअसल इस समय तक अमेरिकी बस्तियों में बौद्धिक चेतना उत्पन्न हो चुकी थी और उनका ऐसा दृष्टिकोण बन गया था बस्तियों पर इग्लैण्ड को किसी भी प्रकार का कानून बनाने का अधिकार नहीं है जबकि इग्लैण्ड इस परम्परा को बनाऐ रखना चाहता था।

ऐसे वातावरण में एक नवीन घटना घटी जिसे ‘बोस्टन चाय पार्टी’ कहा जाता है। यह घटना मोसाचूसेटस के बन्दरगाह ‘बोस्टन में 16 दिसम्बर 1773ई0 को घटी। इस दिन सेमुअल एडमस के नेतृत्व में कुछ अमेरिकी लोग कुलियो का भेष बनाकर बोस्टन बन्दरगाह में खडे ईस्ट इण्डिया कम्पनी के जहाजो पर चढ गऐ तथा उन्होंने चाय की 340 पेटियों समुद्र में फेंक दी इसी घटना को इतिहास में ‘बोस्टन चाय पार्टी’ कहा जाता है। इस घटना में हालांकि केवल कुछ लोग शामिल हुऐ परन्तु उनको नैतिक समर्थन पूरी जनता का था।

1.4.16 बस्तियों के विरूद्ध कानून (Laws Against Conlonies)

बोस्टन बन्दरगाह की घटना की गूंज इग्लैण्ड तक पहूंची। लार्ड नार्थ बस्तियों की विरोधी भावनाओं को कुचलना चाहता था उसने अमेरिकी बस्तियों को सबक सिखाने के लिए दमनकारी कानून बनाऐ। ये पांच कानून इस प्रकार है।

1) बोस्टन की बन्दरगाह समुद्री व्यापार के लिए बन्द कर दी गई।

2) मेसाचूसेटस के स्वशासन के चार्टर को स्थगित कर दिया गया तथा उसे पूर्ण रूप से गवर्नर के अधीन कर दिया गया।

3) हत्या सम्बन्धी सभी मुकदमें अमेरिका से इग्लैण्ड या अन्य उपनिवे''ाों को स्थानान्तरित पर दिए गऐं।

4) मेसाचूसेटस में ब्रिटिश सेना तैनान की जा सकती थी जिसकी आवास प्रबन्ध की जिम्मेदारी का भार भी स्थानीय अधिकारियों पर डाल दिया गया।

5) कनाडा के कैथेलिक लोगो को धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान कर दी गई जिससे अमेरिका के प्यूरिटनो को ठेस पहूंची।

1.4.17 फिलाडेल्फिया के दो सम्मेलन (Two Conferences of Philadephia)

बस्तियों के विरूद्ध पाँच दमनकारी कानून बनाकर इग्लैण्ड ने स्पष्ट संकेत दे दिया था कि वह बस्तियों में सुधार या स्वतन्त्रता नही चाहता परन्तु अमेरिकी बस्तिया भी दमन से तंग आ चुकी थी इसलिए उन्होंने कानूनों का विरोध किया। 5 सितम्बर 1774 ई0 को फिलाडेल्फिया में बस्तियो के प्रतिनिधियो का प्रथम सम्मेलन हुआ जिसमे जार्ज वांशिगटन, पैट्रिक हेनरी, सैमुअल एडम्स जॉन एडम्स, स्टीफन हॉप किन्स, जार्ज डिकिसन आदि कई प्रमुख नेताओं ने भाग लिया। अधिवेशन ने एक घोषणा पत्र तैयार करके इग्लैण्ड भेजा गया इसमें 1765ई0 के बाद के सभी कानूनों को निरस्त करने की मांग की गई साथ ही अग्रेजी समान के बहिष्कार का भी निर्णय लिया गया। 22 अक्टुबर 1774ई0 को यह प्रथम सम्मेलन समाप्त हो गया।

प्रथम सम्मेलन में प्रस्तुत की गई मांग पूरी नही हुई इसलिए 10 मई 1775ई0 को फिलाडेल्फिया में दूसरा सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में इग्लैण्ड के विरूद्ध युद्ध की तैयारी सम्बन्धी निर्णय लिया गया इसमें जार्ज वा''ागटन का चयन अमेरिकी सेनाध्यक्ष के रूप में किया गया। वोस्टन के धनी व्यापारी जॉन हैनकाक ने इस सम्मेलन की अध्यक्षता की इस सम्मेलन में टॉमस जैफरसन, बेजानिन फ्रैकलिन जैसे महान नेता शामिल थे। सम्मेलन मे स्पष्ट कर दिया गया कि गुलामी के जीवन की अपेक्षा स्वतन्त्रता के लिए प्राण देना अधिक श्रेष्ठ है। यह निश्चय किया गया कि शस्त्रों का प्रयोग स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए किया जाऐगा। कभी भी क्रान्ति अचानक नही भड़कती। जनता हमेशा पहले संकेत देती है अगर उनको समझ लिया जाऐ तो शायद क्रान्ति रूक सकती है। अमेरिकी बस्तियों ने इग्लैण्ड को काफी संकेत दिऐ इस समय अगर इग्लैण्ड में बुद्धिमान राजनीतिज्ञ होता तो शायद समझ जाता किन्तु जार्ज तृतीय और प्रधानमन्त्री लार्ड नार्थ ने इन सकेंत को नही समझा तथा वे स्वार्थ व सत्ता के नरो में अन्धे बने रहे जिसका परिणाम उनको भुगतना पड़ा और विवश जनता क्रान्तिकारी बन गई।

1.4.18 क्रान्ति की घटनाऐं (Events of Relalution)

अमेरिका में विद्रोह का आरम्भ मसाचसेटस से आरम्भ हुआ तथा अमेरिकी सेना ने लेक्सिंगटन की लड़ाई में इग्लैण्ड की सेना को पराजित किया। अग्रेजो को बोस्टन छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा। इस जीत से अमेरिकी

सेना ने उत्साहित होकर कनेड़ा पर आक्रमण कर दिया तथा मांट्रीयल पर अधिकार कर लिया। दक्षिण में जार्ज वाशिंगटन के नेतृत्व में अमेरिकी सेना ने टेट्रन तथा प्रिन्सटन की लड़ाइयों में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की अग्रेजी सेना ने काफी प्रयास किऐ किन्तु सफल नही हो रहे थे। 1778ई0 में अग्रेजी सेना जनरल बुरगौयन के नेतृत्व में सारागोटा की लड़ाई में बुरी तरह पराजित हो गई। यह लडाई महत्वपूर्ण सिद्ध हुई क्योकि इस समय फ्रांस ने अमेरिका की सहायता में रूचि दिखाई 6 फरवरी 1778ई0 को अमेरिकी बस्तियों तथा फ्रांस मे समझोता हो गया जिसकी शर्तो के अनुसार निम्नलिखित बाते निशचित हुई।

1- कोई भी अलग से इग्लैण्ड के साथ शान्ति वार्ता नही करेगा।

2- जब तक अमेरिकी बस्तियां पूर्ण रूप से स्वतन्त्र नही हो जाती तब तक युद्ध जारी रखा जाऐगा। इस समझौते के बाद फ्रांस अमेरिकी बस्तियों के पक्ष में इग्लैण्ड के विरूद्ध युद्ध में शामिल हो गया। इस समय फ्रांस का उद्देश्य दिल से अमेरिका की सहायता नही करना चाहता था। वह अमेरिका की स्वतन्त्रता का पक्षधर नही था। वह अमेरिका की स्वतन्त्रता का पक्षधर नही था। अपितु सात वर्षीय युद्ध में इग्लैण्ड से मिली पराजय का बदला लेना चाहता था। 1779ई0 में स्पेन ने भी इग्लैण्ड के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी क्यो वह भी इग्लैण्ड से जिबाल्टर वापिस लेना चाहता था। हालैण्ड ने 1780ई0 में इग्लैण्ड के विरूद्ध युद्ध घोषित कर दिया क्योकि हालैण्ड सुदूर पूर्व एशिया एवं में अपनी स्थिती मजबूत करने के लिए इग्लैण्ड को अन्ध महासागर में उलझाऐ रखना चाहता था।

इस प्रकार कई देशों का समर्थन अमेरिकी बस्तियो को मिल गया। इन देशो का सहयोग मिलना अमेरिका का भाग्य ही कहा जाऐगा। ये सभी राष्ट्र अपने–अपने व्यक्गित कारणों से समर्थन कर रहे थे क्योकि ये सभी इग्लैण्ड को कमजोर करना चहाते थे इस प्रकार अमेरिका की स्थिती मजबूत हो गई व 1781ई0 में अमेरिकी की सेना ने यार्कटाऊन की लड़ाई में शानदार विजय प्राप्त हुई। यह लड़ाई निर्णायक बनी क्योकि इसमें ब्रिटिश सेनापति कार्नवालिस ने अमेरिका के आगे हथियार डाल दिऐ। इस प्रकार 1783ई0 में पेरिस की सान्धि के साथ युद्ध समाप्त हुआ।

1.4.19 पेरिस की सन्धि तथा अमेरिका का संविधान (Treaty of Paris and constitution of America)

इग्लैण्ड की पराजय के बाद अमेरिकी बस्तियो व इग्लैण्ड के बीच 3 सितम्बर 1783ई0 को पेरिस की सन्धि हुई। इस पर स्पेन तथ फ्रांस मे भी हस्ताक्षर किये। इसकी मुख्य शर्त ये थीः

1- इग्लैण्ड में अमेरिकी की 13 बस्तियो की स्वतन्त्रता स्वीकार कर ली। इस प्रकार इन बस्तियो को मिला कर संयुक्त राज्य अमेरिका नामक स्वतन्त्र देश अस्तित्व में आया।

2- फ्रांस को इग्लैण्ड से सेंट लूसिया, टोबेगो तथा सेनेगाल आदि प्रदेश प्राप्त हुऐ।

3- इग्लैण्ड व हालेण्ड में युद्ध पूर्व स्थिति स्वीकार की गई।

4- स्पेन को फलोरिडा तथा भूमध्य सागर में स्थित माइनारका का टापू मिला।

5- नऐ –अमेरिकी राष्ट्र की सीमा ओहियो नदी के साथ–साथ तय की गई।

अमेरिका का संविधानः–

इस प्रकार पेरिस के सन्धि के बाद अमेरिका स्वतन्त्र हो गया। किन्तु इसके बाद अमेरिकी के राज्यों में आपसी मतभेद उभरने लगे परन्तु कुछ समय बाद मतभेदो को सुलझा लिया गया। 17 सितम्बर 1787ई0 को अमेरिका का संविधान तैयार हुआ जिस पर 55व्यक्तियों ने हस्ताक्षर किऐ और यह 21 जून 1788 ई0 से लागू हुआ। अमेरिका में गणतन्त्र की स्थापना की गई। सविधान के अनुसार मार्च 1789ई0 में नई सरकार का गठन हुआ। जिसका प्रथम राष्ट्रपति जार्ज वाशिगटन को बनाया गया।

1.4.20 अमेरिकी बस्तियों की सफलता के कारण (Causes of success of American Colonies)

अमेरिकी बस्तियों की इग्लैण्ड पर विजय आधुनिक विश्व की एक महत्वपूर्ण विजय थी जिसने दुनिया को आश्चर्य चकित कर दिया। इग्लैण्ड एक शक्तिशाली राष्ट्र था जिसके पास युद्ध की सभी आधुनिक सुविधाऐ भी इसके विपरित अमेरिकी बस्तियों कमजोर थी। फिर भी यह जानना रूचिकर रहेगा कि अमेरिका की विजय कैसे हुई? इस सफलता के निम्नलिखित कराण थेः–

1) इग्लैण्ड के अयोग्य सेनानायक :–

इग्लैण्ड के सेनानायक अयोग्य सिद्ध हुऐ वे परिस्थितयों के अनुसार योजना नही बना पाऐ। जनरल होव, जनरल नुरगोयन आदि सेनानायक सैनिको को सही नेतृत्व नही कर सके जिसके कारण इग्लैण्ड पराजित हो गया।

2) अमेरिका का योग्य नेतृत्व :–

अमेरिकी बस्तियों की सफलता का महत्वपूर्ण कारण जार्ज वांशिगटन का योग्य नेतृत्व था। वह परिस्थितयों के अनुसार निर्णय लेना जानता था। कठिन परिस्थितयो के अनुसार निर्णय लेना जानता था। कठिन परिस्थियों में भी उसने साहस नहीं छोड़ा उसने अमेरिकी सैनिको में आत्मबल उत्पन्न कर दिया जार्ज वांशिगटन ने युद्ध को मनोवैज्ञानिक रूप से अपने पक्ष में रखा और ऐसा वातावरण बना दिया कि अमेरिका

जीत गया इसी कारण रम्जेम्यूर ने लिखा, ''उसके नेतृत्व में उपनिवेशवासियों के मन में विश्वास और साहस उत्पन्न हो गया, जिसके कारण उन्हें इस महान किन्तु दुष्कर संघर्ष में अन्तिम विजय प्राप्त हुई।''

3) अमेरिका की भौगोलिक स्थितिः–

इग्लैण्ड को अमेरिकी की भौगोलिक स्थिति तथा वहां के पर्वतों एवं जंगली मार्गो की जानकारी नहीं थी। युद्ध क्षेत्र के आस–पास फैले 1000 मील के क्षेत्र के बारे में अमेरिकी बस्तियां अच्छी तरह से परिचित थी जबकि अग्रेजी सेना के लिए यह क्षेत्र एक समस्या बन गया था।

4) युद्धस्थल इग्लैण्ड से दूर होनाः–

इग्लैण्ड से अमेरिका 3000मील की दूरी पर स्थित था। यातायात के साधनों अभाव ने इस दूरी को और अधिक बढाया, जिससे सैनिक सहायता पहुंचना बहुत मुश्किल कार्य हो गया। स्थिति और अधिक कठिन उस समय हो गई, जब फ्रांस व स्पेन की नौ सेनाओं ने अटलांटिक महासागर पर अग्रेजी रसद पूर्ति रेखा को भंग कर दिया। यह इग्लैण्ड की पराजय का एक कारण बना।

5) इग्लैण्ड द्वारा अमेरिका की वास्तविक शक्ति का सही अनुमान न लगाना :–

इग्लैण्ड ने अमेरिकी बस्तियों की शक्ति का बहुत कम अनुमान लगाया था, जिसके कारण उसने युद्ध के लिए आव''यक तैयारी न की। अपने शत्रु की शक्ति को कम समझना इग्लैण्ड की पराजय का कारण बना।

6) अमेरिका को अन्य देशो का सहयोग मिलनाः–

अमेरिका का फ्रांस तथा स्पेन के साथ दिया हालांकि वह अमेरिका की स्वतन्त्रता के पक्षधर नही थे अपितु इग्लैण्ड के शत्रु थे इसी कारण इग्लैण्ड को कमजोर करने के लिए उन्होनें अमेरिका का साथ दिया परिणामस्वरूप अमेरिका की शक्ति बढ गई जो इसकी विजय का कारण बना।

7) इग्लैण्ड को अपने सभी वर्गो का सहयोग न मिलनाः–

अमेरिका के साथ युद्ध में इग्लैण्ड को समाज के सभी वर्गो तथा नेताओं का सहयोग भी प्राप्त न हो सका। यह सत्य है कि इग्लैण्ड के बहुत से नागरिक अमेरिका के विरूद्ध युद्ध लड़ने के पक्ष में नही थे क्योकि वे मानते थे कि अमेरिका अपने अधिकारो के लिए युद्ध लड़ रहा है। अतः यह दशा इग्लैण्ड की पराजय का कारण बनी।

8) अमेरिका का दृढ़ निश्चय :–

अमेरिका बस्तियां लम्बे समय से शोषण से पीड़ित थी इसलिए उन्होंने स्वतन्त्रता के लिए दृढ़ नि''चय पैदा किया जिसके कारण उनमे एकता व जोश उत्पन्न हो गया जो अमेरिका की जीत का कारण बना।

9) अमेरिका का छापामार युद्ध :–

अग्रेजी सेना छापामार युद्ध नही जानती थी जबकि अमेरिका ने युद्ध में इस नीति का प्रयोग किया जो इग्लैण्ड के पराजय का कारण बना।

10) जार्ज तृतीय की भूमिका :–

इग्लैण्ड की पराजय के लिए वहा का सम्राट जार्ज तृतीय भी पूरी तरह से जिम्मेदार था। उसमे अनुभव की कमी थी तथा परिस्थितयो के अनुसार वह निर्णय नही लेता था। अगर वह बुद्धिमता से कार्य करता तो अमेरिका के साथ युद्ध की स्थिति ही उत्पन्न नही होती लेकिन उसने अपनी नीतियो से अमेरिकी बस्तियो को भड़का दिया उसने युद्ध के दौरान भी बुद्धिमता का परिचय नही दिया क्योकि उसने अयोग्य नेता नियुक्त किऐ जो युद्ध संचालन को नही संभाल पाऐ।

इस प्रकार विभिन्न कारणों से इग्लैण्ड पराजित हो गया तथा अमेरिकी बस्तियां सफल हो गई।

1.4.21 अमेरिका की क्रान्ति के प्रभाव तथा महत्व (Effects and importance of American Revolution)

अमेरिका की क्रान्ति पूरे विश्व के लिए एक महत्वपूर्ण घटना बन गई। इस क्रान्ति ने दीर्घकालिक शोषण से पीड़ित राष्ट्रों को स्वतन्त्रता के लिए प्रेरित किया। इस दृष्टि से अमेरिका की क्रान्ति आधुनिक विश्व की सुबह कही गई इसने सम्पूर्ण मानव जाति के लिए एक नया युग आरम्भ किया। किसी भी घटना को महत्वपूर्ण केवल तभी कहा जाता है जब उसके प्रभाव महत्वपूर्ण व व्यापक हो। अमेरिकी क्रान्ति के प्रभावो अथवा महत्व का वर्णन इस प्रकार है:–

1.4.22 अमेरिका पर प्रभाव (Effects of America)

यह क्रान्ति अमेरिकी बस्तियों ने इग्लैण्ड के शोषण व भेदभाव के खिलाफ की थी अतः सबसे पहले इससे अमेरिका ही प्रभावित हुआ। क्रान्ति के बाद एक नया अमेरिका अस्तित्व में आया जिसका स्वरूप ऐसा था।

1.4.23 नव अमेरिका का जन्म (Birth of New America)

क्रान्ति से पहले अमेरिका इग्लैण्ड के अधीन था इग्लैण्ड अपने स्वार्थो तथा उद्देश्यों के लिए अमेरिका का शोषण कर रहा था। जिसके परिणामरूवरूप क्रान्ति का जन्म हुआ। परन्तु युद्ध में इग्लैण्ड पराजित हो गया तथा पेरिस की सन्धि के दौरान अमेरिका स्वतन्त्र हो गया इस प्रकार विश्व मे नव अमेरिका का जन्म हुआ जो संयुक्त राज्य अमेरिका कहलाया।

1.4.24 अमेरिका का नया संविधान (New Constitution of America)

अमेरिका की क्रान्ति के बाद नवराष्ट्र के शासन को अच्छी प्रकार से चलाने के लिए नया सविधान बनाया गया। 17 सितम्बर 1787ई0 को अमेरिका का सविधान तैयार हुआ आर 21जून 1788ई0 को इसे लागू कर दिया गया। सविधान की मुख्य विशेषता संघात्मक प्रणाली थी जिसमे राष्ट्र का मुखिया राष्ट्रपति था। जिसका चुनाव चार वर्ष के लिए प्रत्येक राज्य की विधानपालिका के चुने हुऐ सदस्यो द्वारा किया जाना था। यद्दपि इसमें कुछ दोष थे लेकिन यह वि''व का प्रथम लिखित सविधान था।

1.4.25 परिवर्तित समाजिक अवस्था (Changed Social condition)

क्रान्ति ने अमेरिका के शासन के अतिरिक्त सामाजिक अवस्था में भी परिवर्तन किया। अमेरिका में परिवर्तन सामाजिक अवस्था उत्पन्न हुई जिसमें परम्परा, धन और विशेषधिकारो का महत्व कम था और मानवीय समानता का महत्व अधिक। परम्परागत सामाजिक अधिकारो का अन्त हो गया।

1.4.26 शिक्षा का महत्व तथा विकास (Importance and progress of Education)

अमेरिका ने क्रान्ति के बाद शिक्षा का महत्व समझा। इस विचार का जन्म हुआ कि प्रजातन्त्र में शिक्षित मतदाताओ की विशेष भूमिका होती है। जैफरसन ने कहा ''मै आशा करता हु कि सब चीजों से अधिक प्राथमिकता जनसाधारण की शिक्षा को दी जाऐगी क्योंकि यह सिद्ध है कि जनता की सुबुद्धि पर ही स्वाधीनता के उचित स्तर को सुरक्षित रखना निर्भर है। इसलिए अधिक से अधिक शिक्षण संस्थाओं के खोलने की मांग जोर पकड़ गई।

1.4.27 पूंजीवादी व्यवस्था का विकास (Rise of Capitalism)

अमेरिका की क्रान्ति के परिणामस्वरूप पूंजीवादी व्यवस्था का विकास हुआ। अमेरिका स्वतन्त्र हो गया इसलिए उसके आर्थिक क्षेत्र की समस्याऐं भी समाप्त हो गई क्योंकि अब अमेरिका स्वय अपने आर्थिक नियम विकास के लिए बनाने लगा। इस प्रकार पूंजीवादी विचारधारा का अमेरिका में विकास हुआ।

1.4.28 कृशि का विकास (Development of Agriculture)

क्रान्ति के बाद अमेरिका की भूमि पर इग्लैण्ड का अधिकार समाप्त हो गया तथा अमेरिका लोगो का अधिकार हो गया। अमेरिका अब अपनी इच्छानुसार कृषि कर सकते थे। पहले उत्पादन इग्लैण्ड के स्वार्थ तथा आवश्यकताओं के अनुसार होता था परन्तु अब उत्पादन अथवा कृषि अमेरिका के विकास अथवा आवश्यकता के लिए होने लगा।

1.4.29 उद्योगों का विकास (Development of Industry)

क्रान्ति के बाद अमेरिका में औधोगिक विकास आरम्भ हुआ। पहले इग्लैण्ड के उत्पादन पर प्रतिबन्ध लगा रखे थे जो अब समाप्त हो गऐ। अमेरिका धीरे–धीरे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो गया। अब अमेरिका का निर्यात वि''व के अन्य देशो से हाने लगा।

1.4.30 व्यापार का विकास (Development of Trade)

इग्लैण्ड के औपनिवेशिक शासन के अन्त के बाद अमेरिका का व्यापार भी स्वतन्त्र हो गया। पहले इग्लैण्ड ने अपने आर्थिक हितो की सुरक्षा के लिए अमेरिका के व्यापार पर प्रतिबन्ध लगा रखे थे जो क्रान्ति के बाद हट गऐ। जिसके कारण अमेरिका का व्यापारिक विकास बना।

1.4.31 जनतन्त्रतात्क विकास (Birth of Demoratic system)

अमेरिका क्रान्ति ने इग्लैण्ड की रक्तहीन अथवा शानदार क्रान्ति के दौरान उत्पन्न विचारों का और अधिक विकास हुआ। यदि इग्लैण्ड की क्रान्ति ने प्रतिनिधि सतात्मक प्रथा को जन्म दिया तो अमेरिकी क्रान्ति ने जनतन्त्रतात्मक प्रथा को जन्म दिया, जिसमें पहली बार साधारण वर्ग को मताधिकार प्राप्त हुआ। अमेरिकी क्रान्ति को आधुनिक युग में गणतन्त्र की जननी कहा जा सकता है। क्रान्ति ने शोषणकारी सता को पराजित किया तथा जनता की शक्ति के महत्व को बढाया।

1.4.32 इग्लैण्ड पर प्रभाव (Effectson England)

अमेरिका की क्रान्ति इग्लैण्ड के शोषणकारी चरित्र के खिलाफ थी परिणामस्वरूप इग्लैण्ड पराजित हुआ अतः क्रान्ति के इग्लैण्ड पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था जिनका वर्णन इस प्रकार है

1.4.33 जार्ज तृतीय के भाासन का अन्त (End of George 111's Rule)

इग्लैण्ड के क्रान्ति के दौरान जार्ज तृतीय का शासन था जो एक निरकुंश शासक था उसने अपने निर्णयो से अमेरिका को उकसा दिया था। क्रान्ति के दौरान इग्लैण्ड पराजित हो गया जिसके लिए जार्ज तृतीय को दोषी ठहराया गया। जार्ज तृतीय को हटाने का प्रस्ताव संसद में परित हो गया। छोटे पिट को इग्लैण्ड का प्रधानमन्त्री बनाया गया तथा इस प्रकार जार्ज तृतीय के शासन का अन्त हो गया।

1.4.34 इग्लैण्ड की व्यापारिक हानि (Commercial loss of England)

इग्लैण्ड ने अमेरिकी बस्तियों का प्रयोग अपने आर्थिक हितो की सुरक्षा के लिए किया जिसके परिणाम स्वरूप इग्लैण्ड का व्यापरिक विकास बढने लगा था तथा अमेरिका का व्यापारिक पतन हुआ। जिसके परिणामस्वरूप

इग्लैण्ड को व्यापरिक हानि पहुंची। अब इग्लैण्ड के उद्योगों के लिए अमेरिका से आने वाला कच्चा माल बन्द हो गया।

1.4.35 नऐ उपनिवेशों की स्थापना (Establishment of New Colonies)

अमेरिका की 13 बस्तियां क्रान्ति के परिणामस्वरूप इग्लैण्ड के हाथ से चली गई थी। इस अभाव को पूरा करने के लिए इग्लैण्ड ने नऐ उपनिवेश स्थापित करने के प्रयास किऐ। उसने आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में अपने उपनिवेश स्थापित कर लिए।

1.4.36 ईस्ट इण्डिया कम्पनी पर सरकारी नियन्त्रण (Governmental control over East India Company)

इग्लैण्ड की पराजय के बाद ईस्ट इण्डिया कम्पनी पर भी नियन्त्रण बढाया गया। इसके लिए इग्लैण्ड की आन्तरिक परिस्थियों भी उतरदायी थी। इसी उद्देश्य से 1784ई0 में पिटस इण्डिया एक्ट लाया गया। इग्लैण्ड ने भारत में व्यापारिक हितों की रक्षा के लिए ऐसा निर्णय लिया। इस एक्ट के माध्यम से कम्पनी पर नियन्त्रण के लिए बोर्ड ऑफ कन्ट्रोल की स्थापना की गई।

1.4.37 अन्य देशो पर प्रभाव (Effects on other countries)

अमेरिकी की क्रान्ति ने विश्व के कई राष्ट्रो को प्रभावित किया। फ्रांस, स्पेन, आयरलैण्ड आदि कई देशो पर प्रभाव पड़े जिनका वर्णन इस प्रकार है।

1.4.38 फ्रांस पर प्रभाव (Effects on France)

अमेरिका की क्रान्ति ने सबसे अधिक फ्रांस को प्रभावित किया। अमेरिका की भूमि पर शोषण से मुक्ति कर विचार उत्पन्न हुआ जो फ्रांस पहुंचा। स्वतन्त्रता का विचार फ्रांस गया। परिणामस्वरूप फ्रांस में भी 1789ई0 में शोषणकारी सता के विरोध में क्रान्ति का जन्म हुआ। इसी कारण कहा जाता है कि अमेरिका की क्रान्ति आधुनिक विश्व की सुबह थी जो फ्रांस की क्रान्ति दोपहर

1.4.39 आयरलैण्ड पर प्रभाव (Effects on Ireland)

अमेरिका की क्रान्ति का प्रभाव आयरलैण्ड पर भी पड़ा। यह भी इग्लैण्ड के अधीन था। इग्लैण्ड की नीतियों के कारण आयरलैण्ड का विकास नहीं हो रहा था। अमेरिकी क्रान्ति से शोषण के खिलाफ मुक्ति की प्रेरणा लेकर आयरलैण्ड में हेनरी ग्रेटन के नेतृत्व में आन्दोलन आरम्भ हो गया जिसका उद्देश्य अपने अधिकारो को प्राप्त करना

था। इग्लैण्ड इस समय अमेरिका के साथ युद्ध में उलझा हुआ था इसलिए वह आरलैण्ड के आन्दोलन को नही दबा पाया और आन्दोलनकारियों की कई मांगे माननी पड़ी। आयरेलैण्ड के राष्ट्रवादियों की यह सफलता थी।

1.4.40 स्पेन पर प्रभाव (Effects on Spain)

क्रान्ति का प्रभाव स्पेन पर भी पड़ा। यह देश भी इग्लैण्ड को अपना शत्रु मानता था। स्पेन ने इग्लैण्ड के विरूद्ध अमेरिका का साथ दिया था अतः क्रान्ति के बाद स्पेन को भी इग्लैण्ड से मिनारका तथा फलोरिडा के प्रदेश वापिस मिल गऐ। क्रान्ति का स्पेन को नुकसान भी हुआ क्योकि दक्षिणी अमेरिका में स्पेन के उपनिवेश थे, उन्होने भी कुछ समय बाद स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष कर दिया और स्पेन को इन उपनिवेशो को छोड़ना पडा।

1.4.41 अन्य विश्व पर प्रभाव (Effects on other world)

अमेरिका की क्रान्ति ने विश्व के शोषित राष्ट्रों को स्वतन्त्रता के लिए प्रेरित किया तथा प्रजातन्त्र को लोकप्रिय बनाया। समानता की भावना का भी बीजा रोपड़ क्रान्ति के दौरान होता है क्योकि अमेरिकी बस्तियां सामान अधिकारों के लिए ही संघर्ष कर रही थी उनका मानना था कि उन्हें भी इग्लैण्ड की तरह अधिकार मिलने चाहिए। एक और विचार इस समय उत्पन्न हुआ कि चेतना मिलने बिना शोषण से मुक्ति सम्भव नही है।

1.5 प्रगति समीक्षा (Check Your Progress)

भाग (अ)

(1) अमेरिका की खोज............ ने की।

(2) अमेरिका का नाम................ के नाम पर पड़ा।

(3) अमेरिका में .... बस्तियां थी।

(4) इग्लैण्ड ने अमेरिका में पहली बस्ती ....स्थापित की

(5) सात वर्षीय युद्ध इग्लैण्ड तथा............ के मध्य हुआ।

(6) बोस्टन चाय पार्टी की घटना.............को हुई।

(7) पेरिस की सन्धि .... में हुई।

(8) कॉमन सेंस .... द्वारा लिखित पुस्तक है।

(9) अमेरिका में प्रथम समाचार पत्र .... में प्रकाशित हुआ।

(10) अमेरिकी बस्तियों ने .... को स्वतन्ता की घोषणा की।

1.6 सारांश (Summary)

स्पेन के साहसी व्यक्ति क्रिस्टोफर कोलम्बस की यात्रा के बाद 1492ई0 में अमेरिका की खोज हुई हालाकि 'अमेरिका' का नाम इटालियन व्यक्ति अमेरिगो बेस्पुची के नाम पर पड़ा। इसके पश्चात् विश्व के विभिन्न देशों ने इस क्षेत्र में आर्थिक रूचि लेनी आरम्भ कर दी जिसमें इग्लैण्ड अग्रणीय रहा। अपने आर्थिक हितों की सुरक्षा के लिए उसने अमेरिका में अपनी बस्तियां स्थापित की। जेम्स टाऊन इस प्रकार की प्रथम बस्ती थी इस तरह धीरे–धीरे अमेरिका में 13 बस्तियां स्थापित हो गई। इन बस्तियों पर इग्लैण्ड सरकार द्वारा नियुक्त गर्वनर का शासन था। इग्लैण्ड ने अपने व्यापारिक लाभ के लिए कानून बनाऐ तथा आर्थिक लाभ के लिए जब बस्तियों का शोषण आरम्भ किया तो इन बस्तियो ने इग्लैण्ड के खिलाफ संघर्ष आरम्भ कर दिया जिसमें प्रमुख कारणों के अतिरिक्त बौद्धिक चेतना की वि"ोष भूमिका थी। टॉमस पेन, जेम्स ऑटिस, पेट्रिक हेनरी आदि ने इस चेतना को उत्पन्न करने में भूमिका निभाई और जनता को स्वतन्त्रता के लिए प्रेरित किया।

सप्तवर्षीय युद्ध ने भी अमेरिकी बस्तियों को एक अवसर प्रदान किया क्योकि इस समय फ्रांस की पराजय ने उन पर से फ्रांसीसी भय समाप्त कर दिया। जिसका भय इग्लैण्ड दिखाकर बस्तियों का शोषण करता था। साथ ही फ्रांस भी अपने आपमान का बदला लेने तथा इग्लैण्ड को कमजोर करने के उद्देश्य से अमेरिका के निकट आया। शायद अमेरिकी क्रान्ति का जन्म नही होता अगर जार्ज तृतीय तथा उसके मन्त्री अनुचित नीति नही अपनाते। लगातार भेदभावपूर्ण व शोषणकारी कानूनों का जन्म होता गया– इसके बाद फिलाडेल्फिया में दो सम्मेलन हुऐ। दूसरे सम्मेलन में इग्लैण्ड के विरूद्ध युद्ध का निर्णय लिया गया। इस प्रकार 4 जुलाई 1776ई0 को 13 बस्तियों ने इग्लैण्ड के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। यह युद्ध 3 सितम्बर 1783ई0 की पेरिस की सन्धि के बाद समाप्त हो गया और वि"व में नव अमेरिका अस्तित्व में आया जो संयुक्त राज्य अमेरिका कहलाया। अमेरिका ने 17 सितम्बर 1787ई0 को अपने संविधान के अुनसार नई सरकार का गठन हुआ व जार्ज वांशिगटन अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति बने।

अमेरिका की क्रान्ति अथवा स्वतन्त्रता संग्राम का आधुनिक विश्व में विशेष स्थान है। इस घटना ने सम्पूर्ण वि"व के शोषित व पीड़ित राष्ट्रो के लिए स्वतन्त्रता का विचार उत्पन्न किया। विश्व इतिहास में इस विचार का जन्म हुआ कि शोषणकारी व्यवस्था अमर नही हो सकती उसे एक दिन जनता के जोशे और संघर्ष के समक्ष पराजित होना पड़ता है। सभी शोषित राष्ट्रो के लिए अमेरिका की क्रान्ति एक आदर्श बन गई। दुनिया में अमेरिकी क्रान्ति के दौरान स्वतन्त्रता की प्रथम किरण पड़ी जिसका प्रका"ा 1789 ई0 में फ्रांस में भी दिखाई पड़ा और धीर–धीरे वि"व में फैल गया।

1.7 संकेतक शब्द (Key Words)

(1) अमेरिका बस्तिया :–

इग्लैण्ड ने अपने आर्थिक लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से अमेरिका ने जो बस्तियां स्थापित की उन्हें अमेरिकन बस्तियां कहा जाता है। यह 13 बस्तियां थी।

(2) असेम्बली (विधायक सदन):–

अमेरिका बस्तियों के लोगो द्वारा निर्वाचित सदन था। बस्तियों के निश्चित सम्पति के मालिकों को ही वोट का अधिकार था।

(3) सप्तवर्शीयः–

युद्ध 1751 ई0 से 1763ई0 तक इग्लैण्ड व फ्रांस के मध्य होने वाला युद्ध। जिसमें फ्रांस पराजित हुआ।

(4) उपनिवेशः–

वह क्षेत्र जिसका प्रयोग कोई अन्य राष्ट्र अपने आर्थिक राजनीतिक लाभ के लिए प्रयोग करता है। उदाहरण के लिए भारत इग्लैण्ड का उपनिवेश था। इसी प्रकार अमेरिका इग्लैण्ड का उपनिवेश था।

(5) रेड इण्डियनः–

1492ई0 में जब कोलम्बस यात्रा करता हुआ तथा वहा के निवासियों को (इंडियन) समझ बैठा जबकि वह अमेरिका में था अतः उसने ताम्बे जैसा रंग होने के कारण रेड इण्डियन कहा।

1.8 स्वय मूल्यांकन परीक्षा (Self Assesment Test)

(ब) महत्वपूर्ण निबन्धात्मक प्रश्न (Important Essay Type Questions)

1. अमेरिकी की क्रान्ति के राजनैतिक, सामजिक, आर्थिक कारणों का वर्णन कीजिए? इसमें जार्ज तृतीय की भूमिका का वर्णन कीजिए?
2. क्या अमेरिका की क्रान्ति अनिवार्य थी? अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दीजिए?
3. अमेरिका की क्रान्ति के परिणामों का वर्णन कीजिए?
4. अमेरिका के स्वतन्त्रता के युद्ध में अमेरिकी बस्तियों के इग्लैण्ड के विरूद्ध सफलता के युद्ध में अमेरिकी बस्तियों के इग्लैण्ड के विरूद्ध सफलता के क्या कारण थे?
5. अमेरिकी क्रान्ति के अमेरिकी इग्लैण्ड तथा विश्व के अन्य देशो पर क्या प्रभाव पड़े?

1.9 प्रगति समीक्षा हेतु उत्तर (Answers to check your progress)

रिक्त स्थानों के उत्तरः–

(1) क्रिस्टोफर कोलम्बस (2) अमेरिगो बेस्पुची (3) 13 (4) जेम्स टाऊन (5) फ्रांस (6) 15 दिसमबर 1773, (7) 1783ई0 (8) टॉमस पेन (9) बोस्टन न्यूज लेटर (10) 4 जुलाई 1776 ई0

1.10 संदर्भ/सहायक अध्ययन सामग्री (References and Suggested Study Material)

1. विश्व इतिहास (1500ई0 1950 ई0)– जैन और माथुर।
2. आधुनिक विश्व का इतिहास – डा0 ए0 सी0 अरोड़ा
3. आधुनिक विश्व का इतिहास – डा0 धर्मवीर भारद्वाज
4. अमेरिका का इतिहास – मथुरालाल शर्मा
5. अमेरिका का इतिहास – बनारसी प्रसाद सक्सेना
6. आधुनिक विश्व का इतिहास – लाल बहादुर वर्मा
7. Modern Europe to 1870 – CJH Hayes
8. अमेरिका का इतिहास – किरन दातार

SUBJECT : HISTORY (Sem-VI) B.A.-III Year	
Course Code : B.A. 304	**AUTHOR:**
Lesson:- 2	**M.S. Jyoti**
फ्रांस की 1789 ई0 क्रान्ति French Revolution of 1789	

अध्याय की संरचना (Lesson structure)

7.1 अधिगम उद्दे”य (Learning objectives)

7.2 परिचय (Introduction)

7.3 विषय वस्तु के प्रमुख बिन्दु (Main body of the text)

क्रान्ति फ्रांस में ही क्यो आरम्भ हुई (Why did the Revolution take place in France)

7.4 विषय वस्तु का पुनः प्रस्तुतीकरण – क्रान्ति के कारण (Further Main Body of Text) - Causes of Revolution

7.4.1 राजनीतिक व्यवस्था (Political condition)

7.4.2 निरंकु”ा राजतन्त्र (Despotic Monarchy)

7.4.3 अयोग्य शासक (Unable Kings)

7.4.4 दोषपूर्ण शासन प्रणाली (Defective Administrative system)

7.4.5 शासकों की विलासिता (Luxurious Life of Rules)

7.4.6 सामाजिक कारण (Social causes)

7.4.7 सामाजिक वर्गीकरण (Social classification)

7.4.8 आर्थिक व्यवस्था (Economic condition)

7.4.9 सम्पति का असमात वितरण (Unequal distribution of Property)

7.4.10 असन्तोषजनक कृषि व्यवस्था (Unsatisfactory Agrarian system)

7.4.11 गिल्ड प्रणाली (Guild System)

7.4.12 व्यापार पर प्रतिबन्ध (Restrictions on Trade)

7.4.13 दोषपूर्णकर प्रणाली (Defective Tax System)

7.4.14 निर्धनता (Poverty)

7.4.15 धार्मिक कारण (Religious Casuses)

7.4.16 चर्च का स्वरूप (Nature of Church)

7.4.17 पादरियों की चरित्रहीनता (Degeneration of clergy)

7.4.18 चर्च व शासक का गठबन्धन (Chruch Alignment with kings)

7.4.19 धार्मिक असहसन"ीलता (Religious Intolerance)

7.4.20 बौद्धिक जागरण की भुमिका (Role of Intellectual awareness)

7.4.21 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव (Influence of International Events)

7.4.22 अमेरिकी क्रान्ति का प्रभाव (Impact of American Revolution)

7.4.23 आयरलैंड का राष्ट्रीय आन्दोलन (Irish National Movement)

7.4.24 तात्कालिक कारण–आर्थिक संकट (Immediate causes-Economic crisis)

7.4.25 लुई 16वें के वितमन्त्रयों की नितियां (Policies of the finance minister of Louis 16)

7.4.26 क्रान्ति की घटनाऐं (Events of the Revolution)

7.4.27 फ्रांस की क्रान्ति के प्रभाव (Impact of French Revolution)

7.4.28 तात्कालिक प्रभाव फ्रांस पर (Immediate Effects on France)

7.4.29 निरंकु"ा राजतन्त्र का अन्त (End of Despotic Rule)

7.4.30 सामन्तवाद का अन्त (End of Feudal system)

7.4.31 मौलिक अधिकारों की प्राप्ति (Fundamental Rights)

7.4.32 शासन व्यवस्था में सुधार (Reform in Administrative System)

7.4.33 गणतन्त्रीय सिद्धान्तों की स्थापना (Establishment of Democratic Values)

7.4.34 न्याय प्रणाली में सुधार (Reform in judicial system)

7.4.35 सैनिक व्यवस्था में सुधार (Reforms in Military system)

7.4.36 मध्यम श्रेणी का प्रभूत्व (Rise of Middle class)

7.4.37 किसानो की द"ाा मे सुधार (Importance in Farmer's condition)

7.4.38 चर्च का पुनर्गठन (Re-organisation of Church)

7.4.39 ि"ाक्षा तथा साहित्य का विकास (Development in Education and Literature)

7.4.40 आर्थिक विकास (Economic Development)

7.4.41 अराजकता व रक्तपात (Anarchy and Bloodshed)

7.4.42 युरोप का प्रभाव (Impact on Europe)

7.4.43 युरोप का दो गुटों में विभाजन (Division of Europe in groups)

7.4.44 क्रान्ति पर प्रतिक्रिया (Reaction on Revolution)

7.4.45 युरोपीय दे"ाों का युद्वों में उलछझना (Involvement of European countries in wars)

7.4.46 युरोपीय संयुक्त व्यवस्था की स्थापना

7.4.47 वि"व पर स्थाई प्रभाव (Permanent Effects on World)

7.4.48 स्वतंत्रता, समानता व भाईचारे की भावना (sprit of freedom, equality, cooperation)

7.4.49 राष्ट्रीय भावना का उदय (Rise of Nationalism)

7.4.50 प्रजातन्त्रीय विचारों का विकास (Growth of Democratic Ideas)

7.4.51 जनकल्याण, समजवाद व अन्र्तराष्ट्रीयवाद (Public welfare Socialism and Internationalism)

7.5 प्रगति समीक्षा (Check your Progress)

7.6 सारां"ा (Summary)

7.7 संकेतेक शब्द (Key Words)

7.8 स्वयं मुल्यांकन परीक्षा (Self Assessment Test)

7.9 प्रगति समीक्षा हेतु उतर (Answer to check your Progress)

7.10 सन्दर्भ/सहायक अध्ययन सामग्री (References/Suggested Study Materials)

7.1 अधिगम उद्देश्य (Learning objectives)

इस अध्याय का अध्ययन करने के बाद आप निम्नलिखित जानकारी प्राप्त कर पाऐंगे।

1. फ्रांस में 1789 ई0 की क्रान्ति का जन्म किन उद्दे"यों को प्राप्त करने के लिए हुआ?
2. इस क्रांति ने फ्रांस तथा अन्य वि"व को कैसे प्रभावित किया?
3. इस क्रांति के लिए कौन सी परिस्थितियां उत्तरदायी थी?
4. क्रांति फ्रांस में ही क्यों हुई?
5. क्या यह क्रांति वि"व की अन्य क्रांतियों जैसी थी अथवा भिन्न थी?
6. क्या कोई नवीन सिद्धांत या विचारधारा का उद्भव इस समय हुआ?

7.2 परिचय (Introduction)

आधुनिक वि"व में लोकतंत्र की गति तीव्र करने में फ्रांस की 1789 ई0 की क्रांति की महत्वपूर्ण भूमिका थी। आधुनिक युग में जिन महापरिवर्तनों ने पुरातन शोषणकारी व्यवस्था को हिलाया उसमें यह क्रांति मील का पत्थर है। सम्पूर्ण शोषित मानव जाति को मुक्ति के लिए प्रेरित किया तथा स्वतंत्रता, समानता व बन्धुत्व के आधार पर राष्ट्र के निर्माण का मानचित्र प्रकट किया। आधुनिक वि"व की अन्य क्रांतियों की तुलना में कई आधारों से यह अनुपम थी। यह निरंकु"ा राजतंत्र, सामन्ती शोषण, वर्गीय वि"ोषाधिकारों तथा प्रजा के प्रति शासकों की उदासीनता के विरोध तथा आद"ा व्यवस्था के आधार पर आधुनिक समाज के नवनिर्माण के प्रयत्न का साकार रूप थी। अरस्तु के अनुसार क्रांति के बीच जनता की मनोद"ाा में होते हैं। किसी भी राष्ट्र में जनता जब इस निष्कर्ष पर पहुँच जाती है कि उनकी समस्याओं का मूल केन्द्र सत्ता है तब आमूलचूल परिवर्तन के लिए क्रांति का जन्म होता है।

लाल बहादुर वर्मा के अनुसार ''सामज के जिस वर्ग के हाथ में सत्ता होती है, वह तो परिवर्तन नही चाहता या उसी हद तक चाहता है जहाँ तक उसके हित सुरक्षित रह सकें। अन्य लोग जब इस स्थिति से बहुत असन्तुष्ट होने लगते हैं और विरोध मुखर होने की संभावना हो जाती है तब सुधार किये जाते है ताकि सतह पर थोड़े

परिवर्तन का भ्रम खड़ा करके मूलतः समाज का स्वरूप वही बना रहे और सत्ताधारी वर्ग को लाभ होता रहे। असंतुष्ट वर्ग में जब चेतना आती है तब वह क्षुब्ध होता है, तब उसे अपनी ताकत और विरोधियों की कमजोरी का एहसास हो जाता है त बवह उठ खड़ा होता है और समाज के स्वरूप में कुछ मौलिक परिवर्तन करना चाहता है। ऐसे ही संघर्ष में क्रांति का जन्म होता है।'' कभी भी क्रांति किसी एक कारण या परिस्थिती का परिणाम नही होती और न ही क्रांति के आरम्भ का हम नि"चत समय निर्धारित कर सकते है। कुछ इतिहासकार क्रांति का आरम्भ 5 मई 1789 ई0 से मानते हैं क्योंकि इसी दिन स्टेटस जनरल का अधिवे"ान आरम्भ हुआ जबकि कुछ 14 जुलाई 1789 ई0 को आरम्भ मानते है क्योंकि इस दिन बास्तील के दुर्ग का पतन हुआ। परन्तु वास्तव में अगर गहराई से वि"लेषण किया जाए तो कहा जा सकता है कि क्रांति के विषय में दो तरह की अवस्थाऐं होती है। एक अवस्था वह है जिसमें असंतुष्टता या अन्याय के कारण मन में क्रांति के विचार उत्पन्न होते है और यह लम्बी मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया होती है किन्तु जिस जनता या कोई वर्ग इन भावों को घटना के रूप में अभिव्यक्ति दे देता है, तब क्रांति का आरम्भ होता है। अतः फ्रांस की 1789 ई0 के क्रांति के मूल कारण वर्षों से चली रही पुरातन शोषणकारी व्यवस्थ में समाहित थे जो बास्तील के पतन के रूप में प्रकट हुऐ। किन कारणों अथवा परिस्थितियों से क्रांति का जन्म हुआ? क्या यह बौद्धिक जागरण के बिना सम्भव थी? यह हम आगे चर्चा करेगें।

विषय वस्तु के प्रमुख बिन्दु (Main body of the text) क्रान्ति फ्रांस में ही क्यों आरम्भ हुई (Why did the Revolution take place in France)

हमारे सामने एक प्र"न उठता है कि उस समय वि"व में क्या किसी अन्य दे"ा में जनता शोषित अथवा पीड़ित नहीं थी? क्या अन्य दे"ाो की शासन प्रणाली कल्याणकारी थी? युरोप के कई राष्ट्रों में फ्रांस से भी बदतर स्थिति थी किन्तु वहां पर क्रान्ति क्यों नहीं हुई। फ्रांस

में ही क्रान्ति होने के निम्नलिखित कारण थे:–

1. उस समय निरकुं"ा शासन प्रणाली थी किन्तु फ्रांस में तथा अन्य दे"ाों में अन्तर था। अन्य दे"ाों में ''प्रबद्ध निरकुं"ा शासक'' या ''उदारवादी निरकुं"ा शासक'' थे। इसका अर्थ है कि ये शासक निरकुं"ा तो थे किन्तु ये जनता के लिए कुछ सुधार कर रहे थे। इसके वितरित फ्रांस में ''पूर्ण निरकुं"ा'' शासक थे अतः यहां पर जनता अधिक पीड़ित थी।
2. अन्य युरोपीय दे"ाों में पीड़ित जनता ने अपने कष्टों को ई"वर की देन मान लिया। अरस्तु का विचार है कि अधिक कमजोर व्यक्ति भी क्रान्ति की बात नही सोचता यह नियम इन दे"ाों पर लागू होता है किन्तु फ्रांस का किसान या अन्य वर्ग अपने आप को इतना कमजोर नही मानता था अतः क्रान्तिकारी हो गया।
3. युरोप के अन्य दे"ाों में फ्रांस की तरह सम्पति का असमान वितरण इतना नहीं था।

4. फ्रांस ने इग्लैण्ड के विरूद्ध अमेरिकी क्रान्ति में भाग लिया था अतः यहां से भी स्वतन्त्रता व समानता के विचारों का प्रभाव पड़ा।
5. अन्य दे"ाों की राजनीतिक व प्र"ाासनिक द"ाा भी फ्रांस से भिन्न थी। वहां कोई एक राजनैतिक घटना पूरे राष्ट्र को प्रभावित नही करती थी किन्तु फ्रांस में एक घटना पूरी जनता को प्रभावित करती थी। पेरिस की हवा पूरे फ्रांस को हिला देती थी।
6. फ्रांस की सेना भी शासकों से असन्तुष्ट थी। क्योंकि इनको सुविधाऐं नही मिलती थी जबकि अन्य दे"ाों में ऐसा नही था।
7. किसी भी दे"ा में शोषण का जन्म होना ही क्रान्ति का कारण नही होता। जब तक कोई पीड़ित वर्ग को उसकी पीड़ा व शक्ति का अहसास न कराऐ तब तक वह परिवर्तन के लिए या क्रान्ति के लिए साहस नही करता यही समस्या अन्य दे"ाों मे थी किन्तु फ्रांस में मध्यम वर्ग था जिसने बौद्धिक चेतना पैदा की। माण्टेस्क्यू, वाल्वेयर, रूसो आदि ने पीड़ित जनता के अन्दर चेतना उत्पन्न की। मध्यम वर्ग ही भिन्न वर्ग को प्रेरित करता है ऐसी परिस्थितियां अन्य दे"ाों में नही थी अतः इन सभी कारणों से अन्य दे"ाों की तुलना में व्यवस्था परिवर्तन के लिए क्रान्ति हुई।

7.4 विषय वस्तु का पुनः प्रस्तुतीकरण–क्रान्ति के कारण (Further Main Body of Text) -Causes of Revolution)

जैसा कि हम पहले चर्चा कर चुके है कि क्रांति का कोई एक कारण नही होता। फ्रांस की क्रांति के लिए अनेक राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक कारण उतरदायी थे जिनका वर्णन इस प्रकार है।

7.4.1 राजनीतिक व्यवस्था (Political condition)

फ्रांस की क्रांति आरम्भ होने से लगभग 200 वर्ष पहले फ्रांस में बूर्बों राजवं"ा की नींव रखी गई। इस राजवं"ा के पांच शासकों ने लगभग दो शताब्दियों तक राज्य किया। प्रथम शताब्दी में तो फ्रांस में विकास हुआ किन्तु दूसरी शताब्दी में दे"ा की शासन व्यवस्था बिगड़ गई। फ्रांस की तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था के बारे में केटलबी ने लिख है, '"ाासको की नीति किसी सिद्धान्त पर नहीं, इच्छा पर निर्भर थी। इसलिए कोई आ"चर्य की बात नहीं होनी चाहिए कि क्रांतिकारियों की सबसे पहली मांग संविधान के लिए थी, जिसमें उनका अभिप्राय था– दे"ा में कुछ व्यवस्था, कुछ संगठन हो।'' लाल बहादुर वर्मा के अनुसार– ''बुर्बों वं"ा अपने अतीत में खोया हुआ था, न पुराना भूलता था और न नया सीखता था।'' फ्रांस की राजनीति व्यवस्था में निम्नलिखित दोष थे

7.4.2 निरंकुश राजतन्त्र (Despotic Monarchy)

फ्रांस में वं"ाानुगत निरंकु"ा राजतन्त्र था। हेनरी चतुर्थ ने 1589 से 1610 तक शासन किया इसके बाद लुई 13वें ने 1619 ई0 से 1643ई0 तक शासन किया यहां इतनी समस्या उत्पन्न हुई थी किन्तु शासन में बिगाड़ लुई 14वें के समय आरम्भ हुआ उसने 1643–1715 तक शासन किया इसके समय निरकुं"ाता पराकष्टा पर थी वह कहता था ''मैं ही राज्य हूं'' उसने अपने शासन के 28 वर्ष केवल युद्धो में बिताऐ। वह कैथोलिक धर्म का था इसलिए प्रोटेस्टेट मत के लोगों पर अत्याचार किऐ। इसके काल में किसान, कारीगर तथा व्यापारी परे"ाान थे। उसने शक्तियों का केन्द्रीकरण कर दिया इसके समय आर्थिक द"ाा बिगड़ चुकी थी। लेकिन मरने के समय उसे अपनी असफलता का एहसाह हो चला था इसलिए उसने अपने उतराधिकारी को सलाह दी थी–'जनहित के कार्य करना, युद्धन करना और सही सलाहकार रखना।'

लुई 14वें के बाद लुई 15वां ने 1715ई0 तक शासन किया। जब वह राजा बना तब केवल पांच वर्ष का था वह एक कमजोर व विलासी शासक था जिसकी प्र"ाासन में रूचि नही थी। उसने पड़ोसियों से युद्ध मोल लिया आस्ट्रिया के उतराधिकार और सत्पवर्षीय युद्धो में फ्रांस पराजित हुआ और उसकी शक्ति कमजोर हुई। वह अपने उतराधिकारियों के लिए विरासत में सैनिक पराजय, आर्थिक समस्या तथा बुद्धिजीवी वर्ग की नाराजगी छोड़ कर गया। उसका शासन तंत्र खोखला हो चुका था जिसकी जानकारी उसको हो गई थी इसलिए उसने कहा था 'मेरे मरने के बाद प्रलय होगी। लुई 16वां भी निरकुं"ा शासक था 'वह चीज इसलिए कानून है क्योंकि मैं यह चाहता हूं। फ्रांस में इस प्रकार निरकुं"ा राजतंत्र था तथा यह इसलिए भी था कि इन पर निरकुं"ा लगाने वाली जनता की कोई प्रतिनिधि संस्था नहीं थी। फ्रांस में स्टेटस जनरल नामक एक प्रतिनिधि सभा अव"य थी किन्तु 1614ई0 के बाद उसका कोई अधिवे"ान नही हुआ। 'पार्लेमा' एक अकुं"ा लगाने वाली संस्था थी इनकी संख्या तेरह थी। ये लुई 14वें के समय स्थापित उच्च अदालतें थी। इनका कार्य राजा के आदे"ाों को कानून के रूप में पंजीकृत करना था। यह आदे"ाों को पंजीकृत करने से मना कर सकती थी किन्तु राजा अगर दुबारा आदे"ा दे तो इनको मना करने का अधिकार नही था अतः स्पष्ट है कि फ्रांस में निरकुं"ा राजतन्त्र पर अकुं"ा लगाने वाली कोई शक्ति"ाली तथा प्रभावी संस्था नहीं थी। अतः सता का केन्द्रीयकरण होना व निरकुं"ा होना विरोध होना का प्रबल कारण बना।

7.4.3 अयोग्य शासक (Unable Kings)

निरकुं"ा शासन में अगर शासक योग्य हो तो विरोध नही होता। सत्यकेतु विद्यालंकार के अनुसार ''भोगाविलास प्रधान, स्वेच्छाचारी, एकातन्त्र शासन जनता के लिए असहनिय न होता यदि उसमें क्षमता होती।'' 14वां तथा उसके बाद के शासकों में अयोग्यता थी। वे स्वयं को परमे"वर का प्रतिनिधि समझते थे तथा जनकल्याणकारी नहीं थे। राजाओं का राज्य अथवा जनता की समस्याओं में कोई रूचि नहीं थी। लुई 16वें के समय तो अयोग्यता और अधिक प्रकट हो गई थी उसमें नेतृत्व की क्षमता नही थी तथा राजनीतिक दुरद"र्िाता का अभाव

था। वह ि"ाकार में समय बिताता अथवा तालों की मुरम्मत करता था। पहले के शासकों ने हालांकि विरासत में अनेक समस्या दी परन्तु वह बुद्धिमता से निर्णय लेता तो शायद क्रान्ति को रोका जा सकता था। उसके उपर उसकी अयोग्य पत्नी मेरी 'एन्तोयनेत' का भी प्रभाव था। नैथोनियल प्लैट तथा म्यूयिल जीन ड्रमंड के अनुसार– ''लुई 1वां वस्तुतः कभी बड़ा हुआ ही नही'' इसी कारण वह स्वयं निर्णय नहीं ले पाता था। वह अयोग्य रानी का गुलाम था। मेरी एन्तोयनेत आस्ट्रिया की महारानी मेरिया थेरिसा की पुत्री थी। उसके विदे"ाी होने कारण फ्रांस के लोग उसे प्रसन्द करते थे। जब फ्रांस की जनता भूख से मर रही थी तब रानी धन को अपनी कीमती पो"ााक तथा रहन–सहन पर खर्च कर देती थी इसलिए जनता उसको 'श्रीमति घाटा' कहती थी। फि"ार ने इस द"ाा पर लिखा है आलोचको को वह ऐसे साइरिन (भोंपू) के समान प्रतीता होती थी, जो कि राज्य रूपी जहाज को चट्टानों की ओर ले जा रहा हो। फिर भी शायद वह क्रूर उतनी नहीं थी, जितनी की विचारहीन। किसी भी राज्य में कठिनाइयों का आना स्वाभाविक है किन्तु शासकों की अयोग्यता संकट को अधिक बढ़ा देती है जिसके कारण सभी समस्याओं का मूल कारण सता बन जाती है और परिवर्तन के लिए क्रान्ति का जन्म होता है।

7.4.4 दोषपूर्ण शासन प्रणाली (Defective Administrative system)

किसी भी राष्ट्र में दोषपूर्ण शासन प्रणाली विरोध का प्रमुख कारण बनती है। लुई 14वां व उसके उतराधिकारों के समय शासन व्यवस्था अच्छी नही थी। लुई 15वें शासन के बारें में आस्ट्रिया के राजदूत काम्टे डे मर्सी ने साम्राज्ञी मेंरिया थेरिसा को लिखा– ''दरबार मं अन्याय, गड़बड़ और दुष्कार्यों के अतिरिक्त कुछ नही है। प्र"ाासन के अच्छे सिद्धान्तों का पालन करने का प्रयत्न नही किया जा रहा है। प्रत्येक चीज भाग्य पर छूटी हुई है। ''डा0 जी0 पी0गूच के मतानुसार ''लुई 15वें अपने'' दे"ावासियों को एक कु"ाासित, असंतुष्ट और निरा"ाग्रस्त फ्रांस वसीयत में दिया। दूर से देखने पर प्राचीन शासन व्यवस्था ठोस मालूम होती थी किन्तु मरम्मत न होने के कारण इसकी दीवारें गिर रही थी नीव हटते आने के कारण चिन्ह छोड़ रही थी।'' शासन प्रणाली में अगर जनता का प्रतिनिधित्व हो तो भी विरोध नही होता क्योंकि जनसमस्याऐं उनके माध्यम से शासक तक पहुंचाई जा सकती है लेकिन फ्रांस की शासन प्रणाली इस प्रकार की नही थी। पार्लेमा तथा स्टेटस जनरल शक्तिहीन हो चुकी थी यह चर्चा हम पहले कर चुके है। फ्रांस के प्रान्तों पर केन्द्र का नियन्त्रण ढीला पड़ गया था। पूरे दे"ा में 285 स्थानीय विधि प्रणालियां प्रचलित थी। फ्रांस दो प्रकार के प्रान्तों में बटा हुआ था। इस प्रकार के प्राचीन प्रान्त जो गवर्नमेन्ट कहलाते थे जिनकी संख्या 40 थी। इनका शासन राजा द्वारा नियुक्त गर्वनरों द्वारा होता था जो कि उच्च वर्ग के कुलीन थे। दूसरे प्रकार के प्रान्त जिनकी संख्या 34 थी, जेनेरालिते कहलाते थे। इनका शासन राजा द्वारा नियुक्त एतांदा द्वारा किया जाता था जो कि उच्च कुलीन वं"ा के होते थे। ये स्थानीय शान्ति, सुरक्षा व प्र"ाासनिक कार्य सम्भालते थे। ये जनता की समस्याओं पर ध्यान नहीं देते थे। पदों पर नियुक्ति का आधार योग्यता नही था।

प्र"ाासन में न्याय प्रणाली भी भ्रष्ट थी। न्यायधि"ाों की नियुक्ति धन के आधार पर होती थी अतः ये भी फैसला धन लेकर ही करते थे। मुकदमा जीतने वाले न्यायधी"ा को भेंट देते थे जिसे 'एपाइसिज' कहा जाता था। फ्रांस के कानून क्षेत्र के अनुसार बदल जाते थे। इस अवस्था पर विचारक वाल्तेयर ने कहा कि ''किसी व्यक्ति को फ्रांस में यात्रा करते समय सरकारी कानून उसी प्रकार बदलते हुए मिलते है, जिस प्रकार उनकी गाड़ी के घोड़े बदलते है।''

व्यक्तिगत स्वतन्त्रता भी नगण्य थी। एक प्रकार का बारंट (लेत्र द का"ो) जारी कर किसी व्यक्ति को कभी भी गिरफ्तार किया जा सकता था और बिना मुकदमा चलाये ही उसे जेल में रखा जा सकता था। दिदरों और वाल्तेयर जैसे विचारको को बास्तील के दुर्ग में कैद की सजा भुगतनी पड़ी थी। दण्ड व्यवस्था कठोर व पक्षपातपूर्ण थी। इस फ्रांस के प्रत्येक क्षेत्र में दोष थे। लाल बहादुर वर्मा के अनुसार ''फ्रांस में राजनीतिक जीवन में एक तरह की सड़ांघ पैदा हो गई थी। इस जीवन में न तो तो इग्लैण्ड के समान गति"ाीलता थी और न प्र"ाा की तरह तथा कथित प्रबुद्धता। सारी व्यवस्था एक वर्ग, एक व्यक्ति और एक परिवार के हित में थी तथा वह व्यक्ति स्वयं अपने, हितों के प्रति अचेत और अयोग्य था। बाकी सभी समर्थ लोग अपने ढ़ग से अपने हित साधने में रत थे। सांरा"ा यह है कि फ्रांस राजनीतिक जीवन भृष्ट गतिहीन और जर्जर हो चला था और सताधारी लोग यथास्थितीवाद के पक्ष में चिपक कर परिवर्तन के लिए तैयार न थे।'' ऐसी दोषपूर्ण प्रणाली ने जनता को क्रान्ति के लिए विव"ा किया।

7.4.5 शासकों की विलासिता (Luxurious Life of Rules)

शासकों की जीवन शैली का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव जनता पर अव"य पड़ता है। फ्रांस का जीवन भोग विलास का था। राजा का महल फ्रांस की राजधानी पेरिस से लगभग 20 किलोमीटर दूर वर्साय नामक स्थान पर था। शाही दरबार में 18000 व्यक्ति थे जिन में 16000 तो सम्राट तथा उसके परिवार के सदस्य थे 2000 उच्च कुलीन वर्ग के लोग थे। केवल महारानी के सेवा के लिए 500 सेवक थे। यह अनुमान लगाया गया है कि 1789 ई0 में शाही दरबार का खर्च 2 करोड़ डालर (16–17 करोड़) रूपये था। इतनी, अधिक अपव्ययता के कारण दरबार को 'राष्ट्र की समाधि' कहा जाने लगा था। इस प्रकार शासकों का भोग विलासी जीवन तथा दूसरी तरफ जनता गरीब व भूख से मर रही थी। ऐसा वातावरण सता और व्यवस्था परिवर्तन का कारण बनता है।

7.4.6 सामाजिक कारण (Social causes)

विद्याधर महाजन के अनुसार ''फ्रांस में क्रान्ति में सबसे महत्वपूर्ण कारण सामाजिक थे। 1789 ई0 क्रान्ति स्वेच्छाचारी दमनपूर्ण शासन पद्धति के विरूद्ध युद्ध होने की अपेक्षा समाज की असमानता के विरूद्ध एक महान संघर्ष था।'' यह क्रान्ति दोहरी क्रान्ति थी जिसमें एक तरफ अधिकारहीन वर्ग था जिसका शोषण उच्चवर्ग व सता दोनों कर रहे थे अतः दोनों के विरोध में फ्रांस के इस सामान्य व पीड़ित वर्ग को विरोधी होना पड़ा। सामाजिक कारणों को गहराई से समझने के लिए उस समय की सामाजिक संरचना या वर्गोकरण को समझना आव"यक है।

7.4.7 सामाजिक वर्गीकरण (Social classification)

फ्रांस की सामाजिक संरचना भेदभाव व शोषण पर आधारित थी जिसमें असमानता थी। एक वर्ग अधिकार हीन व सुविधाहीन था जिसे जीविका के लिए कड़ा परिश्रम करना पड़ता था दूसरी तरफ सुविधा भोगी व वि"ोषाधिकार युक्त वर्ग था जो ऐ"वर्यपुणक जीवन जीता था। नेपोलियन बोनापार्ट के शब्दों में ''फ्रांस की क्रान्ति समूचे राष्ट्र द्वारा वि"ोषाधिकार प्राप्त वर्गो के विरूद्ध एक सामूहिक विद्रोह था।'' फ्रांस की सामाजिक संरचना इस प्रकार थी।

समाज में तीन वर्ग थे। पहला वर्ग पादरियों का दूसरा कूलीनों का और तीसरा साधारण लोगों का था। पहले दो वर्गो की जनसंख्या 2 प्रति"ात से भी कम थी यह वि"ोषाधिकार युक्त वर्ग था। ये सरकार को कर भी नही देते थे। दूसरी तरफ बहुसंख्या परिश्रम करती है। किन्तु उनका जीवन दयनीय है।

फ्रांस के समाज की दशा का चित्र

सता	
वि"ोषाधिकार युक्त वर्ग (फ्रांस की कुल जनसंख्या 2 प्रति"ात) 1. उच्च स्तर के पादरी 2. प्राचीन कुलीन अथवा तलवार के कुलीन	अधिकार हीन व सुविधाहीन वर्ग (98 प्रति"ात कुल जनसंख्या का) 3. साधारण वर्ग 1. किसना, 2. मध्यम श्रेणी, 3. मजदूर, 2. 4. कारीगर, 5. अन्य निर्धन लोग

उपरोक्त सामाजिक द"ाा का चित्र स्पष्ट करता है कि वि"ोषाधिकार प्राप्त और सता का गठजोड़ है अतः यह वर्ग सता के सहयोग से अधिकार प्राप्त करता है तथा संविधापूर्वक जीवन जीता है जिनकी संख्या कम है तथा यह तीसरे वर्ग अर्थात् साधरण वर्ग का शोषण करता है। आइए अब विस्तार से फ्रांस की सामाजिक तस्वीरो का देखते है कि कैसे समाज के कुछ वर्ग विरोधी हो गए थे–

प्रथम वर्गः– पादरी। प्रथम वर्ग पादरियों का था इनमें दो प्रकार के पादरी थे।

1. **उच्चस्तर के पादरी, 2. निम्नस्तर के पादरी**

उच्चस्तर के पादरीः–

ये कुलीन परिवारों के थे। चर्च की सम्पति पर इनका अधिकार था। चर्च की सम्पति पर इनका अधिकार था। चर्च का आय का 10 प्रति"ात भाग इनको मिलता था। ये बहुत अमीर थे लेकिन सरकार को

कर नही देते थे। चरित्रहीन थे और ई"वर में इनका कोई वि"वास नहीं था। चर्च राज्य के भीरत एक राज्य था।

निम्नस्तर के पादरीः–

इनकी संख्या उच्च स्तर के पादरियों से अधिक थी। ये साधारण परिवारों के थे तथा गांवों में रहते थे। ये परिश्रमी व ईमानदार थे तथा धार्मिक कर्तव्यों का पालन करते थे ये जनता के धार्मिक संस्कार पूरे करवाने में भूमिका निभाते थे सब कुछ करने के बाद भी ये गरीब थे तथा कठिनता से जीवन निर्वाह करते थे। ये उच्च पादरियों से नफरत करते थे तथा साधारण वर्ग से मिल गए थे।

दूसरा वर्ग, कुलीन वर्ग कुलीन वर्ग दो प्रकार का था

1. प्राचीन कुलीन अथवा तलवार के कुलीन
2. नये कुलीन अथवा वस्त्र के कुलीन

प्राचीन अथवा तलवार के कुलीन

ये आरम्भ से ही तलवार रखते थे तथा साधारण वर्ग की रक्षा के लिए युद्ध करते थे इसलिए तलवार के कुलीन कहलाए। इनका पद पैतृक था ये अपने–अपने क्षेत्र में प्रबंन्धक एवं सैनिक नेता का कार्य करते थे। परन्तु क्रान्ति से बहुत पहले इन्होनें ये कार्य छोड़ दिये थे तथा दरबार की छत्रछाया में रहने लगे थे इस कारण ''दरबारी कुलीन'' कहलाए। ये अमीर थे तथा भोग विलास का जीवन जीते थे। गांव में जो कुलीन रहते थे उनको 'ग्रामीण कुलीन' कहा जाता था। प्राचीन कुलीनों का राजा से गठजोड़ था इसलिए यह वर्ग वि"ोषधिकार प्राप्त वर्ग था जो विभिन्न माध्यमों से तीसरे अर्थात् साधारण वर्ग का शोषण करता था। कुलीन वर्ग के पास अनेक वि"ोषाधिकार व उपाधियां थी। वे डयूक, मार्किवस, काऊंट, विस्काऊट आदि उपाधियां धारण करते थे। उनका अपराध सिद्ध होने पर भी उन्हें साधारण वर्ग से कम सजा दी जाती थी। सामन्त अथवा जागीदार के अधिकार भी इनको प्राप्त थे इनको मेरे मालिक (My Lord) और अन्नदाता कहा जाता था। बी0डी0 महाजन के अनुसार ''अनुमान किया जाता है कि जागीदार और धर्मधिकारियों के पास समस्त सम्पति का पाँचवा भाग था अर्थात् एक प्रति"ात लोगों के पास दे"ा की चालीस प्रति"ात सम्पति थी। एक और उन्हें वि"ोष सुविधाएं थी और दूसरी और उन्हें राज्स कर से छूट थी। फ्रांस में एक कहावत प्रचलित थी जागीदार युद्ध करते है, धर्मचार्य प्रार्थना करते है और जनता कर देती है। इसी संदर्भ में फ्रांसीसी राजनीतिक थियर्स का मत है ''बगावत राजगदी के विरूद्ध कम तथा कुलीन वर्ग के अत्याचारों के विरूद्ध अधिक थी।''

नए कुलीन अथवा वस्त्र के कुलीन

लुई 14वें के काल में कुलीनों की एक नई श्रेणी का उत्थान हुआ, जो अपने वि"ोष प्रकार के वस्त्रों के कारण वस्त्र के कुलीन कहलाए। सम्राट ने धन की आव"यकता के कारण प्र"ाासन के उच्च पद पैसे में मध्यम श्रेणी के लोगों को बेच दिए इस प्रकार यह वर्ग नया कुलीन वर्ग बना इनमें पार्लोमा के न्यायधी"ा वि"ोष रूप से महत्वपूर्ण थे। ये अमीर थे तथा धीरे–धीरे इनकी शक्ति बढ़ने लगी थी। ये सम्राट की निरकुं"ाता पर अकुं"ा लगाने का कार्य करते थे। इनकी साधारण वर्ग से सहानुभूति थी। इस प्रकार इन्होनें ही साधारण वर्ग का क्रान्तियों साथ दिया। इसे इस चित्र के माध्यम से समझा जा सकता है।

फ्रांस की सता का पक्ष व विपक्ष का चित्र

विपक्ष	पक्ष
1. साधारण वर्ग किसान, मजदूर, किसान व गरीब वर्ग 2. निम्नस्तर के पादरी 3. नया कुलीन वर्ग 4. मध्यम वर्ग	1. उच्च स्तर के पादर 2. प्राचीन कुलीन वर्ग

तीसरा वर्ग

यह वर्ग फ्रांस की जनसंख्या का लगभग 98 प्रति"ात था अधिकारहीन तथा सुविधाहीन वर्ग था इनमें किसान, मध्यम वर्ग मजदूर, दस्तकार व अन्य निर्धन वर्ग था।

किसान वर्ग

फ्रांस की जनसंख्या का लगभग 88 प्रति"ात भाग कृषि कार्य करता था। ये कई प्रकार के थे पहली श्रेणी उन किसानों की थी जो भूमि के स्वामी होते थे तथा दे"ा की 30 से 40 प्रति"ात भूमि पर इनका अधिकार था। दूसरी श्रेणी मुजारों की थी जिन्हें 'मेंतायर' भी कहा जाता था ये जमीदारों से कुछ वर्ष के लिए भूमि ठेके पर ले लेते थे। ये निर्धन थे तीसरी श्रेणी में दास थे। चौथी श्रेणी भूमिहीन मजदूरों की थी। इन सभी का शोषण होता था तथा ये शासन प्रणाली से नाराज थे।

मध्यम वर्ग

तीसरे वर्ग में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका मध्यम वर्ग की थी। जिन्होने क्रान्ति का नेतृत्व किया था। इस वर्ग में व्यापारी, उद्योगपति, महाजन, वकील, डाक्टर, अध्यापक, लेखक विद्वान, पत्रकार आदि थे। ये जागरूक वर्ग था जो

अधिक तंग तो नही था लेकिन इनके अन्दर यह विचार अव"य था कि उन्हें योग्यता के अनुसार सम्मान नहीं दिया जा रहा। अतः असमानता भी क्रान्ति का कारण बना। अरस्तु के क्रान्ति के कारणों का विचार यह सटीक बैठता है। उन्होनें यह विचार दिया था कि असमानता क्रान्ति का कारण बनती है। इस वर्ग में कुछ ऐसे लोग भी थे जिन्होनें अपनी शक्ति बढ़ा ली थी जैसे पार्लेमा के न्यायधी"ा। इन्होनें शोषणकारी सता का चरित्र जनता के समक्ष प्रकट करके क्रान्ति में भाग लिया था।

मजदूर, कारीगर व अन्य निर्धन वर्ग

यह वर्ग भी बहुत तंग था सता की नीतियों ने इनका जीवन कष्टकारी बना दिया था। अतः भूख व गरीब से विव"ा यह वर्ग क्रान्तिकारी बन गया था। नेपोलियन के अनुसार– ''इन सभी बुराईयों ने जनसाधारण को विद्रोह के लिए प्रोत्साहन दिया। क्रान्ति का मुख्य उद्दे"य सब प्रकार की वि"ोष सुविधाओं और अधिकारों की समाप्ति जागीदारों की अदालतों की समाप्ति, जनसाधारण की दासता की याद दिलाने वाले सारे सामन्त"ाही अधिकारों को नष्ट करना....समस्त नागरिकों को अपनी योग्यता, पसन्द और अवसर के अनुसार राज्य के सभी पदों को प्राप्त करने का अधिकार देना था।''

7.4.8 आर्थिक व्यवस्था (Economic condition)

फ्रांस की आर्थिक व्यवस्था भी क्रान्ति का कारण बनी। विख्यात फ्रांसीसी इतिहासकार लफेब्वर के अनुसार फ्रांसीसी समाज का ढ़ाँचा सामन्ती था, लेकिन आर्थिक शक्ति पूंजीपति के हाथ में आती जा रही थी। यही विसंगति फ्रांस के आर्थिक जीवन की सबसे बड़ी समस्या थी। वी0डी0 महाजन के अनुसार यह सत्य है कि ''क्रान्ति का मूल आधार आर्थिक था और दा"ानिकता ने जो प्रवाह प्रवाहित किया, उसकी मुख्य शक्ति आर्थिक थी। आर्थिक कारण ही क्रान्ति के वास्तविक नीव थे। फ्रांस की आर्थिक द"ाा में निम्नलिखित दोष थे–

7.4.9 सम्पति का असमात वितरण (Unequal distribution of Property)

किसी भी राष्ट्र में सम्पति का असमान वितरण भी विरोध का कारण बनता हैं। फ्रांस की अधिकतर सम्पति पर शासक वर्ग के अतिरिक्त उच्च पादरी प्राचीन कुलीन वर्ग का प्रभुत्व था। जिसकी संख्या कम थी उनके पास अधिक धन था वह राष्ट्र के लिए पसीना नही बहाते थे जबकि बहुसंख्यक वर्ग कठोर परिश्रम के बाद भी भूखा था उनका जीवन दयनीय था। इस कारण यह द"ाा विरोध का कारण बनी।

7.4.10 असन्तोषजनक कृषि व्यवस्था (Unsatisfactory Agrarian system)

फ्रांस में कृषि अवस्था अच्छी नही थी। यह व्यवस्था सामन्तवाद पर आधारित थी। किसान को भूमि पर परिश्रम करने के बाद भी अच्छा जीवन नही मिला। खेती के तरीके प्राचीन थे तथा सामन्त व सता उनमें सुधार के प्रयास नही

करते थे। किसान की उपज का लगभग 80 प्रति”ात भाग उसके हाथ से चला जाता था। उन्हें सामन्तों के लिए बेगार भी करनी पड़ती थी अतः किसान दुःखी थे।

7.4.11 गिल्ड प्रणाली (Guild System)

फ्रांस में वस्तुओं के उत्पादन के लिए संघ अथवा गिल्ड थे। इस प्रणाली के अनुसार कारीगर अपनी इच्छानुसार उत्पादन नही कर सकता था उसको गिल्ड अथवा संघ के मालिक के अनुसार कार्य करना पड़ता था। ये मालिक कारीगरों का शोषण करते थे। इस प्रकार यह प्रणाली दोषपूर्ण थी जो व्यापार, उद्योग तथा दस्तकार सभी के विकास में बाधक थी।

7.4.12 व्यापार पर प्रतिबन्ध (Restrictions on Trade)

फ्रांस में व्यापार के नियम अच्छे नही थे सीमा शुल्क नीति व्यापार में समस्या थी। दे”ा के सीमा शुल्क नीति व्यापार में समस्या थी। दे”ा में माप तौल के एक जैसे साधन नही थे। कहने का तात्पर्य यह है कि सरकार ने व्यापार के विकास के लिए अच्छी योजनाएं नही बनाई। परिणामस्वरूप व्यापार व व्यापारियों का विकास नहीं हो पाया।

7.4.13 दोषपूर्णकर प्रणाली (Defective Tax System)

फ्रांस की कर प्रणाली अव्यवस्थित व दोषपूर्ण थी। कर लगाने व वसुलने का तरीका अनुचित व अन्यायपूर्ण था। दे”ा के पादरी व कुलीन जो 40 प्रति”ात सम्पति के स्वामी थे वह कर मुक्त थे तथा ऐसे वर्गो पर लगाए गये जिनके पास सम्पति नही थी तथा जो पहले ही गरीब थे। कई प्रकार के प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष कर प्रचलित थे। प्रत्यक्ष करो में भूमिकर व आय कर था। अप्रत्यक्ष कर में नमक कर सीमा शुल्क कर, तम्बाकु कर आदि थे। इनमें नमक कर (गेबेल) अधिक दुःख दायी थी। प्रत्येक सात वर्ष से अधिक आयु वाले व्यक्ति को प्रत्येक वर्ष सात पौण्ड नमक खरीदना अनिवार्य था। नमक के व्यापार पर एक कम्पनी का एकाधिकार था। कम्पनी मनमाने भाव पर नमक बेचती थी। जिन लोगों के पास रोटी के पैसे नही हों तो भी नमक खरीदना पड़ता था। किसान भी चर्च को एक कर देते थे जिसका नाम 'टाइथ' था यह उपज का दसवाँ भाग देना पड़ता था। कर वसूलने का तरीका भी अत्याचार पूर्ण था। यह कार्य ठेके प्रथा के अनुसार होता था। ये ठेकेदार एकत्रित कर में बहुत सा धन प्राप्त करते थे। इस प्रकार शासकों में इस कर प्रणाली में सुधार नही किए जिसके कारण विरोध हुआ।

7.4.14 निर्धनता (Poverty)

निर्धनता दो प्रकार की होती है एक प्राकृतिक तथा दूसरी बनावटी अथवा मानव निर्मित। फ्रांस में निर्धनता प्राकृतिक नही थी अर्थात् संसाधनों की कमी से गरीबी पैदा नही हुई अपितु शासक वर्ग की नीतियों से निर्धनता पैदा हुई। दे"ा का कारीगर, मजदूर व किसान वर्ग भूख से तंग आ गया उनके सामने क्रान्ति के अतिरिक्त विकल्प नही था।

7.4.15 धार्मिक कारण (Religious Casuses)

वि"व के अधिकतर राष्ट्रों में सता व धर्म का गठजोड़ पाया जाता है। वैसे तो प्राचीन समय में 'धर्म' का उद्गम एक जीवन शैली के रूप में हुआ था ताकि एक संयम"ील जीवन के माध्यम से अच्छे समाज का निर्माण हो सके किन्तु स्वार्थ व लोग ने धर्म को सता प्राप्ति का मार्ग भी बना दिया। निरकुं"ा व भ्रष्ट शासकों ने सता को स्थाई बनाने के लिए धर्म की मोहर लगवानी आरम्भ कर दी और अत्याचारी शासकों को भी भगवान का प्रतिनिधि बताया गया। फ्रांस में भी धर्म का सता के साथ गठजोड़ था। यह दोनों ही एक दूसरे की बुराईयों का संरक्षण करते है किन्तु जब यह 'ाड्यन्त्र जनता के सामने प्रकट हो जाता है तो क्रान्ति का जन्म होता है। फ्रांस की धार्मिक द"ाा में निम्नलिखित दोष थे।

7.4.16 चर्च का स्वरूप (Nature of Church)

जैसा कि हमने चर्चा की धर्म का उद्भव आद"ा व समतावादी समाज के लिए हुआ। किन्तु वर्ष का फ्रांस में सता के साथ गठजोड़ थे। दे"ा की समस्त भूमि का पांचवा भाग चर्च के नियन्त्रण में था। चर्च अमीर हो गई थी जिसके कारण उनका सता में भी भागीदारी थी इसी कारण चर्च को राज्य के भीतर राज्य कहा गया। ये चरित्र हीन थे तथा परिश्रमी नही थे। भोगविलास का जीवन जीते थे। अतः चर्च का स्वरूप अच्छा नही था।

7.4.17 पादरियों की चरित्रहीनता (Degeneration of clergy)

उच्च पादरी चरित्र हीन थे। मदिरा का सेवन करते थे तथा आपके धार्मिक कर्तव्यों का पालन नही करते थे। यह वि"ोषाधिकार युक्त वर्ग था।

7.4.18 चर्च व शासक का गठबन्धन (Chruch Alignment with kings)

फ्रांस में चर्च व राजा का गठबन्धन था। चर्च प्रतिवर्ष एक धनरा"ा राजा को देती थी इसके बदले राजा चर्च के वि"ोषाधिकारों की रक्षा करता था। ये दोनों मिलकर दे"ा को लूट रहे थे यह 'ड्रामा' जनता को पता लग गया था।

7.4.19 धार्मिक असहसनशीलता (Religious Intolerance)

फ्रांस ने रोमन कैथेलिक धर्म सरकारी तौर पर स्वीकार कर लिया था। अन्य धर्मो के लोगों का सम्मान नही मिलता था। इसी कारण लुई 14वें को ''सबसे कट्टर ईसाई सम्राट और चर्च का ज्येष्ट पुत्र'' कहा गया। इसने प्रोटेस्टेट

धर्म पर अत्याचार किये। इस प्रकार जनता में धार्मिक स्वतन्त्रता की मांग उत्पन्न हुई। धार्मिक आधार पर सता की स्थापना स्थाई नहीं हो सकती।

7.4.20 बौद्धिक जागरण की भुमिका (Role of Intellectual awareness)

किसी भी राष्ट्र में मात्र शोषण या अत्याचारों का बढ़ना ही क्रान्ति का कारण नही होता। जब तक शोषित व पीड़ित वर्ग को उसकी शक्ति का अहसास न कराया जाये तब तक वह क्रान्ति नही करता अपितु अपने कष्टकारी वर्तमान को भाग्य समझ लेता है। यह चेतना उत्पन्न करने का कार्य फ्रांस में बौद्धिक जागरण ने किया। बौद्धिक जागरण व्यक्ति के अन्दर तार्किक वि"लेषण की योग्यता उत्पन्न करता है और वह व्यवस्था में उसकी समस्या का बीज खोजता है। फ्रांस की क्रान्ति में बौद्धिक जागरण की भूमिका का मुल्यांकन हम बाद में करेगें। पहले इन दा"ानिक, लेखक अथवा विचारक के विचारों का गहराई से अध्ययन करेगें ताकि मुल्यांकन में आसानी हो सके।

मातेस्क्यु

(1685–1753ई0) बैरन–द–मांतेस्क्यु वर्षो तक बोर्दो का न्याधी"ा रहा। वह सम्राट की निरकुं"ाता का विरोधी व कुलीनों के वि"ोषाधिकारों का पक्षधर था क्योंकि वह उन्हें सम्राट की निरकुं"ाता पर उपयोग रोक समझता था। मांतेस्क्यु की प्रसिद्ध पुस्तक 'स्पिरिट ऑफ–दि–लाज' (Sprit of the Laws) में उसके विचारों की जानकारी मिलती है। उसने इसमें प्र"ाासन की शक्तियों के बंटवारें का विचार किया। उसने निरकुं"ाता का खण्डन तथा सीमित राजतन्त्र का समर्थन किया।

बाल्तेयर (1694–1778)

वाल्तेयर ने भ्रष्ट एकतन्त्र की आलोचना की। उसने तत्कालीन फ्रांसीसी समाज और व्यवस्था की कटु आलोचना की। उसने समाज, धर्म, प्र"ाासन, अर्थव्यवस्था, न्याय प्रणाली आदि प्रत्येक क्षेत्र के दोषों को जनता के समक्ष उजागर किया। लाल बहादुर वर्मा के अनुसार– ''वह यह तो जानता था कि क्या अच्छा है लेकिन इस अच्छे कार्य को क्रियान्वित करने के लिए उसके पास न तो वि"लेषण था और न ही कोई कार्यक्रम। वह इस बात का सुझाव न दे सका कि इग्लैण्ड की संस्थाएं फ्रांस में कैसे लाई जाए। इसलिए उसकी आलोचना को रचनात्मक स्वर नही मिला।'' इसके बाद भी उसके जनता में चेतना अव"य उत्पन्न की।

रूसो (1712–1778)

फ्रांस के दा"ानिकों में सबसे अधिक योगदान रूसो का था। उसने कई पुस्तकें लिखी जिनमें उसकी आत्मकथा 'Confession' तथा The Social Contract (सामाजिक समझौता) वि"ोष रूप से प्रसिद्ध है। रूसोने न केवल प्रचलित शासन प्रणाली के दोषों, राजा की निरकुं"ा शक्तियों और कुलीनों के वि"ोषाधिकारों का खण्डन किया अपितु

तत्कालीन राजनीतिक और समाजिक व्यवस्था में सुधार करने की बात कही वह स्वतन्त्रता व समानता का पक्षधर था। उसने अपनी पुस्तक सामाजिक समझौता में लिखा ''मनुष्य स्वतन्त्र पैदा हुआ है परन्तु प्रत्येक स्थान पर वह जंजीरों में जकड़ा हुआ है।'' उसने जनता की प्रभुता के विचार का प्रचार किया। रूसों ने जनसाधारण से अपील की ''समाज के बनावटी ढांचे को, गन्दी इच्छाओं और यातानापूर्ण धन से भरें संसार को, व्यवस्था के नाम से पुकारे जाने वाले अत्याचार को, ज्ञान कहे जाने वाले अज्ञान को, उखाड़ फेंको। इसकी असमानताओं को गिराकर समान कर दो। इस प्रकार के विचारों से रूसों ने पीड़ित जनता को स्वतन्त्रता व समानता का सपना दिखाया। इसलिए नेपोलिय ने कहा था कि रूसो के बिना फ्रांसीसी क्रान्ति नही हो सकती थी।

अन्य विचारक

फ्रांस की क्रान्ति में छोटे–छोटे विचारकों ने भी योगदान दिया। हेलवि"ियस ने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया कि स्वार्थ ही मनुष्य के विचारों और चरित्र को बनाता है और आनन्द की प्राप्ति चरम लक्ष्य है। उसके अनुसार धर्म और राजनैतिक त्रुटियों ने सारे संसार को आंसुओं की घाटी बना डाला है। दिदरों ने 'वि"वकोष' का सम्पादन किया। उसके निरकुं"ा शासन, वि"ोषाधिकारों, अनुचित कानूनों, चर्च की बुराइयों का विरोध किया। क्वस्ने, गार्ने तथा तुर्गो ने फ्रांस की शासन व्यवस्था के दोषों को उजागर किया।

विचारकों की भूमिका का मुल्यांकन

फ्रांस की क्रान्ति में विचारकों की भूमिका अथवा योगदान के बारें में इतिहासकारों में मतभेद है। इन सभी प्रमुख विचारकों के कारण क्रान्ति का जन्म हुआ या नही अर्थात् क्या बौद्धिक जागरण के बिना क्रान्ति सम्भव थी? इस प्र"न के सत्य को जानने से पहले दो वि"ोष बातों का जानना अति आव"यक है। पहली बात यह है कि सभी विचारकों के विचार एक जैसे नही थे अतः सभी को तराजु के एक पलड़े में नही रखा जा सकता। उदाहरण के लिए रूसों के अलग विचार थे तथा अन्य विचारकों के अलग। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि परिवर्तन के दो तरीके होते है पहला सुधार तथा दूसरा क्रान्ति। इनमें अन्तर समझना आव"यक है। सुधार का मार्ग व्यवस्था परिवर्तन का पक्षधर नही होता अपितु उसी व्यवस्था में कुछ सुधार या सं"ोधन चाहता है। जबकि क्रान्ति का अर्थ पूरी तरह से व्यवस्था परिवर्तन है। बाल्लेयर तथा मातेस्क्यु सुधारवादी थे तथा रूसों क्रान्ति मार्ग का पक्षधर था।

प्रसिद्ध इतिहासकार थॉमसन के अनुसार ''फ्रांस के दा"ानिकों और 1789 ई0 में हुई क्रान्ति के बीच बड़ी दूर का और परोकष सम्बन्ध है। उन्होनें क्रान्ति का उपदे"ा नही दिया ये लोग किसी भी ऐसे राजा की सहायता करने के लिए तैयार थे जो इनका संरक्षण करने और इनकी "िाक्षा मानने के लिए तैयार होता। इनके समर्थक भी बहुत से क्रान्ति के लिए प्रयत्न"ील अथवा चाहने वाले नही थे। स्वयं उनमें बहुत से पूंजीपति, वकील, व्यापारी आदि थे

जिनकी स्थिति अन्य लोगों से कहीं अच्छी थी'' इतिहास हेजन का विचार है कि फ्रांस की क्रान्ति दा"र्निकों के कारण नही हुई वरन राष्ट्रीय जीवन की बुराइयों, परिस्थितयों तथा सरकार की त्रुटियों के कारण हुई।

परन्तु मेलट, क्रॅापट किन आदि इतिहासकारों का मानना है कि क्रान्ति दा"र्निकों के कारण हुई। मेलट के अनुसार ''इन तीन प्रभाव"ााली व्यक्तियों द्वारा बोये गये बीज उपजाऊ धरती पर पड़े।'' क्रान्ति में विचारकों के योगदान पर मतभेद हो सकते है। लेकिन एक विचार सत्य है कि इन दा"र्निकों अथवा विचारकों ने उस समय की व्यवस्था का तार्किक वि"लेषण अव"य किया। ये वो आविषकारक थे जिन्होनें मानव के कष्ट के मूल कारण की खोज की तथा सबसे बड़ी बात इन्होनें मानव पीड़ा को आवाज देकर सता को चेतावनी दी। ये क्रान्ति उत्पन्न होने से पहले की चेतावनी घन्टी थे। इनके लेखनों या विचारो का केन्द्र बिन्दु मानव की पीड़ा ही थी। क्रान्ति प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष कारणो का परिणाम होती है अतः इनके योगदान को अप्रत्यक्ष कारण अव"य कहा जा सकता है। इन्होने वर्षों से पीड़ित मानव को सचेत करके आत्मबल भरा व स्वतन्त्रता का सपना दिखाया और जब आंख खुली तो जनता प्रेरित होकर क्रान्तिकारी हो गई।

7.4.21 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव (Influence of International Events)

किसी भी राष्ट्र की क्रान्ति बहुत से आन्तरिक कारणों का परिणाम होती है लेकिन क्रान्ति की चेतना कई बार बाहरी घटनाओं से भी उत्पन्न होती है। इसी तरह अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं ने फ्रांस की क्रान्ति पर अव"य प्रभाव डाला।

7.4.22 अमेरिकी क्रान्ति का प्रभाव (Impact of American Revolution)

1776 ई0 में अमेरिकी की 13 बस्तियों ने इग्लैण्ड के शोषण व अत्याचारी शासन के विरोध में क्रान्ति को जन्म दिया जिसमें इग्लैण्ड पराजित हो गया तथा एक स्वतन्त्रता व समानता का भाव इस दौरान आधुनिक वि"व में उत्पन्न हुआ जिसने वि"व के अन्य शोषित राष्ट्रो को प्रेरित किया। इस क्रान्ति में फ्रांस ने भी अमेरिका की तरफ से भाग लिया और इस तरह भाग लेने वाले सैनिकों ने स्वतऩ्त्रता संघर्ष को निकट से देखा। इस प्रकार फ्रांस में स्वतन्त्रता के विचार ने प्रभाव डाला।

7.4.23 आयरलैंड का राष्ट्रीय आन्दोलन (Irish National Movement)

आयरलैण्ड भी इग्लैण्ड के अधीन था। अतः शोषित जनता ने ग्रेटन के नेतृत्व में राष्ट्रीय आन्दोलन चलाया और अपने अधिकारों की मांग की। इस 1779–1782 के दौरान आयरलैण्ड के लोगों को कई अधिकार मिले। इस परिवर्तन ने फ्रांस की जनता में क्रान्ति के लिए आत्मवि"वास उत्पन्न किया।

7.4.24 तात्कालिक कारण–आर्थिक संकट (Immediate causes-Economic crisis)

लाल बहादुर वर्मा के अनुसार– किसी भी दे"ा के आर्थिक स्वास्थ्य के लिए जरूरी है कि खर्चा आमदनी के हिसाब से हो। फ्रांस में स्थिति उल्टी थी। वहां खर्चा के हिसाब से आमदनी करने की परपंरा बन गई थी। फ्रांस की क्रान्ति का तात्कालिक कारण दे"ा की बिगड़ती आर्थिक द"ाा था। लुई 14वें के समय ही अर्थव्यवस्था कमजोर होने लगी थी। सुधार के प्रयास भी किये गए, विरोध का प्रमुख कारण बना। फ्रांस की लड़खड़ाती अर्थव्यवस्था इस प्रकार तात्कालिक कारण बनती है।

7.4.25 लुई 16वें के वितमन्त्रयों की नितियां (Policies of the finance minister of Louis 16)

लुई 16वें ने आर्थिक समस्याओं के हल के लिए कई वितमन्त्रियों की नियुक्ति की जो फ्रांस के गिरते भवन को नही बचा पाए। तुर्गो, नेकर, कैलोन तथा ब्रान प्रमुख वितमन्त्री थे। सबसे पहले तुर्गो को वितमन्त्री बनाया गया उसने व्यापार व उद्योग पर लगे प्रतिबन्ध हटाने, साधारण वर्ग पर करो का भार कम करने, पादरियों व कुलीनों पर कर लगाने आदि को सुझाव दिया। यह कार्यक्रम लागू हो जाते तो सुधार हो जाता किन्तु वि"ोषाधिकार युक्त वर्ग उससे नाराज हो गया उन्होनें लुई 16वें की रानी एन्तोयनेत को अपने पक्ष में करके वितमन्त्री को पद से हटवा दिया।

इसके बाद नेकर वितमन्त्री बना। उसने आर्थिक संकट के हल के लिए कुलीनों पर कर लगाने तथा राज्य के खर्चे घटाने का सुझाव दिया। रानी ने उसे कंजूस बताया तथा उसे भी पद से हटा दिया। लेकिन उसने हटने से पहले दे"ा की आर्थिक द"ाा का वितरण तैयार करके राजा तक पहुंचाया तथा आम जनता के बीच भी बांट दिया।

नेकर के बाद कैलोन वितमन्त्री बना। वह राजपरिवार को नाराज नही करना चाहता था। इसलिए उसने घाटे की पूर्ति के लिए ऋण लिए। परन्तु हल नही हुआ और खजाना खाली हो गया ऐसी द"ाा में उसने राजा को आर्थिक समस्या के समाधान के लिए वि"ाष्टों की सभी बुलाने का सुझाव दिया कि सभा में साधारण वर्ग भी बुलाया जाए। परन्तु अन्य लोग नाराज हो गए और कैलोन को भी पहले हटा दिया गया।

कैलोन के बाद रानी के कृपापात्र ब्राइन को 1787 ई0 में वितमन्त्री बनाया गया। उसने सभी वर्गो पर समान रूप से भूमिकर और स्टाम्प टैक्स लगाने का सुझाव दिया। किन्तु वि"ाष्टों की सभा ने इसके प्रस्तावों को ठुकरा दिया। राजा ने सभा को भंग कर दिया तथा ब्रान के इन प्रस्तावों को पंजीकरण के लिए पेरिस की पार्लेमा को भेज दिया। पार्लेमां ने नए कर लगाने के कानून का पंजीकृत करने से मना कर दिया। साथ ही सुझााव दिया कि नए कर लगाने का अधिकार केवल 'स्टेटस जनरल' को है। इसी आधार पर स्टेटस जनरल के अधिवे"ान की मांग की जनता ने इस फैसले का समर्थन किया। राजा ने पार्लेमा को अवैध घोषित कर दिया और इसके सदस्यों को बन्दी बनाने का आदे"ा दिया। किन्तु सैनिकों ने इनको गिरफतार करने से मना कर दिया। अतः राजा घबरा गया अतः विव"ा होकर जनदबाव में स्टेटस जनरल की बैठक बुलानी पड़ी। यह अधिवे"ान 5 मई 1789 ई0 को होना नि"चत

हुआ। इस प्रकार 175 वर्षो के बाद अधिवे"ान सम्भव हुआ। यह व्यवस्था परिवर्तन तथा शासन में जनभागीदारी की घटना थी जिसको कई इतिहासकारों ने क्रान्ति का आरम्भ कहा।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि फ्रांस में वर्षों से चली आ रही राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक व्यवस्था के दोष ने जनता के कष्टों को अत्याधिक बढ़ा दिया जिसे बौद्धिक जागरण ने क्रान्ति में बदल दिया। आर्थिक संकट व शासक वर्ग की नियत व कार्यप्रणाली ने सिद्ध कर दिया कि वह जनकल्याण नही चाहते। अतः विव"ा व पीड़ित जनता क्रान्तिकारी हो गई।

7.4.26 क्रान्ति की घटनाऐं (Events of the Revolution)

5 मई 1789 ई0 को स्टेटस जनरल के अधिवे"ान के बाद घटनाएं उग्र रूप धारण करती गई। इस अधिवे"ान में तीसरे वर्ग का अपमान हुआ। 6 मई को कुलीन व पादरी वर्ग ने अलग बैठक का सुझाव दिया। परन्तु अन्य वर्ग को साधारण वर्ग से भय था कि कही संयुक्त बैठक में बहुमत से उनके वि"ोषाधिकार ने छिन जाएं। 15 जून तक कुछ पादरी तीसरे वर्ग के साथ मिल गए और तीसरे वर्ग ने 17 जून 1789 ई0 को अपने आप को 'राष्ट्रीय सभा' घोषित कर दिया। यह साधारण वर्ग का क्रान्तिपूर्ण व साहसिक कदम था।

20 जून को राजा ने सभा भवन को बन्द करवा दिया जिसके कारण तीसरे वर्ग अर्थात् साधारण वर्ग ने या कह सकते है कि राष्ट्रीय सभा ने निकट की 'टेनिस कोर्ट' नामक इमारत में बैठक की तथा बैली के नेतृत्व में एक शपथ ली ''राष्ट्रीय सभा यह नि"चत करती है कि हम कभी भी अलग नही होंगे और जब तक संविधान का निर्माण नही होता और दृढ़ नींव पर नही रख दिया जाता तब तक जहां भी परिस्थितियों के अनुसार आव"यक होगा, इकटठे होते रहेगें।'' यह शपथ इतिहास में टेनिस कोर्ट की शपथ कहलाती है। इस शपथ ने निरकुं"ा राजतन्त्र की जड़े हिला दी।

23 जून को राजा ने तीनों वर्गो की संयुक्त बैठक बुलाई तथा घोषणा की कि भविष्य में तीनों वर्गो की सभा अलग–अलग भवनों में होगी तथा राष्ट्रीय सभा को गैर कानूनी घोषित कर दिया। कुछ समय बाद सम्राट के एक प्रतिनिधि ने तीसरे वर्ग को चले जाने को कहा ''जाओ और अपने स्वामी को कह दो हम लोग यहां लोगों की इच्छा से बैठे है और यहां केवल संगीन की नोक की शक्ति से ही हटाया जा सकता है'' सम्राट इस वर्ग को दबा नही पाया और विव"ा होके 27 जून को तीनों वर्गो की संयुक्त बैठक की अनुमति दे दी। इस समय यात्रा पर आर्थरंग ने फ्रांस छोड़ते समय लिखा कि क्रान्ति पूरी हो गई है। लेकिन यह तो आरम्भ था।

साधारण वर्ग अथवा राष्ट्रीय सभा की शक्ति बढ़ती जा रही थी। 9 जुलाई 1789 ई0 की राष्ट्रीय जनता उग्र होता जा रही थी। राजा ने फौज को बुलाना आरम्भ कर दिया जिससे जनता और अधिक उतेजित हो गई ऐसे

वातावरण में कैमिले देस्मैलिन्ज नामक पत्रकार के नेतृत्व में नगर की हथियारों की दुकान पर धावा बोल दिया क्योंकि हथियारों की आव"यकता थी।

14 जुलाई 1789 ई0 को पेरिस का वातावरण उग्र हो गया था। किसी ने अफवाह फैला दी कि बास्तील के दुर्ग में हथियार व गोला बारूद हैं। बास्तील में एक दुर्ग था जिसका निर्माण 1383 ई0 में हुआ था जिसमें कैदियों को रखा जाता था। किन्तु उग्र भीड़ ने 14 जुलाई 1789 ई0 को इस किले पर आक्रमण कर दिया और कुछ समय के बाद ही क्रोधित भीड़ ने दुर्ग को नष्ट कर दिया और कैदियों को आजाद करवा दिया। इस घटना को 'बास्तील का पतन' कहा जाता है। सचमुत्र यह क्रान्ति का शंखनाथ था। इस दिन का महत्व है कि इसी कारण 14 जुलाई को फ्रांस अपना राष्ट्रीय दिवस मनाता है। सारे युरोप में बास्तील पर खु"ाी प्रकट की गई। इस समय प्रसिद्ध कवि वडर्सवर्थ ने लिखा कि फ्रांस में जीवन इस समय इतना सुखकर है और इस समय युवा होना तो मानो स्वर्ग का ही सुख भोगना है। ''लाल बहादुर वर्मा के अनुसार 'बास्तील का पतन फ्रांस के इतिहास और क्रान्ति का निर्णायक मोड़ साबित हुआ।

15 जुलाई को राजा राष्ट्रीय सभा के सामने गया तथा 17 जुलाई को राष्ट्रीय सभा के तिरंगे झण्डे को स्वीकार कर लिया। इस प्रकार बास्तील का पतन निरकुं"ा राजतन्त्र की पराजय की व जनता की जीत कही जा सकती है। फ्रांस के दे"ा भक्तों ने इस दिन को स्वतन्त्र वर्ष का प्रथम दिन माना। इस पूरे घटनाक्रम का जनता पर प्रभाव पड़ा। पेरिस में जनता ने 'पेरिस कन्यून' नाम से नई सरकार बना ली। ग्रामीण जनता ने अपने उत्पीड़कों पर धावा बोल दिया। 5 अक्टुबर को पेरिस में हजारो महिलाओं ने इकट्ठा होकर 'हमें रोटी दो' के नारे लगाए। 6 अक्टुबर को सुबह भीड़ राजमहल में घुस गई और राजा व उसके परिवार को पेरिस लाया गया। राजा की द"ाा एक कैदी जैसी हो गई थी। इस प्रकार घटनाएं उग्र होती गई और नेतृत्व पेरिस के हाथों में आ गया। इस तरह फ्रांस की वह जनता जो वर्षों से पीड़ा व शोषण को सहन करके मूक बनी हुई थी। वही जनता जो"ा के साथ क्रान्तिकारी हो गई।

7.4.27 फ्रांस की क्रान्ति के प्रभाव (Impact of French Revolution)

फ्रांस की क्रान्ति ने वर्षों से चली आ रही शोषणकारी व्यवस्था को चुनौती दी तथा एक नवीन विचार को जन्म दिया कि शोषणकारी व दमनकारी शासन के केवल तब तक रहते है जब तक जनता को अपनी शक्ति का अहसास न हो जाए। क्रान्ति ने सिद्ध कर दिया कि 'जन"ाक्ति' सर्वोच्च शक्ति है इसकी अपेक्षा विद्रोह या क्रान्ति को जन्म देती है। सम्पूर्ण वि"व इस घटना पर खु"ाी व्यक्त कर रहा था जर्मन दा"ार्निक कांट ने इसे विवेक की विजय कहा। क्लाबस्टाक ने कहा कि यदि मेरे पास सौ स्वर होते तो मैं सभी स्वरों से स्वतन्त्रता देवी का गुणगान करता। हिगल जैसे विचारकों ने क्रान्ति की याद में पौधे रोपे। क्रान्ति से शोषणकारी शक्तियां भयभीत हुई तो

शोषित जनता खु"ा हुई। आर्थिक सामाजिक सामन्ती चरित्र को क्रान्ति ने ध्वस्त कर दिया। क्रान्ति के प्रभावों को देखते हुए रैम्जे म्योर ने इसे वि"व क्रान्ति कहा। कोई भी घटना दो तरह के प्रभाव डालती है तात्कालिक व चिरस्थायी प्रभाव। इस क्रान्ति ने सर्वप्रथम फ्रांस को प्रभावित किया अतः पहले हम फ्रांस तथा बाद में युरोप पर प्रभावों का वर्णन करेगें अन्त में वि"व पर स्थाई प्रभावों का वि"लेषण किया जायेगा।

7.4.29 निरंकुश राजतन्त्र का अन्त (End of Despotic Rule)

1789 ई0 की फ्रांसीसी क्रान्ति में वर्षों से चले आ रहे शोषणकारी बुर्बों वं"ा का अन्त कर दिया। फ्रांस के शासक निरकु"ाता व दैविय अधिकारों मे वि"वास करते थे। क्रान्ति ने इस धारणा का अन्त कर दिया। कुछ समय के बाद गणतन्त्र की स्थापना हो गई।

7.4.30 सामन्तवाद का अन्त (End of Feudal system)

फ्रांस में सामन्तवादी समाज था। यह व्यवस्था शोषण पर आधारित थी जिससे एक वर्ग को वि"ोषाधिकार व सुविधाएं प्राप्त थी तथा दूसरे वर्ग का शोषण होता था 4 अगस्त 1789 को कानून के माध्यम से सामन्तप्रणाली व दास प्रथा का अन्त कर दिया गया।

7.4.31 मौलिक अधिकारों की प्राप्ति (Fundamental Rights)

फ्रांस के समाज में क्रान्ति से पहले वि"ोषाधिकार प्राप्त वर्ग था। सभी वर्गो को समान रूप से अधिकार नही थे किन्तु क्रान्ति के बाद राष्ट्रीय सभा मौलिक अधिकारों की घोषणा की। अब जनता को सम्पति रखने, धन्धा करने आदि कई प्रकार के स्वतंत्रता सम्बन्धी अधिकार दिए फ्रांस में इस प्रकार सामान्य जनता भी स्वतंत्र अनुभव करने लगी।

7.4.32 शासन व्यवस्था में सुधार (Reform in Administrative System)

कुछ वर्गों को वि"ोषाधिकार व सुविधाएं देने के लिए शासन व्यवस्था में नियम बनाए गए थे। सता शासन व भेदभाव का केन्द्र थी। क्रान्ति के प"चात् शासन में सुधार किया गया समस्त फ्रांस को एक जैसे 83 भागों में बांटा गया इनका शासन प्रबन्ध नागरिकों द्वारा निर्वाचित असेम्बली के माध्यम से किया गया। शासन में भर्ती योग्यता के आधार पर आरम्भ हुई।

7.4.33 गणतन्त्रीय सिद्धान्तों की स्थापना (Establishment of Democratic Values)

क्रान्ति के बाद जनता की शक्ति बढ़ी तथा शासन के सिद्धान्तों में भी परिवर्तन आया अब जन"ाक्ति के महत्व को समझकर शासन में गणतन्त्रीय सिद्धान्तों का जन्म हुआ। जनता के अधिकारों व कल्याण को महत्व दिया गया। शासन जनता द्वारा, जनता के लिए सिद्धान्त का प्रचार हुआ।

7.4.34 न्याय प्रणाली में सुधार (Reform in judicial system)

क्रान्ति से पहले फ्रांस की न्याय प्रणाली दोषपूर्ण थी। साधारण वर्ग के साथ अन्याय होता था। धन के बल पर भी निर्णय बदल जाते थे। कानून में समानता नही थी। किन्तु अब क्रान्ति के बाद न्यायपालिका को स्वतन्त्र किया गया। कानूनों का संग्रह तैयार किया गया व कानूनों में समानता स्थापित की गई।

7.4.35 सैनिक व्यवस्था में सुधार (Reforms in Military system)

क्रान्ति के बाद सैनिक व्यवस्था में भी सुधार किया गया। सेना में भर्ती योग्यता के आधार पर होने लगी। सैनिकों की सुविधाओं का ध्यान रखा गया। प्रत्येक व्यक्ति को सेना मे भर्ती का अवसर दिया गया।

7.4.36 मध्यम श्रेणी का प्रभूत्व (Rise of Middle class)

फ्रांस के मध्यम वर्ग व्यवस्था ने ही सता का शोषकारी चरित्र जनता के समक्ष प्रकट किया तथा क्रान्ति में साधारण वर्ग का साथ दिया। इन्होनें राजा की निरकुं"ाता पर अकुं"ा लगाना आरम्भ किया। क्रान्ति के बाद स्थापित राष्ट्रीय सभा व राष्ट्रीय सम्मेलन में मध्यम वर्ग का प्रभुत्व स्थापित हो गया। शासन को पूरी तरह से यह वर्ग प्रभावित करने लगा। नेपोलियन ने भी इसी वर्ग की सहायता से सता प्राप्त की थी तथा उसके पतन में भी मध्यम वर्ग ने ही भूमिका निभाई थी।

7.4.37 किसानो की दशा मे सुधार (Importance in Farmer’s condition)

क्रान्ति से पहले फ्रांस का किसान पीड़ित था। उसे अपनी उपज का बहुत कम भाग मिलता था उसके परिश्रम का सारा लाभ सामन्तों को मिलता था। कृषि के विकास की योजनाएं नहीं थी। किन्तु क्रान्ति के बाद किसान को सामन्ती शोषण से छुटकारा मिला। किसान की अब कृषि में रूचि बढ़ी तथा उसे भी स्वतन्त्रता का अहसास हुआ।

7.4.38 चर्च का पुनर्गठन (Re-organisation of Church)

फ्रांस में सता व चर्च का गठजोड़ था। चर्च भी शोषण का एक केन्द्र था जिसका बहुत सी सम्पति पर अधिकार था। चर्च के चरित्र व कार्य"ौली से जनता विरोधी हो गई थी अतः क्रान्ति के बाद चर्च की सम्पति पर सरकारी अधिकार स्थापित कर दिया गया। पादरियों के लिए भी नियम बन गए अब यह वि"ोषाधिकार प्राप्त वर्ग नही रहा।

7.4.39 शिक्षा तथा साहित्य का विकास (Development in Education and Literature)

पहले f"ाक्षा पर चर्च का अधिकार था। फ्रांस में कला, साहित्य व तकनीकी f"ाक्षा आरम्भ हुई। पेरिस में केन्द्रिय वि"वविधालय की स्थापना हुई।

7.4.40 आर्थिक विकास (Economic Development)

क्रान्ति से पहले फ्रांस का आर्थिक ढाँचा केवल कुछ वर्गो के विकास के लिए तैयार किया गया था। किन्तु क्रान्ति के प"चात् कई आर्थिक सुधार किये गए। चर्च की भूमि का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया तथा यह भूमि को भूमिहीन वर्गो में बांट दिया गया। कर प्रणाली में सुधार किए गए तथा सभी पर सामान्य रूप से कर दिए गए। व्यापार व उद्योगों के विकास के नियम भी बनाए गए। दोषपूर्ण गिल्ड व्यवस्था समाप्त कर दी गई। इस प्रकार फ्रांस व नागरिकों के आर्थिक विकास की योजनाएं बनाई गई।

7.4.41 अराजकता व रक्तपात (Anarchy and Bloodshed)

क्रान्ति के आरम्भ के बाद भीड़ उग्र हो गई तथा दे"ा में अराजकता फैल गई। अनेक भवन जलाए गए बहुत से लोगों को दे"ा छोड़ना पड़ा। क्रान्ति के पक्षधर व विरोधियों में संघर्ष आरम्भ हो गया। दे"ा में आंतक का शासन स्थापित हो गया जिससे बहुत से नागरिकों की मौत हुई। इस प्रकार क्रान्ति के बाद समस्याएं भी उत्पन्न हुई हांलाकि यह अस्थाई थी।

7.4.42 युरोप का प्रभाव (Impact on Europe)

फ्रांस की क्रान्ति का युरोप पर भी प्रभाव पड़ा। प्रत्येक दे"ा अपनी सोच के हिसाब से प्रभावित हुआ अर्थात् अगर राष्ट्र शोषणकारी है तो क्रान्ति का विरोध हुआ। इस प्रकार युरोप प्रभावित हुआ।

7.4.43 युरोप का दो गुटों में विभाजन (Division of Europe in groups)

फ्रांस की क्रान्ति के बाद विचारधारा के अनुसार युरोप गुटों में बंट गया। कुछ गणतंत्र अथवा क्रान्ति के पक्षधर थे तथा कुछ राजतंत्र के पक्षधर थे। इंग्लैंड ने आरंभ में क्रान्ति पर खु"ाी व्यक्त की। क्रान्ति जैसे–जैसे उग्ररूप धारण करती चली गई जो विभिन्न दे"ाों की प्रतिक्रिया या विचारधारा भी बदलने लगी। जब लुई 16वें को फांसी दी गई तो इंग्लैंड फ्रांस विरोधी हो गया। इस प्रकार युरोप गुटों में विभाजित हो गया।

7.4.44 क्रान्ति पर प्रतिक्रिया (Reaction on Revolution)

क्रान्ति के बाद युरोप विभिन्न प्रकार प्रतिक्रिया प्रकट हुई। रूस, आस्ट्रिया, हंगरी, तथा टर्की जैसे निरंकु"ा राष्ट्र आरम्भ में क्रान्तिकारी भावनाओं या सिद्धान्तों के प्रभाव से बच रहें। इंग्लैण्ड ने भी पहले तो क्रान्ति पर खु"ाी प्रकट की किन्तु बाद में विरोधी हो गया। पॉलैण्ड तथा आयरलैण्ड के लोगों को क्रान्ति ने स्वतन्त्रता अधिकारों के लिए प्रेरित किया। फ्रांस के पड़ोसी राष्ट्र बेल्जियम में भी क्रान्ति का प्रभाव पड़ा किन्तु वह आस्ट्रिया की निरंकु"ा शक्ति का सामना नही कर पाई। जर्मन व इटली पर भी क्रान्तिकारी विचारों का प्रभाव पड़ा।

7.4.45 युरोपीय देशों का युद्वों में उलछझना (Involvement of European countries in wars)

फ्रांस की क्रान्ति निरंकु"ा व शोषणकारी शासकों के लिए खतरे की घण्टी थी अतः उन्होनें क्रान्ति का विरोध किया। कुछ राष्ट्र फ्रांस विरोधी थे इसलिए भी क्रान्ति का विरोध कर रहे थे। क्रान्ति के विरोधी राष्ट्र युद्ध में शामिल होने लगे परिणामस्वरूप 1792 के प"चात् इंग्लैण्ड, एि"ाया आदि के युद्ध चलते रहे।

7.4.46 युरोपीय संयुक्त व्यवस्था की स्थापना

फ्रांस के विरूद्ध लगभग 23 वर्षो तक युद्धों में उलझे रहने के बाद अन्त में राष्ट्र सोचने पर विव"ा हुए कि युद्धों के माध्यम से समस्याओं का समाधान नही हो सकता। परिणामस्वरूप 1815 ई0 में प्रमुख युरोपीय दे"ाों में संयुक्त युरोपीय व्यवस्था की स्थापना की जिसका उद्दे"य महाद्वीप में शान्ति स्थापित रखना और आपसी मतभेदों को बातचीत के माध्यम से हल करना था। 1815 से 1823 ई0 के बीच युरोपीय संयुक्त व्यवस्था के सदस्य अनेक सभाएं हुई। इस प्रकार विचारधारा में परिवर्तन आया व शान्ति व बातचीत का महत्व बढ़ा।

7.4.47 विश्व पर स्थाई प्रभाव (Permanent Effects on World)

फ्रांस की 1789 ई0 की क्रान्ति से पहले शोषित राष्ट्र अपने कष्टकारी वर्तमान को भाग्य समझते थे अतः सता का शोषणकारी चरित्र परंपरा बन गया था। किन्तु क्रान्ति ने वि"व के लिए नवीन सिद्धान्तों का प्रचार किया। फ्रांस की क्रान्ति ने सम्पूर्ण वि"व को मुक्ति के लिए प्रेरित किया जिनका प्रभाव इस प्रकार है।

7.4.48 स्वतंत्रता, समानता व भाईचारे की भावना (sprit of freedom, equality, cooperation)

फ्रांस की क्रान्ति एक साथ कई समस्याओं के विरोध में शंखनाथ था। एक तरफ जहां शोषण से मुक्ति की भावना थी तो साथ ही समानता की भावना स्थापित करना क्रान्ति का लक्ष्य था। मानवता में प्रेम और बधुत्व की भावना भी प्रकट हुई। फ्रांस की क्रान्ति के दौरान स्वतन्त्रता, समानता व बन्धुत्व के विचार वि"व के अन्य राष्ट्रों के लिए प्रेरणा बन गये।

7.4.49 राष्ट्रीय भावना का उदय (Rise of Nationalism)

राष्ट्र की बहुत सी समस्याओं का जन्म राष्ट्रीय भावना के अभाव में होता है। बिखरी हुई जनता का शोषण करना आसान होता है तथा यह जनता बिना एकता के अपने शत्रु का अन्त भी नही कर सकती। अतः वि"व के पीड़ित व शोषित राष्ट्रों ने फ्रांस की क्रान्ति से प्रेरित होकर राष्ट्रवाद के महत्व को समझा। जर्मनी तथा इटली में भी राष्ट्रवाद इस भावना का परिणाम था इसके बाद उनका एकीकरण सम्भव हुआ।

7.4.50 प्रजातन्त्रीय विचारों का विकास (Growth of Democratic Ideas)

फ्रांस की क्रान्ति ने निरंकु"ा शासन को अनुचित सिद्ध किया। निरंकु"ा शासन प्रणाली में शासक स्वयं को भगवान का दूत समझते है तथा जनता का शोषण करते है। ऐसे शासन में जनभावनाओं की अपेक्षा होती है क्रान्ति में निरकु"ाता का अन्त किया व जन"ाक्ति का महत्व बढ़ाया पूरे वि"व में प्रजातंत्रीय विचार फैले। जनता का शासन में प्रतिनिधित्व व अधिकारों का महत्व बढ़ा। अब स्पष्ट हो गया कि भविष्य प्रजातन्त्र का होगा।

7.4.51 जनकल्याण, समजवाद व अर्न्तराष्ट्रीयवाद (Public welfare Socialism and Internationalism)

फ्रांस की क्रान्ति के बाद जनकल्याणकारी शासन लोकप्रिय हुआ। जिस भी राष्ट्र में मानव पीड़ा में होगा वहां विकास नही हो सकता। अतः शासन में व्यक्ति के अधिकारों व समानता के नियम बनाए गए। व्यक्ति के विकास के लिए कई संस्थाओं की स्थापना हुई। समाजवादी विचारधारा का भी जन्म हुआ तथा सामन्तवादी व्यवस्था को समाप्त करके कृषि व उद्योगों का राष्ट्रीयकरण किया गया आर्थिक असमानता को विकास का शत्रु माना गया।

फ्रांस की क्रान्ति के प"चात् लम्बे तनाव व युद्धों के बाद राष्टों ने चिन्तन किया तथा वह निष्कर्ष पर पहुंचे कि वि"व में शान्ति व भाइचारे का महत्व श्रेष्ठ है इसी भावना ने अर्न्तराष्ट्रवादी भावना को जन्म दिया राष्ट्र संघ तथा संयुक्त राष्ट्र संघ इसी भावना का परिणाम कहे जा सकते है। इस प्रकार फ्रांस की क्रान्ति ने वि"व को नवीन विचाराधारा का मार्ग दिखाया।

7.5 प्रगति समीक्षा (Check your Progress)

भाग (अ)

(i) फ्रांस की 1789 ई0 क्रान्ति के समय...................................शासक कौन था।

(ii) फ्रांसीसी क्रान्ति के समय.............................वं"ा का शासन था।

(iii) लुई 16वें की पत्नी का नाम.......................था।

(iv) कानून की आत्मा का लेखक.............................है।

(v) नए कुलीन वर्ग का उदय..................................के समय हुआ।

(vi) आयरलैण्ड में आन्दोलन.............................के नेतृत्व में हुआ।

(vii) फ्रांसीसी क्रान्ति का तात्कालिक कारण.................................था।

(viii) लुई 16वें ने सर्वप्रथम.....................................को वितमन्त्री नियुक्त किया।

(**ix**) बास्तील का पतन.................................को हुआ।

(**x**) टेनिस कोर्ट की शपथ.................................को ली गई।

7.6 सारांश (Summary)

फ्रांस की क्रान्ति के समय बूर्बों वं"ा का शासन था जो निरकुं"ाता में वि"वास रखते थ। लुई 14वां तथा उसके उतराधिकारियों के बुद्धिमता से कार्य नही किया व जनभावनाओं की उपेक्षा की जिसके कारण फ्रांस में वि"ोषाधिकार युक्त वर्ग व अधिकारहीन वर्ग का जन्म हुआ। निरकुं"ा, राजतन्त्र व सामाजिक व आर्थिक असमानता से पीड़ित जनता को विचारकों ने शक्ति प्रदान की। जिसमें रूसों, मांटेस्क्यु व वाल्तेयर प्रमुख हैं। मध्यम वर्ग ने साधारण वर्ग का साथ दिया तथा स्टेटस जनरल के अधिवे"ान से क्रान्ति का आरम्भ हुआ जिसने बास्तील पतन के समय उग्र रूप धारण कर लिया। विव"ा व पीड़ित जनता क्रान्तिकारी हो गई तथा राजा ने हार माननी पड़ी। इस प्रकार वर्षों से चला आ रहा शोषणकारी राजनीतिक सामाजिक व आर्थिक ढांचा ध्वस्त हो गया फ्रांस की भूमि पर 1789 ई0 मे स्वतन्त्रता, समानता व बन्धुत्व का बीजारोपण हुआ जिसने परतन्त्र शोषित मानवता को मुक्ति की राह दिखाई। फ्रांस क्रान्ति की क्रान्ति एक वि"व क्रान्ति व नवीन परपंरा बन गई। लाल बहादुर वर्मा के अनुसार क्रान्ति ने परिवर्तन की धारा को तेज किया। जीवन का कोई भी क्षेत्र उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। फ्रांस की क्रान्ति के सिद्धान्त सम्पूर्ण आधुनिक वि"व के प्रेरणास्त्रोत व आद"ा बन गए।

7.7 संकेतेक शब्द (Key Words)

1. **पुरातन व्यवस्था**–

   फ्रांस की यह प्राचीन राजनीतिक सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था जो शोषण व असमानता पर आधारित था।

2. **भाासन का दिव्य सिद्धान्त**–

   इस सिद्धान्त के अनुसार शासक स्वयं को भगवान का प्रतिनिधित्व मानता है इसलिए वि"ोषाधिकार प्राप्त करके जनता का शोषण करता है।

3. **तीसरा वर्ग**–

   फ्रांस के तीसरे वर्ग में किसान, दस्तकार व मध्यम वर्ग था। जो शासन प्रणाली से तंग था।

4. धार्मिक असहन"ाीलता एक धर्म का दूसरे धर्म को सम्मान न देना।

5. **बूर्बो**–

   फ्रांस की क्रान्ति के समय इस वं"ा का शासन था। ये शासक निरकुं"ा थे।

7.8 स्वयं मुल्यांकन परीक्षा (Self Assessment Test) :–

ब महत्वपूर्ण निबन्धात्मक प्रश्न (Important Essay Type Question)

1. 1789 ई0 के फ्रांसीसी क्रान्ति के प्रमुख कारणों का वर्णन करो?
2. फ्रांस की क्रान्ति के तात्कालिक व चिरस्थाई प्रभाव क्या थे?
3. 1789 ई0 क्रान्ति फ्रांस में ही क्यों हुई?
4. फ्रांस की क्रान्ति में दा"ानिकों के योगदान का आलोचनात्मक विवरण दीजिए?
5. फ्रांस की क्रान्ति वि"व की एक महान घटना थी विवरण दीजिए?
6. ''1789 ई0 की क्रान्ति असमानता के विरूद्ध अधिक परन्तु निरकु"ता के विरूद्ध उससे बहुत कम विद्रोह था'' इस कथन की व्याख्या कीजिए।

7.9 प्रगति समीक्षा हेतु उतर (Answer to check your Progress)

रिक्त स्थानों के उतर

(**i**) लुई 16वां (**ii**) बूर्बो (**iii**) मेरी ऐन्तोयनत (**iv**) मांतेस्क्पु

(**v**) लुई 14वां (**vi**) ग्रेटन (**vii**) आर्थिक संकट (**viii**) तुर्गो

(**ix**) 14 जुलाई 1789 (**x**) 20 जून 1789

7.9 (A)

1. फ्रांसीसी क्रान्ति से पहले किस वंश का शासन था?

उतर : बुर्बो वं"ा का।

2. फ्रांसीसी क्रान्ति के समय फ्रांस का शासक कौन था?

उतर : लुई सोलहवां।

3. फ्रांस की क्रान्ति को 'विश्व क्रान्ति' की संज्ञा किसने की?

उतर :रेम्जे मयूर ने।

4. ''मैं ही राज्य हूं'' अथवा ''मैं ही फ्रांस हूं'' किसने कहा?

उतर : लुई 14वें ने।

5. लुई 14वें ने कब से कब तक शासन किया?

उतर : 1643–1715 ई. तक।

6. लुई 15वें ने कब से कब तक शासन किया?

उतर : 1715 से 1774 ई. तक।

7. लुई सोलहवें ने कब से कब तक शासन किया?

उतर : 1774 से 1789 ई. तक।

8. लुई सोलहवें की मृत्यु कब हुई?

उतर : 1793 ई. में।

9. लुई सोलहवे की पत्नी का क्या नाम था? फ्रांस की जनता उसे क्या कहती थी?

उतर : मेरी एन्तोयनेत, फ्रांस की जनता उसे श्रीमति घाटा, कहती थी।

10. 'मेरी एन्तोयनेत' किस देश की राजकुमारी थी?

उतर : ऑस्ट्रिया की।

11. मेरी एन्तोयनेत की मृत्यु कब हुई?

उतर : 1793 ई. में।

12. राजा की शक्ति पर अंकुश रखने वाली संस्थाएं कौन सी थी?

उतर : स्टेटस जनरल तथा पार्लेमा।

13. ''मेरे मरने के बाद प्रलय होगी'' किसने कहा?

उतर : लुई 15वें ने।

14. मेरी एन्तोसानेत के नौकरों की संख्या कितनी थी?

उतर 500।

15. क्रान्ति के संबंध रखने वाले तीन दार्शनिकों के नाम बताओं।

उतर :रूसो, वाल्वेयर तथा मांतेस्क्यू।

16. फ्रांस के लोग राजदरबार को क्या समझते थे?

उतर : 'राष्ट्र की कब्र'।

17. क्रान्ति के समय फ्रांस में कितने प्रांत थे?

उतर : 40 प्रांत + 36 प्रान्त (लुई 13वें के शासनकाल से)।

18. 'स्पिरिट ऑफ–दि लॉज' का लेखक कौन था?

उतर :मांतेस्क्यू।

19. 'सोशल कॉन्ट्रेक्ट' तथा 'कान्फैशन्ज' नामक प्रसिद्ध पुस्तकों का लेखक कौन था?

उतर : रूसो।

20. ''मनुश्य स्वतंत्र पैदा हुआ है परन्तु प्रत्येक स्थान पर वह जंजीरों से जकड़ा हुआ ह'' ये शब्द किसके हैं?

उतर : रूसों के (सो"ाल कॉन्ट्रेक्ट में से)।

21. फ्रांस में क्रान्ति के समय कितने प्रकार के कानून प्रचलित थे?

उतर : 400 प्रकार के।

22. फ्रांस में क्रान्ति के समय दो प्रमुख वग कौन से थे?

उतर : अधिकार संपन्न तथा अधिकार विहीन।

23. कैथोलिक चर्च के पास फ्रांस की कुल भूमि का कितना भाग था?

उतर : 1/5 भाग।

24. लुई सोलहवें के प्रसिद्ध चार वितमंत्रियों के नाम बताओं।

उतर : तुर्गो, नेकर, कैलान तथा बाइन।

25. फ्रांस में लुई सोलहवें के शासनकाल में स्टेटस जनरल का अधिवेशन कब बुलाया गया।

उतर : 5 मई 1789 ई.।

26. राश्ट्रीय सभा का निर्माण कब हुआ तथा इसने कब तक शासन चलाया?

उतर : 17 जून, 1789, इसने 30 सितंबर 1791 ई. तक शासन चलाया।

27. क्रान्ति समय फ्रांस का वितमंत्री कौन था?

उतर : नेकर।

28. बास्तील का पतन कब हुआ?

उतर :14 जुलाई, 1789 ई. को।

29. फ्रांसीसी का उद्घाटन किस महत्वपूर्ण घटना से हुआ था?

उतर : बास्तील के दुर्ग पर आक्रमण से।

30. क्रान्ति का पैगम्बर किसे कहा जाता है?

उतर : रूसो, वाल्वेयर एवं मांतेस्क्यू को।

31. 'क्रान्ति का मसीहा' किसे कहा जाता है?

उतर : रूसों को।

32. स्टेटस जनरल का गठन कब किया गया था?

उतर : 1302 ई. में।

33. राश्ट्रीय सभा ने सामन्त प्रभा एवं दास प्रथा का अंत कब किया?

उतर : 4 अगस्त 1789 ई. को।

34. मानवाधिकारों की घोषणा कब की गई?

उतर : 17 अगस्त 1789 ई. को।

35. मानवाधिकारों में कितने अधिकार जनता को दिए?

उतर : 10 मौलिक अधिकार।

36. फ्रांस की स्त्रियों ने वर्साय की तरफ कूच कब किया?

उतर : 5 अक्टूबर 1789 ई. को।

37. राष्ट्रीय सभा न फ्रांस की प्रशासनिक पुनर्गठन कर कितने प्रांतो में बांटा?

उतर : 83 प्रान्तों में।

38. राश्ट्रीय सभा क नए संविधान को सम्राट् ने मान्यता कब प्रदान की?

उतर : 14 सितबंर 1791 ई. को।

39. गणतंत्र की स्थापना किसने की?

उतर : पेरिस कम्यूल ने।

40. विधानसभा के काल में 'सितबंर का हत्याकांड' किस वर्ष हुआ?

उतर : 1792 ई.।

41. राष्ट्रीय सभा ने 'राष्ट्रीय फौज' का प्रथमम सनापति किसे नियुक्त किया।

उत्तर : लाफाखते की।

42. राष्ट्रीय सभा के प्रमुख दल कौन से थे?

उत्तर : जेकोविन तथा जिरोदिस्त।

43. नेशनल कान्वेंशन ने शासन की बागडोर कब संभाली?

उत्तर : 23 सितबंर, 1792 ई. को।

44. लुई 16वें को फांसी कब व किसने की?

उत्तर : 21 जनवरी 1793 ई. को ने"ानल कान्वें"ान ने।

45. क्रान्ति के समय फांसी देने के लिए किस मशीन का प्रयोग किया जाता था?

उत्तर : गिलोटीन म"ीन का।

46. आतंक के राज्य की आत्मा किसे कहा जाता है?

उत्तर : 'लोक सुरक्षा कमेटी' को।

47. नेशनल कन्वेंशन ने मापतोल के लिए किस प्रणालो को प्रचलित किया?

उत्तर :'मीट्रिक प्रणाली' को।

48. नेशनल कन्वेंशन द्वारा 1795 ई. को बनाया गया संविधान क्या कहलाता है?

उत्तर : तीसरे वर्ष का संविधान।

49. क्रान्ति न विश्व को कौन से नारे दिए?

उत्तर : स्वतंत्रता, समानता एवं बधुत्व के।

7.9 (B)

1. क्रान्ति की फ्रांस 'विश्व क्रान्ति' की संज्ञा किसने दी?

(क) रेम्जे मयूर (ख) रूसी

(ग) वाल्वेयर (घ) मांतेस्क्यू

उत्तर : रेम्जू मयूर।

2. क्रान्ति के समय फ्रांस का शासक कौन था?

(क) लुई चौदहवां (ख) लुई पंद्रहवां

(ग) लुई सोलहवां (घ) इनमें से कोई नहीं

उतर : लूई सोलहवां।

3. ''मं ही फ्रांस हूं'' किसने कहा?

(क) लूई चौदहवां (ख) लूई पंद्रहवां

(ग) लूई सोलहवां (घ) इनमें से कोई नहीं

उतर : लूई चौदहवां।

4. ''मेरे मरने के बाद प्रलय होगी'' ये शब्द किसके है?

(क) रूसी (ख) लूई पंद्रहवां

(ग) वाल्तेयर (घ) रूसो

उतर : लूई पंद्रहवां।

5. ''मनुष्य स्वतंत्र पैदा हुआ परन्तु प्रत्येक स्थान पर वह जंजीरों से जकड़ा हुआ है'' ये वाक्य किस विद्वान् के हैं?

(क) ब्राइन (ख) मांतेस्क्यू

(ग) वाल्तेयर (घ) रूसो

उतर : रूसो।

6. लूई सोलहवें की पत्नी का क्या नाम था?

(क) मोरिया थेंरेसा (ख) मेरी एन्तयोनेत

(ग) एलिजाबेथ (घ) मैडम रोला

उतर : मेरी एन्तयोनेत।

7. फ्रांस की जनता पर सर्वाधिक प्रभाव किस विदेशी घटना का पडा?

(क) इंग्लैंड का शानदार क्रान्ति

(ख) रूस की क्रान्ति

(ग) यूनानी स्वतंत्रता संग्राम

(घ) अमेरिका का स्वतंत्रता संग्राम

उतर : अमेरिका का स्वतंत्रता संग्राम।

8. वर्साय के शानदार महत्व का निर्माण किसने करवाया?

(क) लुई चौदहवां (ख) लुई पंद्रहवां

(ग) लुई सोलहवां (घ) मेरी एन्तोयनेत

उतर : लुई चौदहवां।

9. फ्रांस की क्रान्ति तत्कालीन कारण क्या था?

(क) विदे"ाी आक्रमण (ख) सामाजिक भेदभाव

(ग) वर्साय संकट (घ) आर्थिक संकट

उतर : आर्थिक संकट।

10. फ्रांस की जनता मेरी एन्तोयनेत को क्या कहती थी?

(क) महान् रानी (ख) श्रीमति सुन्दर

(ग) श्रीमति घाटा (घ) श्रीमति फायदा

उतर : श्रीमति घाटा।

11. मेरी एन्तोयनेत के नौकरों की संख्या कितनी थी?

(क) 10,000 (ख) 5,000

(ग) 500 (घ) 10

उतर : 500।

12. किस सम्राट् को ताले बनाने का शौक था?

(क) लुई चौदहवां (ख) लुई पंद्रहवां

(ग) लुई सोलहवां (घ) इनमे से कोई नहीं

उतर : लुई सोलहवां।

13. क्रान्ति के समय फ्रांस में विभिन्न भागों में स्थापित उच्च न्यायालयों अर्थात् पर्लिमा की संख्या कितनी थी?

(क) 113 (ख) 13

(ग) 25 (घ) 51

उतर : 13।

14. क्रान्ति से पहले किसान 'टिथ' (उपज का दसवां भाग) कर किसे देते थे?

(क) सामन्तों को (ख) चर्च को

(ग) राजा को (घ) स्थानीय संस्था को

उतर : चर्च को।

15. फ्रांस के लोग राजदरबार को क्या समझते थे?

(क) राष्ट्र की क्रब

(ख) राष्ट्र की उन्नति श्रोत

(ग) राष्ट्र की शान

(घ) राष्ट्र की दु"मन

उतर : राष्ट्र की क्रब।

16. किस सम्राट को 'चर्च का ज्येष्ठ पुत्र' के नाम से जाना जाता है?

(क) लुई चौदहवां (ख) लुई पंद्रहवां

(ग) लुई सौलहवां (घ) इनमें से कोई नहीं

उतर : लुई सौलहवां।

17. क्रान्ति से पहले 'गैबले' नामक कर किस पर लगाया गया?

(क) ऊपज पर (ख) विदे"ाी यात्रा पर

(ग) नमक पर (घ) राजा से मिलने पर

उतर : नमक पर।

18. रूसो की मृत्यु कब हुई?

(क) 1750 ई. (ख) 1778 ई.

(ग) 14 जुलाई, 1779 ई. (घ) 1800 ई.

उतर : 1778 ई.।

19. किस विद्वान् ने फ्रांस की क्रान्ति को 'दो विरोधी गुटों को संघर्ष' बताया हैं?

(क) रूसों (ख) मान्तेस्क्यू

(ग) वाल्तेयर (घ) डेविड थोमसन

उतर : डेविड थोमसन।

20. 'कानून की आत्मा' किस विद्वान् की पसिद्ध रचना हैं?

(क) रूसो (ख) मान्तेस्क्यू

(ग) वाल्तेयर (घ) डेविड थोमसन

उतर : मान्तेस्क्यू।

21. क्रान्ति से पहले फ्रांस में कितने प्रकार के कानून प्रचलित थे?

(क) 399 (ख) 365

(ग) 400 (घ) 412

उतर : 400।

22. बास्तील के पतन की घटना कब हुई?

(क) 5 मई, 1789 ई. (ख) 14 जुलाई, 1789 ई.

(ग) 15 अगस्त, 1789 ई. (घ) 17 जुलाई, 1789 ई.

उतर : 14 जुलाई, 1789 ई.।

23. बास्तील के पतन के समय वहां का गवर्नर कौन था?

(क) रूसों (ख) लुई सोलहवां

(ग) नेकर (घ) द–लाने

उतर : रूसो।

24. 'क्रान्ति का मसीहा' किस कहा जाता है ?

(क) रूसो (ख) लुई सोलहवां

(ग) नेकर (घ) द–लाने

उतर : रूसो।

25. मानवाधिकारों की घोषणा कब की गई?

(क) 5 मई, 1789 ई.

(ख) 14 जुलाई, 1789 ई.

(ग) 17 अगस्त, 1789 ई.

(घ) 4 अगस्त, 1789 ई.

उतर : 17 अगस्त, 1789 ई.।

26. राष्ट्रीय संविधान सभा का गठन कब हुआ?

(क) 5 मई, 1789 ई. (ख) 9 जुलाई, 1789 ई.

(ग) 14 जुलाई, 1789 ई. (घ) 5 अक्टूबर, 1789 ई.

उतर : 9 जुलाई, 1789 ई.।

27. फ्रांस की स्त्रियों ने वर्साय के महल की तरफ कूच किस दिन किया?

(क) 5 मई, 1789 ई. (ख) 14 जुलाई, 1789 ई.

(ग) 17 अगस्त, 1789 ई. (घ) 5 अगस्त, 1789 ई.

उतर : 5 अगस्त, 1789 ई.।

28. नेशनल कन्वेंशन ने शासन की बागडोर कब संभाली?

(क) 14 जुलाई, 1789 ई. (ख) 17 अगस्त, 1789 ई.

(ग) 21 सितबंर, 1792 ई. (घ) इनमें से कोई नही

उतर : 21 सितंबर, 1792 ई.।

29. लुई सोलहवें को फांसी कब दी गई?

(क) 21 सितंबर, 1792 ई.

(ख) 21 जनवरी, 1793 ई.

(ग) 21 फरवरी, 1793 ई.

(घ) 21 मार्च, 1793 ई.

उतर : 21 सितंबर, 1792 ई.।

30. नेशनल कन्वेंशन द्वारा बनाए गए किस वर्ष के संविधान को तीसरे वर्ष का संविधान कहा जाता है?

(क) 1795 ई. (ख) 1794 ई.

(ग) 1793 ई. (घ) 1792 ई.

उतर : 1795 ई.।

7.9 (C)

1. **(अ) तथा (ब) का उचित मिलान कीजिए :**

(i) सो"ाल कान्ट्रैक्ट	(a) लुई चौदहवां
(ii) 'मैं ही फ्रांस हूं'	(b) शाही दरबार
(iii) श्रीमति घाटा	(c) रूसो
(iv) पर्"ियान लैटरस	(d) मेरी एन्तोयनेत
(v) राष्ट्र की क्रब	(e) मांतेस्क्यू

उतर : (i)–(c), (ii)–(a), (iii)–(d), (iv)–(e), (v)–(b)

2. (क) तथा (ख) का उचित मिलान कीजिए :

(i) क्रान्ति का मसीहा	(a) 1830 ई.
(ii) प्रथम लिखित संविधान	(b) 14 जुलाई, 1789 ई.
(iii) बास्तील का पतन	(c) 5 अक्टूबर, 1789 ई.
(iv) स्त्रियों का वर्साय की ओर प्रस्थान	(d) रूसो
(v) बेल्जियम की स्वतंत्रता	(e) 1791 ई.

उतर : (i)–(d), (ii)–(e), (iii)–(b), (iv)–(c), (v)–(a)

3. (क) तथा (ख) का उचित मिलान कीजिए :

(i) राष्ट्रीय संविधान सभा का अंत	(a) 16 अक्टूबर, 1793 ई.
(ii) लुई सोलहवें की मृत्यु	(b) 30 सितंबर, 1791 ई.
(iii) तीसरे वर्ष का संविधान	(c) 1795 ई.
(iv) मीट्रिक प्रणाली	(d) ने"ानल कन्वें"ान
(v) राष्ट्र की क्रब	(e) 21 जनवरी, 1793 ई.

उतर : (i)–(b), (ii)–(e), (iii)–(a), (iv)–(c), (v)–(d)

रिक्त स्थानों के उतर

(**i**) लुई 16वां (**ii**) बूर्बों (**iii**) मेरी ऐन्तोयनत (**iv**) मांतेस्क्पु

(**v**) लुई 14वां (**vi**) ग्रेटन (**vii**) आर्थिक संकट (**viii**) तुर्गो

(**ix**) 14 जुलाई 1789 (**x**) 20 जून 1789

7.10 सन्दर्भ/सहायक अध्ययन सामग्री (Referenes/Suggested Study Materials)

1. आधुनिक वि"व का इतिहास– लाल बहादुर वर्मा
2. आधुनिक युरोप का इतिहास– विद्याधर महाजन
3. युरोप का आधुनिक इतिहास– (1789 से 1974)– सत्यकेतु विघालंकार
4. वि"व का इतिहास– नैयेनियल प्लेट, म्यूरियल जीन ड्रेमंड
5. आधुनिक वि"व का इतिहास– डा0 ए0 सी0 अरोड़ा
6. आधुनिक युरोप का इतिहास– (1453 से 1919) – डा0 के0 सी0 जैन
7. आधुनिक वि"व (1500–1950)– जैन ओर माथुर
8. The French Revolution- Thomas Carlyle
9. Modern Europe to 1870- C.J.H. Hayes/
10. आधुनिक वि"व– डा0 विपिन बिहारी सिन्हा

SUBJECT : HISTORY (Sem-VI) B.A. III Year	
Course Code : Hist-304 **Lesson- 3**	**AUTHOR** **M.S. Jyoti**
साम्राज्यवाद का उदय (Rise of Imperialism)	

अध्याय की संरचना (Lesson structure)

3.1 अधिगम उद्दे”य (Learning objectives)

3.2 परिचय (Introduction)

3.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main Body of text)

3.3.1 साम्राज्यवाद के प्रसार के कारण (Causes of impesion of emperialism)

आर्थिक कारण (Economic causes)

3.3.2 अतिरिक्त पूंजी (Surplus Capital)

3.3.3 कच्चे माल की आव”यकता (Requirement of Raw Material)

3.3.4 अतिरिक्त उत्पादन (Surplus products)

3.3.5 बढ़ती जनसंख्या का दबाव (Pressure of Increasing population)

3.3.6 यातायत व संचार के साधनों का विकास (Development of means of transport and communication)

3.4.1 राजनीतिक कारण

3.4.2 व्यापारिक वर्ग का योगदान

3.4.3 राष्ट्रीयता की भावना

3.4.4 सैनिक वर्ग की भूमिका

3.4.5 सामरिक महत्व के स्थानों पर अधिकार

3.4.6 साहसी व्यक्तियों का योगदान

3.5 साम्राज्यवाद का विस्तार

3.5.1 युरोपीय शक्तियों द्वारा अफ्रीका का विभाजन

3.5.2 फ्रांस के उपनिवे”ा

3.5.3 इटली के उपनिवे”ा

3.5.4 जर्मनी के उपनिवे”ा

3.5.5 मानचित्र (Map) अफ्रीका में अंग्रेजी उपनिवे”ा

3.5.6 इग्लैण्ड के उपनिवे”ा

3.6 एि”ाया में साम्राज्यवाद का विस्तार

3.6.1 पुर्तगाल के उपनिवे”ा

3.6.2 फ्रांस के उपनिवे”ा

3.6.3 इग्लैण्ड के उपनिवे”ा

3.6.4 होलैण्ड के उपनिवे”ा

3.6.5 जर्मनी के उपनिवे”ा

3.6.6 रूस के उपनिवे”ा

3.7 साम्राज्यवाद के प्रभाव या परिणाम

3.7.1 आर्थिक शोषण

3.7.2 उपनिवे”ाों में गरीबी व भुखमरी और बेराजगारी

3.7.3 विजित क्षेत्रों में निरकु”ा शासन

3.7.4 ईसाई धर्म का प्रसार

3.7.5 राष्ट्रीय भावनाओं की जागृति

3.7.6 उपनिवे”ाों का विकास

3.7.7 स्वतन्त्रता आन्दोलन को कुचलना

3.7.8 साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा

3.7.9 प्रजातान्त्रिक व्यवस्था का प्रसार

3.8 प्रगति समीक्षा (Check your progress)

3.9 सारां"ा (Summary)

3.10 स्वः मूल्यांकन के लिए प्र"न (Self Assessment Test)

3.11 प्रगति समीक्षा हेतु प्र"नोतर (Answer to check your progress)

3.12 सन्दर्भ/सहायक अध्ययन सामग्री (References/Suggested Study Materials)

3.1 (अधिगम उद्दे"य– Learning Objective)

इस अध्याय के अध्ययन के प"चात् विधार्थी योग्य होगें:–

- साम्राज्यवाद की विचारधारा से पाठकों को परिचित कराना।
- साम्राज्यवाद के उदय के कारणों से अवगत कराना।
- युरोपीय शक्तियों द्वारा अफ्रीका के विभाजन पर चर्चा करना।
- साम्राज्यवादी शक्तियों का एि"ाया में प्रभुत्व पर चर्चा करना।
- साम्राज्यवाद के प्रभाव व परिणाम से पाठकों को परिचित कराना।
- साम्राज्यवाद का समाज पर प्रभाव चर्चा करना।

(3.2) परिचय (Introduction)

पुनर्जागरण तथा धर्म सुधार आन्दोलन के परिणामस्वरूप यूरोप का राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक जागरण हुआ। इस जागरण से वि"व में 'आधुनिक युग' की शुरूआत हुई जिसका नेतृत्व यूरोप ने किया। नव जागरण के परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड व अन्य यूरोपीय दे"ाों के कृषि तथा उद्योग के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए जिन्हें क्रम"ाः कृषि क्रान्ति एवं औद्योगिक क्रान्ति कहा जाता है। इन क्रान्तियों के परिणामस्वरूप यूरोप का व्यापार एवं वाणिज्य तेजी से बढ़ा जिसके परिणामस्वरूप प"िचमी दे"ाों मे पूंजीवादी व्यवस्था का प्रचलन हुआ। इन दे"ाों में उत्पादित होने वाले अतिरिक्त माल को बेचने तथा अपने उद्योगों के लिए कच्चा माल प्राप्त करने की आव"यकता यूरोपीय दे"ाों को पड़ी। यूरोप के विकसित एवं बौद्धिक जागृत लोगों का ध्यान उस समय एि"ाया तथा अफ्रीका के वि"ााल क्षेत्रों की तरफ घूमा जहां अभी तक आधुनिक वैज्ञानिक परिवर्तन नहीं आए थे तथा मध्यकालीन व्यवस्थाएं प्रचलित थीं। शीघ्र ही यूरोप के अनेक साहसी व्यापारी, नाविक व खोजकर्ता तथा धर्म प्रचारक एि"ाया तथा अफ्रीका के साथ सम्पर्क स्थापित करने में कामयाब हो गए। इन दे"ाों के साथ संबंध स्थापित होने से यूरोप के दे"ाों को अपनी

आर्थिक तथा राजनैतिक समस्याओं से मुक्ति मिलती नजर आयी अर्थात् अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त कर लिया। 19वीं शताब्दी के यूरोप के अधिकतर दे"ा एि"ाया तथा अफ्रीका के दे"ाों का आर्थिक शोषण करने लगे तथा शताब्दी की दौड़ तेज हो गई व दूसरी तरफ इन दे"ाों के बीच अपने स्वार्थों की होड़ भी आरंभ हो गई। परिणामस्वरूप ये दे"ा एि"ाया तथा अफ्रीका के भू–भागों पर अपना आधिपत्य स्थापित करने का प्रयास करने लगे। यूरोपीय राष्ट्रों द्वारा आधिपत्य स्थापना की यह कोि"ा"ा 'साम्राज्यवाद' कहलायी। प्रस्तुत अध्याय में 'साम्राज्यवाद' से जुड़े विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करेगें।

साम्राज्यवाद का अर्थः–

एक राजनीतिक अवधारणा, व्यवस्था तथा आचरण के रूप में साम्राज्यवाद उतना ही प्राचीन है जितना राज्य। परन्तु साम्राज्यवाद का स्वरूप भिन्न–भिन्न युगों मे कई आधारो पर बदलता रहा है। साम्राज्यवाद को अंग्रेजी भाषा में Imperialism कहा जाता है जो Imperator से लिया गया है जिसका अर्थ सम्राट अथवा बड़े राज्य का स्वामी है। साधारण अर्थ में साम्राज्यवाद का अभिप्राय एक वि"ााल आकार की राज्य व्यवस्था से लिया गया है जिसके अंतर्गत अनेक राष्ट्र तथा दे"ा एक केन्द्रीकृत राजनीतिक सता की अधीनस्थ में रहते है और साम्राज्य के अधिपति को सम्राट की संज्ञा दी जाती है। यह धारणा प्राचीनकाल में विद्यमान साम्राज्यों का आभास कराती है परन्तु वर्तमानकालीन साम्राज्यवाद इससे भिन्न है। ये प्रादेि"ाक राजनीतिक प्रभुत्व के साथ–साथ या उससे अलग आर्थिक प्रभुत्व या प्रभाव अथवा कूटनीतिक प्रभाव क्षेत्रों के रूप में है। इस दृष्टि से साम्राज्यवाद की सही तथा स्पष्ट परिभाषा करना कठिन है। विभिन्न विद्वानों ने समय–समय पर 'साम्राज्यवाद' शब्द की व्याख्या अपने–अपने ढ़ग से दी है।

1.**समाज विज्ञान कोष (Encyclopaedia of Social Sciences)** के अनुसार, **''साम्राज्यवाद वह नीति है जिनका उद्देश्य एक साम्राज्य का सृजन, संगठन तथा अनुरक्षण करना है। इसका अभिप्राय ऐसे विशाल आकार के राज्य से है जो न्यूनाधिक मात्रा में अनेक पृथक राष्ट्रीय इकाइयों से निर्मित हो और जो एक एकाकी केन्द्रीकृत इच्छा की अधीनता में हो।''**

2. **प्रो. भामैन** के अनुसार, **''साम्राज्यवाद अधीनस्थ प्रजननों के ऊपर शक्ति तथा हिंसा द्वारा लादा गया विदेशी शासन है। भले ही इसके विरूद्ध कितने नैतिक तर्क तथा बहाने प्रस्तुत किये जाए।''**

3. **सी.डी. बर्न्स** के अनुसार, **''विभिन्न देशों तथा प्रवासियों के ऊपर एक ही प्रकार के कानून तथा भाासन की पद्धति लागू करने की व्यवस्था को साम्राज्यवाद कहा जाता है।''**

4. **पार्कर टी.मून** के अनुसार, **''साम्राज्यवाद का अर्थ गैर यूरोपीय जातियों पर उनसे सर्वथा भिन्न राष्ट्रों के शासन है।''**

5. **चार्ल्स.ए. बेयर्ड** के मतानुसार, **''सभ्य राष्ट्रों की कमजोर एवं पिछड़े देशों पर शासन करने की इच्छा व नीति साम्राज्यवाद कहलाती है।''**

इस प्रकार सामान्यतः यह माना जाता है कि जब कोई दे"ा किसी अन्य दे"ा पर किसी भी उपाय से अलग शासन स्थापित कर लेता है तो उसका यह काम साम्राज्यवाद का रूप धारण कर लेता है। **उपरोक्त परिभाशा अतीतकालीन साम्राज्यवाद का आभास कराती है जो प्रादेशिक विस्तारवादी प्रभुत्व से मुक्त थी। पंरतु आधुनिक साम्राज्यवाद निर्बल प्रजातियों के आर्थिक शोषण, राजनीतिक आधिपत्य तथा व्यापक भौतिकवाद की नीति है। साम्राज्यवाद के आधुनिक स्वरूप को व्यक्त करते हुए लैंगर ने लिखा है कि ''साम्राज्यवाद का भावार्थ एक राज्य, राश्ट्र अथवा लोगों के अन्य समूह पर शासन अथवा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष अधिकार, राजनीतिक व आर्थिक अधिकार स्थापित करने की तीव्र इच्छा है।''**

आधुनिक साम्राज्य की प्रकृति तथा प्रवृति प्राचीन तथा मध्ययुगीन साम्राज्यवाद से कई रूपों में भिन्न प्रकार की रही। प्राचीन तथा मध्ययुगीन साम्राज्यवाद महत्वाकांक्षी योद्धाओं की विजयाभिलाषी का परिणाम था। ऐसे सम्राटों ने विजित दे"ाों में अपने प्र"ाासन चलाने के लिए अपने शासकों को नियुक्त किया था जिनका प्रमुख उद्दे"य वहां से कर वसूलना तथा प्रजाजनों पर प्रभुत्व बनाना था। प्रादे"िाक प्र"ाासक के अयोग्य सिद्ध होने पर स्थानीय शक्यिां पुनः स्वतंत्र हो जाती थी तथा साम्राज्य छिन्न–भिन्न हो जाते थे। **परन्तु यूरोपीय (आधुनिक) साम्राज्यवाद की प्रवृति तथा उद्देश्य प्राचीन साम्राज्यवाद से अलग है। इनमें पहला उद्देश्य देशों की मातृभूमि के देश का व्यापार व्यवसाथ में एकाधिकार स्थापित करना था।** वर्तमान साम्राज्यवाद का आंरभ यूरोप में होने वाली औद्योगिक क्रान्ति से हुआ क्योंकि यूरोप के दे"ाों को अपने उत्पादन में हुई वृद्धि के कारण माल बेचने के लिए बाजार के रूप में उपनिवे"ाों की खोज की जाने लगी। इन दे"ाों को अपने कारखानों के लिए कच्चा माल भी प्राप्त करना था। इस प्रकार यह साम्राज्यवाद मुख्यतः पूंजीवादी आर्थिक शोषण के उद्दे"य से निर्दे"िात था परन्तु बिना राजनैतिक प्रभुत्व स्थापित किये यह उद्दे"य पूरा नहीं हो सकता था। अतएव साम्राज्यवादी दे"ाों की आर्थिक शक्तियां (पूंजीपति, उद्योगपति एवं व्यवसायी) की ऐसे साम्राज्य विस्तार में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस प्रकार हम प्राचीन एवं आधुनिक (नवीन) साम्राज्यवाद को अलग–अलग ढ़ग से देख सकते हैं अध्ययन की सुविधा के लिए **साम्राज्यवाद के विभिन्न रूपों** का विवरण देना अनिवार्य हैः

1. **प्राचीन साम्राज्यवाद (Old Imperialism)**: यह साम्राज्यवाद की वह व्यवस्था थी जब कोई शक्ति"ााली शासक अपनी महत्वाकांक्षी विजय अभिलाषा से दूसरे दे"ा या राज्य (राजा) को पराजित करके उस प्रदे"ा को अपने साम्राज्य का भाग बना लेता था तथा वहां अपनी शासन व्यवस्था स्थापित करता था।

प्राचीन मौर्य साम्राज्य, रोमन साम्राज्य तथा मंगोलों के साम्राज्य इसके उदाहरण है। 15वीं शताब्दी तक इस प्रकार की व्यवस्था चलती रही।

2. **उपनिवेशवाद (Colonism)**: पुनर्जागरण के दौरान होने वाली भौगोलिक खोजों से यूरोप के राष्ट्रों ने अज्ञात क्षेत्रों पर अधिकार करके जो साम्राज्य स्थापित किया, उसे 'उपनिवे"ाक साम्राज्यवाद' या उपनिवे"ावाद कहते है। इस प्रकार के साम्राज्यवाद में कोई राज्य दूसरे राज्य के आर्थिक संसाधनों पर अपना आधिपत्य स्थापित करता है। इसे आर्थिक साम्राज्यवाद भी कह सकते है।
3. **नव साम्राज्यवाद (New Imperialism)**: 19वीं सदी के उतरार्द्ध में यूरोपीय राष्ट्रों द्वारा अपने औद्योगिकरण के फलस्वरूप अपना माल बेचने के लिए तथा कच्चा माल प्राप्त करने के लिए ए"ाया तथा अफ्रीका के अविकसित दे"ाों पर राजनीतिक तथा आर्थिक आधिपत्य कर लिया गया। इस प्रकार जब कोई राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक संसाधनों पर अपना अधिकार कर लेता है उसे 'नव साम्राज्यवाद' कहा जाता है। दूसरे वि"व–युद्ध के बाद साम्राज्यवाद का एक नया रूप सामने आया जिसमें विभिन्न राष्ट्र दूसरे राष्ट्र की आर्थिक नीतियों को प्रभावित करते हैं अथवा प्रभावित करने के लिए दबाव डालते हैं जिसे 'नव उपनिवे"ावाद' के नाम से जाना जाता है।

   वर्तमान अध्याय में हम 19वीं सदी में प्रचलित 'नव साम्राज्यवाद' का अध्ययन करेगें।

3.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main Body of text)

3.3.1 साम्राज्यवाद के प्रसार के कारण (Causes of impesion of emperialism)

आर्थिक कारण (Economic causes)

साम्राज्यवाद के उदय तथा विकास में अनेक तत्वों ने मिलकर अपना योगदान। इन तत्वों का विवरण इस प्रकार हैः

(क) आर्थिक कारण (Economic Causes) : नवीन साम्राज्यवाद के विकास में आर्थिक तत्वों की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका थी। **डेविड थामसन** ने लिखा कि, **यह सत्य है कि प्रत्येक देश द्वारा अन्य स्थानों में धन निवेश, जो कि सुरक्षित तथा जिसका परिणाम आकर्षक था, कि नीति ने 19वीं भाताब्दी क अन्त में अधिक से अधिक उपनिवेशों की स्थापना करने के लिए प्रेरित किया।''** प्रमुख कारणों का प्रमुख विवरण इस प्रकार हैः

3.3.2 अतिरिक्त पूंजी (Surplus Capital): औद्योगिक क्रान्ति के कारण यूरोप के दे"ाों ने बड़े पैमाने पर वस्तुओं का उत्पादन किया जिससे वस्तु की लागत में कमी आयी। परिणामस्वरूप लाभ अधिक होने लगा। इस प्रकार यूरोप के पूंजीपतियों के पास काफी धन इकट्ठा होने लगा। इस फालतू (अतिरिक्त) पूंजी को यदि पूंजीपति

अपने ही दे"ा में या यूरोप के किसी अन्य दे"ा में पुनः लगाते तो उन्हें कम लाभ होता क्योंकि वहां प्रतिस्पर्धा ज्यादा थी। एf"ाया तथा अफ्रीका जैसे दे"ाों में मजदूरी सस्ती होने तथा प्रतिस्पर्धा कम होने के कारण लाभ बढ़ने की काफी संभावनाएं थी। इस प्रकार यूरोप के पूंजीपतियों ने एf"ाया तथा अफ्रीका के अविकसित क्षेत्रों में अपना धन लगाया तथा अपने धन की सुरक्षा के लिए अपने दे"ाों की सरकारों पर इन प्रदे"ाों पर आधिपत्य स्थापित करने के लिए भी दबाव डाला जो साम्राज्यवाद का आधार बना।

3.3.3 कच्चे माल की आवश्यकता (Requirement of Raw Material): औद्योगिक क्रान्ति के कारण जब बड़े पैमाने पर माल का उत्पादन होने लगा तो माल तैयार करने के लिए अधिक कच्चे माल की आव"यकता पड़ने लगी जैसे इंग्लैंड के कपड़ा उद्योग को चलाने के लिए कपास की आव"यकता थी जिसे उसने भारत से ले जाना शुरू कर दिया था। इसी प्रकार यूरोप के दे"ाों को लोहा, कोयला, रबर, कच्चा तेल, टंगस्टन, मैंगनीज आदि की जरूरत पड़ने लगी। अतः कच्चा माल प्राप्त के लिए ये दे"ा अविकसित दे"ाों पर अधिकार जमाने का प्रयास करने लगे। यूरोप में जनसंख्या का कॉफी बड़ा भाग उद्योग में लग जाने से कृषि उत्पादों में कमी आ गई थी अतः अपनी जनसंख्या का पेट भरने के लिए औद्योगिक दे"ा अनाज, चाय, कॉफी, चीनी, तेल जैसे खाद्यान्न सामग्री के लिए भी उपनिवे"ाों पर निर्भर थे। अतः यूरोप के दे"ा खाद्यान्न प्राप्त करने के लिए अविकसित दे"ाों पर अपना आधिपत्य स्थापित करने का प्रयास करने लगे।

3.3.4 अतिरिक्त उत्पादन (Surplus products): औद्योगिक क्रान्ति के कारण समाज के आर्थिक ढांचे में बड़ा परिवर्तन आया। मध्यकाल में 'उत्पादन की घरेलू पद्धति' प्रचलित थी जिसमें वस्तुओं का उत्पादन केवल स्थानीय आव"यकताओं की पूर्ति के लिए तथा घर में हाथ से होता था। इस प्रकार तैयार माल की खपत उसी दे"ा में हो जाती थी। अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में ले जाने के लिए न तो माल था तथा न ही यातायात के समुचित साधन थे परन्तु 1870 ई. के प"चात् यूरोप में हुई औद्योगिक क्रान्ति के परिणामस्वरूप उत्पादन में अत्यधिक बढ़ोतरी हुई। इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, इटली तथा संयुक्त राज्य अमेरिका तथा शताब्दी के अन्त तक जापान भी औद्योगिक दे"ाों की पंक्ति में आ गया। इन दे"ाों को अब अपना माल बेचने के लिए चिंता होने लगी क्योंकि यूरोप में दे"ाों ने उस समय विदे"ाी सामान पर अनेक प्रतिबंध लगा रखे थे। इसलिए इन दे"ाों को अपनी खपत से अधिक सामान बेचने के लिए मंडियों की आव"यकता थी। अतः इन दे"ाों के उद्योगपतियों तथा व्यापारियों ने अपने–अपने दे"ाों की सरकारों की पर अविकसित क्षेत्रों पर अधिकार करने के लिए दबाव डाला। इससे नवीन साम्राज्यवाद को बल दिया।

3.3.5 बढ़ती जनसंख्या का दबाव (Pressure of Increasing population): 19वीं शताब्दी के अन्त तक औद्योगिकरण के फलस्वरूप जीवन स्तर में सुधार हुआ जिसके परिणामस्वरूप मृत्यु–दर में कमी आयी अर्थात् जनसंख्या में वृद्धि हुई। एक अनुमान के अनुसार, 1880–1914 के बीच यूरोप की आबादी बढ़कर 45 करोड़ हो गई

थी। ब्रिटेन तथा स्कॅंडीनेवियाई दे"ाों में आबादी में तीन गुना वृद्धि हुई। 1800–1900 के बीच इंग्लैंड की जनसंख्या 1 करोड़ 60 लाख से बढ़कर 4 करोड़ 10 लाख हो गई। इस अवधि में जर्मनी, नीदरलैंड, आस्ट्रिया, हंगरी तथा इटली की आबादी दुगुनी हो गई। यूरोप के दे"ाों के लिए इस बढ़ती हुई जनसंख्या को खाद्यान्न उपलब्ध करवाने, रोजगार देने तथा बसाने की समस्या प्रतिदिन गंभीर रूप ले रही थी। इस समस्या को हल करने के लिए यह था कि बहुत से लोगों को दूसरे दे"ाों में बसा दिया जाये। यूरोप के दे"ा अपनी जनसंख्या संबंधी समस्या को हल करने के लिए उपनिवे"ा स्थापित करने लगे। इसलिए ए"िाय तथा अफ्रीका के कम जनसंख्या वाले क्षेत्रों में उपनिवे"ाों की स्थापना की गई। उपनिवे"ाों में बहुत से लोग सैनिक एंव प्र"ाासनिक अधिकारी, व्यापारी, धर्म प्रचारकों के रूप में जाकर रहने लगे। इस प्रकार बढ़ती जनसंख्या का दबाव साम्राज्यवाद का एक कारण बना।

3.3.6 यातायत व संचार के साधनों का विकास (Development of means of transport and communication) : औद्योगिक क्रान्ति के समय यातायात एवं संचार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन आये। सड़को, रेलवे एवं अन्य साधनों का विकास हुआ। इस प्रकार तार एवं बेतार के प्रयोग ने वि"व के निकट ला दिया। यातायात एवं संचार के क्षेत्र में आयी क्रान्ति से साम्राज्यवाद का प्रसार आरंभ हो गया। भाप की शक्ति से चलने वाले जहाजो से यूरोप के दे"ाों के व्यापारी अपना माल दुनिया के प्रत्येक भाग में पहुंचाने लगे तथा वहां से कच्चा माल प्राप्त करने लगे। यूरोप के पूंजीपतियों ने रेलवे एवं यातायात के अन्य साधन विकसित करने के लिए अविकसित दे"ाों में बड़ी भारी पूंजी भी लगायाी जिसकी सुरक्षा के लिए इन दे"ाों पर राजनीतिक प्रभुत्व करना अति आव"यक था। दूसरे यातायात एवं संचार के साधनों से अब इन उपनिवे"ाों पर अधिकार स्थापित करना भी आसान हो गया क्योंकि उपनिवे"ाो की प्रत्येक सूचनाएं थोड़े ही समय में मातृदे"ा को मिल जाती थी। इसी प्रकार विद्रोह आदि की स्थिति में यूरोप से जल्द ही सेना एवं गोला–बारूद भी भेजा जा सकता था। इस प्रकार यातायात एंव संचार के साधनों के विकास ने भी साम्राज्यवाद को बढ़ावा दिया।

3.4.1 राजनीतिक कारण (Political Causes) : औपनिवे"िाक विस्तार में राजनीतिक कारणों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। डेविड थामसन ने लिखा कि, **''आर्थिक कारणों के समान ही राजनीतिक कारण भी कम महत्वपूर्ण नहीं थे।''** 19वीं शताब्दी के अन्त में शस्त्रीकरण की भयानक दौड़ शुरू हो गई थी तथा यूरोप के राज्य नौ–सैनिक अड्डे बनाने तथा सामरिक महत्व के स्थानों पर कब्जा करने के लिए लालयित थे। इंग्लैंड तथा जर्मनी के बीच नौ–सैनिक विस्तार की जो भंयकर प्रतिस्पर्धा शुरू हुई थी उसने दोनों दे"ाों को तेजी से उपनिवे"ा हथियाने तथा सामरिक महत्व के सैनिक अड्डे स्थापित करने की ओर अग्रसर किया। फ्रांस तथा इटली भी इस दौड़ में पीछे नहीं रहे। राष्ट्रीय गौरव की स्थापना के लिए बिस्मार्क भी अपने जीवन के अन्तिम पड़ाव में उपनिवे"ा स्थापना की ओर मुड़ा। सैनिक अधिकारियों, राजनीतिज्ञों, विचारकों, धर्मधिरकारियों के प्रसार के लिए लगातार दबाव डाला।

डेविड ने लिखा है कि, **''यूरोप के प्रमुख देशों मं कुछ राष्ट्रोवादी, लेखक, अर्थशास्त्री हुए जिन्होनें राष्ट्र के गौरव को बढ़ाने के लिए तथा राष्ट्र की स,रक्षा तथा आत्मनिर्भरता की दृश्टि से औपनिवेशिक विस्तार को प्रबल प्रोत्साहन दिया और उसका प्रचार किया। इटली तथा जर्मनी जैसे देश जहां औद्योगिक विकास कम हुआ था राजनैतिक कारणों से ही औपनिवेशिक विस्तार किया।''** राजनीतिक कारणों का विवरण इस प्रकार हैः–

3.4.2 **व्यापारिक वर्ग का योगदान (Role of Traders)**: व्यापारिक वर्ग हमे"ाा अपने व्यापार की उन्नति के लिए सोचता है तथा संगठन बनाकर अपनी सरकार पर दबाव डालकर व्यापारिक लाभ के लिए कार्य करवाता है। औद्योगिक क्रान्ति के बाद यूरोप के व्यापारिक संगठनों ने इसी प्रकार की भूमिका अदा की। कपड़े तथा लोहे की व्यापारी संगठनों की इसमें वि"ोष भूमिका रही है क्योंकि उन्हे अपना सामान बेचने के लिए बाजारों की आव"यकता थी। इसी प्रकार का युद्ध का सामान बनाने वाली कंपनियों ने भी अपने व्यवसाय की उन्नति के लिए साम्राज्यवाद का समर्थन किया। इस काम में बैंको की भूमिका भी कम महत्वपूर्ण नहीं थी। जब इंग्लैंड के प्रधानमंत्री डिजरैनी ने स्वेज नहर शेयर खरीदने का नि"चय किया तो बैंकों ने सरकार को तत्काल धन दे दिया तथा सरकार पर मिस्त्र पर अधिकार स्थापित करने के लिए दबाव डालते रहे। इस प्रकार स्पष्ट है कि व्यापारी संगठनों का दबाव एवं सहयोग भी साम्राज्यवाद के प्रसार का कारण बना।

3.4.3 **राष्ट्रीयता की भावना (Spirit of Nationalism)** : यूरोप में बढ़ती राष्ट्रीयता की भावना भी साम्राज्यवाद के प्रसार का एक प्रमुख कारण बनी। 19 वीं शताब्दी के उतरार्द्ध में यूरोप के प्रमुख दे"ाों में अनेक राष्ट्रवादी राजनीतिज्ञ, लेखक, विचारकों एवं अर्थ"ाास्त्री हुए जिन्होनें राष्ट्रीय गौरव, जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस, बेल्जियम, पुर्तगाल आदि राज्यों मे इसी प्रकार के राष्ट्रवादी व्यक्तियों के प्रभाव के कारण उपनिवे"ावाद को प्रोत्साहन मिला। साम्राज्य स्थापना की दौड़ में इंग्लैंड सबसे आगे था फिर भी वह अपने साम्राज्य की सुरक्षा को लेकर चिंतित था तथा अपना साम्राज्य और बढ़ाना चाहता था। फ्रांस–प्र"ाा युद्ध में फ्रांस की हार के प"चात् फ्रांस अपने राष्ट्रीय गौरव की पुनः स्थापना के लिए साम्राज्यवाद की तरफ अग्रसर हुआ। इटली तथा जर्मनी भी अपना एकीकरण पूरा करने के प"चात् अपना आर्थिक विकास चाहते थे। अतः वे भी साम्राज्यवाद की तरफ अग्रसर हुए। फलैट एवं ड्रमण्ड ने लिखा है कि, **'' संसार के मानचित्र को अपने दे"ा के उपनिवे"ाों से रंगा देखकर सामान्य नागरिक तक प्रायः राश्ट्रीय गौरव से लिख उठता था।''** इस प्रकार राष्ट्रीयता की भावना साम्राज्यवाद के प्रसार का महत्वपूर्ण कारण बनी।

3.4.4 सैनिक वर्ग की भूमिका (Role of Adventurers) : सेना के अनेक अधिकारियों ने भी साम्राज्यवाद का समर्थन किया क्योंकि औपनिवे"िाक स्पर्धा के कारण युद्धों की संभावना बनी रहती है। युद्धों ने उन्हें य"ा प्राप्ति के अवसर मिलते है तथा साम्राज्यवाद के प्रसार से सैनिकों की संख्या में भी वृद्धि होती है। सैनिकों के बढ़ने से सेना

के उच्च पद बढ़ते है जिससे अधिकारियों को पदोन्नति के अवसर मिलते हैं। नए जीते गए प्रदे"ाो को कई वर्षों तक सेना के नियन्त्रण में रखा जाता है तथा इस अवधि में सैनिक अधिकारी प्र"ाासकों की भूमिका अदा करते हैं तथा लूट–खसोट से धन प्राप्त करते है।

3.4.5 सामरिक महत्व के स्थानों पर अधिकार (Occupation of Areas Military Importance): व्यापारिक सुरक्षा की दृष्टि से प्रमुख जलमार्गों के निकट स्थित द्वीपों तथा महाद्वीपों के तटवर्तीय क्षेत्रों पर अधिकार जमाना आव"यक हो गया था। स्पेन, पुर्तगाल, इंग्लैंड तथा फ्रांस ने इस दि"ाा में प्रयास किये। इंग्लैंड को अपने भारतीय साम्राज्य की सुरक्षा के लिए भूमध्यसागर पर नियन्त्रण रखना आव"यक था इसलिए अपने मिस्त्र को अपने नियन्त्रण में किया। फ्रांस ने मोरक्कों को अपने कब्जे में किया। अमेरिका ने प्र"ाांत सागर में प्रभुत्व स्थापित करने के लिए फिलिपाइन द्वीप पर कब्जा किया। यूरोप के दे"ा महासागरों में स्थित द्वीपों पर अधिकार करके उन्हें अपने नौ–सैनिक अड्डो के रूप में प्रयोग करना चाहते थे। बड़ी–बड़ी जहाज कम्पनियों के मालिकों ने भी इस नीति का समर्थन किया क्योंकि उन्हें कोयला, पानी, खाद्य सामग्री एवं तूफानों से बचने के लिए तथा अपने जहाजों की मरम्मत करवाने के लिए सुरक्षित स्थानों (अड्डों) की आव"यकता था।

3.4.6 साहसी व्यक्तियों का योगदान (Role of Adventurers) : यूरोप के अनेक साहसी व्यक्तियों एवं खोजकर्ताओ के प्रयासों से भी साम्राज्यवाद को बढ़ावा मिला। 19वीं सदी में ऐसे साहसी लोगों में बर्टन, कार्ल पिटर्स, स्पेक, ग्राण्ट, बेकर, मार्टन स्टनेली, डॉ. डेविड लिंविगस्टोन, गुस्ताव नाक्टिगल आदि के नाम वि"ाेष उल्लेखनीय है। इन लोगों ने अपनी साहसिक यात्राओं द्वारा अफ्रीका के अनेक अज्ञात स्थानों की खोज की तथा वहां अपना आधिपत्य स्थापित किया। उदाहरण के लिए इंग्लैंड के डॉ. डेविड लिंविगस्टोन ने बीस वर्ष तक अफ्रीका के अन्दरूनी भागों में घूमकर जेम्बसी तथा कांगो नदियों के क्षेत्रों की खोज की। अपनी मृत्यु से पहले उसने अपने दे"ावासियों को संदे"ा भेजा कि अफ्रीका की भूमिका उनके व्यापार तथा धर्म प्रचार के लिए उपयुक्त है। कुछ प्र"ाासकों एवं सेनानायकों ने भी उत्साह, लगन एवं निष्ठा से उपनिवे"ा स्थापना के लिए काम को राष्ट्रीय दायित्व मानकर पूरा किया। इन उत्साही व्यक्तियों की सेवा के बिना अफ्रीका में यूरोपीय राज्यों के साम्राज्य का विस्तार एवं दृढिकरण संभव नही थी।

3.5 साम्राज्यवाद का विस्तार (Expansion of Imperialism)

ए"िाया तथा अफ्रीका के विभिन्न भूभागों को जिस प्रकार यूरोप के दे"ाों ने अपने नियन्त्रण में लिया उसे साम्राज्यवाद का विस्तार कहा जाता है। यूरोपीय विस्तार एक लम्बी–चौड़ी प्रक्रिया थी जिसे पूरा होने में काफी समय लगा। 19वीं शताब्दी के अन्तिम दो द"ाकों (1880–1900) में तो यूरोपीय दे"ाों के बीच इतनी तीव्र होड़ लग गयी कि उन्होनें ए"िाया व अफ्रीका के अधिका"ा भागों को अपने नियन्त्रण में से लिया इसके लिए उन्होनें मानवीय तथा

अमानवीय (छल–बल) सभी प्रकार के साधनों का प्रयोग किया तथा इन महाद्वीपों की भोली–भाली जनता चुपचाप सब कुछ सहन करती रही। यूरोपीय साम्राज्यवादी विस्तार का अध्ययन निम्न प्रकार किया जायेगा।

3.5.1 युरोपीय शक्तियों द्वारा अफ्रीका का विभाजन (Partition of Africa by European Powers)

अफ्रीका एक वि"ाल महाद्वीप है जिसका आकार यूरोप के आकार से तीन गुणा अधिक है। 19वीं शताब्दी से पहले अफ्रीका के बारें में यूरोपीवासियों को ज्यादा जानकारी नही थी अतः इसे अन्य महाद्वीप (**Dark Continent**) के नाम से जाना जाता था। 15वीं शताब्दी मे यूरोपीय दे"ाों द्वारा की नई खोज से अफ्रीका के कुछ तटीय भागो की जानकारी यूरोप वालों को थी। इन प्रदे"ाों से यूरोप के लोग वहां से हथियारों को पकड़कर यूरोप के दास बनाकर बेचते थे। अफ्रीका का 90 प्रति"ात काम यूरोप वालों के लिए अनजान था। अफ्रीका की खराब जलवायु, रेगिस्तान तथा खराब समुद्र तटों का होना अफ्रीका में यूरोपवासियों द्वारा रूचि न लेने का प्रमुख कारण थे। 19वीं शताब्दी में 'दास व्यापार' का महत्व कम होने के कारण स्थिति में परिवर्तन हुआ तथा यूरोप वालों ने अफ्रीका में रूचि लेना आरंभ किया।

अफ्रीका की खोज (Discovery of Africa): 1843 ई. से पहले अफ्रीका के केवल 10 प्रति"ात भाग पर ही यूरोप वालो का अधिकार था। 1830 ई. में फ्रांस ने उतरी अफ्रीका मे स्थित अल्जारिया पर तथा 1840 ई. में इंग्लैंड के धर्म प्रचारक डॉ. डेविड लिंविगस्टोन को दक्षिण अफ्रीका के कुछ क्षेत्रों में घुसने में सफलता मिली थी तथा वहां उसने धर्मप्रचार किया था। 1843 ई. में इंग्लैंड ने नेपाल पर अधिकार कर लिया था तथा इंग्लैंड ने गेम्बिया, गोल्डकोस्ट तथा लियारा लियोन तथा लेगास पर भी अधिकार किया था। पुर्तगाल का अंगोला तथा मोजाम्बिक पर अधिकार था तथा स्पेन ने स्पेनि"ा गिन्नी पर आधिपत्य स्थापित किया हुआ था। 1843 ई. से 1890 ई. के मध्य यूरोप के अनेक साहसी खोजकर्ताओं ने सम्पूर्ण अफ्रीका की यात्राएं कीं तथा नये–नये प्रदे"ाों को खोज निकाला। ईसाई मि"ानरियों ने भी अफ्रीका के विभिन्न क्षेत्रों की खोज में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। वार्य (Barth), नाक्टिगल (Nachtigle) तथा बोगल (Vogel) आदि खोजकर्ताओं ने सहारा व सूडान के क्षेत्रों को ढूंढ़ निकाला। ग्रान्ट, स्पेक तथा बेकर बड़ी झालों के क्षेत्र को खोजने में सफल रहे। लिंविगस्टोन (Livingstone) ने जाम्बेसी नदी के द्वारा यात्रा करके विक्टोरिया तथा न्याजा झीलों का पता लगया तथा जाम्बेजी की घाटी की खोज की। लिंविगस्टोन के अफ्रीका में खो जाने के कारण 1874 ई. में उसे ढूंढ़ने के लिए स्टेनली (Stanlcy) को भेजा गया। स्टेनली ने कांगो की घाटी का पता लगाया तथा वहां की प्राकृतिक संपदा के विषय में जानकारी प्राप्त की। स्टेनली ने अपनी खोज के विषय में थ्रू द डार्क कानटीनेन्ट (Through the Dark Continent) नामक पुस्तक प्रका"ात की जिसने अफ्रीका को समूचे यूरोप में चर्चा का विषय बना दिया। इस प्रकार अफ्रीका एक अन्धमहाद्वीप नही रहा।

अतः यूरोप के दे"ाों के बीच अफ्रीका पर अधिकार करने की होड़ शुरू हो गई तथा 1884–85 ई से 1914 ई. तक यूरोप की शक्तियों ने अफ्रीका को बांट लिया। इस प्रकार अफ्रीका यूरोपीय साम्राज्यवाद का ि"ाकार हो गया।

अफ्रीका का विभाजन (Partition of Africa): अफ्रीका का यूरोपीय राज्यों द्वारा आपस में बांट लेना यूरोपीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है। यूरोप का प्रत्येक दे"ा अफ्रीका के क्षेत्रों पर अपना अधिकार करने का इच्छुक था। बेल्जियम के शासक लियोपोल्ड ने इस दि"ाा में पहला प्रयास किया। उसने अपनी राजधानी **ब्रूसेल्स में 1876 ई.** में अफ्रीका पर विचार करने के लिए यूरोप के राज्यों की एक सभा आयोजित की। इस सभा में अफ्रीका के विकास के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का गठन किया गया। प्रत्येक दे"ा अपने उद्दे"यों का प्राप्त करने के लिए अफ्रीका में हस्तक्षेप करने लगा। इसी समय लियोपोल्ड ने स्टेनली को कांगी क्षेत्र में खोज करने के लिए नियुक्त किया। स्टेनली 1879 ई. से 1882 ई. तक कांगों प्रदे"ा में रहा तथा उसने वहां रहने वाले कबीलों के सरदारों की बहला–फुसलाकर या डरा–धमकाकर अन्तर्राष्ट्रीय सभा का संरक्षण स्वीकार करने के लिए तैयार कर लिया। उसने तीन–चार वर्षो के थोड़े समय में ही अफ्रीका के सरदारों के साथ 400 संधियां की तथा इस प्रकार अफ्रीका का एक वि"ााल भू–भाग लियोपोल्ड के संरक्षण में आ गया। **लियोपोल्ड ने कांगों के विशाल राज्य की स्थापना की।**

इस प्रकार बेल्जियम द्वारा अफ्रीका के विभाजन की शुरूआत की गई। बेल्जियम के इस कार्य के परिणामस्वरूप फ्रांस, इंग्लैंड, पुर्तगाल, जर्मनी आदि भी अफ्रीका के विभिन्न भागों में रूचि लेने लगे तथा वे भी अफ्रीका की लूट–खसोट में शामिल हो गये।

बर्लिन सम्मेलन (1884–85) (Berlin Conference 1884-85 AD): लियोपोल्ड द्वारा कांगों राज्य की स्थापना के बाद फ्रांस तथा पुर्तगाल ने भी कांगों के कुछ भागों पर अपना अधिकार स्थापित करना चाहा। 1884 ई. में इंग्लैंड व पुर्तगाल के बीच एक समझौता हुआ जिसमें इंग्लैंड ने कांगो नदी के मुहाने के क्षेत्र पर पुर्तगाल का अधिकार मान लिया। इस समझौते से बेल्जियम के हितो की अनदेखी हुई। अतः बेल्जियम ने जर्मनी से सहयोग मांगा। अतः यूरोपीय शक्यिों के बीच होने वाले टकराव को रोकने के लिए जर्मनी के जांसलर बिस्मार्क ने अपनी राजधानी बर्लिन में अफ्रीका की समस्या पर विचार करने के लिए जुलाई 1884 ई. में एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाया। इस सम्मेलन का उद्दे"य कांगों तथा नाइजर नदियों पर व्यापार एवं नौचालन की स्वतन्त्रता एवं अन्य औपनिवे"ाक समस्याओं पर विचार करना था। यह सम्मेलन फरवरी 1885 ई. तक चला। इस सम्मेलन में यूरोप के राज्यों के अलावा संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रतिनिधि भी शामिल हुए। विभिन्न दे"ाों के बीच होने वाले विचार–विम"ा के बाद एक सामान्य अधिनियम तैयार किया गया। जिसे बर्लिन एक्ट (Berlin Act) के नाम से जाना गया। इस अधिनियम की प्रमुख बातें इस प्रकार थीः

(i) कांगों की घाटी में सभी दे"ाों को व्यापार की सुविधा प्रदान की गई।

(ii) कांगो के स्वतन्त्र राज्य पर अन्तर्राष्ट्रीय अफ्रीकन सभा का आधिपत्य किया गया।

(iii) कांगो घाटी में व्यापार पर नियन्त्रण करने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था की स्थापना की गई।

(iv) नाइजर नदी के ऊपरी भाग में ब्रिटेन का तथा निचले भाग पर फ्रांस का नियन्त्रण स्वीकार किया गया।

(v) अफ्रीका के बंटवारें के बारें में यह निर्णय लिया गया कि किसी भी प्रदे"ा पर किसी राज्य का अधिकार तभी स्वीकार किया जायेगा जबकि उस क्षेत्र पर उसका वास्तविक अधिकार होगा। यह भी आव"यकत होगा कि उसे साम्राज्य में शामिल करने से पहले अन्य राष्ट्रों को इसकी सूचना देगा। सम्मेलन में अफ्रीका के मूल निवासियों के भौतिक तथा नैतिक कल्याण के लिए भी काम करने एवं दास प्रथा व्यापार को रोकने का भी आ"वासन दिया गया परन्तु इन पवित्र उद्"यों को पूरा करने का प्रया किसी ने नही किया।

1. बेल्जियम के उपनिवेश (Colonies of Balgium): 1885 ई. के बर्लिन एक्ट की परवाह किये बिना ही लियोपोल्ड ने कांगो पर अपना अधिकार कर लिया। कुछ ही दिनों में वह लियोपोल्ड का व्यक्तिगत राज्य बन गया तथा लियोपोल्उ की मृत्यु के बाद कांगो को बेल्जियम के अन्तर्गत स्वीकार कर लिया गया।

इस प्रकार बर्लिन सम्मेलन के प"चात् अफ्रीका विभाजन तीव्र गति से आंरभ हो गया।

3.5.2 फ्रांस के उपनिवेश (Colonies of France): अफ्रीका पर अधिकार करने वाले प्रमुख दे"ाों में फ्रांस भी एक था। फ्रांस, ट्यूनिस, मिस्त्र, मोरक्को व अल्जीरिया पर अधिकार करना चाहता था। परन्तु मिस्त्र के आधिपत्य को लेकर इंग्लैंड व फ्रांस के स्वार्थ आपस में टकराते थे। अतः फ्रांस को अपना ध्यान मिस्त्र की तरफ से हटाकर अफ्रीका के अन्य भागों की तरफ लगाना पड़ा।

(i) अल्जीरिया (Algeria): उतरी अफ्रीका में स्थित अल्जीरिया पर फ्रांस ने 1830 ई. से ही अपना अधिकार स्थापित करने का प्रयास किया था। अल्जीरिया के लोगों ने 1880 ई. तक कई बार फ्रांसीसियों के विरूद्ध हुआ जिसने परे"ाान अन्त में 1882 ई. फ्रांस ने अल्जीरिया पर अधिकार कर लिया।

(ii) टयूनिस (Tunis): टयूनिस अल्जीरिया के पूर्व मे था तथा यह नाममात्र रूप से टर्की की अधीनता में था परन्तु व्यावहारिक रूप से स्वतन्त्र था। टयूनिस का इटली, फ्रांस तथा इंग्लैंड के लिए बहुत महत्व था। इसे अफ्रीका का प्रवे"ा–द्वार कहा जाता था। इसके महत्व के विषय में **देकाजे** ने कहा था, **''टयूनिस अफ्रीका का प्रवेश–द्वार है, यहां पर किसी अन्य यूरोपीय राज्य की शक्ति स्थापित हो जाने से अल्जीरिया की सुरक्षा को अत्यधिक खतरा उत्पन्न हो सकता है।''** यद्यपि बर्लिन सम्मेलन फ्रांस को टयूनिस पर अधिकार करने की हरी झण्डी दी थी परन्तु इटली अधिकार करना चाहता था अतः उसने फ्रांस का विरोध किया। फ्रांस ने इटली की

परवाह न करते हुए 12 मार्च 1881 ई. को टयूनिस पर अधिकार कर लिया। फ्रांस के इस कार्य से इटली फ्रांस का विरोधी हो गया तथा 1882 ई. में उसने जर्मनी व आस्ट्रिया के साथ मिलकर 'त्रिराष्ट्र संधि' की।

(iii) फ्रांसीसी पश्चिमी अफ्रीका (France Western Africa): फ्रांस के धर्म प्रचारक डीब्राजा ने पि"चमी अफ्रीका के कबीलों के सरदारों को रि"वत व भेंट आदि देकर अनेक संधियां की तथा अनेक क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया। इन क्षेत्रों को फ्रांसीसी कांगो कहा जाने लगा। अफ्रीका के पि"चमी तट पर स्थित सेनेगल, आइवरी कोस्ट, गिनी आदि क्षेत्रों पर भी अधिकार कर लिया। फ्रांस ने 1869 ई. में अफ्रीका के पूर्वी तट पर स्थित सोमालीलैण्ड पर अपना अधिकार किया। इसके प"चात् फ्रांस ने हिन्द महासागर में स्थित मैडागास्कर पर स्थानीय कबीले 'होवा' की शासिका के दोषपूर्ण शासन का लाभ उठाकर मैडागास्कर पर भी अधिकार कर लिया। इसी समय पूर्वी अफ्रीका के आधिपत्य को लेकर फ्रांस तथा इंग्लैंड के बीच तनातनी हो गई। फ"ोडा में फ्रांसीसी व ब्रिटि"ा सेनाओं के बीच युद्ध की संभावना पैदा हो गई जो फ"ोडा संकट (1888 ई.) के नाम से जाना जाता है। परन्तु फ्रांसीसी विदे"ा मन्त्री दंत्काले के प्रयासों से यह संकट टल गया तथा 1899 ई. में इंग्लैंड व फ्रांस ने संधि कर ली जिससे दोनों दे"ाों ने अफ्रीका में अपने–अपने क्षेत्र नि"चत कर लिए।

(iv) मोरक्को (Morocco): अफ्रीका के उतर–पि"चम में स्थित मोरक्कों पपर भी नाममात्र का टर्की का आधिपत्य था। 19वीं सदी के अन्त में मोरक्को में अव्यवस्था फैल गई जिसे दबाने में टर्की असफल रहा। अतः 1880 ई. में मोरक्को की समस्या पर विचार करने के लिए यूरोपीय दे"ाों का सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में मोरक्कों में सभी दे"ाों को व्यापार करने की छूट दिये जाने का निर्णय हुआ परन्तु फ्रांस मोरक्को को अपने अधिकार में करना चाहता था। इसके लिए फ्रांस को यूरोपीय दे"ाों के साथ कई समझौते करने पड़े। 1900 ई. में उसने इटली तथा 1904 ई. में इंग्लैंड तथा स्पेन से समझौता किया परन्तु जर्मन ने फ्रांस नीति का विरोध किया जिससे 1905 ई. में मोरक्को संकट उत्पन्न हो गया। इस संकट का हल ढूंढ़ने के लिए 1906 ई. में स्पेन में 12 दे"ाों का एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ। इसमें मोरक्को को एक स्वतन्त्र राज्य मान लिया गया तथा इसमें सभी विदे"ाी राज्यों को व्यापार करने का अधिकार दिया गया। अन्त में 1909 ई. में फ्रांस व जर्मनी के बीच संधि परिणामस्वरूप 1912 ई. में फ्रांस पर जर्मनी का अधिकार मान लिया गया।

3.5.3 इटली के उपनिवेश (Colonies of Italy): 1870 ई. में अपना एकीकरण पूरा होने के प"चात् इटली ने भी अपना ध्यान साम्राज्य विस्तार की ओर लगाया। इटली टयूनिस के क्षेत्र पर अधिकार करने का इच्छुक था किन्तु 1881 ई. में फ्रांस ने टयूनिस पर अधिकार करके उसकी इच्छा पर पानी फेर दिया था। इससे इटली व फ्रांस के संबंधों में दरार भी उत्पन्न हुई थी तथा इटली ने जर्मनी व आस्ट्रिया के साथ मिलकर 'त्रिराष्ट्रीय संधि' भी कर ली थी। तत्प"चात् इटली ने अपना ध्यान अन्यत्र लगाया तथा निम्न उपनिवे"ा प्राप्त किए।

(i) एरीट्रीया (Eritera): 1882 ई. में इटली ने लाल सागर में स्थित एरीट्रीया पर अधिकार कर लिया।

(ii) सोमालीलैण्ड (Somaliland): एरीट्रीया पर अधिकार करने के प"चात् इटली ने 1889 ई. हिन्द महासागर में स्थित सोमालीलैण्ड पर अधिकार कर लिया

(iii) एबेसीनिया से इटली की हार (Defeat of Italy in Abyssinia): इटली की साम्राज्यवादी भावनाओं को इंग्लैंड ने भी प्रोत्साहित किया जिसके परिणामस्वरूप इटली ने 1896 ई. में एबेसीनिया (इथोपिया) पर आक्रमण कर दिया परन्तु एडोवा के युद्ध में एबेसीनिया के शासक मेनलेक ने इटली को बुरी तरह हराया। अफ्रीका में साम्राज्य विस्तार के दौरान किसी यूरोपीय दे"ा की एकमात्र पराजय थी। इस हार के बाद कुछ दिनो तक इटली ने अपने साम्राज्य विस्तार को रोक लिया तत्प"चात् उसने अपना ध्यान उतरी अफ्रीका की तरफ लगया।

(iv) ट्रीपोली (Tripoli): 20 वीं शताब्दी के आरंभ में इटली ने अपना ध्यान पुनः उतरी अफ्रीका की तरफ लगाया तथा उसने फ्रांस व रूस के साथ संधियां करके उनका समर्थन प्राप्त किया। तत्प"चात् 1911 ई. में अदागीर संकट के समय इटली ने टर्की के विरूद्ध युद्ध करके ट्रीपोली तथा साइरेनका पर अधिकार कर लिया। अफ्रीका में इटली की यह सबसे बड़ी उपलब्धि थी क्योंकि ट्रीपोली इटली से पांच गुना बड़ा था। ट्रीपोली पर अधिकार कर लेने से इटली के सम्मान वृद्धि हुई। 1912 ई. में इटली ने इन्हें मिलाकर इसका नाम लीबिया रखा।

3.5.4 जर्मनी के उपनिवेश (Colonies of Germany): जिस यूरोप के राष्ट्र अफ्रीका में अपना विस्तार करने में लगे हुए थे उस समय जर्मनी का चॉसलर बिस्मार्क इंग्लैंड से अच्छे संबंध बनाये रखना चाहता था। अतः उसने उपनिवे"ा स्थापना की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। परन्तु कुछ समय प"चात् जब जर्मनी में औद्योगीकरण हुआ तो जर्मन व्यापारियों तथा उद्योगपतियों ने बिस्मार्क पर उपनिवे"ा स्थापित करने का दबाव डला। अतः बिस्मार्क भी इस दि"ाा में अग्रसर हुआ।

(i) जर्मन दक्षिण अफ्रीका (German South Africa): 1883 ई. में जर्मनी के एक व्यापारी ल्यूडजि ने दक्षिण प"िचमी अफ्रीका एंग्रापेक्वेना के कुछ क्षेत्र प्राप्त किये। इन क्षेत्रों को जर्मन दक्षिण अफ्रीका कहा जाने लगा।

(ii) कैमरून तथा टोगोलैण्ड (Cameroons and Togoland) : बिस्मार्क ने 1884 ई. में एक खोजकर्ता डॉ. नाखटिगोल को अफ्रीका के भूमध्यरेखीय क्षेत्र में जर्मनी का प्रभाव स्थापित करने के लिए भेजा। डॉ. नाखटिगोल के प्रयत्नों से टोगोलैंण्ड तथा कैमरून पर जर्मनी का अधिकार हो गया।

(iii) जर्मन पूर्वी अफ्रीका (German Eastern Africa): 1884 ई. जर्मनी के एक अन्य खोजकर्ता कार्ल पीटर्स ने अफ्रीका के पूर्वी तटीय प्रदे"ा में 60,000 वर्ग मील क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया। इसमें जंजीबार तथा आसपास का क्षेत्र शामिल था। पूर्वी अफ्रीका में जर्मनी का साम्राज्य विस्तार करने के लिए जर्मन ईस्ट अफ्रीका

कम्पनी की स्थापना की गई। इस क्षेत्र में जर्मनी के विस्तार को रोकने के लिए ही ब्रिटेन तथा रूस ने उसका प्रतिरोध किया जो प्रथम वि"व–युद्ध का कारण बना।

3.5.5 मानचित्र (Map) अफ्रीका में अंग्रेजी उपनिवे"ा

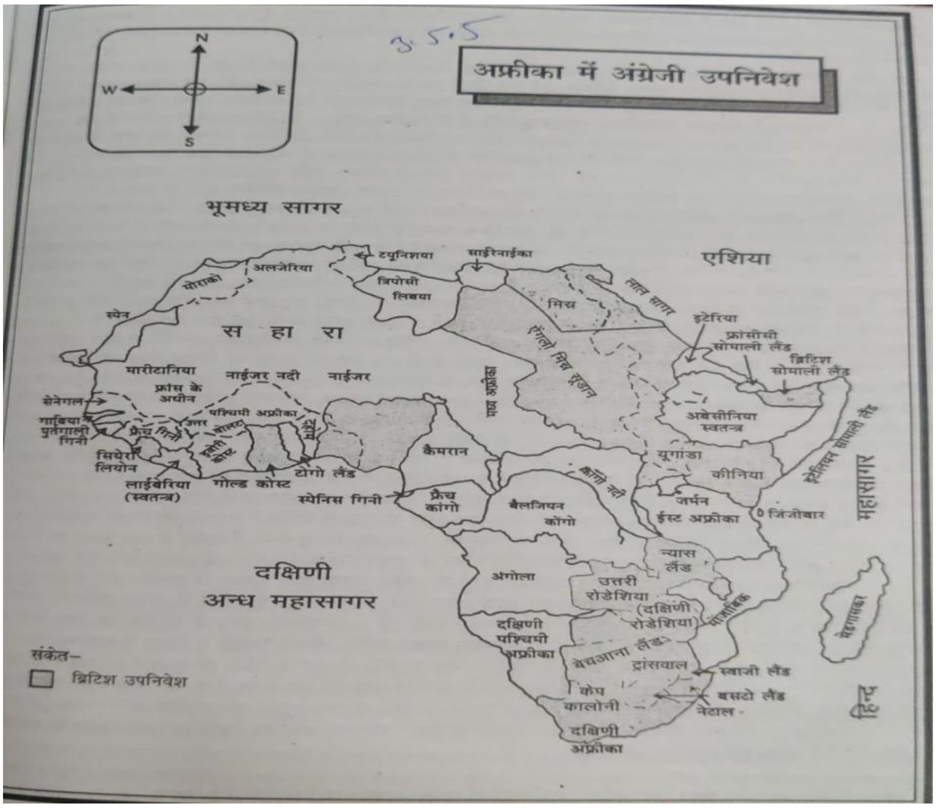

3.5.6 इग्लैण्ड के उपनिवेश (Colonies of England): 19वीं शताब्दी में इंग्लैंड सबसे आगे रहा। लैंगर ने लिखा है कि, ''अफ्रीका के विभाजन में सर्वाधिक उपनिवे"ा इंग्लैंड ने ही स्थापित किये।'' 19वीं शताब्दी में इंग्लैंड के पास सुदूर दक्षिण में स्थित केप कालोनी (Cape of Good Hope) का प्रदे"ा था जो उसे 1815 ई. के वियना सम्मेलन के निर्णय के अनुसार हालैंड से प्राप्त हुआ था। इसी प्रदे"ा की प्राप्ति के प"चात् अफ्रीका में ब्रिटि"ा साम्राज्य की नींव पड़ी तथा कालान्तर में ब्रिटेन ने काहिरा से लेकर अन्तरीप तक के सम्पूर्ण भाग पर अपना साम्राज्य स्थापित किया। इसमें गुड़होप, नेटाल, ट्रॉसवाल, रोडे"ाया, सोमालीलैंड, नाइजीरिया, गौल्डकोस्ट, कीनिया आदि थे। इस प्रकार इटली के पास अफ्रीका महाद्वीप का 1/3 भाग था।

(i) मिस्त्र (Egypt): ब्रिटि"ा दृष्टिकोण से मिस्त्र का अत्यधिक महत्व था। नेपोलियन ने इंग्लैंड के वि"ाालतम उपनिवे"ा भारत पर आक्रमण करने के लिए 1798 ई. से मिस्त्र को जीत लिया था परन्तु इंग्लैंड ने 1749 ई. उसे मिस्त्र से बाहर कर दिया था। तभी से फ्रांस व इंग्लैंड के हित मिस्त्र से टकराते थे। 19 शताब्दी से पहले मिस्त्र

तुर्की साम्राज्य का भाग था जिसका शासक गवर्नर (पा"ाा) कहलाता था। 1811 ई. में मिस्त्र के गवर्नर मेहनत अली ने अपने आप टर्की की अधीनता से मुक्त कर लिया था। 1863 ई. में इस्माइल मिस्त्र का 'पा"ाा' बना। उसने मिस्त्र में यातायात के साधनों (स्वेज नहर, बन्दरगाहें, डाक, तार) पर काफी धन खर्च कर दिया था। इसके अतिरिक्त वह काफी फिजूलखर्ची था तथा उसने विलासिता पर काफी धन खर्च कर लिया था। उसने इंग्लैंड से लगभग 10 करोड़ पौंड का ऋण लिया था तथा इसकी अदायगी के बदले में उसने 1875 ई. में स्वेज नहर, जो 1869 ई. में व्यापार के लिए खुली थी, उसके शेयर 40 लाख पौंड में इंग्लैंड को बेच दिये थे। इंग्लैंड को अपने भारतीय साम्राज्य को सुरक्षित रखने तथा भारत में जल्दी पहुंचने के लिए इस नहर का महत्व था। 1876 ई. में एक व्यवस्था बनाई गई जिससे मिस्त्र की अर्थव्यवस्था पर इंग्लैंड तथा फ्रांस का प्रभाव स्थापित हो गया। इस प्रकार मिस्त्र के द्वैध शासन () की स्थापना हो गई। द्वैध शासन की स्थापना होने से मिस्त्र की आर्थिक द"ाा और बिगड़ गई जिसके कारण इस्माइल पा"ाा राष्ट्रवादी शक्तियों के साथ मिलकर इंग्लैंड व फ्रांस का विरोध करने लगा। इस्माइल पा"ाा के बगावती तेवरों को देखते हुये इंग्लैंड व फ्रांस ने मिलकर उसको गद्दी से हटवा दिया तथा तौफीक को मिस्त्र का शासक नियुक्त कर दिया जो इंग्लैंड व फ्रांस की कठपुतली थी। विदे"ाियों के बढ़ते हस्तक्षेप के कारण मिस्त्र में राष्ट्रवादी शक्तियां सिर उठाने लगी तथा इन शक्तियों ने 1881 ई. में अहमद अरबी पा"ाा के नेतृत्व में इंग्लैंड व फ्रांस के विरूद्ध आन्दोलन कर दिया। 1882 ई. में आन्दोलनकारियों ने एलेग्जेंड्रिया में 500 यूरोपियनों को मार डाला। अतः आन्दोलन को दबाने के लिए इंग्लैंड व फ्रांस ने बल प्रयोग का निर्णय लिया परन्तु फ्रांस किसी कारणव"ा इसमें भाग नही ले सका अतः इंग्लैंड को अकेले ही मिस्त्र के राष्ट्रवादियों का दमन करना पड़ा। तेल–अल–कबीर के युद्ध में इंग्लैंड के इस कदम का विरोध काहिरा पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार मिस्त्र इंग्लैंड के नियन्त्रण में आ गया परन्तु फ्रांस ने इंग्लैंड के इस कदम का विरोध कर लिया। अन्त में 1904 ई. में प्रथम वि"वयुद्ध आंरभ होने पर इंग्लैंड ने मिस्त्र को अपने संरक्षण में ले लिया जो युद्ध में अन्त तक जारी रहा।

(ii) सूडान (Sudan): इंग्लैंड ने मिस्त्र पर अधिकार करने के प"चात् अपना ध्यान सूडान की तरफ लगाया क्योंकि सूडान मिस्त्र के अधीन था। इसलिए इंग्लैंड ने इस पर अपना दावा किया। सूडान पर भी फ्रांस व इंग्लैंड दोनों ही अपना अधिकार स्थापित करना चाहते थे। सूडान के लोग विदे"ाियों से घृणा करते थे तथा व किसी भी साम्राज्यवादी शक्ति के हस्तक्षेप को सहन करने के लिए तैयार नही थे। सूडान के राष्ट्रवादियों ने 1885 ई. में मोहम्मद अहमद मसीहा (मेंहदी देवदूत) के नेतृत्व में साम्राज्यवादियों के विरूद्ध आन्दोलन तेज कर दिया तथा फरवरी 1885 ई. में मेंहदी ने मिस्त्र की सेना के जनरल गोर्डन.की हत्या करके अपना अधिकार कर लिया। मेंहदी की मृत्यु के बाद उसके दुर्बल उतराधिकारियों के काल में सूडान में अव्यवस्था फैल गई। इसका लाभ उठाते हुए इंग्लैंड की सेनाओं ने 'किचनर' के नेतृत्व में 1898 ई. मे 'ओडरमन के युद्ध' में राष्ट्रवादियों को पराजित करके

अपना अधिकार स्थापित कर लिया। मिस्त्र पर अधिकार बनाये रखने के लिए अंग्रेजों के लिए सूडान का अत्यधिक महत्व था, अतः सूडान पर अधिकार करना इंग्लैंड की एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी।

(iii) पूर्वी अफ्रीका (East Africa): इंग्लैंड ने पूर्वी अफ्रीका में भी कुछ महत्वपूर्ण उपनिवे"ा प्राप्त किये। उसकी 'इम्पीरियल ब्रिटि"ा ईस्ट अफ्रीका' कंपनी ने 1888 ई. में युगान्डा तथा सोमालीलैंण्ड के कुछ भाग पर अपना अधिकार जमा लिया। 1890 ई. में इंग्लैंड ने जर्मनी के साथ एक समझौता किया जिसके अनुसार उसने हैलीगोलैण्ड के बदले में जर्मनी से 'जंजीबार' का उपनिवे"ा प्राप्त कर लिया।

(iv) पश्चिमी अफ्रीका (West Africa): इंग्लैंड ने पि"चमी अफ्रीका पर अपना अधिकार स्थापित करने के लिए चार्टड कंपनी 'रायल नाइजर' की स्थापना की। यह कंपनी पि"चमी अफ्रीका में नाइजर नदी के तट पर व्यापार करती थी। इस कंपनी ने गोल्ड कोस्ट, सायरा लियोन, गैम्बिया तथा नाइजीरिया आदि प्रदे"ाों को इंग्लैंड का उपनिवे"ा बनाया।

(v) दक्षिणी अफ्रीका (South Africa): यूरोप के अन्य दे"ाों की तुलना में इंग्लैंड ने दक्षिण अफ्रीका में सबसे अधिक उपनिवे"ा स्थापित किये। इंग्लैंड ने इस क्षेत्र में 1815 ई. में अपना पहला उपनिवे"ा केप कालोनी स्थापित किया था। तत्प"चात् इंग्लैंड ने अन्य उपनिवे"ाों को अपने संरक्षण में लिया। दक्षिण अफ्रीका पर आधिपत्य को लेकर इंग्लैंड को अफ्रीका के स्थानीय लोगों तथा डचों के विरोध का भी सामना करना पड़ा।

(a) नटाल (Natal): वियना समझौते (1815 ई.) के अनुसार इंग्लैंड को हालैंड से केप कालोनी हुआ था। यहां हालैंड के किसान (डच) रहते थे जो बोअर कहलाते थे। ये लोग पंरपरावादी थे तथा अपनी सभ्यता व संस्कृति के अनुरूप जीवन बिताते थे। परन्तु जब अंग्रेजों ने इन पर अपनी संस्कृति थोपने की कोि"ा"ा की तो ये लोग केप कालोनी छोड़कर 1836 ई. में नटाल नामक स्थान पर बस गये थे। 1843 ई. में इंग्लैंड ने इस राज्य पर भी अपना अधिकार कर लिया।

(b) ट्रान्सवाल (Transval): औरंज स्वतन्त्र राज्य पर इंग्लैंड का अधिकार हो जाने के प"चात् बोअर लोगों ने 'ट्रान्सवाल' की स्थापना की। प्रारंभ में अग्रेंजो ने बोअरो की स्वतन्त्रता मान ली परन्तु 1877 ई. में इंग्लैंड ने ट्रान्सवाल को अंग्रेजी राज्य में मिलाने की घोषणा की। बोअर लोगों ने अब इंग्लैंड का विरोध करने का नि"चय किया तथा उन्होनें पाल क्रुगर के नेतृत्व में इंग्लैंड के विरूद्ध संघर्ष छोड़कर 1881 ई. में मजूबाहिल की लड़ाई मं अंग्रेजों को हराया। इंग्लैंड के प्रधानमंत्री ग्लैडस्टोन ने बोअर लोगों को स्वतंत्रता दे दी। परिणामस्वरूप 1884 ई. में बोअरों व अंग्रेजों के बीच संधि हो गई।

कुछ समय प"चात् अंग्रेजों को जब इस बात का पता चला कि ट्रान्सवाल में सोने व हीरे की खानें है। 1896 ई. में जेमसन के नेतृत्व में अंग्रेजो ने ट्रान्सवाल पर आक्रमण कर दिया परन्तु बोअर लोगों ने जेमसन को बुरी तरह हरा दिया। बोअरो की इस विजय से खु"ा होकर जर्मनी के सम्राट केसर विलियम ने ट्रान्सवाल के राष्ट्रपति क्रुगर को बधाई संदे"ा भेजा जो इतिहस में 'क्रुगर तार' (Kruger Telegram) के नाम से प्रसिद्ध है। इससे इंग्लैंड व जर्मनी के संबंध बिगड़ गये।

अपने सम्मान की रक्षा के लिए 1899 ई. में अग्रेजी सेना ने बोअरो पर पुनः आक्रमण कर दिया। बोअर लोगों व अंग्रेजों के बीच युद्ध तीन वर्ष तक चला। बोअर लोगों ने इंग्लैंड का डटकर मुकाबला किया। नटाल व केप कालोनी पर आक्रमण करके अंग्रेजो को भारी क्षति पहुंचाई परन्तु अन्त में शक्ति"ााली ब्रिटि"ा साम्राज्य के सामने बोअरो को झुकना पड़ा। राबर्ट तथा किचनर के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना ने बोअरों को हराया तथा 1902 ई. की संधि के अनुसार संधि के अनुसार बोअरो को अग्रेंजी की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी व ट्रान्सवाल व 'औरंज स्वतन्त्र राज्य' अंग्रेजी साम्राज्य का अंग बन गये। 1909 ई. में नेटाल, ट्रान्सवाल, औरंज स्वतंत्र राज्य तथा केप कालोनी को मिलाकर दक्षिणी अफ्रीका का संयुक्त राज्य स्थापित कर दिया गया।

(c) रोडे"ाया (Rhodesia): इंग्लैंड का एक साहसी खोजकर्ता सेसिल रोडस 1870 ई. में दक्षिण अफ्रीका आया था। उसने सोने की खानों में काम करके काफी धन इकट्ठा कर लिया था। उसने अफ्रीका में अंग्रेजी साम्राज्य का विस्तार करने के लिए एक कंपनी की स्थापना की। इस कंपनी ने ट्रान्सवाल तथा बेचुआनालैंड के उतर में वि"ााल भू–भाग पर अपना अधिकार कर लिया था। इस क्षेत्र का नाम 'रोडस' के नाम 'रोडे"ाया' रखा गया। उसके प्रयत्नों से केप कालोनी, नटाल तथा ट्रान्सवाल में रेलवे लाइन बिछायी गई। 1909 ई. में वह केप कालोनी का प्रधानमंत्री बन गया था।

इस प्रकार अफ्रीका के बंटवारें में इंग्लैंड को अत्यधिक लाभ हुआ। कैटलबी ने लिखा है कि, **''ब्रिटेन के कतिपय साम्राज्यवादी राजनीतिज्ञों के सपने साकार हो गये।''**

अफ्रीका का विभाजन यूरोप के इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है। यूरोप की साम्राज्यवादी शक्तियों ने बिना किसी युद्ध के लगभग सम्पूर्ण अफ्रीका महाद्वीप को आपस में बांट लिया। इस बंटवारें में यद्यपि यूरोपीय शक्तियों के बीच तनातनी उत्पन्न हुई, संघर्ष की संभावनाएं उत्पन्न हुई परन्तु कोई वि"ोष संघर्ष नही हुआ। इस बंटवारें के वि"व राजनीति पर भी व्यापक प्रभाव पड़े। इसके कारण फ्रांस, इंग्लैंड, इटली व जर्मनी में आपस में हुई प्रतिद्वन्द्विता हुई जिसका यूरोप की राजनीति पर असर पड़ा। टयूनिस में फ्रांस व इटली, मोरक्को के कारण फ्रांस व जर्मनी तथा ट्रान्सवाल को लेकर इंग्लैंड तथा जर्मनी के संबंधो में तनाव उत्पन्न हुआ जिसने प्रथम वि"व–युद्ध का मार्ग प्र"ास्त किया। अफ्रीकी विभाजन की एक अन्य वि"ोषता यह रही है कि विभाजन के क्रमिक रूप से नही अपितु

बड़ी तेज गति से हुआ। 1878 ई. के बाद केवल 30 वर्षो में सम्पूर्ण क्षेत्र का विभाजन हो गया। अफ्रीका के स्थानीय लोगों व सरदारों के मामूली विरोध के बाद बड़ी आसानी से यूरोप के साम्राज्यवादी दे"ाों ने अफ्रीका पर अपना अधिकार कर लिया। इस विभाजन का एक सकारात्मक पक्ष यह भी है कि, **''युद्ध द्वारा अफ्रीका पर अधिकार कर लिये जाने के कारण वहां के जनजातीय युद्ध, प्लेग, अमानवीय यातनाएं आदि समाप्त हो गए तथा आवागमन के साधनों व शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार हुआ।''**

3.6 एशिया में साम्राज्यवाद का विस्तार (Expansion of Imperialism in Asia):

यूरोप के राज्य अफ्रीका प्रवे"ा से बहुत पहले से एि"ाया में अपनी साम्राज्यवादी गतिविधियां प्रारंभ कर चुके थे। 19वीं शताब्दी के अन्त तक जापान तथा थाइलैंड को छोड़कर सम्पूर्ण एि"ाया साम्राज्यवादी की चपेट में आ गया था। इंग्लैंड, फ्रांस, पुर्तगाल, हालैंड, जर्मनी, रूस तथा जापान ने एि"ाया में अपने–अपने साम्राज्य स्थापित किये। एि"ाया में साम्राज्यवादी गतिविधियों का विवरण इस प्रकार है।

3.6.1 पुर्तगाल के उपनिवेश (Colonies of Portuguese): एि"ाया में अपने उपनिवे"ा स्थापित करने वाला पुर्तगाल पहला यूरोपीय राज्य था। 1498 ई. में पुर्तगाल के यात्री वास्कोडिगामा ने भारत के पि"चमी समुद्री तट पर स्थित बन्दरगाह कालीकट पहुंचकर भारत पहुंचने के मार्ग की खोज की। उसके प"चात् 16 वीं सदी के प्रारंभ में पुर्तगालियों ने भारत मे तथा पूर्वी एि"ाया में अपने उपनिवे"ा स्थापित किये।

(i) गोआ, दमन, दियू (Goa, Daman and Diu): 1510 ई. में पुर्तगाल गवर्नर अल्फांसो अल्बुकर्क ने गोवा पर अधिकार करके पुर्तगाली बस्ती बसायी। इसके बाद पुर्तगालियों ने दमन, दियू तथा दादरा नगर हवेली पर भी अधिकार किया।

(ii) तिमर व मकाओ (Timor and Makao): पुर्तगालियों ने दक्षिणी पूर्वी एि"ाया में स्थित तिमर तथा चीन के निकट मकाओ द्वीप पर भी 1535 ई. में अपना अधिकार किया। पुर्तगालियों ने श्रीलंका पर भी अपना अधिकार जमा लिया था परन्तु डचों ने पुर्तगालियों से इसे छीन लिया।

3.6.2 फ्रांस के उपनिवेश (French Colonies): 1664 ई. में भारत के पूर्वी दे"ाों के साथ व्यापार करने के लिए 'डच ईस्ट इंडिया कंपनी' का गठन हुआ। फ्रांसीसियों से पहले पुर्तगाली, डच तथा अंग्रेज भारत में व्यापारिक सुविधाएं प्राप्त करके अपना व्यापार बढ़ा रहे थे अतः फ्रांसीसियों को भारत में अन्य यूरोपीय कंपनियो वि"ोष रूप से ब्रिटि"ा ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ कड़ा संघर्ष करना पड़ा। भारत में उन्होनें निम्न बस्तियां बसाईः

(i) पांडिचेरी, चन्द्रनगर, माहो, कारीकल (Pondicherry, Chander Nagar, Mahe, Karikal etc.): फ्रांसीसी कंपनी ने भारत में 1674 ई. में पांडिचेरी तथा 1690–92 ई. में चन्द्रनगर की बस्ती स्थापित की। तत्प"चात्

फ्रांसीसियों ने 1725 ई. में मालाबार तट पर माही तथा 1734 ई. मं कोरोमंडल तट पर कारीकल में अपना कारखाना लगाया। भारत के प्रभुत्व स्थापित करने के लिए इंग्लैंड तथा फ्रांस की कंपनियों के बीच जबरदस्त संघर्ष हुआ जो कर्नाटक के तीन युद्धों (1746–48 ई., 1748–54ई तथा 1756–63 ई.) के रूप में सामने आया। इन युद्धों में फ्रांसीसियों की हार हुई जिसके परिणामस्वरूप भारत में उनकी शक्ति की जबरदस्त आघात लगा तथा भारत से उनका वर्चस्व समाप्त हो गया।

(ii) कोची–चीन, कम्बोडिया, टांकिन्ग, अनाम आदि (Cochin-China, Cambodia, Tongkig, Annam etc.): भारत में अंग्रेजों के हाथों हुई पराजय के बाद फ्रासीसियों ने अपना ध्यान दक्षिण पूर्वी एर्िाया के अन्य द्वीपों की तरफ लगाया। इंग्लैंड जब चीन पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने में लगा था तब फ्रांसीसियों ने 1862 ई. में कोचीन–चीन में तथा

3.6.3 इग्लैण्ड के उपनिवे"ा 1865 ई. में कंबोडिया पर अपना अधिकार स्थापित किया। फ्रांस ने चीन को पराजित करके 1884–85 ई. में टांकिग तथा अनाम पर भी अधिकार कर लिया। 1893 ई. में फ्रांस ने लाओस पर भी नियन्त्रण स्थापित किया। दक्षिण पूर्व एर्िाया में फ्रांसीसी बस्तियों को इंडोचीन कहा जाने लगा। फ्रांस ने 1725 ई. में हिन्द महासागर में स्थित **मॉरीशस** पर भी अधिकार लिया था।

3.6.3 इंग्लैंड के उपनिवेश (British Colonies): इंग्लैंड यूरोप का प्रमुख साम्राज्यवादी दे"ा था क्योंकि यहां औद्योगिक परिवर्तन सबसे पहले आए थे। इंग्लैंड ने अफ्रीका की तरह एर्िाया में भी वि"ााल साम्राज्य की स्थापना की। एर्िाया में इंग्लैंड के निम्न उपनिवे"ा थे:

(i) भारत (India): इंग्लैंड की महारानी एलिजाबेथ के शासनकाल में 1600ई. में भारत के साथ व्यापार करने के लिए ब्रिटि"ा ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई। कंपनी ने भारत के मुगल बाद"ााह जहांगीर के शासनकाल में 1608 ई. कैप्टन हाकिन्स को सम्राट के दरबार में व्यापारिक सुविधाएं प्राप्त करने के लिए भेजा परन्तु उनका यह मि"ान असफल रहा। फिर भी अंग्रेजों ने आस नही छोड़ी तथा अन्ततः **सर टामस** 1615 ई. मुगल सम्राट से फरमान प्राप्त करने में कामयाब हो गया। मुगल सम्राट शाहजहां तथा औरंजगेब के काल में कंपनी ने भारतीय राजनीति में हस्तक्षेप करने की कोर्ि"ा की परन्तु उसके प्रयासों को कुचल दिया गया। 1707 ई. में मुगल सम्राट औरंगजेब की मृत्यु के बाद भारत में फैली राजनीति अराजकता का लाभ उठाते हुए कंपनी ने सम्राट फर्रूखसियर से महत्वपूर्ण व्यापारिक सुविधाएं लेने में कामयाबी हासिल की। कंपनी ने भारतीय शासकों की कमजोरी का फायदा उठाया तथा उनकी राजनीति में हस्तक्षेप करके अपने विरोधियों फ्रांसीसियों को कर्नाटक के तीन युद्धों (1748–63ई.) में पराजित करके अपना वर्चस्व स्थापित किया। कंपनी को सबसे महत्वपूर्ण सफलता 1757 ई. में मिली जब उसके गवर्नर क्लाइव ने 'प्लासी के युद्ध' में बंगाल के नवाब को हराया तत्प"चात् 1764 ई. में 'बक्सर के युद्ध' में बंगाल व

मुगल सम्राट दोनों को पराजित करके कपंनी ने भारत के सबसे समृद्ध प्रान्त बंगाल, बिहार व उड़ीसा पर कब्जा कर लिया। तत्प"चात् कंपनी भारत की एक प्रमुख राजनैतिक शक्ति बन गई तथा अगले 100 वर्षों में (1857ई. तक) कंपनी ने छल, बल एवं संधियों द्वारा (सहायक संधि, लैप्स की नीति आदि) भारत के अधिकां"ा भाग पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। कंपनी के इस राज्य विस्तार में उसके गवर्नर जनरलों क्लाइव, बारेन हेस्टिंग्ज, लार्ड वेलेजली, मार्क्विस ऑफ हेस्टिंग्ज तथा डलहौजी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस प्रकार 1856 ई. तक सारा भारत प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इंग्लैंड कें अधीन आ गया था। कंपनी ने अपने साम्राज्यवादी हितों को पूरा करने के लिए भारत का शोषण किया जिसके परिणामस्वरूप 1857 ई. में कंपनी के शासन के विरूद्ध जोरदार आन्दोलन छिड़ गया जिसको अंग्रेजों ने बलपूर्वक दबा दिया। इसके प"चात् 1858 ई. में भारत का शासन महारानी विक्टोरिया ने सीधा अपने हाथों में ले लिया। इसके प"चात् 1947 ई. तक भारत पर अंग्रेजों का शासन रहा।

(ii) चीन (China): भारत के प"चात् अंग्रेजों ने चीन को अपनी साम्राज्यवादी गतिविधियों का नि"ााना बनाया। चीन के कुछ तटीय इलाकों पर यद्यपि यूरोप की अन्य शक्तियों का अधिकार था परन्तु चीन के अधिकां"ा भाग पर कब्जा जमाने में अंग्रेज सफल रहे। चीन में अंग्रेजी साम्राज्यवादी गतिविधियों का आरंभ 'अफीम युद्धों' (1839–40ई. का प्रथम अफीम युद्ध, 1856–58 ई. का दूसरा अफीम युद्ध) से होता है। इन युद्धों में चीन को पराजित करके अंग्रेजों ने नानकिंग व टाइंटसिन की संधियों द्वारा अनेक व्यापारिक रियायतें प्राप्त की। इन युद्धों के प"चात् चीन को न केवल अपनी 16 बन्दरगाहें व्यापार के लिए अंग्रेजों के लिए खोलनी पड़ी अपितु अंग्रेजों को अनेक प्रकार की व्यापारिक, आर्थिक एवं राजनैतिक व धार्मिक सुविधाएं भी देनी पड़ी तथा हांगकांग का द्वीप भी इंग्लैंड को देना पड़ा। चीन में साम्राज्यवादी विस्तार का अगला चरण 1894–95 ई. के बाद शुरू हुआ जब जापान ने उसे हराया। इस अवसर का लाभ उठाकर इंग्लैंड को भी अनेक सुविधाएं प्राप्त हुई तथा उसका यांग्त्से घाटी में प्रभुत्व स्थापित हुआ तथा वेह–हाई–वे व कौलून का क्षेत्र भी प्राप्त हुआ। अंग्रेजों ने जिस प्रकार चीन पर अधिकार किया तथा रियायतें प्राप्त की उसका लाभ उठाकर यूरोप के विभिन्न दे"ाों को भी फायदा हुआ तथा उन्होनें चीन को आपस मे बांट लिया। इस प्रकार चीन के अन्धकारमय युग की शुरूआत हुई।

(iii) बर्मा (Burma): अंग्रेजों ने अपने राजनीतिक तथा आर्थिक हितों को पूरा करने के लिए बर्मा पर भी अपना प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयास किया। लार्ड एमहर्स्ट के काल में अंग्रेजों ने बर्मा को पहले युद्ध में (1824–26 ई.) में पराजित करके यांडूब की संधि द्वारा कुछ प्रदे"ा तथा व्यापारिक रियायते प्राप्त की। लार्ड डलहौजी जैसे साम्राज्यवादी ने 1851–52ई. में बर्मा को हराया तथा पेगू व निचले बर्मा को अंग्रेजी साम्राज्य में शामिल कर लिया। 1885 ई. लार्ड डफरिन के शासनकाल में होने वाले तीसरे आंग्ल–बर्मा युद्ध के उपरान्त अंग्रेजों ने ऊपरी बर्मा को जीतते हुए राजधानी मांडले पर भी अधिकार कर लिया। बर्मा के शासक थिबाब ने आत्मसमर्पण कर दिया तथा

1886 ई. में बर्मा को भारतीय ब्रिटि"ा साम्राज्य का अंग बना दिया। बर्मा के दे"ाभक्तों के आन्दोलन के प्रभाव में 1935 ई. में बर्मा को भारत से अलग कर दिया गया परन्तु द्वितीय वि"व युद्ध तक बर्मा अंग्रेजो का उपनिवे"ा बना रहा।

(iv) श्रीलंका (Ceyclon): 1602 ई. में स्थापित डच ईस्ट इंडिया कंपनी ने श्रीलंका पर अपना अधिकार किया था परन्तु 1658 ई. में डचों ने पुर्तगालियों को श्रीलंका से खदेड़कर अपने प्रभाव में ले लिया था। 1915 ई. तक श्रीलंका पर डचों का अधिकार रहा। नेपोलियन की हार के बाद 1915 ई. के वियना सम्मेलन में लिये गये निर्णय के अनुसार हालैंड से श्रीलंका छीन गया तथा उसे हालैंड को दे दिया गया। इंग्लैंड का श्रीलंका पर 1948 ई. तक अधिकार रहा।

(v) अफगानिस्तान (Afghanistan): सामाजिक एवं व्यापारिक दृष्टि से अफगानिस्तान का अंग्रेजों के लिए बहुत ही महत्व था। रूस की तरफ से होने वाले किसी भी संभावित आक्रमण को रोकने के लिए अफगानिस्तान एक महत्वपूर्ण अग्रिम चौकी के रूप में प्रयोग किया जा सकता था। इसलिए अंग्रेज शासको ने अफगानिस्तान को अपने संरक्षण में लेने का प्रयास किया। अफगानिस्तान पर आधिपत्य को लेकर अंग्रेजों व अफगानों के बीच तीन युद्ध हुए। लार्ड आकलैंड 1839 ई. में अफगानिस्तान के शासक दोस्त मोहम्मद को पराजित किया तथा काबुल पर अपनी कठपुतली शासक शाह"ाुजा को बैठाया। यद्यपि शाह"ाुजा को अपने लोगों के विरोध के कारण गद्दी छोड़नी पड़ी। तत्प"चात् 1855 ई. में दोस्त मुहम्मद से संधि करके एक–दूसरे के राज्य में हस्तक्षेप न करने का वचन देना पड़ा। लार्ड लिटन ने 1878 ई. अफगानिस्तान पर पुनः आक्रमण किया परन्तु अफगानों ने कड़ा विरोध किया। अफगानिस्तान के शासक अब्दुल रहमान ने अंगेजों को अन्य किसी से यूरापीय शक्ति से संबंध न रखने का वचन दिया। इस प्रकार अंग्रेजो ने अफगानिस्तान को भी अपने संरक्षण में लेने का प्रयास किया।

(vi) मलाया (Malaya): मलाया की आन्तरिक अव्यवस्था का लाभ उठाकर अंग्रेजों ने 19वीं सदी के अन्त में मलाया को अपने संरक्षण में ले लिया। सिंगापुर को लेकर अंगेजों की मलाया में रूचि थी।

(vii) तिब्बत (Tibet): लार्ड कर्जन के समय में अंग्रेजों ने तिब्बत को भी अपने नियन्त्रण में लेने का प्रयास किया। 1904 ई. में तिब्बती पराजित हुए तथा ल्हासा की संधि के अनुसार दलाई लामा को भारत व तिब्बत के बीच व्यापार खोलना पड़ा था तथा ल्हासा ब्रिटि"ा रेजीडेन्ट रखना स्वीकार किया। इस प्रकार 1904 ई. में तिब्बत पर व्यावहारिक रूप से अंग्रेजों का आधिपत्य हो गया था। परन्तु 1907 ई. में इंग्लैंड तथा रूस के बीच संधि के अनुसार तिब्बत पर चीन का प्रभुत्व मान लिया गया।

(viii) फिलीस्तीन, मेसापोटामिया तथा ट्रान्स जार्डन (Palestine, Mesopotamia and Tras-Jordan): फिलिस्तीन मेसोपोटामिया तथा ट्रान्स जार्डन के प्रदे"ा वि"व–युद्ध से पहले तुर्की साम्राज्य के भाग थे। परन्तु प्रथम वि"व–युद्ध में तुर्की की पराजय के बाद हुई सेबर्स की संधि (1920 ई.) से इन क्षेत्रों को राष्ट्रसंघ की तरफ से इंग्लैंड को सौंप दिया गया। इस प्रकार व्यावहारिक रूप इन दे"ाों पर भी इंग्लैंड की सता स्थापित हो गई।

3.6.4 होलैण्ड के उपनिवेश (Dutch Colonies): पुर्तगाल का अनुसरण करते हुए हालैंड ने भी पूर्वी दे"ाों के साथ व्यापार करने के लिए 1602 ई. **में 'डच ईस्ट इंडिया कंपनी'** की स्थापना की। इस कंपनी के जंगी जहाजी बेड़े ने 1602 ई. में बैटंम के निकट पुर्तगाली बेड़े को पराजित करके बैटंम पर अधिकार कर लिया जो शीघ्र ही पूर्वी एि"ाया में डचों का प्रमुख व्यापारिक केन्द्र बन गया। डचों ने पुर्तगालियों से 1605ई. में एम्बोयना तथा 1619ई. में जकार्ता भी छीन लिया तथा वहां बाटेविया को अपनी राजधानी बनाया। इस प्रकार डचों का जावा, सुमात्रा, तथा बेर्नियो द्वीपों पर अधिकार हो गया। पुर्तगालियों को पराजित करके डचों ने 1614ई. मं मलक्का तथा 1658 ई. में श्रीलंका को भी अपने आधिपत्य में ले लिया। डचों ने 1608 में गोलकुण्डा के शासक से फरमान प्राप्त करके मछलीपट्टम, भड़ौच, कैम्बे, सूरत तथा चिन्सुरा, आगरा व पटना में भी अपने व्यापारिक केन्द्र खोले।

3.6.5 जर्मनी के उपनिवेश (German Colonies): अपने एकीकरण के प"चात् जर्मनी ने भी एि"ाया में अपने साम्राज्यवाद का प्रसार किया। जर्मनी, ईरान तथा भारत में अपने आर्थिक हिंतों का पूरा करने के लिए प्रयत्न"ाील था क्योंकि एक जर्मन कंपनी का बगदाद तथा ईरान की खाड़ी में रेलवे लाइन बिछाने की अनुमति मिल गई थी। 1885 ई. में इंग्लैंड तथा जर्मनी के बीच हुई संधि के अनुसार **न्यूगिनी** के क्षेत्र पर जर्मनी का आधिपत्य स्वीकार किया गया। 1897 ई. में जर्मनी के दो पादरियों की चीन में हुई हत्या का लाभ उठाकर जर्मनी ने चीन से **किमायोचाऊ** का प्रदे"ा 99 वर्षो के पट्टे पर प्राप्त कर लिया तथा **भाांतुग क्षेत्र** में रेलवे लाइन बिछाने का अधिकार भी प्राप्त कर लिया। प्र"ाान्त महासागर में स्थित **कैरोलीन तथा मा"ाल** द्वीपों पर भी जर्मनी ने अपना अधिकार कर लिया था।

3.6.6 रूस के उपनिवेश (Russian Colonies): यद्यपि 20 वीं शताब्दी के प्रांरभ तक रूस एक पिछड़ा हुआ दे"ा था परन्तु उसने भी एि"ाया में अपना आधिपत्य स्थापित करने का प्रयास किया।

(i) बोखारा, ताशकन्द, तुर्कीस्तान तथा समरकन्द (Bokhara, Tashkend, Turkistan and Samarkand): 1854–56 ई. के क्रीमिया युद्ध में रूस को इंग्लैंड व फ्रांस से पराजित होना पड़ा। अतः रूस के जार ने अपने सम्मान की रक्षा के लिए मध्य एि"ाया की तरफ अपना साम्राज्य विस्तार करने का नि"चय किया।

1858 ई. में रूस ने चीन पछाड़कर आमून नदी के उतर में स्थित समस्त प्रदेशों पर अधिकार कर लिया तथा ब्लाडीवोस्टक बंदरगाह की स्थापना की। 1864 ई. मे रूस ने ताशकन्द, बोखारा तथा खीबा पर अधिकार कर लिया। 1881 ई. में मर्व पर अधिकार किया। 1868 में समरकन्द पर भी रूस का अधिकार हो गया था।

(ii) साइबेरिया, लियोतुंग आदि (Siberia, Liaotung etc.): रूस ने चीन की आमूर घाटी पर 1860 ई. में ही अधिकार कर लिया था। 1895–98 ई. में जब यूरोप देशों के बीच चीन की लूट आंरभ हुई तो रूस ने भी चीन से लियोतुंग का प्रदेश 25 वर्षो के ठेके पर प्राप्त किया। रूस ने यूरोप के देशों की बढ़ती साम्राज्यवादी भावनाओं को देखते हुए एशिया के उतर मे स्थित बर्फीले क्षेत्र साइबेरिया को भी अपने नियन्त्रण में ले लिया। तत्पश्चात् साइबेरिया रूस का हिस्सा बन गया।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि एशिया को भी यूरोप के देशों ने अफ्रीका की तरह अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए साम्राज्यवादी गतिविधियों का शिकार बनाया। एशिया के साथ यूरोप के देश 16वीं शताब्दी से ही सम्पर्क बनाने लगे थे। परन्तु इसका तत्कालीन उद्देश्य व्यापारिक सुविधाएं प्राप्त करना था परन्तु जब यूरोप वालों ने देखा कि एशियाई देशों मे राजनीतिक अस्थिरता का माहौल है तो उन्होनें एशिया पर अपना राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयास किया तथा इस प्रयास में उन्हें काफी हद तक सफलता प्राप्त हुई।

3.7 साम्राज्यवाद के प्रभाव या परिणाम (Impacts of Results of Imperialism): प्रथम विश्व–युद्ध तक एशिया तथा अफ्रीका के अधिकांश क्षेत्र प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से यूरोप के भौगोलिक देशों के नियन्त्रण में आ चुके थे। इन सभी देशों की राजनीति तथा अर्थव्यवस्था का नियन्त्रण कुछ साम्राज्यवादी देश अपने हित में कर रहे थे। दुनिया के सभी भाग एक ही विश्व आर्थिक व्यवस्था के अन्तर्गत आ गये थे जो उपनिवेशों के शोषण पर आधारित थी। इस व्यवस्था ने जहां उपनिवेशों को हानि पहुंचाई वहीं साम्राज्यवादी नीतियो से एशिया तथा अफ्रीका के देशों को कुछ लाभ नही हुआ। साम्राज्यवादी प्रभावों से स्वयं साम्राज्यवादी देश भी नहीं बचे सके। उन पर भी इस प्रवृति के नकारात्मक प्रभाव पड़े। एशिया तथा अफ्रीका पर साम्राज्यवादी प्रकृति में प्रभावों का विवरण इस प्रकार है।

3.7.1 आर्थिक शोषण (Economic Explotation): साम्राज्यवाद के प्रसार में उपनिवेशों तथा अविकसित देशों का आर्थिक शोषण हुआ। आयात–निर्यात भूमिकर तथा अन्य करो के माध्यम से विजित क्षेत्रों से अधिक से अधिक लाभ उठाना प्रत्येक साम्राज्यवादी देश की मुख्य उद्देश्य था। उपनिवेशों से सस्ती दरों पर कच्चा माल खरीदना तथा ऊंचे दामों पर अपना तैयार माल बेचना साम्राज्यवादी देशो का मुख्य काम था। उनकी नीति का प्रमुख उद्देश्य उपनिवेशो की प्राकृतिक संपदा का दोहन करना था। अधिक समृद्ध होने लगे तथा उपनिवेश और अधिक निर्धन होते गए।

3.7.2 उपनिवेशों में गरीबी व भुखमरी और बेराजगारी (Poverty, Starvation and Unemployment in Colonies): साम्राज्यवादी दे"ाों की शोषणकारी नीतियो के कारण उपनिवे"ाो का व्यापार, वाणिज्य एवं लघु उद्योग तथा कृषि का पतन हो गया जिससे इनमें गरीबी, भुखमरी एवं बेरोजगारी जैसी गंभीर समस्याओं का जन्म हुआ। उपनिवे"ाों की जनता को भरपेट खाना मिलना बन्द हो गया जिससे उनके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ा। प्राकृतिक आपदाएं भी प्रकृति द्वारा कम अपितु इन दे"ाों की नीतियों द्वारा अधिक आने लगी। जिनमें लाखों लोग मरने लगे। इन दे"ाों ने जनकल्याण की भावनाओं की अनदेखी ही नही की अपितु फूट डालो एवं राज्य की नीति द्वारा लोगों में गंभीर मतभेद उत्पन्न कर दिये।

3.7.3 विजित क्षेत्रों में निरकुंश शासन (Despotic Rule in Colonies): यूरोप के शक्ति"ााली एवं विकसित दे"ाों ने ए"िाया तथा अफ्रीका के स"ाक्त एवं अविकसित राज्यों को अपने अधिकार में करके इन राज्यों पर अपना निरकुं"ा शासन स्थापित किया। स्थानीय लोगों के साथ गुलामों जैसा व्यवहार किया गया तथा उन्हें राजनीतिक अधिकारों से वंचित रखा गया। यूरोप के राज्यों का मूल उद्दे"य इन राज्यों पर अपने वर्चस्व स्थायी बनाना था। अमेरिका **राश्ट्रपति लिंकन** ने कहा था, **''जब गोरा आदमी अपने ऊपर भी भाासन करता है तो वह स्व"ाासन है किन्तु जब वह दूसरे पर भाासन करता है तो वह स्व"ाासन नहीं निरंकु"ाता है।''** जब इन दे"ाों के लोगों ने निरंकु"ा शासन विरोध किया तो उन्हें गंभीर यातनाएं दी गई तथा हजारों को मौत की नींद सुला दिया गया।

3.7.4 ईसाई धर्म का प्रसार (Spread of Christianity): यूरोप के दे"ाों को साम्राज्यवादी गतिविधियां अपनाने के लिए ईसाई मि"ानरियों ने प्रबल भूमिका निभाई थी। अतः साम्राज्यवाद के प्रसार के साथ–साथ ईसाई धर्म प्रचारक भी जाने–अनजाने क्षेत्रों मे पहुंचे तथा औपनिवे"ाक लोगों को छोटा बताकर अपने धर्म को थोपने का प्रयास किया। विभिन्न स्थानीय भाषाओं में बाइबिल का अनुवाद किया गया तथा मि"ानरियों ने अनेक विधालय स्थापित करके ईसाई धर्म फैलाया। स्थानीय लोगो को सरकारी नौकरियों का लालच देकर, पदोन्नति व अन्य नाना प्रकार के प्रलोभन देकर उन्हें ईसाई बनाने का प्रयास किया। इससे ईसाई धर्म का प्रसार हुआ।

3.7.5 राष्ट्रीय भावनाओं की जागृति (Development of Nationalism): साम्राज्यवाद के प्रसार से ए"िाया व अफ्रीका में आधुनिक "िाक्षा का प्रसार हुआ। "िाक्षा का प्रसार से पराधीन दे"ाों के लोगों ने मूलमन्त्र सीखा कि किसी भी दे"ा में शासनकाल में उस दे"ा के निवासियों का हाथ रहना चाहिए तथा उन्हें अपने दे"ा के भविष्य का निर्माण करने की स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए। इस प्रकार उपनिवे"ाों के लोग अपने राजनैतिक अधिकारों की मांग करने लगे परन्तु साम्राज्यवादी दे"ाों ने लोगों की राजनैतिक भावनाओं का कठोरता से दमन किया। ज्यों–ज्यों शोषण बढ़ाया गया त्यों–त्यों लोगों में राष्ट्रीयता की भावना अत्यधिक बलवती होती गई। इसी प्रकार जब स्थानीय

लोगों ने साम्राज्यवादी दे"ाो की आर्थिक नीतियों के विरूद्ध भी जोरदार आवाज उठायी तो उन्हें दबा दिया गया। इस प्रकार साम्राज्यवादी दे"ाों के शोषण से उत्पन्न राष्ट्रीयता की भावना 20 वीं सदी के प्रारंभ में जोर पकड़ने लगी तथा पराधीन दे"ाों ने साम्राज्यवादी दे"ाो के शासन से मुक्त होने के लिए आन्दोलनों का सहारा लिया। भारत, बर्मा, मिस्त्र, सूडान, हिन्दे"ाया, हिन्दचीन सहित अनेक दे"ा अन्ततः राष्ट्रीय भावनाओं के बल पर स्वतन्त्रता प्राप्त करने में सफल हो गए।

3.7.6 उपनिवेशों का विकास (Development of Colonies): यद्यपि साम्राज्यवादी शक्तियों ने बड़ी तेज गति से उपनिवे"ाो का आर्थिक करने की दृष्टि से कुछ विकासात्मक कार्य भी किये जिनसे उपनिवे"ाों के विकास का मार्ग प्र"ास्त हुआ। साम्राज्यवादी ताकतों ने यह सब लोक कल्याण की भावना से प्रेरित होकर नहीं किया बल्कि अपने स्वार्थ के लिए किया। मण्डियों से कच्चा माल बन्दरगाहों तक पहुंचाने के लिए तथा तैयार माल भारत व अफ्रीका के भारतीय भू–भागों में पहुंचाने के लिए साम्राज्यवादी शक्तियों ने यातायात के साधनो का विकास किया। कृषि उत्पादों को बढ़ाने के लिए कृषि क्षेत्र में सुधार किये गये। सरकार विरोधी गतिविधियों की जानकारी तथा उनका दमन करने के लिए संचार व्यवस्था में सुधार किये गये। स्थानीय लोगों के असन्तोष को कम करने के लिए थोड़े बहुत प्र"ाासनिक सुधार किये गये। अपने हितों की रक्षा के लिए कुछ उद्योग भी स्थापित किये गये। पा"चात्य सभ्यता एवं संस्कृति फैलाने के लिए "िाक्षा व्यवस्था का प्रबंध किया गया। इस प्रकार उपनिवे"ाों के विकास का मार्ग प्र"ास्त हुआ परन्तु यह सब साम्राज्यवादी शक्तियों ने अधिक से अधिक लाभ कमाने के लिए किया।

3.7.7 स्वतन्त्रता आन्दोलन को कुचलना (Suppression of Freedom Movements): उपरोक्त शीर्षकों में हमने देखा कि साम्राज्यवादी शक्तियों के शोषण के विरूद्ध ए"ाया तथा अफ्रीका के अनेक दे"ाों में राष्ट्रवादी आन्दोलन आरंभ हुए जिनका उदे्"य विदे"ाी शासन को समाप्त करना अर्थात् स्वतऩ्त्रता की प्राप्ति था। परन्तु साम्राज्यवादी दे"ाों ने अपने अधीन दे"ाों पर अपनी सता बनाये रखने के लिए अमानवीय अत्याचार किये। इंग्लैंड ने भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन को कुचलने के लिए वहां की जनता पर भयानक अत्याचार किये उन सबसे हम परिचित है। इसी प्रकार फ्रांस ने मोरक्को तथा अल्जीरिया के राष्ट्रीय आन्दोलन को कुचलने के लिए वहां की जनता पर भयानक अत्याचार किये। इंग्लैंड ने मिस्त्र तथा सूडान में होने वाले तथा नटाल व केप कालोनी में होने वाले स्थानीय लोगों के आन्दोलन को बुरी तरह कुचला। हालैंड तथा पुर्तगाल ने भी अपने अधीन उपनिवे"ा पर नियन्त्रण बनाये रखने के लिए भंयकर राजनीतिक अत्याचारों का सहारा लिया। इस प्रकार उपनिवे"ाों के स्वतंत्र आन्दोलनों को साम्राज्यवादी शक्तियों द्वारा बुरी तरह से कुचल दिया गया।

3.7.8 साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा (Imperialistic Rivalry): यूरोप के दे"ाों के बीच ए"ाया तथा अफ्रीका के अधिक से अधिक प्रदे"ाों को अपने आधिपत्य में लेने की होड़ लगी थी क्योंकि इन दे"ाों से प्राप्त होने वाली

धन–संपदा ने साम्राज्यवादियों को लोभी बना दिया था। इस प्रकार यूरोप के दे"ाों मे एक–दूसरे से अधिक क्षेत्रों पर कब्जा करने की तीव्र प्रतिस्पर्धा ने इन दे"ाों के बीच वैमनत्य उत्पन्न कर दिया। एक–दूसरे को पराजित करने के लिए गुटबंदियां की जाने लगी। साम्राज्यवाद की दौड़ में इंग्लैंड तथा फ्रांस काफी आगे निकल गये थे। अतः अन्य दे"ाों में उनके प्रति वैमनत्य उत्पन्न हुआ। 1870 ई. में अपना एकीकरण पूरा करने के प"चात् इटली तथा जर्मनी भी इस दौड़ में शामिल हो गये। बीसवीं शताब्दी के आरंभ मं जापान भी अपनी तीव्र औद्योगिकरण के बल पर इस दौड़ में शामिल हो गया। उधर रूस तथा अमेरिका भी पीछे नहीं थे। इस प्रकार साम्राज्यवादी लालसाओं के कारण यूरोपीय दे"ाों के बीच कई बार संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हुई जैसे– फ"ाोडा संकट, मोरक्को संकट एवं बाल्कान संकट। इन संकटों के दौरान होने वाली गुप्त संधियों ने साम्राज्यवादी दे"ाों को दो गुटों में बांट दिया। साम्राज्यवादी दे"ाों की यही गुटबंदी प्रथम वि"वयुद्ध का कारण बनी।

अतः में कहा जा सकता है कि मानव सभ्यता के उत्थान से लेकर आधुनिक काल तक साम्राज्यवादी धारणा विद्यमान रही है। प्राचीनकाल से अब तक इस विचारधारा के विभिन्न रूप देखने को मिले। प्राचीनकाल में जहां शक्ति"ााली शासक अपनी शक्ति के बल पर कमजोर राज्य को हथिया लेता था तो मध्यकालीन उपनिवे"ाी विचारधारा का मकसद अपने अधीन दे"ाों के व्यापार एवं वाणिज्य पर अपना प्रभुत्व स्थापित करके अधिक से अधिक लाभ कमाना था परन्तु औद्योगिक क्रान्ति के बाद 19वीं व 20वीं सदी में साम्राज्यवाद की जो धारा विकसित हुई उसका उद्"य अपने उद्योग की रक्षा के लिए अविकसित दे"ाों पर आर्थिक नियन्त्रण स्थापित करना तो था ही साथ में इन दे"ाों पर राजनीतिक आधिपत्य की स्थापना करना भी था। इस चरण में साम्राज्यवादी दे"ाों ने उपनिवे"ाों को लम्बे समय तक अपने नियन्त्रण में रखने का प्रयास किया। इसके लिए उन्होंने उचित तथा अनुचित सभी प्रकार के तरीकों का उपयोग किया। इस दौर में साम्राज्यवादी दे"ाों ने अपनी सभ्यता एवं संस्कृति तथा धर्म का भी अविकसित दे"ाों में प्रसार किया ताकि अविकसित दे"ाों के लोग साम्राज्यवादी दे"ाों की सभ्यता एवं संस्कृति में रंग जाएं, जिससे उनका शासन लम्बे समय तक कायम रह सके। इस दौर में साम्राज्यवाद ने अविकसित दे"ाों का विकास भी किया परन्तु यह विकास जनकल्याणकारी भावनाओं को ध्यान में रखकर नहीं किया गया था अपितु अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिए किया गया था। इस विचाराधारा का एक दुष्परिणाम यह भी निकला कि अधिक से अधिक उपनिवे"ा प्राप्त करने की दौड़ ने साम्राज्यवादी दे"ाों को आपस में उलझा दिया तथा उनकी यही प्रतिस्पर्धा वि"व को प्रथम वि"व–युद्ध की तरफ ले गई जिससे मानवता को गंभीर कष्ट उठाने पड़े।

3.7.9 प्रजातान्त्रिक व्यवस्था का प्रसार (Spread of Democratic Ideas): साम्राज्यवादी दे"ाों द्वारा जब अपने अधीनस्थ उपनिवे"ाों में राजनीतिक तथा आर्थिक शोषण किया गया तो स्थानीय लोगों ने अंसतोष पनपने लगा जिसे दूर करने के लिए साम्राज्यवादी शक्तियों को कुछ दिखाने के प्र"ाासनिक सुधार करने पड़े तथा लोकतान्त्रिक

संस्थाओं का निर्माण भी किया। इससे अधिकां"ा उपनिवे"ाों में प्रजातान्त्रिक व्यवस्था का ढांचा तैयार हो गया। धीरे–धीरे इन दे"ाों में प्रजातान्त्रिक व्यवस्थाएं मजबूत होती गई तथा स्थानीय लोगों को प्र"ाासनिक अनुभव भी हुआ। यही कारण था कि इन उपनिवे"ाों ने स्वतन्त्रता की प्राप्ति के बाद प्रजातान्त्रिक व्यवस्था को अपना लिया। इस प्रकार ए"िाया व अफ्रीका में लोकतन्त्र को फलने–फूलने का अवसर प्राप्त हुआ।

3.8 प्रगति समीक्षा (Check your progress)

1. (क) तथा (ख) का उचित मिलान कीजिए :

(i) साम्राज्यवाद	(a) बेल्जियम
(ii) हेनरी स्टेनले	(b) Imperator
(iii) लियोपोल्ड	(c) 1876 ई.
(iv) अन्तर्राष्ट्रीय अफ्रीकन	(d) 1888 ई.
(v) फ"ाोडा संकट	(e) Through the dark Continent

उतर : (i)–(b), (ii)–(e), (iii)–(a), (iv)–(c), (v)–(d)

2. **(अ) तथा (ब) का उचित मिलान कीजिए :**

(i) एडोवा का युद्ध	(a) 1905 ई.
(ii) मोरक्को संकट	(b) 1911 ई.
(iii) अगादीर संकट	(c) 1896 ई.
(iv) स्वेज नहर का निर्माण	(d) 1815 ई.
(v) वियना	(e) 1869 ई.

उतर : (i)–(c), (ii)–(a), (iii)–(b), (iv)–(e), (v)–(d)

3. **(क) तथा (ख) का उचित मिलान कीजिए :**

(i) ट्रांसवाल का राष्ट्रपति	(a) 1600 ई.
(ii) औरेंज राज्य की स्थापना	(b) 1602 ई.
(iii) ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना	(c) 1664 ई.

(iv) फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना (d) क्रुगर.

(v) डच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना (e) बोअर लोग

उत्तर : (i)–(d), (ii)–(e), (iii)–(a), (iv)–(c), (v)–(b)

3.9 सारांश (Summary):

- साम्राज्यवाद अंग्रेजी भाषा के (Imperator) से निकला है जिसका अर्थ सम्राट अथवा बड़े राज्य का स्वामी होता है।
- साम्राज्यवाद की भावना अति प्राचीनकाल से ही विद्यमान रही है।
- किसी भिन्न प्रजाति वाले दे"ा पर किसी दूसरे दे"ा के राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक नियन्त्रण को 'साम्राज्यवाद' कहा जाता है।
- प्राचीन एवं मध्यकालीन साम्राज्यवाद महत्वाकांक्षी योद्धाओं की विजयाभिलाषा का परिणाम था जबकि आधुनिक साम्राज्यवाद (नव साम्राज्यवाद) का उद्"य विजित दे"ा द्वारा मातृदे"ा के व्यापार एवं व्यवसाय पर एकाधिकार स्थापित करना था।
- नव साम्राज्यवाद औद्योगिक क्रान्ति की देन माना जाता है।
- औद्योगिक क्रान्ति के कारण होने वाले अतिरिक्त उत्पादन एवं पूंजी ने औद्योगिक दे"ाों को अविकसित दे"ाों पर आधिपत्य स्थापित करने की प्रेरणा दी।
- नव साम्राज्यवाद का आंरभ प्रमुख रूप से 1870 ई. के प"चात् होता है।
- यूरोप की तेजगति से बढ़ती जनसंख्या भी नव साम्राज्यवाद का कारण बनी। अनुमान है कि 1880–1914 ई. के बीच यूरोप की जनसंख्या बढ़कर 45 करोड़ हो गई।
- यातायात एवं संचार के साधनों के विकास ने भी साम्राज्यवादी गतिविधियों को तेज किया।
- यूरोप में जागृत उग्र राष्ट्रीयता की भावना भी साम्राज्यवाद का प्रमुख कारण बनी।
- बर्टन, स्पेक, ग्राण्ट, बेकर, डॉ. डेविड लिंविग्स्टोन, स्टेनली आदि साहसी खोजकर्ताओं के कारणा कार्यों का परिणामस्वरूप साम्राज्यवादी गतिविधियां तेज हुई।
- 19वीं शताब्दी से पहले अफ्रीका को 'अन्य महाद्वीप' (Darl Continent) कहा जाता था।
- 19वीं सदी से पहले यूरोप के लोग अफ्रीका के कुछ भागों से (10 प्रति"ात) परिचित थे तथा वहां से 'दास व्यापार' करते थे।

- ळेनरी स्टेनली की पुस्तक 'थ्रु दी डार्क कान्टीनेन्ट' (Through the dark Continent) के प्रकाि"ात होने से अफ्रीका यूरोप के लिए चर्चा का विषय बन गया।
- बेल्जियम के शासक लियोपोल्ड ने अफ्रीका विभाजन का प्रांरभ किया।
- लियोपोल्ड ने अपनी राजधानी ब्रुसेल्स में 1876ई. में अन्तर्राष्ट्रीय अफ्रीकन सभा की स्थापना की तथा यूरोपीय दे"ाों की बैठक चलाई।
- हेनरी स्टेनली के प्रयत्नों से लियोपोल्ड ने कांगो राज्य की स्थापना की।
- 1884–85ई. में बर्लिन सम्मेलन हुआ। इसमें अफ्रीका पर विचार करने के लिए यूरोप के राज्यों के अलावा अमेरिका व जापान ने भी भाग लिया।
- फ्रांस का 1830 ई. से ही अल्जीरिया के कुछ भागों पर अधिकार था परन्तु 1882ई. में फ्रांस ने अल्जीरिया को अपने पूर्ण नियन्त्रण में ले लिया। तत्प"चात् फ्रांस ने टयूनिस, मैडागास्कार व मोरक्को–नियन्त्रण स्थापित किया।
- 1881ई. में फ्रांस व इंग्लैंड के बीच 'फ"ाोडा' में संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हुई जिसे फ"ाोडा संकट के नाम से जाना जाता है।
- 1905 ई. में मोरक्को संकट उत्पन्न हुआ।
- इटली के अफ्रीका में प्रमुख उपनिवे"ा एरिट्रिया, सोमालीलैण्ड तथा ट्रीपोली थे।
- 1896 ई. में एडोवा के युद्ध में एबिसीनिया ने इटली को पराजित किया। अफ्रीका में किसी यूरापीय राष्ट्र की यह पहली पराजय थी।
- 1911ई. मं अदागीर संकट उत्पन्न हुआ।
- डॉ. नाखटिगाल के प्रयत्नों से टौगोलैण्ड तथाा कैमरून पर जर्मनी ने अधिकार स्थापित किया।
- टंगोला व मोजाम्बिक पुर्तगाल के अफ्रीकी उपनिवे"ा थे।
- अफ्रीका की लूट में इंग्लैंड को सबसे बड़ा भाग प्राप्त हुआ। 1815 ई. के वियना सम्मेलन के बाद उसे 'केप कालोनी' प्राप्त हुआ था।
- 1869ई. में स्वेज नहर बन जाने से इंग्लैंड की रूचि मिस्त्र में बढ़ी।
- 1881ई. में मिस्त्र के राष्ट्रवादियों ने अहमद अरबी के नेतृत्व में इंग्लैंड–फ्रांस के विरूद्ध आन्दोलन किया।
- 1885ई. में मोहम्मद अहमद (मेंहदी) के नेतृत्व में सूडान के लोगों ने राष्ट्रवादी आन्दोलन चलाया।
- केफ कालोनी में रहने वाले हालैंड के डच किसान 'बोअर' कहलाते थे।

- बोअर लोगों ने 1843ई. में 'औरेंज स्वतन्त्र राज्य' की स्थापना की।
- 1881ई. में पाल क्रुगर के नेतृत्व में बोअरों ने 'मजूबाहिल' की लड़ाई में अंग्रेजों को हराया।
- ट्रान्सवाल के राष्ट्रपति 'क्रुगर' को जर्मनी के सम्राट केसर विलियम द्वारा भेजा गया तार इतिहास में 'क्रुगर तार' के नाम से प्रसिद्ध है।
- सेसिल रोड्स के नाम पर अफ्रीका क्षेत्रों का नाम 'रोडेि"ाया' रखा गया।
- एि"ाया में यूरोपीय साम्राज्यवाद का आंरभ 16वीं शताब्दी में पुर्तगालियों द्वारा किया गया।
- गेआ, दमन, दीयू, तिमर व मकाओ पुर्तगालियों की एि"ाया की प्रमुख बस्तियां थी।
- 1602ई. में डच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई जिसने बैण्टम के निकट पुर्तगालियों को पराजित करके बैण्टम पर अधिकार किया।
- 1664ई. में फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई। पांडिचेरी, चन्द्रनगर, माही कारीकल आदि फ्रांसीसियों की भारत में प्रमुख दस्तियां थी।
- कोचीन–चीन, कंबोडिया, टाकिन्ग, अनाम आदि एि"ाया में अन्य फ्रांसीसी बस्तियां थी।
- अंग्रेजी ईस्ट इंडिया की स्थापना 1600ई. में हुई।
- कर्नाटक के युद्धों में फ्रांसीसियों को पराजित करके अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों को भारत से खदेड़ दिया।
- चीन में अंग्रेजी साम्राज्यवादी गतिविधियां अफ्रीम युद्धों के बाद आंरभ हुई।
- 1895–98 तक चले रियायतों के लिए संघर्ष में यूरोपीय शक्तियों ने चीन को आपस में बांट लिया। इसे 'चीनी खरबूजे का काटा जाना' कहते है।
- साम्राज्यवादी शक्तियों के बीच उत्पन्न प्रतिस्पर्धा प्रथम वि"व–युद्ध का कारण बनी।

3.10 स्वः मूल्यांकन के लिए प्रश्न (Self Assessment Test)

1. 16वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी के मध्य होने वाले दास व्यापार के विषय में आप क्या जानते हो?
2. साम्राज्यवाद का पारिभाषिक अर्थ स्पष्ट कीजिए।
3. साम्राज्यवाद की मुख्य वि"ोषताएं क्या थी?
4. आधुनिक साम्राज्यवाद के प्रमुख लक्षण क्या थे?
5. उग्रराष्ट्रवाद किस प्रकार साम्राज्यवाद का 'कवच' बन गया था?
6. अफ्रीका में फ्रांसीसी साम्राज्यवाद पर टिप्पणी कीजिए।

3.10 (A)

1. साम्राज्य किस शब्द से निकला है? तथा इसका क्या अर्थ है?

उत्तर : अंग्रेजी भाषा के **'Imperator'** शब्द से, जिसका अर्थ है 'बड़े राज्य का स्वामी'।

2. 'साम्राज्यवाद' किसे कहते है?

उत्तर : किसी भिन्न प्रजाति वाले दे"ा पर किसी दूसरे दे"ा के राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक नियंत्रण को साम्राज्यवाद कहा जाता है।

3. नव साम्राज्यवाद किसकी देन माना जाता ह?

उत्तर : औद्योगिक क्रान्ति की देन

4. नव साम्राज्यवाद का आंरभ कब माना जाता है?

उत्तर : प्रमुख रूप से 1870 ई. के बाद।

5. साम्राज्यवाद शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम कहां किया गया?

उत्तर : संभवतः बोअर युद्ध में।

6. 'छोटे राष्ट्रों का समय गुजर गया है बड़े राष्ट्रों का समय आ गया है।' यह कथन किसने कहा?

उत्तर : ब्रिटि"ा साम्राज्यवादी चैम्बरलेन ने।

7. 1815 ई. में यूरोप का संपूर्ण धरती के कितने भाग पर अधिकार था तथा यह 1914 ई. में बढ़कर कितने प्रतिशत भाग पर हो गया?

उत्तर : 1815 ई. में 35% भाग पर अधिकार था 1914 ई. में बढ़कर 84% पर हो गया था।

8. हेनरी स्टेनली की पुस्तक का क्या नाम हैं?

उत्तर : 'Through the Dark Continent'

9. बर्लिन सम्मेलन कब हुआ?

उत्तर : 1884–85 ई. में।

10. फ्रांस ने अल्जीरिया को अपने नियंत्रण में कब किया?

उत्तर : 1882 ई. में

11. अफ्रीका का विभाजन किसने प्रांरभ किया?

उतर : बेल्जियम के शासक लियोपोल्ड ने।

12. अन्तर्राष्ट्रीय अफ्रीकन सभा की स्थापना कब किसने की?

उतर : 1876 ई. में लियोपोल्ड ने।

13. अन्तर्राष्ट्रीय अफ्रीकन सभा कहां हुई?

उतर : ब्रसेल्स में।

14. लियोपोल्ड ने हेनरी स्टेनले की सहायता से किस राज्य की स्थापना की?

उतर : कांगो राज्य की।

15. फशोडा संकट कब उत्पन्न हुआ?

उतर : 1888 ई. में।

16. 19वीं शताब्दी में पहले अफ्रीका में प्रमुख उपनिवे"ाों के नाम बताओं।

उतर : 'अंध महाद्वीप'।

17. इटली के अफ्रीका में प्रमुख उपनिवेशों के नाम बताओ।

उतर : एरिट्रिंया, सोमालीलैंड तथा ट्रिपोली।

18. एडोवा का युद्ध कब व किस–किस के मध्य हुआ?

उतर : 1896 ई. में एबिसीनिया एवं इटली के मध्य।

19. एडोवा के युद्ध में किसकी विजय हुई?

उतर : एविसीनिया की।

20. अगादीर संकट कब उत्पन्न हुआ?

उतर : 1911 ई. में।

21. डा. नाखटिगाल क प्रयत्नों से जर्मनी ने किन प्रदेशों पर अधिकार स्थापित किया?

उतर : टोगोलैंड तथा कैमरन्न पर।

22. अंगोला व मोजाम्बिक किसके उपनिवेश थे?

उतर : पुर्तगाल के अफ्रीकी उपनिवे"ा।

23. स्वेज नहर का निर्माण कब हुआ?

उतर : 1869 ई. में।

24. मिश्र के राष्ट्रवादियों ने इंग्लैंड व फ्रांस के विरूद्ध आंदोलन कब व किसके नेतृत्व में किया?

उतर : 1861 ई. में अहमद अरबी के नेतृत्व में।

25. ओरेंज स्वतंत्र राज्य की स्थापना कब व किसने की?

उतर : 1843 ई. में बोअर लोगों ने।

26. अफ्रीकी क्षेत्रों का नाम रोडेशियों क्यों रखा गया?

उतर : सेसिल रोड्स के नाम पर।

27. एशिया में यूरोपियन साम्राज्यवाद का आंरभ कब किसने किया?

उतर : 16वीं शताब्दी में पुर्तगालियों ने।

28. डच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना कब हुई?

उतर : 1602 ई. में।

29. फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी को स्थापना कब हुई?

उतर : 1664 ई. में।

30. चीन में अंग्रेजी साम्राज्यवादी गतिविधियां कब आरंभ हुई?

उतर : अफीम युद्धों के बाद।

31. साम्राज्यवादी भाक्तियों के बीच उत्पन्न प्रतिस्पर्धा का प्रथम परिणाम क्या निकला।

उतर : प्रथम वि"व–युद्ध।

32. साम्राज्यवाद का एक राजनीतिक कारण बताओ।

उतर : कट्टर राष्ट्रवाद।

33. साम्राज्यवाद का एक सामाजिक कारण लिखिए।

उतर : जनसंख्या में वृद्धि।

34. साम्राज्यवाद को बढ़ावा देने वाला एक आर्थिक कारण बताइए।

उतर : यूरोपीय दे"ाों में औद्योगिक परिवर्तन।

35. साम्राज्यवाद को गति देने में सहायक एक धार्मिक कारण लिखो।

उतर : धर्म प्रचार की भावना।

3.10 (B)

1. नव साम्राज्यवाद का प्रारंभ प्रमुख रूप से कब माना जाता हैं?

(क) 1848 ई. (ख) 1860 ई.

(ग) 1870 ई. (घ) 1894 ई.

उतर :1870 ई.।

2. 1880–1914 ई. के बीच यूरोप की जनसंख्या बढ़ कर कितनी हो गई?

(क) 30 करोड़ (ख) 45 करोड़

(ग) 60 करोड़ (घ) 75 करोड़

उतर : 45 करोड़।

3. 19वीं से पूर्व अफ्रीका को क्या कहा जाता था?

(क) अन्ध महाद्वीप (ख) उज्जवल महाद्वीप

(ग) ज्ञात महाद्वीप (घ) खजाना महाद्वीप

उतर :अन्ध महाद्वीप.।

4. 'Throughe the Dark Continent' का रचियता कौन था?

(क) हेनरी स्टेनल (ख) ग्राण्ट

(ग) बेकर (घ) डा. डेविड लेविंग्स्टन

उतर : हेनरी स्टेनल।

5. अफ्रीका का विभाजन किसने प्रारंभ किया?

(क) विलियम प्रथम (ख) बिस्मार्क

(ग) फ्रांसीसी जोसफ (घ) लियोपोल्ड

उतर : लियोपोल्ड।

6. अंतर्राष्ट्रीय अफ्रीकन सभा की स्थापना कब हुई?

(क) 1870 ई. (ख) 1876 ई.

(ग) 1882 ई. (घ) 1889 ई.

उतर :1876 ई.।

7. फशोडा संकट कब उत्पन्न हुआ?

(क) 1876 ई. (ख) 1882 ई.

(ग) 1888 ई. (घ) 1898 ई.

उतर :1888 ई.।

8. मोरक्को संकट कब उत्पन्न हुआ?

(क) 1878 ई. (ख) 1900 ई.

(ग) 1905 ई. (घ) 1906 ई.

उतर :1905 ई.।

9. इंग्लैंड को केप कालोनी कब प्राप्त हुई?

(क) वियना सम्मेलन के बाद

(ख) बर्लिन सम्मेलन के बाद

(ग) वार्शिंगटन सम्मेलन के बाद

(घ) पेरिस सम्मेलन के बाद

उतर : वियना सम्मेलन के बाद।

10. बोअर लोगों ने औरेंज स्वतंत्र राज्य की स्थापना कब की?

(क) 1840 ई. (ख) 1843 ई.

(ग) 1847 ई. (घ) 1851 ई.

उतर :1843 ई.

11. मजूबाहिल की लड़ाई कब हुई?

(क) 1878 ई. (ख) 1881 ई.

(ग) 1847 ई. (घ) 1894 ई.

उतर :1881 ई.।

12. ट्रांसवाल का राष्ट्रपति कान था?

(क) बिस्मार्क (ख) लियोपोल्ड

(ग) गैम्बार्टा (घ) क्रुगर

उतर :क्रुगर।

13. फ्रेंच ईस्ट कंपनी की स्थापना कब हुई?

(क) 1600 ई. (ख) 1602 ई.

(ग) 1664 ई. (घ) 1685 ई.

उतर :1664 ई.।

14. निम्न में कौन सी फ्रांसीसी बस्ती नही थी?

(क) कोचीन (ख) कंबोडिया

(ग) जावा (घ) टोकिन्ज

उतर : जावा।

15. साम्राज्यवाद का प्रारंभ किसने किया?

(क) अंग्रेजो ने (ख) फ्रांसीसियों ने

(ग) जर्मनी ने (घ) पुर्तगालियों ने

उतर : पुर्तगालियों ने।

16. साम्राज्यवाद का प्रमुख परिणाम क्या निकला?

(क) सर्व"ांति (ख) प्रथम वि"व युद्ध

(ग) आपसी सद्भाव (घ) कुछ भी नहीं

उतर :प्रथम वि"व युद्ध।

3.11 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोतर (Answer to check your progress)

1. साम्राज्यवाद से आपका क्या अभिप्राय है? यूरोपीय साम्राज्यवाद के उदय के लिए उतरदायी कारणों का उल्लेख कीजिए।

2. अफ्रीका में साम्राज्यवाद के विकास की समीक्षा कीजिए तथा इसकी वि"ोषताओं का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।
3. एि"ाया में साम्राज्यवाद के विकास पर एक निबन्ध लिखिए।
4. साम्राज्यवाद के प्रसार के परिणामों का उल्लेख कीजिए।
5. साम्राज्यवाद के कारणों एवं परिणामों का वि"लेषण कीजिए।
6. यूरोपीय शक्तियों के बीच मची अफ्रीका की लूट का विवरण दीजिए। इसके अन्तर्राष्ट्रीय महत्व पर भी प्रका"ा डालिये।
7. संक्षिप्त टिप्पणी लिखोः

(i) चीन में साम्राज्यवाद

(ii) मिस्त्र एवं सूडान में अंग्रेजी साम्राज्य

(iii) ब्रुसेल्स सम्मेलन

(iv) बर्लिन सम्मेलन

3.12 सन्दर्भ / सहायक अध्ययन सामग्री (Referenes/Suggested Study Materials)

11. आधुनिक वि"व का इतिहास– लाल बहादुर वर्मा
12. आधुनिक युरोप का इतिहास– विद्याधर महाजन
13. युरोप का आधुनिक इतिहास– (1789 से 1974)– सत्यकेतु विघालंकार
14. वि"व का इतिहास– नैयेनियल प्लेट, म्यूरियल जीन ड्रेमंड
15. आधुनिक वि"व का इतिहास– डा0 ए0 सी0 अरोड़ा
16. आधुनिक युरोप का इतिहास– (1453 से 1919) – डा0 के0 सी0 जैन
17. आधुनिक वि"व (1500–1950)– जैन ओर माथुर
18. The French Revolution- Thomas Carlyle
19. Modern Europe to 1870- C.J.H. Hayes/
20. आधुनिक वि"व– डा9 विपिन बिहारी सिन्हा

SUBJECT : HISTORY (Sem-VI) B.A.-III Year	
Course Code- 304 **Lesson- 4**	**AUTHOR** **M.S. Jyoti**
प्रथम विश्व युद्ध World War-I	

अध्याय की संरचना (Lesson structure)

4.1 अधिगम उद्दे”य (Learning objectives)

4.2 परिचय (Introduction)

4.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main Body of text)

4.3.1 प्रथम वि”व युद्ध के कारण

4.3.1 यूरोपीय दे”ाों में दलबन्दी

4.3.2 गुप्त कूटनीतिक प्रणाली

4.3.3 आर्थिक साम्राज्यवाद

4.3.4 राष्ट्रवाद की भावना का उदय

4.3.5 सैनिकवाद का उदय

4.3.6 समाचार पत्रों का योगदान

4.3.7 लोकतन्त्र बनाम ताना”ााही का नारा

4.3.8 अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का अभाव

4.3.9 मोरक्को संकट

4.3.10 बोस्निया का संकट

4.3.11 बाल्कन युद्ध

4.3.12 एल्सेस और लोरेन प्रदे”ा

4.4 प्रथम वि”व युद्ध की प्रमुख घटनाएं

4.4.1 1914 ई. की घटनाएं

4.4.2 1915 ई. की प्रमुख घटनाएं

4.4.3 1916 ई. की घटनाएं

4.4.4 1917 ई. की प्रमुख घटनाएं

4.4.5 1918 ई. की प्रमुख घटनाएं

4.5 प्रथम महायुद्ध के परिणाम

4.6 प्रगति समीक्षा (Check your progress)

4.7 सारां"ा (Summary)

4.8 स्वः मूल्याकंन के लिए प्र"न

4.9 प्रगति समीक्षा के प्र"नोतर

4.10 सन्दर्भ/सहायक अध्ययन सामग्री (References/Suggested Study Materials)

4.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objective)

इस अध्याय के अध्ययन के प"चात् विधार्थी योग्य होगें:–

1. प्रथम वि"व युद्ध के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक परिस्थितियों के बारें में जानेगें।
2. इंग्लैंड प्रथम वि"व युद्ध के लिए उतरदायी था, इस पर चर्चा करेगें।
3. प्रथम वि"व–युद्ध की घटनाओं के बारें में जानकारी प्राप्त करना।
4. बाल्कन ने प्रथम वि"व–युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार की इस पर चर्चा करेगें।
5. प्रथम वि"व युद्ध के परिणामों पर चर्चा करेगें।
6. प्रथम वि"व युद्ध का पूरे वि"व पर क्या प्रभाव पड़ा, पाठकों को अवगत कराना।

4.2 परिचय (Introduction)

प्रथम वि"व युद्ध यूरोप की ही नहीं, बल्कि वि"व के इतिहास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना है। ऐसा नहीं है कि इससे पूर्व यूरोप के दे"ाों के बीच युद्ध हुए ही नहीं थे। इससे पहले हुए युद्धा अधिकतर क्षेत्रीय स्तर पर लड़े गए थे। इनमें शक्ति प्रयोग दो या तीन दे"ाों के बीच ही हुआ था। परन्तु यह पहला अवसर था, जब वि"व का प्रत्येक

दे"। युद्ध में उलझ गया था तथा किसी–न–किसी के पक्ष में युद्धरत था। यह युद्ध अत्यंतउ च्च स्तर पर लड़ा गया, इसलिए यह अत्यंत भयानक और विना"ाकारी भी था। 1914 ई. में विभिन्न यूरोपीय शक्तियों के ध्रुवीकरण के बाद प्रारंभ हुआ यह वि"व युद्ध 1918 ई. तक चलता रहा। 'अत्यंत उच्च स्तर पर लड़े गए इस युद्ध में पहली बार गोरी, पीली, काली तथा भूरी जातियों ने एक दूसरे की हत्या करने में भाग लिया।' तथा 'इस युद्ध की लपटें शीघ्र की पूर्व, प"िचम, उतर, दक्षिण, जल, भूमि, आका"ा, सब ओर फैल गई।' बहुत जल्द ही सारा संसार इस युद्ध की चपेट में आ गया।

इस युद्ध में एक तरफ रूस, फ्रांस, इंग्लैंड, सर्बिया और बेल्जियम थे तथा दूसरी ओर जर्मनी और आस्ट्रिया। थोड़े समय बाद इटली और अमेरिका ने भी इंग्लैंड और फ्रांस आदि दे"ाों का समर्थन प्रारम्भ कर लिया जबकि दूसरी ओर तुर्की और बुल्गारिया, जर्मनी और आस्ट्रिया के पक्ष में आ खड़े हुए। इस प्रकार यह युद्ध केवल यूरोपीय भूमि पर नही, अपितु ए"िाया, अफ्रीका तथा अमेरिका महाद्वीपों की भूमि पर भी लड़ा गया। यही कारण था कि इसे प्रथम वि"व युद्ध का नाम दिया गया।

वास्तव में इस युद्ध की आं"ाका काफी समय पहले से की जा रही थी। प्रसिद्ध इतिहासकार जे.ए.आर. मैरिएट के अनुसार इसके लिए बिस्मार्क की नीतियां उतरदायी थी। ''यदि बिस्मार्क ने 1898 ई. में इस प्रकार की भविष्यवाणी कर दी थी तो इसमें कोई आ"चर्य की बात नहीं हैं, क्योंकि 1898 ई. तक बिस्मार्क यह समझ गया था कि जो बीज उसने बर्लिन की कांग्रेस में बोया था उससे शीघ्र ही विध्यंसक फलों का होना नि"िचत था।'' उल्लेखनीय है कि 1898 ई. में बिस्मार्क ने ऐसे युद्ध की भविष्यवाणी हर बेलिन (Herr Ballian) के समक्ष की थी और कहा था, **''मैं विश्व युद्ध नहीं देखूंगा पर तुम देखोगे और यह पश्चिमी एशिया से प्रारम्भ होगा।''**

यद्यपि बहुत से विद्वान् मैरिएट के इस विचार से सहमत नही है, क्योंकि केवल बिस्मार्क और उसकी नीतियों को इस युद्ध के लिए उतरदायी ठहराया नहीं जा सकता। वास्तव में इस युद्ध की पृष्ठभूमि में अनेकों अन्य ऐसे पहलू थे, जिन्होंने इस युद्ध को प्रारम्भ करने में महत्वपूर्ण योगदान किया था। इसमें तुर्की साम्राज्य की निरन्तर बढ़ती जा रही दुर्बलता तथा बाल्कन प्रदे"ाों में हैप्सबर्गों, स्लावों तथा ट्यूटनों के मध्य बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा भी इसके लिए उतरदायी थी। बिस्मार्क ने बर्लिन कांग्रेस में ऑस्ट्रिया का पक्ष लेकर रूस के साथ वि"वासघात किया। परन्तु वह एक कु"ाल कूटनीतिज्ञ था और उसने फ्रांस और रूस की इंग्लैंड से मित्रता नहीं होने दी तथा दूसरी ओर स्वयं इटली से मित्रता कर ली थी परन्तु बिस्मार्क के बाद जर्मनी में कोई इतना कु"ाल कूटनीतिज्ञ नहीं हुआ जो सारी परिस्थिति को समझकर सूझ–बूझ से काम कर पाता, परिणामस्वरूप परिस्थितियां बिगड़ती ही चली गई। कुछ विद्वान तो यहां तक मानते है कि वि"व युद्ध तो 1909 ई. में ही प्रारम्भ हो गया होता यदि बोस्निया हर्जेगोबिना के

प्र"न पर रूस ने आस्ट्रिया का सामना करने का निर्णय कर लिया किन्तु युद्ध टल गया क्योंकि रूस युद्ध करने की स्थिति में नहीं था।

4.3.1 प्रथम विश्व युद्ध के कारण (Causes of the First World War): प्रत्येक युद्ध के पीछे अनेक ऐतिहासिक एवं मनोवैज्ञानिक कारण होते हैं। प्रथम वि"व युद्ध भी इसका अपवाद नही था। वास्तव में 1870–71 ई. में हुए फ्रैंको–प्र"ियन युद्ध के बाद से यूरोप के अंदर तथा बाहर ऐसी शक्तियों का विकास हो रहा था जिन्होनें प्रमुख यूरोपीय शक्तियों के बीच होने वाले संघर्ष को अव"यभावी बना दिया था। वैसे तो इस युद्ध की शुरूआत ऑस्ट्रिया के युवराज **आर्कड्यूक फर्डीनैंड** की हत्या के कारण हुई परन्तु यह वि"व युद्ध का केवल एक तात्कालिक कारण था। इसके अलावा भी अनेकों ऐसे कारण थे, जो इस युद्ध के लिए जिम्मेवार थे, इनका विवरण निम्नलिखित रूप से दिया जा सकता है।

4.3.1 यूरोपीय देशों में दलबन्दी (Party system among European Powers): प्रथम वि"व युद्ध का एक अत्यंत प्रमुख कारण दल प्रथा का जन्म होना था। यूरोपीय महा"ाक्तियां दो परस्पर विरोधी दल मे बंट चुकी थी। 1879 ई. में जर्मनी ऑस्ट्रिया के साथ एक द्विराष्ट्र संधि की। 1882 ई. में इटली भी इस संधि का एक अंग बन गया तथा इस प्रकार यह एक त्रिराष्ट्रीय संधि बन गई। जब तक बिस्मार्क जर्मनी का शासक था, उसने फ्रांस को अलग–थलग रखने की विदे"ा नीति को अपनाया था क्योंकि वह जानता था कि फ्रांस हर समय जर्मनी से बदला लेने की कोि"ा करता रहेगा। परिणामस्वरूप, 1894 ई. में फ्रांस और रूस में संधि हो गई। ऐसे में इंग्लैंड जो बहुत समय पहले से ही शानदार पृथकता की नीति का पालन करता रहा था, को अपनी सुरक्षा की चिंता सताने लगी। स्पष्ट था कि यूरोप की बड़ी शक्तियों में केवल वही अकेला दे"ा बच गया था और ऐसी स्थिति में यदि उसे युद्ध करना पड़ता है तो उसकी स्थिति कमजोर हो सकती थी। यही सोचकर इंग्लैंड ने अपनी वर्षो पुरानी नीति को त्यागकर 1902 ई. में जापान के साथ संधि कर ली। इसी प्रकार 1904 ई. में इंग्लैंड ने फ्रांस के साथ भी संधि की तथा 1907 ई. में रूस भी इस संधि का अंग बन गया और हार्दिक मैत्री संबंध की स्थापना हुई। इस प्रकार सम्पूर्ण यूरोपीय महा"ाक्तियां दो दलों में बंट गई जिनमें एक ओर तो त्रिराष्ट्र संधि के रूप में जर्मनी, आस्ट्रिया और इटली थे तो दूसरी ओर 'हार्दिक मैत्री संबंध' के रूप में फ्रांस, इंग्लैंड और रूस थे। इस प्रकार की परिस्थिति में युद्ध होना स्वाभाविक ही था।

4.3.2 गुप्त कूटनीतिक प्रणाली (Secret Diplomatic System): यूरोप में 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक कूटनीति में भ्रष्टाचार व्यापाक रूप से फैलने लगा था। इसका आधार धोखा–धड़ी, झूठ व फरेब हो गया था। संधियों का स्वरूप भी गुप्त हो गया था। इन संधियों के बारें में जनता तथा अन्य दे"ाों के राजनेताओं को कोई

जानकारी नहीं होती थी। एस.बी.फे. के कथनानुसार **''महायुद्ध का सबसे बड़ा एकमात्र कारण फ्रांस–प्रशिया युद्ध के उपरांत होने वाली गुप्त संधियों की प्रणाली थी।''**

गुप्त राजनीति एवं कूटनीति का एक प्रमुख उदाहरण इटली द्वारा अपनाई गई नीति थी। जहां एक ओर उसने जर्मनी और आस्ट्रिया के साथ त्रिराष्ट्र संधि की, वहीं दूसरी ओर गुप्त रूप से इंग्लैंड और फ्रांस के साथ मित्रता की बातचीत भी जारी रखी। अन्य शक्तियों ने अपने–अपने साम्राज्यवादी हितों की पूर्ति के लिए इस प्रकार की गुप्त संधियां की।

4.3.3 आर्थिक साम्राज्यवाद (Economic Imperialism): 19 वीं शताब्दी के उतरार्द्ध में आर्थिक साम्राज्यवाद बड़ी तेजी से पनपा। औद्योगिक क्रान्ति के परिणामस्वरूप यूरोपीय दे"ा का उत्पादन का केन्द्र बने तथा वहां बड़ी संख्या में कारखानों की स्थापना हुई। इन दे"ाों को अपने उद्योगों के लिए जहां एक ओर कच्चे माल की जरूरत थी, वहीं दूसरी ओर उत्पादित वस्तुओं के लिए बाजार की दरकार थी। इन दोनों की आव"यकताओं को पूरा करने के लिए यूरोपीय शक्तियों ने वि"व के विभिन्न महाद्वीपों में अपनी बस्तियां स्थापित करने की आव"यकता अनुभव की। अफ्रीका के विभाजन को लेकर शक्ति संघर्ष अनेक वर्षो तक चला। चीन की दुर्बलता का लाभ उठाकर सुदूर पूर्व में भी इन शक्तियों में व्यापारिक प्रतिस्पर्धा प्रारम्भ हो गई। रूस की ट्रांस–साइबेरियन रेल मार्ग, जर्मनी की बर्लिन–बगदाद योजना और इंग्लैंड को केप से काहिरा तक की रेल मार्ग योजना आर्थिक साम्राज्य के ज्वलन्त उदाहरण माने जा सकते है। उपनिवे"ाों की प्राप्ति हेतु किए गए संघर्ष और आर्थिक आव"यकताओं ने यूरोपीय महा"ाक्तियों को एक–दूसरे का शत्रु बना दिया। इससे यूरोपीय दे"ाों में तनाव बढ़ता गया, जो अन्ततोगत्वा युद्ध का प्रमुख कारण बना।

4.3.4 राष्ट्रवाद की भावना का उत्थान (Rise of Nationalism): प्रथम वि"व युद्ध का एक अन्य प्रमुख कारण राष्ट्रीयता की भावना का उत्थान था। वैसे तो फ्रांसीसी क्रान्ति (1789ई.) के बाद ही विभिन्न यूरोपीय दे"ाों में राष्ट्रवाद की भावना बल पकड़ती चली गई थी। परन्तु 1870 ई. के बाद राष्ट्रीय भावना में आ"ाातीत बढ़ोतरी हुई। यह एक नया धर्म बन गया, जिसने मानव जाति की भावनाओं को वि"ाेष प्रेरणा दी। 1870 ई. के बाद इटली और जर्मनी के पुनरोदय को राष्ट्रवाद की भावना के विकास में मील का पत्थर कहा जा सकता है। ये दोनों नवोदित राज्य अपने आप को पुराने राष्ट्रों से किसी प्रकार कम नहीं मानते थे और अपनी राष्ट्रीयता को लेकर इनमें वि"ाेष उत्साह था। इस कारण पुराने राष्ट्रों में भी राष्ट्रवाद की भावना का उत्थान हुआ।

यहां यूरोप में राष्ट्रवाद सम्बन्धी दो प्रमुख आन्दोलनो का उल्लेख करना आव"यक है। इनमें से एक था जर्मनी का 'पान जर्मन आन्दोलन' जिसका उदे्"य यूरोप के विभिन्न राज्यों में रह रहे जर्मनो को एक करना था।

ऐसा ही एक अन्य आन्दोलन 'पान स्लाव आन्दोलन' था। स्लाव जाति, जो रूस में सर्वाधिक संख्या में थे, स्वयं को एकता के सूत्र में बांधना चाहती थी।

राष्ट्रीयता की उभरती भावनाओं के परिणामस्वरूप राष्ट्रों के परस्पर संबंधों मे गहरी कटुता उत्पन्न हो गई, जिसका परिणाम वि"व युद्ध के रूप में सामने आया।

4.3.5 सैनिकवाद का उदय (Rise of Militarism): 19वीं शताब्दी में यूरोप में सैनिकवाद का तेजी से विकास हुआ। यूरोपीय दे"ाों के विद्वानों, लेखकों, तथा कवियों आदि ने अपनी रचनाओं के माध्यम से यह प्रचार करना शुरू कर दिया कि किसी भी दे"ा की प्रगति के लिए युद्ध एक आव"यकता है। यहां तक कि यह माना जाने लगा कि समाज के बहुत से रोगों का ईलाज युद्ध ही है। युद्ध के कारण ही लोगों में सहानुभूति, प्रेम, दे"ाभक्ति और आत्म–त्याग जैसी उच्च भावनाएं पैदा होती है। जर्मन विद्वान हीगेल के मतानुसार, ''जिस प्रकार वायु के चलने से समुद्र का जल निर्मल रहता है उसी प्रकार युद्ध भी राष्ट्र का स्वच्छता और बल प्रदान करता है।'' इस प्रकार के विचारों ने लोगों के विचारों को बहुत अधिक प्रभावित किया और वे मानसिक रूप से युद्ध के लिए तैयार हो गए।

ट्रांट्रस्की, जो रूस का विचारक था, ने अपने एक लेख 'पॉलिटिक्स' में 'बल प्रयोग ही अधिकार है' के सिद्धान्त की प्र"ांसा की। एस.बी.फे. के विचार में सैनिकवाद के दो पक्ष है– प्रथम, विभिन्न दे"ाों की वि"ााल एवं शक्ति"ााली सेनाओं का निर्माण; द्वितीय, सैनिक अधिकारियों की शक्ति"ााली श्रेणी का सिविल अधिकारियों पर हावी हो जाना।

जर्मनी द्वारा फ्रांस पर 1871 की विजय के उपरांत जर्मनी की देखादेखी यूरोप की अन्य शक्तियो ने भी अपनी सैनय शक्ति का विकास प्रारम्भ कर दिया। अधिक–से–अधिक खतरनाक अस्त्र–"ास्त्र विकसित करने की होड़ शुरू हो गई। थल सेना के साथ–साथ जल सेना का विकास भी प्रारम्भ हो गया। जर्मनी द्वारा अपनी जल सेना का विकास करने की महत्वाकांक्षी योजना का निर्माण करने और उस पर अड़ जाने के परिणामस्वरूप इंग्लैंड और जर्मनी में वैर–विरोध बढ़ता ही गया, जो युद्ध का एक कारण बना।

4.3.6 समाचार–पत्रों का योगदान (Role of Press): यूरोप के विभिन्न दे"ाों में प्रका"ात होने वाले समाचार–पत्रों ने भी युद्ध की आग को भड़काने का ही काम किया। अपने समाचारों के माध्यम से इन्होनें जनता की भावनाओं को भड़काया। इस विषय में ए.बी.फे ने लिखा है, ''युद्ध का एक बड़ा कारण सभी बड़े दे"ाों में समाचार पत्रों के द्वारा जनता की विचारधारा को दूषित करना था।'' अक्सर ऐसा देखा गया कि यदि दो यूरोपीय दे"ाों की सरकारें किसी विषय पर अपने विवादों को हल करने के प्रयास करने की इच्छुक होती थी तो भी उस विषय पर उन दे"ाों के समाचार–पत्र एक दूसरे के विरूद्ध इतना जहर उगलते थे कि समझौते की तमाम सम्भावनाएं धूमिल हो जाती थी। ऐल्सेंस लोरेन के प्र"न पर जर्मनी और फ्रांस के समाचारपत्रों की भूमिका, जल सेना शक्ति के विषय

पर इंग्लैंड और जर्मनी के समाचारपत्रों की भूमिका, बोस्निया हर्जेगोविना के प्र"न पर तथा ऑस्ट्रिया के राजकुमार के वध के समाचारों ने विरोधी दे"ाों के विरूद्ध विषैला प्रचार किया जिसने कटुता को अपनी चरम सीमा पर पहुंचा दिया और युद्ध की संभावना बढ़ती चली गई।

4.3.7 लोकतन्त्र बनाम तानाशाही का नारा (Slogan of Democracy Versus Dictatorship): इंग्लैंड, फ्रांस, इटली तथा अमेरिका आदि राज्यों में लोकतान्त्रिक व्यवस्था पनप और फल फूल रही थी जबकि जर्मनी और ऑस्ट्रिया जैसे दे"ाो में ताना"ाही शक्तियों का प्रभुत्व था। लोकतान्त्रिक शक्तियां लोकतन्त्र की रक्षा करने के लिए इन ताना"ाही शक्तियों के विरूद्ध युद्ध करना और उन्हें परास्त करना आव"यक मानते है। अमेरिका के राष्ट्रपति बुडरो विल्सन ने स्पष्ट शब्दों में कहा था, ''हम यह युद्ध वि"व में लोकतत्र की रक्षा के लिए लड़ रहे है।''

4.3.8 अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का अभाव (Absence of an International Organisation): प्रथम वि"व युद्ध से पूर्व विभिन्न दे"ाों के मध्य उत्पन्न होने वाले राजनीतिक विवादों एवं समस्याओं को सुलझानें के लिए किसी अन्तर्राष्ट्रीय संस्था की स्थापना नहीं हुई थी। परिणामस्वरूप विभिन्न विवाद तनावों को बढ़ाते रहे और इन बढ़ते तनावों की परिणति वि"व युद्ध के रूप में सामने आई।

4.3.9 मोरक्को संकट (Moracco Crisis) (1905ई.): मोरक्को उतर प"िचम अफ्रीका का एक प्रसिद्ध दे"ा है। 19वीं शताब्दी के अन्तिम वर्षो तक यह एक स्वतंत्र दे"ा था, जिसकी जनसंख्या 10 से 50 लाख के बीच थी। इसमें विभिन्न जातियों के लोग निवास करते थे। इस दे"ा पर तुर्की के सुल्तान की नाममात्र की प्रभुसता थी। मोरक्को की राजधानी फेजा थी। मोरक्को एक अ"ाांत राज्य था क्योंकि इसके विभिन्न भागो मे झगड़े होते रहते थे और वहां विदे"ाी लोगों का जीवन एवं संपति भी सुरक्षित नही थी। मोरक्को की ऐसी परिस्थिति में वहां यूरोपीय शक्तियों का रूचि लेना स्वाभाविक था। फ्रांस ने अल्जीरिया और ट्यूनिस पर अपना नियंत्रण स्थापित कर रखा था। मोरक्को के उपद्रवों का प्रभाव अल्जीरिया पर पड़ता था। इसलिए फ्रांस मोरक्को की शासन व्यवस्था पर कुछ सीमा तक अपना नियंत्रण बनाए रखने की आव"यकता महसूस करता था। फ्रांस के शासक इस तरह धीरे–धीरे मोरक्को की फ्रांसीसी बस्ती बनाना चाहते थे। दूसरी तरफ, भौगोलिक निकटता के कारण स्पेन और इटली की भी मोरक्को में वि"ोष रूचि थी। मोरक्को की स्थिति कुछ इस प्रकार है कि वह एक तरफ भूमध्यसागर और दूसरी तरफ महासागर के तट पर स्थित है। संसार की सबसे बड़ी नौसैनिक शक्ति होने के कारण इंग्लैंड भी मोरक्को में बंदरगाहें स्थापित कर अपने व्यापार और प्रभाव का विस्तार करना चाहता था। जर्मनी भी मोरक्को में अपनी बस्ती स्थापित करने की महत्वाकांक्षा रखता था।

फ्रांस ने मोरक्को में अपने प्रभाव को बढ़ाने के लिए वि"ोष प्रयत्न किए। इटली से गुप्त समझौता (1900 ई.), 1904ई. में इंग्लैंड से समझौता और स्पेन के साथ समझौता करते हुए उसने मोरक्को की तरफ कदम बढ़ाए। 1905

ई. में फ्रांसीसी देखरेख में सैन्य पुनर्गठन को स्वीकार कर लिया। परन्तु यह समाचार जर्मनी को नागवार गुजरा और जर्मनी के व्यापारिक हितों की सुरक्षा तथा मोरक्को की स्वतन्त्रता एवं अखंडता को बनाए रखने की दुहाई देकर सम्राट विलियम द्वितीय मोरक्को की प्रसिद्ध बंदरगाह टेन्जियर पहुंच गया। जर्मनी के प्रभाव में मोरक्कों के सुल्तान ने फ्रांस के सुझावों को मानने से इन्कार कर दिया तथा इस समस्या का निर्णय एक सम्मेलन के माध्यम से करने की मांग की।

ऐसी स्थिति में जर्मनी और फ्रांस के बीच विरोध बहुत अधिक बढ़ गया और युद्ध की संभावना पैदा हो गई। आखिरकार अमेरिकी राष्ट्रपति रूजबेल्ट के प्रयासों तथा फ्रांसीसी प्रधानमंत्री रूवियर की सूझ–बूझ से यह संकट टल गया। फ्रांसीसी प्रधानमंत्री ने मोरक्को के सुल्तान की सम्मेलन बुलाने की मांग स्वीकार कर ली। जनवरी 1906 ई. में यूरोपीय शक्तियों तथा अमेरिका का एक सम्मेलन हुआ जिसमें सुल्तान की सर्वोच्चता, मोरक्को की एकता और अखण्डता तथा व्यापारिक समानता को स्वीकार कर लिया गया। परन्तु इस सम्मेलन में भी इंग्लैंड और फ्रांस का पक्ष लिया जबकि ऑस्ट्रिया जर्मनी के पक्ष में रहा। इसका परिणाम यह निकला कि इंग्लैंड और फ्रांस जहां एक दूसरे के निकट आए वहीं जर्मनी से उनकी दूरियां और अधिक बढ़ गई। रूस और इटली भी फ्रांस के नजदीक आ गए। परिणामस्वरूप दोनो पक्षों में शत्रुता और भी बढती चली गई जो अन्ततोगत्वा युद्ध का कारण बनी।

4.3.10 बोस्निया का संकट (Bosnian Crisis): 1878 ई. में हुई बर्लिन की संधि में ऑस्ट्रिया को बोस्निया हर्जेगोविना के शासन प्रबन्ध करने का अधिकार तो प्राप्त हो गया परन्तु वह इन प्रदे"ाों को अपने साम्राज्य में शामिल नही कर सकता था। तीन सम्राटों की लीग (1881) की एक गुप्त शर्त के अनुसार रूस जर्मनी और आस्ट्रिया ने बोस्निया–हर्जेगोविना को आस्ट्रिया के साम्राज्य में सम्मिलित कर लिए जाने के अधिकार को स्वीकार कर लिया था, परन्तु अनेक वर्षो तक ऑस्ट्रिया ने बोस्निया–हर्जेगोविना को अपने साम्राज्य में शामिल नहीं किया। 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में सर्बिया में चले वि"ााल सर्बिया आन्दोलन जिसका उद्"य बोस्निया हर्जेगोविना को सर्बिया में सम्मिलित करना था, ने ऑस्ट्रिया को स"ांकित कर दिया। इसी तरह नवयुवक तुर्क आन्दोलन जिसके नेता टर्की से छीने गए सभी प्रदे"ाों को जिनमें बोस्निया हर्जेगोविना भी शामिल था, वापस लेना चाहते थे, ने भी ऑस्ट्रिया को अपने साम्राज्य में इस प्रदे"ा को सम्मिलित करने की आव"यकता को बढ़ा दिया। अपने इस काम को अंजाम देने के लिए ऑस्ट्रिया ने रूस के साथ गुप्त बातचीत प्रारंभ की। दोनों विदे"ा मंत्रियों की बैठक में पारस्परिक हितों के आधार पर इस मुद्दे पर सहमति बनी परन्तु कोई समय सीमा नि"चत नहीं हो पाई। इसके तुरन्त बाद ऑस्ट्रिया ने बोस्निया हर्जेगोविना को अपने साम्राज्य में मिलाने की घोषणा कर दी जिससे एक अत्यंत भीषण संकट पैदा हो गया। रूस और सर्बिया ऑस्ट्रिया के विरूद्ध खड़े हो गए।

फ्रांस और इटली ने भी बर्लिन की संधि भंग करने के लिए ऑस्ट्रिया की आलोचना की। परन्तु जर्मनी ने न केवल ऑस्ट्रिया की इस कार्यवाही का समर्थन किया। अपितु आव”यकता पड़ने पर हर प्रकार की सहायता प्रदान करने का वायदा भी किया। ऐसे में परिस्थिति विस्फोटक होती चली गई।

परन्तु यह संकट टल गया क्योंकि रूस इस समय युद्ध के लिए तैयार नही था। आस्ट्रिया ने टर्की को 25 लाख पौंड की एक बड़ी धनरा”ा क्षतिपूर्ति के रूप में दे दी तथा अन्य यूरोपीय ने भी इसकी पुष्टि कर दी। यद्यपि युद्ध टल, परन्तु इस संकट का युरोपीय राजनीति पर गहरा प्रभाव पड़ा। रूस और सर्बिया के संबंध आस्ट्रिया से अत्यंत शत्रुतापूर्ण हो गए। जर्मनी और आस्ट्रिया की मित्रता ओर गहरी हो गई। सर्बिया में आंतकवादी संगठन सक्रिय हो गए जो आस्ट्रिया के विरूद्ध थे। इन्होने ही 1914 ई. में आस्ट्रिया के युवराज की हत्या को अंजाम दिया जो वि”व युद्ध का एक तात्कालिक कारण बना।

4.3.11 अगादीर का संकट (Agadir Crisis): 1906 ई. के सम्मेलन के बावजूद मोरक्को के विषय में जर्मनी और फ्रांस के बीच मतभेद बने रहे। 1908 ई. में कासाबलांका के उपद्रव के समय में मतभेद पुनः उभरे परन्तु जल्दी ही फ्रांस और जर्मनी में समझौता हो गया। 1911 ई. में मोरक्को के कुछ भागों में पुनः दंगा हो गया। ऐसे में फ्रांस ने राबात पर अधिकार जमा लिया और राजधानी फेज की ओर अपनी सेनाएं भेज दी। जर्मनी ने इस पर विरोध जताते हुए मोरक्को की बंदरगाह अगादीर में पैंथर नाम समुद्री जहाज भेजा। इंग्लैंड ने पहले की तरह फ्रांस का साथ दिया और जर्मनी के इस कदम की आलोचना की। अन्ततः लम्बी बातचीत और पारस्परिक विचार विनिमय के बाद दोनों दे”ाों का समझौता हुआ और संकट टल गया। परन्तु दोनों दे”ाों के बीच की शत्रुता और अधिक बढ़ गई, जो वि”व युद्ध का कारण बनी।

4.3.12 एल्सेस और लोरेन प्रदेश (Rrovinces of Alsace and Lorraine): 1870 ई. के युद्ध में विजय प्राप्त करन के बाद जर्मनी ने एल्सेस और लोरेन प्रदे”ाों को अपने साम्राज्य में शामिल कर लिया था। यह फ्रांस के लिए बहुत बड़े अपमान की बात थी क्योंकि ये दोनों प्रदे”ा उसके लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण थे। ये दोनों प्रदे”ा लुई 14वें की विजय के प्रतीक थे। साथ ही लोरेन में लोहे की खानों के कारण उसका आर्थिक दृष्टि से भी महत्व था। इन सब कारणों से फ्रांस अपने इन दोनों प्रदे”ाों को किसी भी हालत में पुनः प्राप्त करना चाहता था। वि”व युद्ध की पृष्ठभूमि में यह भी एक बहुत कारण था।

4.3.13 विलियम कैसर द्वितीय की महत्वाकांक्षाएं (Ambition of William Kaiser Second): जब तक जर्मनी में बिस्मार्क का शासन रहा उसने फ्रांस को अलग–थलग रखने और इंग्लैंड से प्रतिस्पर्धा ने करने की नीति को अपनी विदे”ा नीति का आधार बनाया। परन्तु कैसर विलियम अत्यंत महत्वाकांक्षी था। वह सैनिक शक्ति के बल पर वि”व विजेता बनना चाहता था। थल सेना के साथ–साथ उसने जल सेना के विकास की योजना भी बनाई,

जिससे इंग्लैंड को चिंता हो गई। उसने इस संबंध में अनेक बार अदूरदर्"ितापूर्ण उतेजक भाषण भी दिए। इसके कारण यूरोप में तनाव बढ़ गया। कैसर विलियम की विस्तारवादी तथा महत्वाकांक्षी नीतियां भी वि"व युद्ध के लिए प्रमुख रूप से जिम्मेवार थी।

4.4 प्रथम विश्व युद्ध की प्रमुख घटनाएं (Important Events of the First World War): प्रथम वि"व युद्ध जुलाई 1914 ई. में प्रारम्भ होकर नवम्बर 1918 ई. तक जारी रहा। इस युद्ध में प्रत्येक वर्ष होने वाली घटनाओं का विवरण इस प्रकार है।

4.4.1 1914 ई. की घटनाएं :

(1) जर्मनी का बेल्जियम पर आक्रमण (20 अगस्त, 1914ई.): बेल्जियम एक तटस्थ राष्ट्र था। परन्तु 20 अगस्त, 1914 ई. को फ्रांस की ओर बढने के लिए जर्मनी ने बेल्जियम पर हमला बोल दिया। बेल्जियम की राजधानी ब्रसल्ज के साथ बेल्जियम के कई प्रदे"ों को भी जीत लिया।

(2) फ्रांस का आक्रमण: इसके बाद जर्मनी की सेनाएं आगे बढ़ी और उन्होनें फ्रांस पर आक्रमण कर दिया। काफी क्षेत्र को विजित करते हुए ये सेनाएं पेरिस से केवल 15 मील के फासले तक पहुंच गई। परन्तु फ्रांस की सेना ने जनरल जाफे से नेतृत्व में 5–10 सितंबर को जवाबी हमला किया और मार्न के युद्ध में जर्मन सेना को पराजित कर पीछे खदेड़ दिया।

(3) रूस का पूर्वी प्रशिया पर हमला : इधर पूर्व में 7 अगस्त को रूसी सेनाओं ने पूर्वी प्र"ाया पर हमला करके जर्मनी के कुछ प्रदे"ों को जीत लिया। परन्तु बहुत जल्द ही जर्मन सेनाओं ने टेननबर्ग के युद्ध में रूसियों को पराजित कर दिया और ये जर्मन क्षेत्र को छोड़कर भाग खड़े हुए।

(4) ऑस्ट्रिया का पोलैंड पर आक्रमण: अगस्त और सितम्बर मास में ही ऑस्ट्रिया की सेना ने रूस प्रभुत्व वाले पोलैंड के प्रदे"ों पर आक्रमण कर दिया परन्तु रूसियों की मजबूत किलबंदी और प्रखर विरोध के सामने उनकी एक न चली और वे कोई वि"ोष सफलता प्राप्त नही कर पाए।

(5) इंग्लैंड और जर्मनी में नौसैनिक युद्ध: युद्ध के प्रारम्भ से ही ऑस्ट्रिया ने सर्विया के विरूद्ध अभियान छेड़ दिया था। शुरू–"ाुरू में तो ऑस्ट्रिया को इस अभियान में थोड़ी बहुत सफलता मिली परन्तु बाद में सर्विया ने ऑस्ट्रियई शत्रुओं को अपने इलाकों से निकाल बाहर किया।

(6) इंग्लैंड और जर्मनी में नौसैनिक युद्ध: अगस्त मास में इंग्लैंड की नौसैना ने जर्मनी की नौसैना की हेलीगोलैंड के सामुदायिक युद्ध में हरा दिया परन्तु थोड़े समय बाद ही जर्मनी की जल सेना ने चिली के समुद्री

युद्ध में इंग्लैंड को पराजित किया। दिसम्बर मास में इंग्लैंड की नौसैना को फिर से फाकलैंड के द्वीप में पराजित किया।

(7) जर्मनी के उपनिवेशों पर कब्जाः अफ्रीका में टोगोलैंड तथा कैमरून दोनों जर्मनी के उपनिवे"ा थे। मित्र दे"ाों की सेना ने इन दोनों उपनिवे"ाों पर नियंत्रण कर लिया।

(8) जापान की जर्मनी के विरूद्ध युद्ध की घोषणाः 23 अगस्त को जर्मनी के विरूद्ध युद्ध की घोषणा करते हुए जापान ने पूर्व में जर्मनी के क्षेत्रों पर हमला कर दिया। नवम्बर में उसने चीन में जर्मनी के प्रभाव क्षेत्र क्विाओन्चोऊ पर अपना नियंत्रण कर लिया।

(9) तुर्की का युद्ध में प्रवेशः नवम्बर आते–आते तुर्की भी जर्मनी की ओर युद्ध में सम्मिलित हो गया। इससे मिस्त्र में इंग्लैंड के लिए खतरा पैदा हो गया। फलस्वरूप उसने मिस्त्र को अपनी सुरक्षा में ले लिया।

4.4.2 1915 की प्रमुख घटनाएंः

(1) **इंग्लैंड और जर्मनी के मध्य युद्धः** 1915 ई. के मार्च तथा अप्रैल मास में इंग्लैंड तथा जर्मनी के मध्य नेव चैपल तथा येप्रस स्थानों पर दो भीषण युद्ध हुए। इन युद्धों में दोनों पक्षो को भारी नुकसान उठाना पड़ा। परन्तु प"िचमी सीमा में इन युद्धों के कारण कोई वि"ोष परिवर्तन नहीं आया।

(2) रूस का पूर्वी प्रशिया पर पुनः आक्रमणः फरवरी 1915 ई. में रूस की सेना ने फिर से पूर्वी प्र"िाया पर हमला कर दिया परन्तु जर्मन सेनानायक हिन्डनबर्ग ने रूसियों को पराजित कर वापस भाग जाने पर मजबूर कर दिया। इसके कुछ समय बाद जर्मनी और ऑस्ट्रिया की सेनाओं ने मिलकर रूसियों को गले"िाया से भी बाहर खदेड़ दिया।

(3) केन्द्रीय शक्तियों का पोलैंड पर आक्रमणः केन्द्रीय शक्तियों (जर्मनी और ऑस्ट्रिया) ने इसके प"चात् पोलैंड पर आक्रमण कर दिया और 5 अगस्त को पोलैंड के प्रमुख नगर वार्सा पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया।

(4) तुर्की पर अधिकार के निष्फल प्रयत्नः फरवरी–मार्च से लेकर वर्ष के अन्त तक तुर्की की राजधानी कस्तुनतुनिया पर कब्जा करने के लिए मिस्त्र राष्ट्रों की सेना ने अनेक प्रयत्न किए परन्तु उन्हें कोई सफलता प्राप्त नहीं हो पाई।

(5) बुल्गारिया का य़ुद्ध में प्रवेशः अक्तूबर 1915 ई. में बुल्गारिया ने भी केन्द्रीय शक्तियों के पक्ष में युद्ध में सम्मिलित होने की घोषणा कर दी।

(6) सर्बिया पर नियंत्रणः अक्तूबर मास में जर्मनी, ऑस्ट्रिया तथा बुल्गारिया ने मिलकर सर्बिया पर हमला बोल दिया और अन्ततोगत्वा सर्बिया को जीत लिया।

(7) इटली का युद्ध में प्रवेशः इसी वर्ष मई में इटली ने भी मित्र दे"ाों के पक्ष में युद्ध में शामिल होने की घोषणा कर दी। साथ ही मित्र दे"ाों की सेनाओं ने दक्षिणी–पि"चमी अफ्रीका में स्थित जर्मनी के उपनिवे"ाों पर अपना कब्जा जमा लिया।

4.4.3 1916 ई. की प्रमुख घटनाएंः

(1) बरदून का दीर्घ युद्धः इस वर्ष के दौरान जर्मनी और फ्रांस के मध्य फरवरी से अक्तूबर तक बरदून का लम्बा युद्ध चला। जी–तोड़ प्रयासों के बावजूद जर्मनी को इसमें विजय प्राप्त न हो सकी।

(2) सोम्मे का युद्धः इसी वर्ष मित्र दे"ाों तथा केन्द्रीय शक्तियों के बीच सोम्मे का युद्ध जुलाई से अक्तूबर तक चला। इसमें विजयश्री तो मित्र दे"ाों को ही मिली, परन्तु वह शत्रु राष्ट्रों के बहुत ही कम क्षेत्रों पर नियंत्रण स्थापित कर पाए।

(3) ऑस्ट्रिया का इटली पर आक्रमणः मई मास में ऑस्ट्रिया ने टाइरोल की ओर से इटली पर हमला बोल दिया और लगभग 230 वर्गमील क्षेत्र पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया।

(4) रूमानिया का युद्ध में प्रवेशः अगस्त में पूर्वी यूरोप का एक अन्य दे"ा रूमानिया भी मित्र दे"ाों के पक्ष में महायुद्ध में शामिल हो गया। दिसम्बर में जर्मनी, ऑस्ट्रिया और बुल्गारिया की राजधानी बुखारेस्ट और उसके बहुत से प्रदे"ाों पर कब्जा कर लिया।

(5) जूटलैंड का समुद्री युद्धः इंग्लैंड और जर्मनी की नौसैनिक प्रतिस्पर्धा के चलते इसी वर्ष 31 मई को जूटलैंड का समुद्री युद्ध हुआ, जिसमें दोनों दे"ाो को भारी नुकसान उठाना पड़ा। दोनों ने ही विजयश्री का दावा भी किया।

4.4.4 1917 ई. की प्रमुख घटनाएंः

(1) संयुक्त राज्य अमेरिका का महायुद्ध में प्रवेशः जर्मन पनडुब्बी के कारण अमेरिका का जहाज जिसमें 1200 व्यक्ति थे, डूब गया। अमेरिका इससे अत्यंत क्रोधित हुआ और मिस्त्र राष्ट्रों के पक्ष में आ खड़ा हुआ। उस वर्ष की सबसे महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय घटना संयुक्त राज्य अमेरिका का 6 अप्रैल को मित्र राष्ट्रों के पक्ष में महायुद्ध में शामिल हो जाना था।

(2) केपोरेटों का युद्ध और इटली की पराजयः ऑस्ट्रिया ने केपोरेटो के युद्ध में इटली को बुरी तरह पराजित किया। यद्यपि इसके बाद फ्रांस तथा इंग्लैंड की सेनाएं भी इटली की सहायता करने के लिए पहुंच गई थी। परन्तु उन्हें कोई वि"ोष सफलता प्राप्त नही हो पाई।

(3) मेसोपोटामिया पर मित्र राष्ट्रों की विजयः इस वर्ष की एक अन्य महत्वपूर्ण घटना मेसोपोटामिया को इंग्लैंड द्वारा जीत लिया जाना था। दिसम्बर के महीने में इंग्लैंड एक विजेता के रूप में जेरू"ालम पहुंच गया था।

(4) रूस का युद्ध क्षेत्र से पलायनः इस वर्ष रूस की जर्मनी के हाथों बड़ी भारी पराजय हुई। उसे जर्मनी से एक अपमानजनक संधि करने के लिए विव"ा होना पड़ा जिसके अन्तर्गत उसे अपने 5 लाख वर्ष मील के प्रदे"ा को जर्मनी को सौंप देना पड़ा। मित्र राष्ट्रो के लिए यह बहुत बड़ा आघात था क्योंकि इसके बाद रूस युद्ध क्षेत्र से पलायन कर गया। इससे पूर्व साम्यवादी क्रान्ति बोल"ोविकों के नेतृत्व में हुई तथा जार के स्थान पर साम्यवादी सरकार की स्थापना हो चुकी थी।

4.4.5 1918 ई. की प्रमुख घटनाएंः

(1) फ्रांस में जर्मनी का पुनः आक्रमणः प"िचमी सीमाओं पर तीव्र गति से आगे बढ़ते हुए जर्मनी ने फ्रांस पर भारी भरकम आक्रमण किया और फ्रांस के 1000 वर्गमील क्षेत्र पर कब्जा कर लिया। 21 मार्च को फ्रांस के विभिन्न क्षेत्रों से आगे बढ़ते हुए जर्मन सेना मार्न तक पहुंच गया।

(2) मित्र देशों का जवाबी हमला– जर्मनी की पराजयः मित्र दे"ाों ने मा"ल फो"ा के नेतृत्व में शत्रुओं के विरूद्ध प्रतिक्रमण की कार्यवाही 18 जुलाई के बाद प्रारम्भ की। इस बार अमेरिका की सेनाएं भी उनके सहयोग के लिए पहुंच गई थी। मार्न के दूसरे युद्ध में जर्मनी को बुरी तरह पराजित करके पीछे धकेल दिया गया। यह जर्मनी के लिए बहुत बड़ा आघात था, जिससे इसका पतन प्रारम्भ हो गया।

(3) तुर्की का पतनः सितम्बर–अक्तूबर मे मिस्त्र राष्ट्रों की सेनाएं पूर्व में आगे बढ़ी और तुर्की के साथ कई स्थानों पर संघर्ष हुआ। इन संघर्षो के परिणामस्वरूप सीरिया, मैसोपोटामिया, पैलेस्टाइन और अरेबिया को तुर्की के नियंत्रण से मुक्त करवा लिया गया। 31 अक्तूबर को तुर्की ने मित्र दे"ाों की शर्ते मानकर हार मान ली। इस प्रकार तुर्की का पतन हुआ।

(4) बुल्गारिया की पराजयः सितम्बर के अंत में बुल्गारिया ने मित्र राष्ट्रों की सेनाओं के आगे हथियार डाल दिए।

(5) ऑस्ट्रिया की पराजयः अक्तूबर मास में इटली ने ऑस्ट्रिया को पूर्व रूप से पराजित कर अपने सभी प्रदे"ाों से निकाल बाहर किया। 3 अक्तूबर को ऑस्ट्रिया ने युद्ध विराम का समझौता कर लिया।

(6) जर्मनो द्वारा पराजय स्वीकार : नवम्बर 1918 ई. में सब तरफ से मजबूर होकर जर्मनी ने अमेरिकी राष्ट्रपति बिल्सन के युद्ध विराम समझौते के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। जर्मन सम्राट बिलियम कैसर द्वितीय राजगद्दी छोड़कर हालैंड चला गया। नई जर्मन सरकार के प्रतिनिधि ने 11 नवम्बर को युद्ध विराम संबंधी मित्र दे"ाों की शर्तो को स्वीकार कर उस पर हस्ताक्षर कर दिये। इसके साथ ही वि"व युद्ध का अन्त हो गया।

4.5 प्रथम महायुद्ध के परिणाम

प्रथम महायुद्ध के वि"व तथा यूरोप पर बहुत अधिक प्रभाव पड़े जो इस प्रकार हैः

4.5.1 जन और धन की भारी हानिः प्रथम वि"व युद्ध केवल यूरोपीय भूमि पर ही नही, बल्कि एि"ाया, अफ्रीका तथा अमेरिका महाद्वीपों की भूमि पर भी लड़ा गया। इतने बड़े पैमाने पर इतने लम्बे समय तक युद्ध पहले नहीं हुआ था। इसमें लाखों सैनिक तथा निरपराध लोग हताहत हुए तथा विभिन्न राष्ट्रों का करोड़ो रूपया व्यय हुआ।

4.5.2 राजतन्त्रात्मक प्रणालियों को आघातः इस युद्ध से पूर्व यूरोप के अनेक राज्यो से राजतन्त्रात्मक प्रणालियां थी जिनमें जर्मनी, ऑस्ट्रिया, रूस, तुर्की प्रमुख थे, परन्तु युद्ध के बाद इनमें राजवं"ाों का पतन हो गया और गणतन्त्रों की स्थापना हुई।

4.5.3 लोकतन्त्र का उत्थानः महायुद्ध के पूर्व यूरोक अनेक दे"ाों में निरंकु"ाता का प्रभाव था परन्तु इसके बाद बहुत से राज्यों ने लोकतन्त्र को अपनाया। अनेक दे"ाों में जनता के संविधानों का निर्माण हुआ तथा लोगों द्वारा निर्वाचित संस्थाएं सतारूढ़ हुई। लोगों की व्यापक अधिकार प्राप्त हुए जिनमें समानता का अधिकार प्रमुख था, परन्तु ये प्रयोग सभी दे"ाों में सफल नहीं हुए। प्रतिक्रियास्वरूप जर्मनी तथा इटली में पुनः ताना"ााही का उदय हुआ।

4.5.4 रूस में साम्यवादी क्रान्तिः रूस में जार के स्वेच्छाचारी शासन के विरूद्ध जनता ने बोल्"ाविक दल के नेतृत्व में साम्यवादी क्रान्ति की तथा रूस में समाजवादी गणतन्त्र की स्थापना हुई। इस क्रान्ति ने वि"व के सभी दे"ाों को प्रभावित किया और साम्यवादी विचारधारा का प्रचार–प्रसार बढ़ने लगा।

4.5.5 नवीन राज्यों की स्थापनाः प्रथम वि"व युद्ध के बाद यूरोप में यूगोस्लाविया, चैकोस्लोवाकिया, पोलैंड, लैटविया आदि नये राष्ट्रों का उदय हुआ। दूसरी ओर युद्ध में पराजित शक्तियों का प्रभाव व क्षेत्र काफी कम हो गया।

4.5.6 राश्ट्रवाद का प्रसारः इस वि"व युद्ध ने केवल यूरोप में अपितु संपूर्ण वि"व में राष्ट्रवाद को प्रोत्साहन दिया। आयरलैंड ने अपने स्वतन्त्रता संघर्ष को तीव्र कर दिया और 1921 ई. में पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त कर ली। इस तरह तुर्की में मुस्तका कमाल पा"ाा के नेतृत्व में शक्ति"ााली तुर्की की स्थापना हो गई। मिस्त्र में राष्ट्रवादी आन्दोलन ने इतना जोर पकड़ा कि 1922 ई. तक इंग्लैंड को मिस्त्र छोड़ना पड़ा। भारत में भी राष्ट्रीय आन्दोलन ने नई ऊंचाईयो को छुआ।

4.5.7 शक्ति–संतुलन की समाप्तिः इस युद्ध के परिणामस्वरूप यूरोप की शक्ति संतुलन समाप्त हो गया। रूस, जर्मनी, ऑस्ट्रिया अब प्रमुख शक्तियां नहीं रही। धीरे–धीरे साम्यवादी रूस ने पि"चमी शक्तियों के विरूद्ध अपनी शक्तियों को बढ़ाया।

4.5.8 अमेरिका की आर्थिक सर्वोच्वताः प्रथम महायुद्ध में सभी यूरोपीय शक्तियों का भारी धन–व्यय हुआ और उन्हे अमेरिका से बड़ी धनरािि"ा (लगभग 1200 करोड़) ऋण लेना पड़ा। अमेरिका का विदे"ाी व्यापार भी पहले से

दुगना हो गया। इसी प्रकार यूरोपीय शक्तियां दुर्बल हुई तथा अमेरिका महान् आर्थिक शक्ति के रूप में उभरा और धीरे–धीरे वि”व में उसका राजनीतिक प्रभाव भी बढ़ा।

4.5.9 राष्ट्रसंघ की स्थापनाः प्रथम युद्ध के परिणामस्वरूप 1919 ई. में राष्ट्रसंघ की स्थापना हुई। इसका उदे्”य वि”व में छोटे तथा बड़े दे”ाों की स्वतन्त्रता तथा क्षेत्रीय अखंडता की सुरक्षा के साथ–साथ शांति स्थापना था। अनेक दोषों के बावजूद मानव जाति के कल्याण की दि”ाा में उठाया गया यह कदम काफी महत्वपूर्ण था।

4.5.10 अल्पसंख्यकों की समस्याः पेरिस शांति सम्मेलन के निर्णयों के फलस्वरूप अनेक दे”ाों में अल्पसंख्यकों की समस्याएं खड़ी हो गई। उन्हें अपने अधिकारों के लिए व्यापक संघर्ष करने पड़े।

4.5.11 किसानों की स्थिति में परिवर्तनः इस युद्ध के परिणामस्वरूप अनाज का मूल्य बढ़ गया जिससे किसानों को वि”ोष लाभ हुआ। फ्रांस में किसानों की स्थिति वि”ोष रूप से सुधरी, दूसरी ओर रूस की साम्यवादी क्रान्ति ने किसानों को अपनी जमीन का मालिक बना दिया। पोलैंड, रोमानिया तथा चैकोस्लोवाकिया में किसानों को जमीन का स्वामी बना दिया गया।

4.5.12 मजदूरों की स्थिति में सुधारः राष्ट्रसंघ ने अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर संगठन की स्थापना की जिसका प्रमुख उदे्”य दुनिया भर के मजदूरों की स्थिति को सुधारना था। कई दे”ाों की सरकारो ने भी मजदूरों के हित में कानून बनाए जिससे मजदूरों की स्थिति में सुधार आया।

4.6 प्रगति समीक्षा (Check your progress)

1. (क) तथा (ख) का उचित मिलान कीजिए :

(i) आर्क ड्यूक फर्डीनेड की हत्या	(a) 28 जून, 1900 ई.
(ii)सोफी ड्यूक तथा आर्क ड्यूक फर्डीनेंड का विवाह	(b) 28 जून, 1914 ई.
(iii) प्रथम बल्कान युद्ध	(c) 28 जुलाई, 1914 ई.
(iv) प्रथम वि”व युद्ध का प्रारंभ	(d) 1905 ई.
(v) मोरक्को संकट	(e) 1912 ई.

उतर : (i)–(b), (ii)–(a), (iii)–(e), (iv)–(c), (v)–(d)

2. (क) तथा (ख) का उचित मिलान कीजिए :

(i) त्रिपक्षीय समझौता	(a) 1882 ई.

(ii) त्रिगुट समझौता (b) 1906 ई.

(iii) द्वितीय बल्कान युद्ध (c) 1918 ई.

(iv) बोस्निया संकट (d) 1907 ई.

(v)प्रथम वि"व युद्ध की समाप्ति (e) 1913 ई.

उतर : (i)–(d), (ii)–(a), (iii)–(e), (iv)–(b), (v)–(c)

4.7 सारांश (Summary)

- प्रथम महायुद्ध 1914 ई. से 1918 ई. तक चला। इस युद्ध में एक तरफ मित्र राष्ट्र तथा दूसरी तरफ धुरी राष्ट्र थे।
- उग्रराष्ट्रीयता की भावना प्रथम वि"व युद्ध का कारण बनी।
- प्रथम वि"व युद्ध का तात्कालिक कारण ऑस्ट्रिया के युवराज आर्क ड्यूक फडीनैड की सेराजेवों में 28 जून, 1914 ई. को हुई था।
- 1882 ई. में जर्मनी, ऑस्ट्रिया तथा इटली ने मिलकर 'त्रिराष्ट्रीय संधि' का निर्माण किया।
- जर्मनी के चांसलर बिस्मार्क ने फ्रांस को अलग–थलग रखने के लिए गुप्त संधियों की शुरूआत की।
- 1902 ई. में इंग्लैंड ने जापान के साथ संधि करके अपनी वर्षो पुरानी शानदार अलगाव की नीति का अन्त कर दिया। इंग्लैंड ने 1904 ई. में फ्रांस तथा 1907 ई. में रूस से संधि की।
- युद्ध की दो महा"ाक्तियों में 'त्रिराष्ट्र संधि' के रूप में जर्मनी, ऑस्ट्रिया तथा इटली थे तथा दूसरी ओर 'हार्दिक मैत्री संबंध' के रूप में फ्रांस, इंग्लैंड व रूस थे।
- गुप्त राजनीति एवं कूटनीति का एक प्रमुख उदाहरण इटली ने प्रस्तुत किया। उसने एक तरफ त्रिराष्ट्र संधि की तो दूसरी तरफ मित्रराष्ट्रों से मित्रता जारी रखी।
- प्रथम वि"व युद्ध यूरोपीय दे"ाों एवं आर्थिक प्रतिस्पर्धाओं का टकराव के कारण हुआ।
- 'पान जर्मन आन्दोलन' तथा 'पान स्लाव आन्दोलन' उग्रराष्ट्रीयता के प्रमुख उदाहरण है।
- समाचार पत्रों ने विभिन्न दे"ाों की जनता की विचारधारा को दूषित करके वि"व युद्ध करवाने में अपनी भूमिका अदा की।
- अमेरिका के राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने कहा था, ''हम यह युद्ध लोकतन्त्र की रक्षा के लिए लड़ रहे है।''

- जर्मनी के प्रभाव में मोरक्को के सुल्तान ने फ्रांस के सुझावों को मानने से इंकार करके मोरक्को संकट (1905ई.) उत्पन्न कर दिया।
- 1908 ई. में बोस्निया संकट उत्पन्न हुआ।
- 1906 ई. में उत्पन्न अदागीर संकट के कारण 1911 ई. में मोरक्को में पुनः संकट हुआ जो द्वितीय वि"व युद्ध का कारण बना।
- 1911 ई. में प्रथम बाल्कन युद्ध तथा 1913 ई. में द्वितीय बाल्कन युद्ध हुआ।
- सर्बिया के निवासी प्रिन्सप ने युवराज फडीनेंड व उसकी पत्नी सोफीचोटेक की हत्या सेराजेयो मे की।
- अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट के प्रयासों से मोरक्को संकट टल गया था।
- रूस जर्मनी से ब्रेस्ट लिस्टोवस्क की संधि करके युद्ध से अलग हो गया।
- ब्रिटेन ने फ्रांस से 1916 ई. में साइकस पिकोट नामक गुप्त समझौता किया जिसके अन्तर्गत अरव दे"ों को आपस में बांटने का निर्णय हुआ।
- मित्र राष्ट्रों ने अमेरिका से बड़ी मात्रा में ऋण ले रखे थे, जिन्हें बचाने के लिए अमेरिका युद्ध में शामिल हुआ क्योंकि हारने पर धन की वापसी खतरे में पड़ सकती थी।
- प्रथम वि"व युद्ध से यूरोप के दे"ों का व्यापार एवं वाणिज्य ठप्प हो गया वहीं दूसरी तरफ अमेरिका व जापान को इससे फायदा हुआ। युद्ध के बाद अमेरिका दुनिया का प्रमुख साहूकार दे"ा बन गया।
- प्रथम वि"व युद्ध के प"चात् जर्मनी, ऑस्ट्रिया, हंगरी, रूस व तुर्की आदि दे"ों में राजनेताओं का पतन हो गया तथा लोकतन्त्रीय सरकारों का गठन हुआ।

4.8 स्वः मूल्याकंन के लिए प्रश्न

1. प्रथम वि"व युद्ध के राजनीतिक परिणाम क्या थे?
2. प्रथम वि"व युद्ध के आर्थिक परिणाम क्या थे?
3. प्रथम वि"व युद्ध के सामाजि, सांस्कृतिक तथा धार्मिक परिणाम क्या थे?
4. प्रथम वि"व युद्ध के घटनाक्रम पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।
5. प्रथम वि"व युद्ध का मूल्यांकन आप किस प्रकार करोगे?
6. अमेरिका के प्रथम वि"व युद्ध में तटस्थता तथा प्रवे"ा पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।
7. क्या प्रथम वि"व युद्ध अपरिहार्य था?
8. इंग्लैण्ड किस हद तक प्रथम वि"व युद्ध के लिए उतरदायी था?

9. मित्र राष्ट्रों ने युद्ध विराम के लिए जर्मनी के सामने क्या शर्तें रखीं?

4.8 (A)

1. प्रथम महायुद्ध कब से कब तक चला?

उतर : 28 जुलाई, 1914 ई. से 1918 ई. तक।

2. प्रथम विश्व युद्ध का प्रमुख कारण क्या था?

उतर : उग्र राष्ट्रीयता की भावना।

3. प्रथम विश्व युद्ध का तात्कालिक कारण क्या था?

उतर : ऑस्ट्रिया के युवराज आर्क ड्यूक फर्डीनेंड की सेरोजोवा मे 28 जून 1914 ई. को हत्या।

4. प्रथम विश्व युद्ध में भाग वाले वाले दोनों गुटों में कौन–कौन से देश थे?

उतर : एक गुट में जर्मनी तथा ऑस्ट्रिया तथा दूसरे गुट में इंग्लैंड, फ्रांस एवं रूस आदि दे"ा थे।

5. त्रिराष्ट्रीय संधि का निर्माण कब व किन–किन के मध्य हुआ?

उतर : 1882 ई. में जर्मनी, ऑस्ट्रिया तथा इटली के मध्य।

6. इंग्लैंड ने अपनी शानदार अलगाव की नीति को कब छोड़ा?

उतर : 1902 ई. में जापान के साथ संधि करके।

7. उग्र राष्ट्रीयता के दो प्रमुख उदाहरण दीजिए।

उतर : 'पान जर्मन आंदोलन' तथा 'पान स्लाव आंदोलन'।

8. 'हम यह युद्ध लोकतंत्र की रक्षा के लिए लड़ रहे है' यह किसने कहा?

उतर : अमेरिका के राष्ट्रपति बुड्रों विल्सन ने।

9. प्रथम मोरक्को संकट कब उत्पन्न हुआ?

उतर : 1905 ई. में।

10. बोस्निया संकट कब उत्पन्न हुआ?

उतर : 1908 ई. में।

11. अगादीर संकट कब उत्पन्न हुआ?

उतर : 1906 ई. में।

12. प्रथम बल्कान युद्ध कब हुआ?

उतर : 1911 ई. में।

13. द्वितीय बल्कान युद्ध कब हुआ?

उतर : 1913 ई. में।

14. युवराज फर्डीनेंड व उसकी पत्नी की हत्या किसने की?

डतर : प्रिंसप ने।

15. युवराज फर्डीनेंड की पत्नी का क्या नाम था?

उतर : सोफी चोहेक।

16. किसके प्रयासों से मोरक्को संकट टल गया?

उतर : अमेरिका के राष्ट्रपति रूजवेल्ट के प्रयासों से।

17. बोस्निया संकट का क्या कारण था?

उतर : ऑस्ट्रिया द्वारा बोस्निया–हर्जेगोविना के प्रदे"ाों को अपने में मिलाने की घोषणा।

18. यंग तुर्को आंदोलन क्यों चला?

उतर : तुर्को द्वारा खोए हुए प्रदे"ाों को पुनः प्राप्त करने के लिए।

19. प्रथम विश्व समय जर्मनी का शासक कौन था?

उतर : विलियम द्वितीय या विलियम केसर।

20. 'ग्रेटर सर्बिया आंदोलन कब चला?

उतर : 20वीं सदी के आंरभ में।

21. ब्रिटेन, फ्रांस समझौता कब हुआ?

उतर : 1904 ई. में।

22. त्रिमैत्री संघ कब पूरा हुआ?

उतर : 1907 ई. में ब्रिटेन–रूस समझौते के साथ।

23. ब्रिटेन ने फ्रांस से 1916 ई. में कौन सा समझौता किया?

उतर : साइकस पिकोंट का गुप्त समझौता।

24. प्रथम विश्व युद्ध के समय इंग्लैंड का विदेश मंत्री कौन था?

उतर : एडवर्ड ग्रे।

25. प्रथम बल्कान युद्ध में किन देशों ने किसके विरूद्ध युद्ध किया?

उतर : सर्बिया मांटेनीगरो, बल्गारिया तथा युनान ने तुर्की के विरूद्ध।

26. प्रथम बल्कान युद्ध में किसकी पराजय हुई?

उतर : टर्की की।

27. द्वितीय बल्कान युद्ध किस–किस के मध्य हुआ? तथा इसमें किसकी पराजय हुई?

उतर : सर्बिया, युनान, रूमानिया, तर्की के दे"ाो तथा बल्गारिया के मध्य, इसमें बल्गारिया की पराजय हुई।

28. जर्मनी ने अमेरिका के किस जहाज को डुबो दिया?

उतर : लुसीतानिया।

29. लुसीतानिया जहाज में कुल कितने आदमी सवार थे? इसमें अमेरिका के कितने आदमी मारे गए?

उतर : इसमें 1198 व्यक्ति सवार थे जिसमें 128 व्यक्ति अमेरिका के थे मारे गए।

30. अमेरिका के युद्ध में शामिल होने का तात्कालिक कारण क्या था?

उतर : जर्मनी द्वारा डुबाए गए यात्री जहाज में अमेरिका के नागरिकों की मृत्यु।

31. द्वितीय बल्कान युद्ध किस संधि से समाप्त हुआ?

उतर : बुखारेस्ट की संधि से।

32. किस घटना से अगादीर संकट उत्पन्न हुआ?

उतर : जर्मनी द्वारा पेंथर जहाज भेजने पर।

33. बल्कान संघ के निर्माण में योगदान देने वाला प्रमुख व्यक्ति रूस का विदेशमंत्री कौन था?

उतर : इजवोल्स्की।

4.8 (B)

1. प्रथम विश्व–युद्ध कब भारू हुआ :

(क) 1913 ई. (ख) 1914 ई.

(ग) 1915 ई. (घ) 1916 ई.

उतर :1914 ई.।

2. निम्न में से कौन सा राष्ट्र त्रिपक्षिय समझौते में भाामिल नहीं था।

(क) जर्मनी (ख) इंग्लैंड.

(ग) रूस (घ) फ्रांस

उतर : जर्मनी।

3. गुप्त संधियो की शुरूआत किसन की?

(क) बिस्मार्क. (ख) विलियम प्रथम

(ग) आइजवोल्स्की (घ) ऑरलैंडो

उतर :बिस्मार्क।

4. प्रथम विश्व–युद्ध का प्रमुख कारण क्या था?

(क) समझौते

(ख) उग्र राष्ट्रीयता की भावना

(ग) कूटनीति

(घ) धोखाधड़ी।

उतर : उग्र राष्ट्रीयता की भावना

5. प्रथम विश्व–युद्ध का तात्कालिक कारण क्या था?

(क) राष्ट्रीयता की भावना (ख) उपनिवे"ा

(ग) कूटनीति (घ) सेरेजोवा हत्याकांड।

उतर : सेरेजोवा हत्याकांड। ।

6. युवराज आर्क ड्यूक फर्डिनेंड किस देश का निवासी था :

(क) इंग्लैंड (ख) ऑस्ट्रिया

(ग) जर्मनी. (घ) इटली

उतर : ऑस्ट्रिया ।

7. आर्क ड्यूक फर्डिनेंड के साथ किसकी हत्या हुई?

(क) उसकी माता की (ख) उसके पिता की

(ग) उसकी पत्नी की (घ) किसी की नहीं

उतर : उसकी पत्नी की ।

8. आर्क ड्यूक फर्डिनेंड की पत्नी का क्या नाम था?

(क) मोरिया थेरेसा (ख) मेरी एत्नोयनेत

(ग) एलिजाबेथ (घ) सोफी चोटेक

उतर : सोफी चोटेक ।

9. आर्क ड्यूक फर्डिनेंड तथा उसकी पत्नी की हत्या कब हुई?

(क) 18 फरवरी 1914 ई. (ख) 22 मार्च, 1914 ई.

(ग) 28 जून, 1914 ई. (घ) 28 जुलाई, 1914 ई.

उतर : 28 जून, 1914 ई ।

10. आर्क ड्यूक फर्डिनेंड की हत्या कहा हुई?

(क) जर्मनी की राजधानी बर्लिन में

(ख) बोस्निया की राजधानी साराजेवा में

(ग) इटली की राजधानी रोम में

(घ) इंग्लैंड की राजधानी लंदन में

उतर : बोस्निया की राजधानी साराजेवा में।

11. गुप्त समझौते किसकी उपज थे?

(क) आर्क ड्यूक फर्डिनेंड की (ख) आइजोवोल्सकी की

(ग) बिस्मार्क (घ) आरलैंडो की

उतर : बिस्मार्क।

12. बिस्मार्क मुख्यतः किसके अधीन जर्मनी का चांसलर रहा?

(क) विलियम प्रथम (ख) विलियम केसर

(ग) फर्डिनेंड ।　　　(घ) चार्ल्स पंचम

उतर : विलियम प्रथम ।

13. टेंजियर बंदरगाह किस घटना से जुडा हुआ है?

(क) क्रिमिया युद्ध　　　(ख) साराजेवो हत्याकांड

(ग) बोस्निया संकट　　　(घ) मोरक्को संकट

उतर : मोरक्को संकट।

14. बोस्निया संकट कब उत्पन्न हुआ?

(क) 1905 ई.　　　(ख) 1908 ई.

(ग) 1911 ई.　　　(घ) 1904 ई.

उतर :1908 ई.।

15. अगादीर संकट कब उत्पन्न हुआ?

(क) 1905 ई.　　　(ख) 1908 ई.

(ग) 1906 ई.　　　(घ) 1904 ई.

उतर :1906 ई.।

16. किसके प्रयासों से मोरक्को का संकट टल गया?

(क) बिस्मार्क　　　(ख) बुडो बिल्सन

(ग) विलियम केसर.　　　(घ) रूजवेल्ट

उतर : रूजवेल्ट।

17. ब्रेस्ट लिस्टोवस्क की संधि किसने किससे की?

(क) रूस ने जर्मनी से　　　(ख) रूस ने फ्रांस से

(ग) जर्मनी ने ऑस्ट्रिया से　　　(घ) जर्मनी ने इटली से

उतर : रूस ने जर्मनी से।

18. साइकस पिकोट (1916 ई.) नाम गुप्त समझौता किस–किस के बीच हुआ?

(क) ब्रिटेन तथा फ्रांस　　　(ख) फ्रांस तथा रूस

(ग) ब्रिटेन तथा रूस (घ) इनमें से कोई नहीं।

उतर : ब्रिटेन तथा रूस।

19. जर्मनी के पेंथर नामक जहाज किस बंदरगाह पर भेजा?

(क) टेन्जियर बंदरगाह (ख) अगादीर बंदरगाह

(ग) ट्रिपोली (घ) मेडागास्कर

उतर : अगादीर बंदरगाह।

20. द्वितीय बल्कान युद्ध कब हुआ?

(क) 1912 ई. (ख) 1913 ई.

(ग) 1914 ई. (घ) इनमें से कोई नहीं।

उतर :1913 ई.।

4.9 प्रगति समीक्षा के प्रश्नोतर

1. प्रथम वि"व युद्ध के कारणों का उल्लेख कीजिए।
2. प्रथम वि"व युद्ध के कारणो तथा घटनाओं का संक्षिप्त विवरण दीजिए।
3. 1915 ई. के मोरक्को संकट तथा 1908 ई. के बोस्निया संकट के बारे में आप क्या जानते है? इनका अन्तर्राष्ट्रीय महत्व क्या था?
4. 1904–14 ई. के दौरान अन्तर्राष्ट्रीय संकट किस प्रकार प्रथम वि"व–युद्ध का कारण बने?
5. 1912–13 ई. के दौरान हुए बाल्कान युद्धों ने किस प्रकार प्रथम वि"व–युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार की?
6. प्रथम वि"व–युद्ध के परिणामों का विवरण दीजिए।
7. प्रथम वि"व–युद्ध पर एक नोट लिखिए।

7.10 सन्दर्भ/सहायक अध्ययन सामग्री (Referenes/Suggested Study Materials)

21. आधुनिक वि"व का इतिहास– लाल बहादुर वर्मा
22. आधुनिक युरोप का इतिहास– विद्याधर महाजन
23. युरोप का आधुनिक इतिहास– (1789 से 1974)– सत्यकेतु विघालंकार
24. वि"व का इतिहास– नैयेनियल प्लेट, म्यूरियल जीन ड्रेमंड
25. आधुनिक वि"व का इतिहास– डा0 ए0 सी0 अरोड़ा

26. आधुनिक युरोप का इतिहास– (1453 से 1919) – डा0 के0 सी0 जैन
27. आधुनिक वि"व (1500–1950)– जैन ओर माथुर
28. The French Revolution- Thomas Carlyle
29. Modern Europe to 1870- C.J.H. Hayes/
30. आधुनिक वि"व– डा9 विपिन बिहारी सिन्हा

B.A HISTORY PART- III YEAR SEMESTER-VI	
COURSE CODE: 304 **LESSON NO. 05**	**AUTOR – MOHAN SINGH BALODA**
रूस की क्रांति (The Russian Revolution)	

अध्याय सरंचना (Lesson Structure)

5.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objective)

5.2 परिचय (Introduction)

5.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main body of Text)

5.3.1 रूस की क्रांति : पृष्ठभूमि (The Russian Revolution : Background)

5.3.2 रूस की क्रांति के कारण (Causes of Rusian Revolution)

5.3.3 बोल्शेविक क्रांति (Bolshavic Revolution)

5.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of Text)

5.4.1 रूस की क्रांति के प्रभाव/परिणाम (Effects/Consequences of Russian Revolution)

5.4.2 रूसी क्रांति का महत्त्व (Importance of Russian Revolution)

5.4.3 रूस का नवनिर्माण व ब्लादमीर लेनिन (New Construction of Russia and Vladimir Lenin)

5.5 प्रगति समीक्षा (Check Your Progress)

5.6 सारांश/संक्षिप्तिका (Summary)

5.7 संकेत–सूचक (Key-words)

5.8 स्व–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test SAT)

5.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your Progress)

5.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

5.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस पाठ के अध्ययन के बाद विद्यार्थी समर्थ होंगे –

- रूसी क्रांति की पृष्ठभूमि को समझ सकेंगे।
- 1917 की रूसी क्रांति के कारणों व प्रभावों का परीक्षण कर सकेंगे।
- रूसी क्रांति में लेनिन की भूमिका पर चर्चा कर सकेंगे।
- बोल्शेविक क्रांति की सफलता के कारणों व विश्व के इतिहास में इसके महत्त्व पर प्रकाश डाल सकेंगे।
- रूसी क्रांति के महत्त्व की आलोचनात्मक व्याख्या कर सकेंगे।

5.2 परिचय (Introduction) :-

बीसवीं शताब्दी में रूसी क्रांति एक ऐसी ऐतिहासिक घटना थी जिसने पूरे विश्व पर युगांतकारी प्रभाव डाला। यद्यपि इस क्रांति से पूर्व अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दियों में अमेरिका और फ्रांस में क्रान्तियाँ हुई थीं किंतु रूस की क्रांति का विश्व इतिहास में अपना अलग ही स्थान है। अमेरिका की क्रांति के माध्यम से उपनिवेशवाद को चुनौती दी गयी थी, जबकि फ्रांस की राज्य–क्रांति के कारण लोकतंत्र, राष्ट्रीयता व सामाजिक न्याय के सिद्धांतों की विजय हुई थी। इसी प्रकार 1917 ई. में रूस में जो क्रांति हुई उसमें मध्यवर्ग तथा बुद्धिजीवी लोग किसानों के साथ एकजुट होकर वहाँ के सम्राट के एकतंत्रीय स्वेच्छाचारी शासन का अन्त कर दिया। जिसके फलस्वरूप न केवल लोकतंत्र की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ बल्कि सामाजिक, आर्थिक और व्यावसायिक क्षेत्रों में भी कुलीनों, पूँजीपतियों व जमींदारों के प्रभुत्व की भी समाप्ति हुई। सत्ता में सर्वसाधारण मजदूर व किसान जनता की भागीदारी से संसार में पहली बार समाजवाद की विचारधारा को स्थापित किया गया।

क्रांति से पूर्व के रूस की बात करें तो वहाँ का समाज अनेक श्रेणियों में विभक्त थी – कुलीन वर्ग, मध्यम वर्ग व मजदूर किसान वर्ग। इसके आर्थिक और सामाजिक स्तर भिन्न–भिन्न थे। उस समय 18 करोड़ की आबादी वाला रूस भौगोलिक दृष्टि से संसार का सबसे बड़ा देश था। वहाँ का शासक जार निकोलस द्वितीय शक्तिशाली और निरकुंश शासक था। उसके अधीन साधारण जनता अशिक्षित और पिछड़ी हुई थी। चर्च लोगों पर अच्छा खासा प्रभाव रखता था। यद्यपि फ्रांसीसी क्रांति का रूस पर प्रभाव पड़ा था तथापि वहाँ के जनसामान्य की आर्थिक व सामाजिक स्थिति अभी भी अत्यंत दयनीय थी। वे एक तरफ स्वेच्छारी एकतंत्रीय शासक के शोषण का दंश झेल रहे थे तो दूसरी ओर उच्च वर्ग के घृणा–भाव का भी।

1861 ई. में कृषि दासता के उन्मूलन के बावजूद वहाँ के किसानों का जीवन दयनीय था। रूसी सामंत वर्ग तथा चर्च बड़ी–बड़ी जागीरों पर अपना अधिकार जमाये थे और दूसरी और मेहनत करने वाले करोड़ों किसान ऐसे थे जिनके पास अपनी कोई संपत्ति नहीं थी।

उद्योग–धंधों में कार्यरत श्रमिकों का नया वर्ग गरीबी और अभाव का जीवन व्यतीत कर रहा था। ऐसे में निरकुंश राज्य–व्यवस्था के खिलाफ क्रांति अवश्यम्भावी हो गई। इस परिस्थिति में 19 वीं सदी के अंतिम चरण से रूस में समाजवादी विचार फैलने लगे। 1898 ई. में विभिन्न समाजवादी गुटों ने मिलकर रूसी समाजवादी लोकतांत्रिक श्रमिक दल (सोशल डेमोक्रेटिक लेबर पार्टी) का गठन किया। ब्लादिमीर लेनिन इस दल के वामपक्ष नेता थे। इस दल में अल्पमत दल को मेनशेविक तथा बहुमत दल को बोल्शेविक नाम से जानते थे।

बोल्शेविक ने लेनिन के नेतृत्व में निरकुंश जारशाही के खिला क्रांति का अभियान छेड़ दिया और समाजवाद की स्थापना को अपना लक्ष्य बनाया था। लेनिन के नेतृत्व क्रांति सफल रही और रूस में बोल्शेविकों ने लेनिन के नेतृत्व में नई सरकार का गठन किया। इस प्रकार रूस की क्रांति– 1917 के फलस्वरूप विश्व के इतिहास में पहली बार एक वि"ााल देश का शासन–सूत्र मजदूरों के हाथ में आ गया। इस रूस की क्रांति के कई कारण थे तथा इसका व्यापक प्रभाव रूस के अतिरिक्त संपूर्ण विश्व पर पड़ा।

अतः तात्कालिक और परवर्ती परिणामों की दृष्टि से रूस की क्रांति विश्व के इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना है। फ्रांस की क्रांति मूल रूप से राजनीतिक क्रांति थी, जबकि रूस की क्रांति राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक तीनों क्षेत्रों की क्रांति थी। रूस की क्रांति ही पहली क्रांति थी जिसमें मजदूरों ने किसानों और सैनिकों के साथ मिलकर शासन के विरूद्ध विद्रोह किया और जिसमें सर्वहारा वर्ग सफल रहा।

5.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main body of Text)

5.3.1 रूस की क्रांति : पृष्ठभूमि (The Russian Revolution: Background)

एकतंत्रीय स्वेच्छाचारी जारशाही के कारण रूस में कानून और व्यवस्था की स्थिति अच्छी नहीं थी। जनता को किसी प्रकार का अधिकार प्राप्त नहीं था। अतः 20 वीं सदी के आरंभ में रूस में ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई थी कि क्रांति अव"यम्भावी हो गई। रूस के समाज में जन–सामान्य की स्थिति दयनीय होती जा रही थी। कुलीन वर्ग व सामंत वर्ग का सर्वत्र बोलबाला था। इन दोनों वर्गों ने अपना प्रभुत्व जमा रखा था। जहाँ कृषि दासता के कारण किसानों का अत्यधिक शोषण हो रहा था तो वहीं कम मजदूरी व खराब कार्यदशा के कारण मजदूर दुखी थे। बुर्जुआ वर्ग तमाम विशेषाधिकारों से वंचित थे। इस प्रकार किसान व मजदूर पूरी तरह से असंतुष्ट थे।

यद्यपि इस दौर में आर्थिक संसाधनों के मामले में रूस एक मजबूत देश था, फिर भी संसाधनों का उचित दोहन व वितरण नहीं होने के कारण रूस की आर्थिक व वित्तिय स्थिति खराब होती जा रही थी।

19 वीं सदी के अंत में रूस में जो भी औद्योगिक क्रांति के प्रयास किये गये, वह सब विदेशी सहयोग पर आधारित थी। पूँजी, तकनीक व विशेषज्ञ सब कुछ विदेशी सहयोग पर आधारित होने के कारण रूस विदे"ाी कर्ज से दब चुका था। समुचित प्रौद्योगिकी के अभाव में कृषि–व्यवस्था का भी उचित तरीके से विकास नहीं हो पाया था। इन सब कारणों से रूस कई प्रकार के संकटों में फंस गया था।

यूरोप में एक महत्त्वपूर्ण राष्ट्र के रूप में रूस हमेशा किसी–न–किसी युद्ध में शामिल होने के लिए बाध्य रहा था। उदाहरणार्थ– क्रिमिया युद्ध (1914–18) रहे। इसने रूस की वित्तीय स्थिति को कमजोर कर दिया। इन युद्धों के कारण बड़ी संख्या में रूसी सैनिक मारे जाते थे। रूसी सैनिकों की सुविधाओं में भी खूब कटौती की जाती थी। इन सब वजहों से वर्तमान व्यवस्था से रूसी सैनिक असंतुष्ट होते गए।

रूस में सुधार की प्रक्रिया प्रायः ठहर सी गयी थी। यद्यपि 1861 ई. में कृषि दासता का उन्मूलन किया जा चुका था फिर भी किसानों की समस्या कहीं से कम होते नजर नहीं आ रही थी। मजदूर बदहाल जिंदगी जीने को मजबूर थे। संसद जैसी किसी संस्था के अभाव में राज्य का आम जनता से संपर्क टूट चुका था। दूसरी ओर निहिलिज्म विचारधारा के प्रवर्तक ईवान तुर्गनेव व इसके समर्थक रूसी व्यवस्था का विध्वंस करने की ओर अग्रसर हो रहे थे। इनके पास कोई वैकल्पिक व्यवस्था नहीं थी। इस स्थिति ने रूस में क वैचारिक शून्यता की स्थिति उत्पन्न कर दी। क्रांतिकारियों ने रूसी सम्राट् अलेक्जेंडर–II की हत्या कर दी थी। अब क्रांति का अभियान छिड़ने से रूस में धीरे–धीरे समाजवादी विचारधारा की ओर अग्रसर होने लगा।

ऐसी स्थिति में क्रांतिकारी लेनिन के नेतृत्व में रूस में RSDP अर्थात् (Russian Social Democratic Labour Party) की स्थापना हुई। लेनिन ने अपने विचारों के प्रचार–प्रसार के लिए इस्क्रा (Iskra) नाम से समाचार–पत्र भी प्रकाशित किया था। आगे चलकर विचारधारा के अंतर के कारण RSDP का दो भागों – बोल्शेविक (Bolshevik) व मेनशेविक (Mensavik) में विभाजन हो गया। इनमें से बोल्शेविकों के नेतृत्व में रूस में 1917 में क्रांति हुई थी। जिसे रूसी क्रांति अथवा बोल्शेविक क्रांति के नाम से जाना जाता है।

5.3.2 रूस की क्रांति के कारण (Causes of Russian Revolution)

क्रांति स्थिति में बहुत बड़ा महान परिवर्तन का सूचक होता है। इस अर्थ में रूसी क्रांति ऐसे परिवर्तन की ओर संकेत करना है। इस क्रांति ने न केवल विशाल देश रूस की शासन–पद्धति को बदला बल्कि इसने एक न सामाजिक ढाँचे तथा जीवन के नए दृष्टिकोण को भी जन्म दिया। इस क्रांति से प्रारंभ से चली आ रही पूँजीवादी व्यवस्था को करारा झटका लगा। इस क्रांति ने एक नवीन विचारधारा साम्यवाद को जन्म दिया। इसने पुरातन सामंतवादी ढाँचे के खिलाफ प्रबल अभियान छेड़ दिया। जिसके फलस्वरूप रूस में धीरे–धीरे समाजवादी विचारधारा लोकप्रिय होने लगा।

यद्यपि रूसी क्रांति का तात्कालिक कारण इसका प्रथम विश्व युद्ध (1914–18) में भाग लेना व इसके पराजित होना तथा उस समय उत्पन्न आर्थिक संकट को माना जाता है परन्तु इसके वास्तविक कारण पीछे लंबे समय से चले आ रहे प्राचीन सामाजिक एवं आर्थिक ढाँचे में देखे जा सकते हैं। रूस के इतिहास में 1861 ई. से 1917 ई. तक का समय अपना विशेष महत्त्व रखता है। इस दौरान नवीन विचारधारा व पुरातन सामंतवादी शोषणकारी सामाजिक ढांचे के बीच प्रबल संपर्क चला। रूस के शासकों की जनता के प्रति उदासीनता ने उन्हें क्रांति के लिए मजबूर कर दिया। इसके फलस्वरूप 1917 ई. में रूस में जो क्रांति हुई थी उसके कारणों का विवरण निम्न प्रकार है –

1. निरकुंश व अयोग्य शासन–व्यवस्था – क्रांति से पहले रूस में रोमनोव–राजवंश सत्ता पर राज कर रहा था। इस समय रूस में सम्राट को जार कहा जाता था। इस दौरान सर्वत्र निरकुंश राजतंत्र का बोलबाला हो रहा था। निरकुंश स्वेच्छाचारी जार शासक प्रजा के सुख–दुःख व उनकी भावनाओं के प्रति बिल्कुल उदासीन थे। राज्य की समस्त शक्तियाँ जार के हाथों में केंद्रित थीं। वह राज्य और चर्च दोनों का प्रधान था। लोग उससे भयभीत रहते थे। गलत सलाहकारों के कारण जार की स्वेच्छाचारिता लगातार बढ़ती गई और जनता की स्थिति खराब होती गई। अतः निरकुंश व अयोग्य शासन के विरूद्ध जनता का विद्रोह स्वाभाविक था।

2. रूस की राजनीतिक साख को खतरा – 19 वीं शताब्दी में रूस के बाल्कन प्रायद्वीप तथा कुछ अन्य क्षेत्रों पर अधिकार के प्रयास को इंग्लैंड, फ्रांस, जापान आदि देशों ने विफल कर दिया था। 1854–56 के क्रीमिया युद्ध में भी रूस को पराजय का सामना करना पड़ा। विशाल रूसी साम्राज्य की सामरिक शक्ति घट रही थी। 1904–05 के रूस–जापान युद्ध में भी रूस को हार का सामना करना पड़ा। इससे रूस की राजनीतिक साख गिरती गयी और वहाँ की जनता को भारी क्षोभ हुआ। जार के प्रति जनता के मन में पूर्व असंतोष को इस हार ने और बढ़ा दिया। राष्ट्रीय सम्मान के आघात ने जनता को क्रांति के लिए विवश कर दिया।

3. किसानों की सोचनीय स्थिति – 1861 ई. के कृषि दासता उन्मूलन के बावजूद किसानों की स्थिति में कोई सुधार नहीं हो रहा था। नवीन प्रौद्योगिकी व पूँजी का अभाव था। करों के भारी बोझ से वे दब रहे थे। उन पर ऋृण बढ़ता जा रहा था। इन विपरीत परिस्थितियों में पश्चिम यूरोप में हो रहे परिवर्तनों ने किसानों को वैचारिक आंदोलन के लिए प्रेरित किया। बुद्धिजीवी वर्गों के किसानों के बीच जाकर निरकुंश शासन के विरूद्ध क्रांति के लिए प्रेरणा ने इसके लिए उन्हें साहस प्रदान किया।

4. कारखानों के मजदूरों की दयनीय स्थिति – कारखानों के मजदूरों से काम तो अधिक लिए जाते थे, किन्तु मजदूरी कम मिलती थी। उनके साथ बुरा व्यवहार किया जाता था। वे अपनी स्थिति से पूरी तरह असंतुष्ट थे। जब

उनके बीच रूसी लेखकों एवं वक्ताओं ने मार्क्स के क्रांतिकारी विचारों का प्रचार किया तब वे जार के विरूद्ध सशस्त्र क्रांति के लिए तैयार हो गए।

5. औद्योगिक क्रांति – 19वीं शताब्दी के मध्य से ही रूस औद्योगिक क्रांति की ओर अग्रसर हो रहा था। यातायात के साधनों का विकास हो गया था तथा रेल की लाइनों का निर्माण भी हो चुका था। आधारभूत उद्योगों – लोहा, कोयला, इस्पात का विकास भी हो चुका था। इतना सबके बावजूद भी राष्ट्रीय पूँजी के अभाव तथा विदेशी पूँजी पर निर्भरता के कारण रूस इंग्लैंड, फ्रांस व अन्य देशों की अपेक्षा पिछड़ा हुआ था। लगभग 60% विदेशी पूँजी रूस में लगी हुई थी। विदेशी पूँजीपति देश के लोगों का बुरी तरह से शोषण कर रहे थे। इस स्थिति में लोगों में असंतोष की भावना का जन्म होना स्वाभाविक था। अतः औद्योगिक क्रांति के बावजूद औद्योगिक पिछड़ापन ने लोगों को क्रांति के लिए प्रेरित किया।

6. जार की एक रूस की नीति – स्लाव जाति की बहुलता वाले रूस में फिन, पोल, जर्मन, यहूदी जैसे अल्पसंख्यक जातियों के लोग भी थे। भिन्न–भिन्न भाषा, रस्म–रिवाज वाले इन अल्पसंख्यकों पर रूसी एकता के नाम पर जार ने एक जार, एक चर्च और एक रूस की नीति को थोपने का प्रयास किया। इससे अल्पसंख्यकों की खलबल मच गई। इस नीति के विरूद्ध पोलों के विद्रोह को जार ने निर्दयतापूर्वक दबा दिया। इससे अल्पसंख्यकों में घोर असंतोष था। इस कारण ने जारषाही के प्रबल विरोधी हो गए।

7. आर्थिक एवं सामाजिक विषमता – इस दौर में समस्त रूसी समाज दो वर्गों – अधिकार युक्त वर्ग तथा अधिकार विहीन वर्ग में बँटा था। सम्राट के नजदीकी कृपापात्र सभी कुलीन वर्ग के लोग अधिकार युक्त वर्ग के अंतर्गत आते थे। वे जार की निरकुंशता एवं स्वेच्छाचारिता को आवश्यक समझते थे। यह वर्ग बहुत संपन्न था। राज्य के अधिकांश महत्त्वपूर्ण पदों पर तथा भूमि पर इन्होंने अधिकार कर रखा था। दूसरा वर्ग अधिकार विहीन वर्ग था। जिसमें किसान तथा मजदूर थे। इनकी आर्थिक स्थिति खराब थी। इन्हें शासक तथा कुलीन वर्ग दोनों के अत्याचारों व शोषण का सामना करना पड़ता था। दास प्रथा के उन्मूलन के बावजूद इनकी स्थिति में कोई सुधार नहीं हो रहा था। विषमता की इन परिस्थितियों में वर्ग–संघर्ष रूसी क्रांति का एक महत्त्वपूर्ण कारण बना।

8. जार निकोलस द्वितीय का कमजोर व्यक्तित्व – जार निकोलस द्वितीय जिसके काल में क्रांति हुई थी, वह दुर्बल, हठी, अंधविश्वासी व मन्दबुद्धि वाला था। उसमें घटनाओं व परिस्थितियों तथा व्यक्तियों के चरित्र की पहचान शक्ति नहीं थी। वह अपनी पत्नी जरीना के हाथ की कठपुतली मात्र था। राजमहल में रासपुटिन नामक एक पथभ्रष्ट और बुद्धिमान पादरी रहता था। उसने जरीना पर अपना जबरदस्त प्रभाव जमा लिया था। वह जो चाहता, जरीना के माध्यम से सम्राट् से पूरा करवा लेता था। अतः जार निकोलस द्वितीय के व्यक्तित्व का यह दुर्बल पक्ष भी क्रांति का एक कारण बना।

9. मार्क्स के समाजवादी विचारधारा का प्रभाव – कार्ल मार्क्स ने आधुनिक वैज्ञानिक समाजवाद के सिद्धांत का प्रतिपादन किया। उसने वर्ग–संघर्ष व 'दुनिया के मजदूरों एक हो' की क्रांति का नारा दिया। मार्क्स के प्रचार–प्रसार के फलस्वरूप रूस के बुद्धिजीवी वर्ग साहस के साथ समाजवाद की विचारधारा को लेकर किसान, मजदूर व जन–समान्य के बीच जाने लगे। इसी विचारधारा ने बोल्शेविक दल को जन्म दिया जिसके नेतृत्व में 1917 ई. में रूसी क्रांति हुई। इसी कारण रूसी क्रांति को बोल्शेविक क्रांति कहा जाता है।

10. 1905 ई. की क्रांति – 9 जनवरी, 1905 को रविवार के दिन मजदूरों ने अपने परिवार के सदस्यों के साथ एक विशाल जुलूस लेकर जार के सेंट पीट्सवर्ग स्थित महल की ओर छोटे भगवान 'हमें रोटी दो' का नारा लगाते हुए चल पड़े। जार ने जनता की भावना को कुछ भी नहीं समझा और निहत्थे लोगों पर गोलियाँ बरसाई। इससे एक हजार से अधिक मजदूर मारे गए और हजारों घायल हुए। इसलिए 9 जनवरी, 1905 के दिन को खूनी रविवार (लाल रविवार) के नाम से जाना जाता है। इस नरसंहार की घटना ने पूरे रूस को झकझोर कर रख दिया। सेना और नौ सेना के कुछ भागों में भी विद्रोह हो गया। उस समय इस क्रांति को जैसे–तैसे करके दबा दिया गया पर भीतर ही भीतर यह आग सुलगती रही, जो 1917 ई. में एक महान क्रांति के रूप में प्रकट हुई।

11. निहिल्जिम (सुधार आंदोलन) – रूस में कुछ लोग जिनकी संख्या कम थी का मानना था कि जार ही देश में सुधार कार्यक्रमों को लागू करें। बाध्य होकर उसने कुछ सुधार भी किए। पर सुधारवादी इससे संतुष्ट नहीं हुए। उनमें से कुछ ने निहिल्जिम नामक आंतकवादी आंदोलन चलाया। इन आंदोलनकारियों को निहिलिस्ट कहा जाता था। निहिल्जिम किसी भी स्थापित सत्ता में विश्वास नहीं रखता था। उसका उद्देश्य सभी संस्थाओं को जड़–मूल से उखाड़ फेंकना था। निहिलिस्टों ने सुधार के लिए आंतकवाद का सहारा लिया। मार्च, 1981 में उन्होंने जार की हत्या कर दी थी। यद्यपि सरकार ने कठोरतापूर्वक इस आंदोलन को दबा दिया, फिर भी इसके द्वारा लोगों में उत्पन्न हुई क्रांतिकारी भावनाओं का अंत करने में वे सफल नहीं हो सके। यही भावना 1917 ई. की क्रांति के रूप में प्रकट हुई।

12. हड़तालों एवं प्रदर्शनों का दौर – समस्त रूस में जार की प्रतिक्रियावादी एवं दमनकारी नीति के कारण उदारवादियों, क्रान्तिकारियों और मजदूरों की ओर से 1906 ई. से लेकर 1914 ई. तक हड़तालों एवं प्रदर्शनों का एक लंबा दौर चलता रहा। 1910 ई. तक हड़ताल व प्रदर्शन चरम पर पहुँच गया। जिसके फलस्वरूप एक बार फिर राजनैतिक कत्ल होने लगे। 1914 ई. तक आते–आते औद्योगिक हड़तालों ने पूर्ण रूप से राजनीतिक स्वरूप धारण कर लिया और समस्त देश में अराजकता का बोलबाला हो गया। इस स्थिति का वर्णन करते हुए केरेंस्की कहता है कि "यदि प्रथम विश्वयुद्ध आरंभ न होता तो रूस में क्रांति 1915 ई. की बसंत ऋतु से पूर्व, संभवतः 1914 ई. के अन्त तक ही आ जाती।"

इस प्रकार उपयुक्त कारणों के वजह से अंततः 7 मार्च, 1917 को रूस में क्रांति का प्रथम विस्फोट हुआ। उस दिन पेट्रोगाद (वर्तमान नाम लेनिनग्राद) में विद्रोहियों ने एकजुट होकर 'युद्ध बंद करो', 'निरकुंश शासन का नाश हो', 'रोटी दो' जैसे नारों के साथ सड़कों पर प्रदर्षन करने शुरू कर दिये। स्थिति ऐसी बनी कि जार की सेना ने भी विद्रोहियों की भीड़ पर गोली चलाने से इन्कार कर दिया। विवश होकर जार ने 15 मार्च, 1917 को गद्दी त्याग दी। जार और उसके परिवार को कैद कर लिया गया। इस प्रकार रूस पर से रोमोनोव–वं"ा की निरकुं"ा जार"ाही का अंत हो गया। इस युगांतकारी 15 मार्च, 1917 की घटना को फरवरी की क्रांति के नाम से जानते हैं, क्योंकि पुराने रूसी कैलेंडर के अनुसार 27 फरवरी, 1917 को यह घटना घटी थी।

5.3.3 बोल्शेविक क्रांति (Bolshevic Revolution)

अक्टूबर, 1917 की रूसी क्रांति के फलस्वरूप विव"ा होकर जार निकोलस को गद्दी त्यागना पड़ा। उसके सत्ता से हटने के बाद रूस में जनतंत्र की स्थापना हुई। सत्ता मेनशेविकों को हाथों में आ गई। इस मेन"ाविक सरकार का प्रधानमंत्री केरेन्सकी को बनाया गया। इस प्रकार केरेन्सकी के नेतृत्व में रूस में एक अस्थायी सरकार का गठन हो गया। पर वि"ााल दे"ा रूस के समक्ष जो समस्याएँ थीं, उनके समाधान में यह सरकार पूरी तरह से असफल रही। ऐसे ही समय में रूस के राजनीतिक मंच पर एक महान व्यक्ति का प्रादुर्भाव हुआ जो फौलादी तत्वों से बना ब्लादिमीर लेनिन था। उसके इरादे पूरी तरह से स्पष्ट थे। तात्कालिक परिस्थितियों में वह रूस के लिए एक युगपुरूष के रूप में था। निरकुं"ा जार"ाही के काल में वह स्विट्जरलैंड में निर्वासित जीवन जी रहा था। जब मार्च की क्रांति हुई तो वह जर्मनी की सहायता से एक बंद गाड़ी में रूस पहुँच गया और उसने बोल्शेविकों का नेतृत्व ग्रहण किया। नेतृत्व ग्रहण करते ही उसने रूस की वर्तमान परिस्थितियों पर विचार करते हुए बोल"ाविक दल का कार्यक्रम स्पष्ट किया। उसने वर्तमान रूस की समस्याओं के समाधान के लिए स्पष्ट योजनाओं पर आधारित एक रोडमेप तैयार किया, जो इतिहास में 'अप्रैल थीसिस' के नाम से प्रसिद्ध है।

लेनिन ने तीन नारे दिए – भूमि, शांति और रोटी। भूमि किसानों को, शांति सेना को और रोटी मजदूरों को। लेनिन के इस कार्य में उसका अनन्य सहयोगी ट्राटस्की था। एक योजना के तहत बोल"ाविकों ने बलप्रयोग द्वारा केरेन्सकी को सत्ता से हटाने का निश्चिय किया। उन्होंने इसके लिए विशेष योजना बनायी। बड़े ही गुप्त तरीके से इसके लिए दिन निश्चित किये गये। इस कार्य–योजना में सेना और जनता दोनों का लेनिन को अच्छा साथ मिला। 7 नवंबर के दिन को क्रांति का दिन निश्चित किया गया। इसका कार्यक्रम पूर्णरूप से तैयार कर लिया गया तथा इसे गुप्त रखा गया।

7 नवंबर, 1917 की रात दो बजे बोल्शेविकों ने पेट्रोग्राद (वर्तमान लेनिनग्राद) के रेलवे स्टेशन, बैंक, डाकघर, टेलीफोन–केंद्र, कचहरी तथा अन्य सरकारी भवनों पर अधिकार कर लिया। योजना को इतनी स्पष्टता व

मजबूती के साथ व्यवस्थित किया गया कि अस्थायी सरकार इसमें किसी भी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं कर सकी। केरेन्सकी लेनिन के मजबूत इरादों के सामने नहीं टिक सका। वह रूस छोड़कर भाग गया। इस प्रकार बिना किसी खून–खराबे के बोल्शेविकों ने देश की राजधानी पर अपना अधिकार कायम कर लिया। यह रूस की महान अक्टूबर–क्रांति थी। 7 नवंबर को होने वाली घटना को अक्टूबर की क्रांति कहा जाता है क्योंकि उस दिन पुराने रूसी कैलेंडर के अनुसार 25 अक्टूबर की तारीख थी। इस प्रकार अब सत्ता बोल"ोविकों के हाथ में आ गई। बोल्शेविकों ने लेनिन की अध्यक्षता में नई सरकार का गठन किया। इस सरकार ने ट्राटस्की को विदेशमंत्री बनाया गया। यह सारा कार्य इतने आकस्मिक ढंग तथा द्रुत गति से हुआ कि सारा संसार चकित रह गया। अंततः रूस में लेनिन के नेतृत्व में विश्व–इतिहास पटल पर पहली बार एक वि"ााल देश का शासन–सूत्र मजदूरों के हाथों में आ गया। यह समस्त युगांतकारी परिवर्तन लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविक दल द्वारा हुआ। अतः बोल्शेविकों के नेतृत्व में होने के कारण इसे बोल"ोविक क्रांति भी कहा जाता है।

बोल्शेविक दल वाले कम्युनिस्ट विचारधारा के थे। इस प्रकार, सत्ता पहली बार किसी कम्युनिस्ट विचारधारा वालों के हाथ में आई। इसलिए इसे साम्यवादी क्रांति भी कहा गया।

5.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of the Text)

5.4.1 रूस की क्रांति के प्रभाव/परिणाम (Effects/Consequences of Russian Revolution)

1917 ई. की रूसी क्रांति रूस और यूरोप के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। विशाल देश रूस पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ा। इस क्रांति ने रूस में राजनैतिक, सामाजिक व आर्थिक क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन को जन्म दिया। संसार के अनेक देशों पर भी इस क्रांति के प्रभाव देखे गये।

अतः इस महान रूस की क्रांति के प्रमुख प्रभाव/परिणाम निम्नलिखित थे :–

1. स्वेच्छाचारी निरकुंश शासन व अंत का लोकतंत्र की स्थापना – क्रांति से पूर्व रूस निरकुंश राजतंत्र का गढ़ था। जन–सामान्य समस्त अधिकारों से वंचित थे। समाज में विषमता चरम पर था। किसान व मजदूर वर्ग त्रस्त थे। कोई सुनवाई नहीं थी। रूस में शासन नाम का कोई चीज नहीं था। क्रांति के बाद स्वेच्छारी एकतंत्रीय जारशाही का अंत हो गया। रूस समाजवादी सोवियत गणराज्यों के देश के रूप में परिवर्तित हो गया। जार के कृपा–पात्र संबंधी व कुलीन सारे अधिकारों से वंचित कर दिए गए। इस क्रांति ने रूस को अपना एक संविधान दिया। इसके फलस्वरूप यहाँ जनता के शासन की स्थापना हुई। विश्व–इतिहास में रूस पहला देश बना जहाँ साम्यवादी समाज का निर्माण हुआ। रूस में लगभग 300 वर्षों से चले आ रहे रोमनाव (Romnov) राजवं"ा की समाप्ति हो गई। इस प्रकार जार के साम्राज्य को एक नए राज्य सोवियत समाजवादी गणराज्यों का समूह (Union of Soviet Socialist Republics) में बदल दिया गया।

2. सदियों से शोषित सर्वहारा वर्ग को अधिकार व सत्ता – 1917 ई. की रूस की क्रांति से जिसे बोल"ोविक क्रांति के नाम से जानते हैं ने सदियों से शोषित सर्वहारा वर्ग को अधिकार और सत्ता दी। इसके द्वारा सत्ता में जन–सामान्य की भागीदारी सुनिश्चित हुई। रूस में नवनिर्मित संविधान में मेहनतक"ा मजदूरों को वोट देने का अधिकार प्रदान किया। नवीन शासन–व्यवस्था के अंतर्गत देश की सारी संपदा को राष्ट्रीय संपत्ति घोषित की गई। उत्पादन के साध्यानों पर निजी प्रभुत्व व निजी लाभ की भावना व विचार को समाप्त कर दिया गया। उद्योगों पर मजदूरों के नियंत्रण को स्थापित किया गया।

3. नवीन शासन–व्यवस्था का अस्तित्व में आना – रूस की क्रांति ने वि"व–इतिहास में सर्वप्रथम साम्यवादी विचारधारा को जन्म दिया। लेनिन के नेतृत्व में स्थापित सरकार ने साम्यवादी सिद्धांतों को दृढ़ता के साथ कार्यान्वित किया। दे"ा के समस्त साधनों को सरकारी अधिकार के अंतर्गत लाया गया। बैंकों, खानों, कारखानों, रेल व टेलीफोन सेवाओं इत्यादि को सरकारी संपत्ति मान लिया गया। चर्च की भूमि को भी नहीं छोड़ा गया। इसका भी राष्ट्रीयकरण किया गया। साम्यवाद के आधार पर नवीन सामाजिक ढाँचा अस्तित्व में आया। इसके अंतर्गत सभी नागरिकों को समानता और सभी के लिए योग्यता के अनुसार काम एवं वेतन की व्यवस्था की गई। अतः इस क्रांति द्वारा साम्यवादी विचारधारा का प्रचार बड़ी तेजी से होने लगा। यूरोप और एशिया के कई देशों में साम्यवादी सरकार की स्थापना हो गई।

4. नवीन सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था का विकास – रूसी क्रांति ने शोषण पर आधारित पूँजीवाद पर करारा प्रहार किया। इसके स्थान पर नवीन सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था का रूस में विकास हुआ। इसने सामाजिक विषमता को समाप्त करके एक नवीन सामाजिक ढाँचा खड़ा किया। रूस में पूँजीपति व जमींदार के अस्तित्व को समाप्त करके वर्गविहीन समाज की स्थापना की गयी। अब रूस के समाज में एक ही वर्ग रहा और वह था – साम्यवादी नागरिक। काम के अधिकार को एक संवैधानिक अधिकार का रूप दिया गया। प्रत्येक व्यक्ति को रोजगार उपलब्ध कराना समाज व राज्य का कर्त्तव्य समझा गया। आर्थिक समानता के लिए अर्थव्यवस्था के सभी साधन जुटाए गए।

5. गैररूसी राष्ट्रों का विलयन – जिन गैररूसी राष्ट्रों पर जार"ाही ने सत्ता स्थापित की थी वे सभी क्रांति के बाद गणराज्यों के रूप में सोवियत संघ के अंग बन गए। इससे रूस एक शक्ति"ाली देश के रूप में बदल गया। आज सोवियत संघ के विभाजन के बावजूद बहुत से दे"ा इसकी शक्ति का लोहा मानते हैं।

6. सभी जातियों को समानता का अधिकार – रूस की जनता में यहूदी, पोल, फिन, उजबेग, तातार, कजाक, आर्मीनियन जैसे अल्पसंख्यक वर्ग भी रूसी जनता के साथ समाहित थी। जार"ाही के अंतर्गत रूसीकरण की नीति अपनाई गई और "एक जार, एक धर्म" का नारा अपनाया गया। अल्पसंख्यकों को अधिकारों से वंचित किया गया।

क्रांति के बाद सोवियत संघ में सम्मिलित सभी जातियों की समानता को रूसी संविधान में कानूनी रूप दिया। उनको संरक्षण प्रदान करते हुए उनकी भाषा तथा संस्कृति का विकास किया गया।

7. पंचवर्षीय योजनाओं का आरम्भ – 1917 ई. की रूसी क्रांति के फलस्वरूप रूस में आर्थिक विकास के लिए पंचवर्षीय योजना की नीति को लाया गया। इसके आधार पर ही लेनिन ने 1921 ई. में रूस में नवीन आर्थिक नीति की घोषणा की थी। उसकी यह नीति समाजवादी एवं पूँजीवादी विचारों का मिलाजुला रूप था। आगे चलकर लेनिन का उत्तराधिकारी स्टालिन ने पंचवर्षीय योजनाओं का क्रम आरम्भ किया और आर्थिक क्षेत्र में रूप को आत्मनिर्भर बनाया। इसके फलस्वरूप कुछ ही वर्षों में यह संसार का उन्नति"ील दे"ा बन गया। भारत ने भी स्वतंत्रता के बाद अपने यहाँ आर्थिक विकास का पंचवर्षीय मॉडल अपनाकर अपने आर्थिक विकास को आगे बढ़ाया था।

10. विश्व का गुटों में विभाजन – रूसी क्रांति का विश्व–इतिहास पर व्यापक प्रभाव पड़ा। इस क्रांति के बाद दुनिया दो गुटों में बँट गयी। एक रूस और उसके समर्थकों का साम्यवादी गुट और दूसरा इंग्लैंड, अमेरिका और उनके समर्थकों का पूँजीवादी गुट। संसार के बहुत से दे"ा इनमें से किसी–न–किसी गुट से संबंधित हो गये। आगे चलकर इन दो गुटों की परस्पर प्रतिद्वन्द्विता के फलस्वरूप भारत तथा कई अन्य देशों का एक तीसरा निष्पक्ष गुट भी अस्तित्व में आया।

उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि रूसी क्रांति का न केवल रूसी समाज बल्कि वि"व–समाज पर भी व्यापक प्रभाव पड़ा। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था वाले देशों में भी यह चिंतन शुरू हो गया कि जनतंत्र को वास्तविक बनने के लिए सामाजिक व आर्थिक समानता आधारित राजनीति प्रणाली विकसित करने होंगे। राज्य द्वारा आर्थिक नियोजन लोगों की स्थिति सुधारने के लिए आव"यक है। रूस में किसानों तथा मजदूरों की सरकार स्थापित होने से वि"व के सभी दे"ाों में किसानों और मजदूरों के सम्मान में वृद्धि हुई। रूसी क्रांति के फलस्वरूप वि"वभर में उत्पन्न पूँजीपतियों तथा मजदूरों के बीच संघर्ष को देखते हुए अन्य देशों की सरकारें भी अपने लोगों को मूलभूत सुविधाएँ – रोटी, कपड़ा व मकान पूरा करना मुख्य कर्त्तव्य समझने लगीं।

रूस की देखादेखी वि"व के अन्य देशों जैसे – चीन, वियतनाम आदि में भी साम्यवादी सरकारें बनी। रूसी क्रांति के फलस्वरूप समाजवादी विचारों के प्रसार से अंतरराष्ट्रवाद को प्रोत्साहन मिला।

रूस की क्रांति से साम्राज्यवाद के विनाश की प्रक्रिया भी तेज हो गई। सारे वि"व में समाजवादियों ने साम्राज्यवाद के विनाष के लिए अभियान चलाना तेज कर दिया।

5.4.2 रूसी क्रांति का महत्त्व (Importance of Russian Revolution)

यद्यपि रूसी क्रांति के परिणामों को लेकर अत्यधिक मतभेद है, क्योंकि एक वर्ग जहाँ इसे मानव–प्रगति में मील का पत्थर मानते हैं तो दूसरा वर्ग इसे महाविना"ा तथापि निःसंदेह 20 वीं सदी के घटनाक्रम पर इस क्रांति का बहुत व्यापक और निर्णायक प्रभाव पड़ा। हम देखते हैं कि वि"व–इतिहास में जहाँ फ्रांस की राज्य क्रांति (1789) मूल रूप से एक राजनीतिक क्रांति थी, वहीं रूस की क्रांति राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक तीनों पक्षों की क्रांति थी। रूसी क्रांति के नेताओं ने एक असाधारण राजनीतिक व्यवस्था को जन्म दिया। रूस की क्रांति ही पहली क्रांति थी जिसमें मजदूरों ने किसानों और सैनिकों के साथ मिलकर शासक के विरूद्ध विद्रोह किया और जिसमें सर्वहारा वर्ग सफल रहा। इस क्रांति ने दलितों को आवाज दी और मजदूरों को अपनी शक्ति का अहसास कराया।

रूसी क्रांति के फलस्वरूप समाजवादियों ने मार्क्सवाद को श्रमिकों को आर्थिक शोषण तथा राजनीतिक उत्पीड़न से मुक्ति दिलाने वाली ताकत के रूप में देखा। विदेशी प्रभुत्व की उत्पीड़नकारी व्यवस्था को उखाड़ फेंकने के लिए एि"ाया और अफ्रीका में राष्ट्रीय नेताओं को रूस की क्रांति ने प्रोत्साहित किया। आर्थिक क्षेत्र में सोवियत प्रणालियों और उपलब्धियों ने दुनिया के सभी दे"ाों को योजना बनाकर आर्थिक तरक्की करने की सर्वथा नवीन प्रणाली दी। इस अर्थ में रूसी क्रांति ने समस्त देशों को योजनाकार बना दिया। निि"चत लक्ष्यों सहित राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं की आयोजना और केन्द्रीय मार्गद"ान का विचार सोवियत संघ से ही उत्पन्न हुआ।

इससे स्पष्ट है कि रूसी क्रांति का वि"व–इतिहास में अपना एक अलग महत्त्व है।

यह भी स्पष्ट है कि मार्क्सवादी घोषणा–पत्र का रूस के साम्यवादी दल के द्वारा एक तरफ जहाँ उपयोग किया गया वहीं दूसरी ओर इसका दुरूपयोग भी किया गया। लेनिन और स्टालिन के अंतर्गत साम्यवादी सरकार ने हत्या का अप्रिय और घृणित मार्ग अपनाया जिससे प्रगति का मार्ग अवरूद्ध होने लगा इसने दुनिया को इसके प्रति सचेत भी किया।

अंततः यह निष्कर्ष निकलता है कि तात्कालिक और परवर्ती परिणामों की दृष्टि से रूस की क्रांति वि"व के इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना है।

5.4.3 रूस का नवनिर्माण व ब्लादिमीर लेनिन (New Construction of Russia and Vladimir Lenin)

मार्क्स के सिद्धांतों का कट्टर समर्थक ब्लादिमीर ईवानोविच लेनिन का जन्म 1870 ई. में रूस के एक शिक्षित परिवार में हुआ था। वह बोल्"ोविक क्रांति का सबसे बड़ा नेता था। उसने मार्क्स की रचनाओं का गहरा अध्ययन किया था। 1905 ई. की क्रांति की असफलता के कारण उसे रूस से भागना पड़ा और 1917 ई. तक उसने रूस के बाहर ही अपना समय बिताया। 1917 ई. की क्रांति के समय वह जर्मनी की सहायता से रूस पहुँचा और बोल्"ोविक दल का नेतृत्व किया उसने अपने नेतृत्व में बोल्"ोविक दल का नेतृत्व किया उसने अपने नेतृत्व में बोल्"ोविक दल का कार्यक्रम स्पष्ट किया जो 'अप्रैल थिसिस' के नाम से स्पष्ट है। लेनिन ने तीन नारे दिए – भूमि,

शांति और रोटी। अद्भुत वक्ता तथा संगठनकर्त्ता लेनिन का अन्यतम सहयोग ट्राटस्की था। उसी के नेतृत्व में नवंबर, 1917 में केरेन्सकी सरकार का अंत हो गया और शासन पर बोल"ाविकों का अधिकार हुआ। इसके बाद लेनिन ही नई सरकार का प्रधान बना।

रूस के नवनिर्माण को लेकर लेनिन ने कई महत्त्वपूर्ण आंतरिक व बाह्य कदम उठाये। उसके आंतरिक कार्यों में निरकुं"ा स्वेच्छाचारी जार"ाही को समाप्त करके एक सुदृढ़ वैधानिक व्यवस्था कायम करना था। जिसके अंतर्गत 18 वर्ष से अधिक उम्र के सभी नागरिकों को मतदान का अधिकार मिला। लेनिन ने एक शक्ति"ाली केंद्र की स्थापना की। उसने जन–सामान्य के अधिकारों को सुनि"चत करने के लिए रूस का एक नया संविधान बनाया। गैर रूसी राष्ट्रों का रूस में विलयन करके शक्ति"ाली सोवियत गणराज्य बनाया। उसके नेतृत्व में सोवियत संघ की सरकार ने पूर्ण शक्ति के साथ आंतरिक शत्रुओं का दमन किया। उसने रूसी सामंत, पूँजीपति, पादरी तथा नौकर"ाही जो नवीन समाजवादी सरकार के विरोधी थे, उनके प्रति कठोर नीति अपनाई। लेनिन ने क्रांतिविरोधी षड्यंत्रकारियों के दमन के लिए चेका (Cheka) नामक वि"ोष पुलिस दस्ते का गठन किया। सामाजिक विषमता को समाप्त करते हुए लेनिन ने सबके कल्याण पर आधारित आर्थिक व्यवस्था कायम की। शिक्षा में सुधार, नारियों की स्थिति में सुधार व सबकी धार्मिक स्वतंत्रता तथा अल्पसंख्यकों को सम्मानपूर्वक जीने के अधिकार को सुनि"चत किये। इन आंतरिक कार्यों के अतिरिक्त लेनिन ने कई बाह्य कार्य भी किये। उसने क्रांति के पूर्व या बाद जार"ाही या केरेन्सकी सरकार ने विदेशी राज्यों के साथ जितनी संधियाँ की थी, सभी समाप्त कर दिया।

रूस में निवास करने वाली पराधीन जातियों को स्वतंत्र करके उसने राष्ट्रीयता के सिद्धांत का कदम उठाया। इसी के फलस्वरूप फिनलैंड, बटेविया आदि राज्यों ने स्वतंत्र सत्ता कायम की। लेनिन साम्राज्यवाद का कट्टर विरोधी था। यह उसके वैदे"ाक नीति में स्पष्ट झलकता है। उसने एक तरफ जहाँ पराधीन दे"ाों को सहायता देने का आ"वासन दिया तो दूसरी ओर अपने पड़ोस के राष्ट्रों की स्वाधीनता का सम्मान करते हुए उनसे सद्भाव बनाए रखा। वास्तव में रूस ही पहला यूरोपीय देश था जिसने विदेशी शासन से पीड़ित राष्ट्रों की स्वतंत्रता का पक्ष लिया।

5.5 प्रगति समीक्षा (Check your Progress):

भाग (क) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks.)

(i) रूस के शासक को .... कहा जाता था।

(ii) रूसी क्रांति के समय रूस का जार .... था।

(iii) बोल"ाविक क्रांति का नेतृत्व .... ने किया था।

(iv) मार्च, 1917 की रूसी क्रांति के बाद स्थापित सरकार का प्रधानमंत्री .... था।

(v) मार्च, 1917 की रूसी क्रांति को .... की क्रांति भी कहा जाता है।

(vi) लेनिन ने ...., ... और .... तीन नारे दिए थे।

(vii) लाल सेना का संगठन .... के द्वारा किया गया।

(viii) चेका का संगठन .... ने किया था।

(ix) लेनिन के दल का नाम .... था।

(x) लेनिन के नेतृत्व में .... क्रांति हुई।

भाग (ख) सत्य–असत्य कथन पर आधारित प्रश्न (True-False Statements bases questions)

(i) रूसी क्रांति के पूर्व रूस में निहिलिज्म विचारधारा का प्रवर्तक 'पिता और पुत्र' के लेखक ईवान तुर्गनेव थे। ( )

(ii) रूस में वंषानुगत राजतंत्र था, जहाँ क्रांति से पूर्व होमोनोव राजवं"ा शासन कर रहा था। ( )

(iii) जार निकोलस के गद्दी त्याग देने के बाद रूस में ट्राटस्की के नेतृत्व में अस्थायी सरकार का गठन किया गया था। ( )

(iv) रूसी क्रांति से पूर्व सीमा विवाद के मुद्दे पर रूस और जापान के बीच 1904–05 में हुए युद्ध में रूस पराजित हो गया। ( )

(v) RSDLD (Russian Social Democratic Labour Party) की स्थापना 1898 में हुई थी। इसके संस्थापकों में लेनिन भी एक था। ( )

(vi) RSDLP विचारधारा में अंतर के आधार पर आगे चलकर दो भागों .... बोल"ाविक व मेन"ाविक में विभाजित हो गया। ( )

(vii) नि"चत–लक्ष्यों सहित राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं की आयोजना और केन्द्रीय मार्गद"ान का विचार सोवियत संघ से उत्पन्न हुआ। ( )

(viii) रूस की क्रांति ए"ाया और अफ्रीका में राष्ट्रीय नेताओं को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया कि वे अपने समाजों को विदे"ाी प्रभुत्व से मुक्त कराएँ। ( )

(ix) लेनिन और ट्राटस्की के लिए साम्यवादी क्रांति का अंतिम उद्दे”य था वि”व क्रांति। वि”व क्रांति को बढ़ावा देने के लिए बोल”ाविकों ने वि”वव्यापी संगठन के रूप में कम्युनिस्ट इंटरने”ानल था कोमीन्टर्न की स्थापना की जिसका मुख्यालय मास्को में था। ( )

(x) रूसी क्रांति के बाद लेनिन और स्टालिन के अंतर्गत साम्यवादी सरकार ने हत्या का अप्रिय और घृणित मार्ग अपनाया और राज्य, अर्थव्यवस्था तथा समाज का आंतकवादी रूप प्रयोग में लाया गया। ( )

5.6 सारांश / संक्षिप्तिका (Summary)

- क्रांति का अर्थ है – स्थिति में महान परिवर्तन। 1917 ई. की रूसी क्रांति इस अर्थ का पूर्ण संकेत करती है।
- फ्रांस की राज्यक्रांति 1789 ई. में हुई थी। इसके 128 वर्षों के बाद 1917 ई. में रूस की क्रांति हुई।
- क्रांति के पूर्व रूस में रोमोनोव–राजवंश का शासन था।
- रूस के सम्राट को 'जार' कहा जाता था।
- रूसी क्रांति के दौरान रूस का शासक जार निकोलस–II था।
- रूसी क्रांति के निम्नलिखित कारण थे –
    1. निरकुंश शासन
    2. रूस की राजनीतिक मर्यादा को आघात
    3. किसानों की दयनीय स्थिति
    4. किसानों का विद्रोह
    5. कारखानों के मजदूरों की खराब स्थिति
    6. उद्योगीकरण की समस्या
    7. रूसीकरण की नीति
    8. निहिलिज्म
    9. जार निकोलस द्वितीय और जरीना की अयोग्यता
    10. मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव
    11. 1905 ई. की क्रांति
    12. प्रथम विश्वयुद्ध में पराजय
    13. पेट्रोग्राद की क्रांति
- 1854–56 के क्रीमिया युद्ध में रूस की पराजय हुई थी।

- 1904–05 के रूस–जापान युद्ध में रूस की करारी हार हुई थी।
- 1861 ई. में जार अलेक्जेण्उर द्वितीय द्वारा 1861 ई. में कृषि–दासों की मुक्ति की घोषणा की गई थी।
- रूस में मुख्यतः स्लाव जाति के लोग रहते थे। इनके अतिरिक्त फिन, पोल, जर्मन, यहूदी, उजबेग, तातार, कजाक, आर्मीनियन आदि अन्य जातियों के लोग भी थे।
- जार की रूसीकरण नीति का मूलमंत्र – एक जार, एक चर्च और एक रूस की नीति से अल्पसंख्यकों में खलबली मच गई।
- "पिता और पुत्र" नामक पुस्तक के लेखक ईवान तुर्गनेव ही थे।
- निहिल रूसी भाषा का शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ है – शून्य।
- निहिल्जिम विचारधारा पूर्ण विध्वंस में विश्वास करती है। इसके समर्थक रूसी व्यवस्था का विध्वंस करने लगे।
- रासपुटिन एक पथभ्रष्ट और बुद्धिहीन पादरी था जो राजमहल में रहता था। उसने जार की पत्नी जरीना पर अपना जबरदस्त प्रभाव जमा रखा था।
- वैज्ञानिक समाजवाद का प्रवर्तक था – जर्मनी का कार्ल मार्क्स
- कार्ल मार्क्स ने वर्ग–संघर्ष व क्रांति का नारा दिया था।
- मजदूरों पर मार्क्सवादी विचारधारा का गहरा प्रभाव पड़ा और रूस में इसी विचारधारा में बोल्शेविक दल को जन्म दिया।
- रूस में समाजवादी विचारधारा की लोकप्रियता के फलस्वरूप RSDLP (Russian Social Democratic Labour Party) की स्थापना 1898 में हुई थी।
- RSDLP के संस्थापकों में ब्लादिमीर लेनिन भी एक था।
- लेनिन में अपने स्विट्जरलैंड प्रवास के दौरान अपने विचारों के प्रचार–प्रसार के लिए एक समाचार पत्र प्रकाशित किया, जिसका नाम इस्क्रा (Iskra) था।
- विचारधारा में अंतर के आधार पर RSDLP आगे चलकर दो भागों – बोल्शेविक और मेनशेविक में विभाजित हो गया।
- 9 जनवरी, 1905 के दिन को रूस के इतिहास में खूनी रविवार (लाल रविवार) के नाम से जाना जाता है। क्योंकि 9 जनवरी, 1905 को रविवार के दिन बीबी–बच्चों के साथ मजदूरों का एक विशाल जुलूस रोटी दो का नारा के साथ जार के सेंट पीटर्सवर्ग स्थित महल में जा रहे थे और इस जुलूस पर गोलियाँ बरसाई, जिससे एक हजार से अधिक मजदूर मारे गए और हजारों घायल हुए।

- 7 मार्च, 1917 को रूस में जार के खिलाफ रूस में क्रांति का प्रथम विस्फोट हुआ था। इसी दिन पेट्रोग्राद (वर्तमान नाम लेनिनग्राद) में विद्रोहियों ने रोटी–रोटी का नारा लगाते हुए सड़कों पर प्रदर्शन किया था।
- 15 मार्च, 1917 को विवश होकर जार ने गद्दी त्याग दी थी। विश्व–इतिहास में इसे मार्च की क्रांति के नाम से जानते है। परन्तु रूसी कैलेंडर के अनुसार यह घटना 27 फरवरी, 1917 को घटी थी अतः इसे फरवरी की क्रांति कहते हैं।
- विचारधारा में अंतर के आधार पर RSDLP आगे चलकर दो भागों – बोल्शेविक और मेनशेविक में विभाजित हो गया।
- मार्क्स के अनुयायी प्लेखानोव ने 1898 ई. में RSDLP की स्थापना की थी। यह एक समाजवादी राजनीतिक पार्टी थी। विचारधारा के अंतर के कारण यह दल शीघ्र ही दो भागों – बोल्शेविक व मेनशेविक में विभाजित हो गया।
- बहुमतवाला दल था – बोल्शेविक।
- अल्पमतवाला दल था – मेनशेविक।
- रूसी क्रांति के फलस्वरूप सत्ता पहली बार किसी कम्यूनिस्ट विचारधारा वालों के हाथों में आई, इसलिए इसे साम्यवादी क्रांति कहा गया।
- रूसी क्रांति को बोल्शेविकों के नेतृत्व में होने के कारण इसे बोल्शेविक क्रांति भी कहा गया।
- रूसी कैलेंडर में अक्टूबर माह होने के कारण इसे अक्टूबर–क्रांति भी कहा जाता है।
- अक्टूबर–क्रांति के फलस्वरूप जार निकोलस के गद्दी त्यागने के बाद रूस में मेनशेविक नेता केरेन्स्की के नेतृत्व में अस्थायी सरकार का गठन किया गया था।
- बोल्शेविक दल का नेता लेनिन जिसका अनन्य सहयोगी ट्राटस्की था ने केरेन्सकी को अपदस्थ करके शांतिपूर्ण तरीके से रूस में संसार का प्रथम साम्यवादी शासन कायम किया।
- लेनिन ने जार के साम्राज्य को एक नय राज्य सोवियत समाजवादी गणराज्यों का समूह (Union of Soviet Socialist Republics USSR) में बदल दिया।
- लेनिन के द्वारा रूस में व्यवस्थित शासन–प्रणाली के लिए बोल्शेविक दल का जो रोडमेप प्रस्तुत किया गया इसे इतिहास में 'अप्रैल थिसिस' के नाम से जानते है।
- बोल्शेविक क्रांति का सबसे बड़ा नेता था – ब्लादिमीर ईवानोविच लेनिन।
- उसका जन्म 1870 ई. में रूस में हुआ था।

- लेनिन के तीन नारे थे – भूमि, शांति और रोटी।
- रूसी क्रांति के परिणाम थे –
  1. रोमोनोव राजवंश की समाप्ति
  2. सामंतवादी व्यवस्था का अंत
  3. बुर्जुआवादी व्यवस्था का अंत
  4. सर्वहारा वर्ग की सत्ता की स्थापना
  5. साम्यवादी विचारधारा का सफल क्रियान्वयन
  6. उपनिवेशवादी और साम्राज्यवादी व्यवस्था पर प्रहार
  7. समाजवादी उत्पादन प्रणाली के आधार पर औद्योगिक क्रांति का आरंभ
  8. बोल्शेविकों द्वारा सत्ता में सुदृढ़ीकरण।

5.7 संकेत–सूचक (Key Words)

- क्रांति – अधिकार के खिलाफ विद्रोह जिसके फलस्वरूप अपेक्षाकृत कम समस में आमूल–चूल परिवर्तन या महान परिवर्तन आता है।
- साम्यवाद (Communism) – समतामूलक वर्गविहीन समाज व्यवस्था जिसके अंतर्गत उत्पादन के समस्त साधनों पर पूरे समाज का स्वामित्व होता है।
- समाजवाद (Socialism) – पूँजीवाद के विरोध में उत्पन्न समाजवाद विचारधारा के अंतर्गत उत्पादन के साधनों राज्य/सरकार का नियंत्रण होता है और इसका वितरण सबके हित में किया जाता है।
- बूर्जुआ – यूरोप में 18वीं सदी में इस वर्ग को पूँजीपति और पूँजी से सम्बन्धित संस्कृति पर नियंत्रण रखने वाला समझा जाता था।
- सर्वहारा वर्ग (Proletariat) – मजदूरी करने वालों का वर्ग। इसमें श्रमिक व कृषक दास सहित समाज की नीचे वाली श्रेणियों के सभी आते थे।

5.8 स्वं–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test (SAT)

(क) बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Based Questions)

(i) समाजवादी शासन का प्रयोग सबसे पहले .... देश में हुआ था।

(क) फ्रांस (ख) जर्मनी (ग) रूस (घ) इंग्लैंड

(ii) रूस में नई आर्थिक नीति (New Economic Policy NEP) किसने चलाई ?

(क) लेनिन (ख) ट्राटस्की (ग) स्टालिन (घ) मार्क्स

(iii) अप्रैल थीसिस .... ने तैयार किया था।

(क) लेनिन (ख) ट्राटस्की (ग) स्टालिन (घ) मार्क्स

(iv) रासपुटिन कौन था ?

(क) एक समाजसुधारक

(ख) एक भ्रष्ट पादरी

(ग) एक दार्शनिक

(घ) एक वैज्ञानिक

(v) चेका (Cheka)...................... था।

(क) एक विशेष पुलिस दस्ते (ख) आंतकवादी संगठन

(ग) षड्यंत्रकारियों का गुट (घ) जार का सहयोगी गुट

(vi) .... ने लाल सेना का संगठन किया और 1921 ई. तक विद्रोहियों को रूस से खदेड़ दिया।

(क) लेनिन (ख) ट्राटस्की

(ग) प्लेखानेव (घ) केरेन्सकी

(vii) रूस में निहिल्जिम विचारधारा का प्रवर्तक .... था।

(क) ईवार तुर्गनेव (ख) प्लेखानीव (ग) स्टालिन (घ) ट्राटस्की

(viii) .... के नेतृत्व में जार के साम्राज्य को USSR (Union of Soviet Socialist Republics) में परिवर्तित किया गया था।

(क) मेनशेविक (ख) बोल्शेविक (ग) RSDLP (घ) CPI

(ix) बोल्शेविक नेता .... के अनुयायी थे।

(क) कार्ल मार्क्स (ख) प्लेखानोव

(ग) माओत्से तुंग (घ) इनमें से कोई नहीं

(x) रूस में समाजवादियों के सोवियत–निर्माण की प्रक्रिया से बाध्य होकर .... ने ड्यूमा (Duma) के गठन की माँग स्वीकार कर ली थी।

(क) प्योत्र स्टोलिपिन (ख) सम्राट–जार्ज निकोलस II

(ग) केरेंसकी (घ) स्टालिन

(ख) निबंधात्मक / दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Essay/Long Answer based Questions)

1. रूसी क्रांति के प्रमुख कारणों का उल्लेख करें।

   (Discuss main causes of Russian Revolution.)

2. रूस की क्रांति का रूस एवं विश्व पर क्या प्रभाव पड़ा ?

   (What were the effects of the Russian Revolution on Russia and the World.)

3. रूसी क्रांति के महत्त्व की विवेचना करें।

   (Discuss the Importance of Russian Revolution.)

(ग) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer based Questions)

1. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें। (Write Short Notes on the following)

(i) अप्रैल थीसिस (April Theses)

(ii) बोल्शेविक (Bolshevik)

(iii) मेनशेविक (Menshevik)

(iv) लेनिन (Lenin)

(v) लाल सेना (Red Army)

(vi) खूनी रविवार (Bloody Sunday)

(vii) चेका (Cheka)

(viii) मार्च–क्रांति (March Revolution)

(ix) प्लेखानोव

(x) जार

5.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your Progress)

5.5 (क) उत्तर –

(i) जार (ii) जार निकोलस द्वितीय (iii) लेनिन (iv) केरेन्सकी

(v) फरवरी की क्रांति (vi) भूमि, शांति और रोटी (vii) ट्राटस्की (viii) लेनिन

(ix) बोल्शेविक (x) बोल्शेविक / रूसी क्रांति

5.5 (ख) उत्तर –

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) असत्य (iv) सत्य

(v) सत्य (vi) सत्य (vii) सत्य (viii) सत्य

(ix) सत्य (x) सत्य

5.8 (क) उत्तर –

(i) ग (ii) क (iii) क (iv) ख

(v) क (vi) ख (vii) क (viii) ख

(ix) क (x) ख

5.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

- आधुनिक विश्व का इतिहास
  डॉ. ए.सी अरोड़ा व डॉ. आर. एस. अरोड़ा
  Pardeep Publications - Jalandhar
- World History (1500- 1750)
  Jain & Mathur
  Jain Parkashan Mandir
  Jaipur - 3
- विश्व का इतिहास :
  (सिविल सेवा की मुख्य परीक्षा हेतु सामान्य अध्ययन की एक प्रभावशाली मार्गदर्शिका)
  डॉ. कुमार नलिन

Mc Graw Hill Education (India) Private Limited

- संक्षिप्त इतिहास (विश्व इतिहास सहित)

  NCERT सार

  (कक्षा VI-XII सहित)

  महेश कुमार बर्णवाल

  Cosmos Publication

B.A HISTORY PART- III YEAR SEMESTER-VI	
COURSE CODE: 304 **LESSON NO. 06**	**AUTOR – MOHAN SINGH BALODA**
तानाशाह का उदय : फांसीवाद व नाजीवाद **(Rise of Dictatorship : Fascism & Nazism)**	

अध्याय सरंचना (Lesson Structure)

6.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objective)

6.2 परिचय (Introduction)

6.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main body of Text)

6.3.1 फासिस्टवाद/फासीवाद का तात्पर्य व इसकी विशेषताएँ (Meaning of Fascism and its features)

6.3.2 इटली में फासीवाद के उदय के कारण (Causes of the Rise of Fascism in Italy)

6.3.3 मुसोलिनी का अभ्युदय और उसका कार्य (Rise of Mussolini and his work)

6.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of Text)

6.4.1 नाजीवाद का तात्पर्य व इसकी विशेषताएँ (Meaning of Nazism and its features)

6.4.2 हिटलर का उत्कर्ष (Rise of Hitler)

6.4.3 नाजीवाद के उदय के कारण (Causes of Rise of Nazism)

6.4.4 हिटलर की नीति (Policy of Hitler)

6.5 प्रगति समीक्षा (Check Your Progress)

6.6 सारांश/संक्षिप्तिका (Summary)

6.7 संकेत–सूचक (Key-words)

6.8 स्व–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test SAT)

6.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your Progress)

6.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

6.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस पाठ के अध्ययनोपरांत विद्यार्थी समर्थ होंगे –

- फासीवाद व नाजीवाद के तात्पर्य अर्थात् विचारधारा को समझ सकेंगे।
- फासीवाद व नाजीवाद इन दोनो की विशेषताओं को अपनी तरह से प्रस्तुत कर सकेंगे।
- इटली में फासिस्टवाद/फासीवाद के उदय के कारणों को बता सकेंगे।
- मुसोलिनी का अभ्युदय तथा उसके कार्यों की विवेचना कर सकेंगे।
- हिटलर का उत्कर्ष व उसके कार्यों की समीक्षा कर सकेंगे।
- नाजीवाद के उदय के कारणों पर चर्चा कर सकेंगे।

6.2 परिचय (Introduction) :-

प्रथम विश्वयुद्ध (1914–18) का 11 नवम्बर, 1918 का अंत हुआ था। युद्धग्रस्त सभी राष्ट्रों के प्रतिनिधियों के द्वारा युद्धविराम की घोषणा पर हस्ताक्षर किए गए।

इसके बाद 1919 ई. के प्रारंभ में पेरिस में शांति–सम्मेलन का आयोजन किया गया। पेरिस–सम्मेलन में जर्मनी के साथ वर्साय की संधि तथा अन्य देशों के साथ अलग से संधियां की गई। पेरिस शांति सम्मेलन से उत्पन्न असंतोष और शून्यता की स्थिति ने फासीवाद जैसी वैकल्पिक विचारधारा के उत्पन्न होने का मार्ग प्रशस्त कर दिया। मुसोलिनी के नेतृत्व में इटली में इसका उदय हुआ। इटली में फासिस्टों द्वारा सत्ता प्राप्त करने के लगभग 11 वर्षों के भीतर ही जर्मनी में नाजीवाद का बोलबाला हो गया। नाजीवाद फासिज्म का जर्मन रूप था। इन दोनों विचारधारा में सर्वसत्तावाद, उग्र राष्ट्रवाद, नस्लवाद और आक्रामक विदेश नीति पर बल दिया जाता था। ये दोनो मूलतः साम्यवाद विरोधी विचारधारा पर विश्वास पर करते थे। ये दोनों प्रबल रूप से राज्य को साध्य और व्यक्ति को साधन मात्र मानते थे। इन्होंने प्रजातंत्र, संसद, राष्ट्रीय झंडा, अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं और मानवीय मूल्यों की अवहेलना की थी। पेरिस के शांति सम्मेलन में इटली की महत्त्वकांक्षा पूरी नहीं होने के कारण वहाँ इस प्रकार की विचारधारा के जन्म होने की परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई। इसी प्रकार पेरिस शांति सम्मेलन में विजयी राष्ट्रों कें जर्मनी को अपमानजनक वर्साय की संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए बाध्य किया था। इसके फलस्वरूप हिटलर के नेतृत्व में जर्मनी में नाजी पार्टी का जन्म हुआ और इसने जो विचारधारा चलाया उसे नाजीवाद के नाम से जानते है। इनके अतिरिक्त इटली में फासीवाद व जर्मनी में नाजीवाद के उत्पन्न होने के पीछे कई कारण थे।

इस प्रकार इटली में मुसोलिनी ने फासिस्ट पार्टी की स्थापना कर अपनी संपूर्ण शक्ति उसे शक्तिशाली बनने में लगा दी। शीघ्र ही उसके नेतृत्व में फासिस्टों की सरकार इटली में सत्तारूढ़ हो गई।

प्रथम विश्वयुद्ध में जर्मनी की आर्थिक स्थिति जर्जर होने के बाद हिटलर ने राजनीतिक क्षेत्र में पदार्पण किया था। उसने देश की स्थिति को सुधारने के लिए नार्जी पार्टी की स्थापना की। शीघ्र ही वह जर्मनी का सर्वेसर्वा बन गया।

6.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main body of Text)

6.3.1 फासिस्टवाद/फासीवाद का तात्पर्य व इसकी विशेषताएँ (Meaning of Fascism and its Features)

फासिज्म शब्द की उत्पत्ति इटालियन भाषा के फासिको (Fascio) से माना गया है। इसका अर्थ है –लकड़ियों का एक बण्डल या कुल्हाड़ी। इसे ही इटली के फासीवाद दल का ध्वज चिन्ह भी बनाया गया था।

बेनितो मुसोलिनी के नेतृत्व में इटली में चलाए गए आंदोलनों में प्रबल रूप से इसका प्रयोग किया गया था। फासीवाद कट्टरतापन व उग्र राष्ट्रवाद के रूप में पर्याय था। शुरूआती दौर में इसका उदय एक अंतर्जात प्रकृति के रूप में हुआ था। परंतु आगे चलकर यह एक 'वाद' अथवा सिद्धांत के रूप में शासन प्रणाली का हिस्सा बनकर विकसित होता गया। इसका विकास इटली में प्रजातंत्र के विपरीत तानाशाही के रूप में मुसोलिनी के नेतृत्व में हुआ था। फासीवाद के प्रवर्तक मुसोलिनी ने स्पष्ट घोषणा की कि राज्य से बाहर, राज्य के विरूद्ध और राज्य के ऊपर कुछ नहीं है। वह राज्य को साध्य और व्यक्ति को साधन मानता था। फासीवाद विचारधारा सर्वसत्तावाद में विश्वास करता था। फासीवाद अभिजात्य या कुलीन वर्गों द्वारा शासन की अनुशंसा करता था। इसमें लोकप्रिय संप्रभुता व सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार द्वारा जन भागीदारी का कोई स्थान नहीं था। इस प्रकार के फासिस्टवाद व फासीवाद की प्रमुख विशेषताएं निम्न प्रकार हैं –

1. व्यक्ति के महत्त्व को स्थान नहीं – फासिस्टवाद में राज्य व्यवस्था के अंतर्गत व्यक्ति के महत्त्व को नकारा गया था। राज्य अथवा सरकार को व्यक्ति के ऊपर सर्वोच्च माना गया था। यह विचारधारा राज्य के व्यापक हित में व्यक्तिगत हित के त्याग की बात करता है। इसमें व्यक्ति के अस्तित्व को केवल राज्य के लिए समझा जाता था। मुसौलिनी की स्पष्ट घोषणा थी कि राज्य से बाहर राज्य के विरूद्ध और राज्य के ऊपर कुछ नहीं हैं। वह राज्य को साध्य व व्यक्ति को साधन मानता था।

2. प्रजातंत्र का विरोध – फासिस्टवाद जनतंत्र का विरोध करता था। इसमें प्रजातंत्र के आधारभूत सिद्धांतों – जनता के प्रतिनिधि द्वारा शासन के लिए कोई स्थान नहीं था। संसदीय प्रजातंत्र व सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार

को सिरे से नकार दिया था। मुसोलिनी जनता की बहुमत पर आधारित प्रजातंत्र को बकवास, भ्रष्ट, अव्यावहारिक, अगतिमान और अक्षम मानता था।

3. समाजवाद विरोधी – रूसी क्रांति के फलस्वरूप विश्व में सर्वप्रथम रूस में समाजवादी विचारधारा के अंतर्गत सदियों से शोषित सर्वहारा वर्ग को अधिकार व सत्ता में भागीदारी दी गयी थी। इसके विपरीत इटली में मुसोलिनी के नेतृतव में विकसित फासीवाद विचारधारा में राज्य या सरकार को व्यक्ति व समाज से ऊपर माना गया था। अतः फासीवाद समाजवाद का कट्टर विरोधी था।

4. दुर्बल राज्यों के अस्तित्व को नकारना – कमजोर राष्ट्रों के अस्तित्व में फासीवाद का कोई विश्वास नहीं था। इस अर्थ में उसका विश्वास मत्स्य–न्याय पर आधारित था।

5. शांति का प्रबल विरोधी – किसी भी प्रकार की ऐसी संधि जिसमें शांति की बात होती थी फासीवाद में उसका विरोध किया जाता था। मुसोलिनी कहा करता था कि शांति उस तालाब के समान है जिसका जल सदैव सिथर रहता है। उसमें विकास की कोई संभावना नहीं होती। इसलिए वह युद्ध का प्रबल समर्थक था। युद्ध के बिना कोई राष्ट्र जीवित नहीं रह सकता, ऐसी उसकी मान्यता थी। अतः फासीवाद शांति का विरोध और युद्ध का प्रेमी था।

6 आंतक का शासन – मुसौलिनी फासीवाद विचारधारा के अंतर्गत यह नीति अपना रखा था कि राज्य में हर तरफ आतंक मचा कर रखा जाए ताकि किसी को भी आगे बढ़कर बोलने की हिम्मत न हो और हमारा एक़क्षत्र राज्य कायम रहे। अतः अपने राज्य में आंतक की शासन–व्यवस्था कायम कर विरोधियों को कुचलना फासीवाद की प्रमुख नीति थी।

7. उग्र विदेशनीति को बढ़ावा – मुसौलिनी सर्वसत्तावादी व विस्तारवादी नीति में विश्वास करता था। उसकी विदेशनीति बहुत ही आक्रामक थी। उग्र राष्ट्रवाद की नीति के तहत वह हमेशा युद्धि की महिमा का गुणगान किया करता था। वह कहा करता था कि युद्ध ही मनुष्य को महान बनाता है। अतः फासीवाद विचारधारा इस विश्वास पर आधारित था कि जो राष्ट्र अपना विस्तार नहीं करता वह अधिक समय तक जीवित नहीं रह सकता। दो या दो से अधिक राष्ट्रों के बीच मेल–मिलाप को वह बकवास मानता था। अतः फासीवाद या फासिस्टवाद विस्तारवाद एवं उग्र विदेशनीति का प्रबल समर्थक था।

8. मानव के आधारभूत मूल्यों में आस्था नहीं – फासीवाद इस मान्यता पर आधारित था कि साधारण व्यक्तियों का मस्तिष्क तीक्ष्ण नहीं होता। इसके अंतर्गत भावनाएं, सहानुभूति, प्यार, नैतिकता, दयालुता व समझ जैसे शब्दों का कोई स्थान नहीं था। अतः फासीवाद मौलिक मानवीय मूल्यों में कोई विश्वास नहीं रखता था।

6.3.2 इटली में फासीवाद के उदय के कारण (Causes of Rise of Fascism in Italy)

एक सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक व्यवस्था के रूप में 1922 में बेनितो मुसोलिनी के नेतृत्व में पहली बार इटली में फासीवाद व्यवस्था को अस्तित्व में लाया गया था। यह फासीवाद शब्द इटालियन भाषा के Fascio शब्द से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है – Well tied bundle of rods (अच्छी तरह बंधे छड़ी के बंडल) जो एकता, शक्ति और सुदृढ़ता का प्रतीक है। इसी अर्थ में मुसौलिनी राज्य को व्यक्ति के ऊपर से उसकी शक्ति के लिए उसे साध्य मानता है और व्यक्ति के महत्त्व को नकारता था। वह साम्राज्यवादी विस्तार में विश्वास करता था। उसके द्वारा इटली में स्थापित व विकसित फासीवाद के उदय के कई कारण थे। इन कारणों का विवरण निम्न प्रकार है –

1. प्रथम विश्वयुद्ध के बाद उपजा असंतोष –

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद की परिस्थितियों ने इटली को एक असंतुष्ट राष्ट्र बना दिया था। इटली के युद्ध में सम्मिलित होने का लक्ष्य उपनिवेश प्राप्त करना था। परंतु 1919 ई. के पेरिस शांति सम्मेलन में उसकी महत्त्वाकांक्षाओं को पूरी तरह से अनदेखा कर दिया गया था। इससे इटली के लोग बहुत गुस्से में थे। लोगों में यह भावना घर कर गई कि इटली की युद्ध में जीत हुई, किंतु शांति के समय उसे पराजय मिली। कहीं–न–कहीं यह भावना भी एक महत्त्वपूर्ण कारण इटली में फासीवाद के उदय के लिए बना।

2. इटली की कमजोर आर्थिक स्थिति –

कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण प्रथम विश्वयुद्ध के बाद इटली की आंतरिक व्यवस्था खराब हो गयी थी। युद्धोपरांत लाखों व्यक्ति बेकार हो गये थे। युद्ध के बाद जिन सेनाओं की जरूरत नहीं रही उसे समाप्त कर दिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि लाखों सैनिक बेकार हो गए। ये बेकार लोग चारों तरफ अव्यवस्था फैला रहे थे। गरीबों के कारण चीजों का मूल्य बहुत बढ़ गया था। इस वजह से इटली में कहीं तो किसानों के उपद्रव होने लगे और कहीं कारखानों के मजदूर हड़ताल करने लगे। इस आंतरिक अव्यवस्था की स्थिति में इटली में फासीवाद का उदय हुआ।

3. सरकार की उदासीनता –

प्रथम वि"वयुद्ध के बाद इटली अराजकता की स्थिति का शिकार हो गया था। किसान और औद्योगिक मजदूरों की दुर्दशा पराकाष्ठा पर पहुँच गई थी। परंतु इटली की सरकार इनत माम अराजक परिस्थितियों के प्रति उदासीन रही। उसमें सुधार लाने में कोई दिलचस्पी नहीं ली। अतः इटली की दशा दिन–प्रतिदिन बिगड़ती हुई और अंत में फासीवाद का उदय हुआ।

4. समाजवादियों की गतिविधियाँ –

महायुद्ध के बाद इटली असंतोष और निराशावाद के वातावरण से घिर चुका था। इस प्रकार के वातावरण में मार्क्सवाद और संघवाद के उदय से किसानों तथा मजदूरों में उग्र राष्ट्रीयता की भावना का प्रादुर्भाव हुआ और इटली में साम्यवाद का असर दिखने लगा। इटली के समाजवादियों ने बोल्शेविकों की तरह इटली में सर्वहारा वर्ग के शासन की स्थापना का स्वप्न देखने लगे थे। देश में कई प्रकार के समाजवादी दल स्थापित हो गये थे। इन समाजवादियों ने अपने सिद्धांतों का खूब प्रचार किया तथा इसके साथ–साथ उन्होंने जनता के असंतोष का भी लाभ उठाया और सरकार के विरूद्ध सीधी कार्यवाही करके दे"ा के अंदर अराजकता का वातावरण उत्पन्न कर दिया। लोग दे"ा को इस हालात से बाहर निकाल कर एक शक्ति"ााली राष्ट्रीय सत्ता की स्थापना चाहते थे। इन परिथितियों ने भी इटली में फासीवाद को प्रोत्साहित किया।

5. जर्मन दार्शनिक हीगेल के सिद्धांतों का प्रचार –

जर्मन दार्शनिक हीगेल ने राज्य की श्रेष्ठता का सिद्धांत प्रस्तुत किया था। वह राज्य को वि"वात्मा अर्थात् ईश्वर का पार्थिव रूप मानता था। ऐसा ईश्वरीय राज्य कभी भी गलती नहीं कर सकता था। उसका कहना था कि व्यक्ति की भलाई उसकी उन्नति राज्य के आदेशों के पालन में ही है। हीगेल के इस द"ार्न का जेन्टिल तथा प्रेजोलीन नामक दो विद्वान इटली में खूब प्रचार कर रहे थे। हीगेल के इस मत ने राज्य को श्रेष्ठ साबित करते हुए व्यक्ति के महत्त्व को नकार दिया। हीगेल के सिद्धांतों में और फासिस्ट दल के सिद्धांतों में काफी समानता थी जिसका लाभ और प्रोत्साहन फासिस्ट दल को मिला।

6. राष्ट्रीयता पर आघात –

यूरोप के प्रत्येक दे"ा की भांति इटली भी 19 वीं सदी में अपने आर्थिक हितों की पूर्ति तथा राष्ट्रीय गौरव की वृद्धि के लिए साम्राज्य विस्तार के प्रयास को लेकर आभारा था। इसी क्रम में इटली में ट्यूनिस पर अधिकार करना चाहा। परंतु 1881 ई. में जर्मनी की प्रेरणा से फ्रांस ने उस पर अधिकार कर लिया। इसके बाद इटली ने अबीसिनिया पर अधिकार करने के लिए उस पर आक्रमण किया, परंतु अबीसिनिया ने 1896 ई. में अडोवा के युद्ध में इटली को पराजित कर दिया। इस पराजय से इटली के राष्ट्रीय सम्मान को जो आघात पहुँचा उससे बाहर निकलने के लिए ही वह प्रथम विश्व युद्ध में मित्र राष्ट्रों की ओर से सम्मिलित हुआ था। परंतु यहाँ भी इटली को निरा"ाा हाथ लगा। उसे चाहे गये प्रदे"ाों पर स्वामित्व प्राप्त नहीं हो सका। अतः इटली के लोगों के मन–मस्तिष्क यह स्थापित हो गया कि इन सभी राष्ट्रीय आघातों के लिए जनतन्त्रीय सरकार ही दोषी है। अब इटली के लोग ऐसी सरकार की चाहत रख रहे थे जो अंतरराष्ट्रीय जगत पर उनकी राष्ट्रीय आकांक्षाओं की पूर्ति कर सके तथा

इटली को सम्मानजनक स्थान प्राप्त करा सके। फासिस्ट दल ने इटलीवासियों की इन्हीं आकांक्षाओं का फायदा उठाते हुए इटली में फासीवाद की स्थापना में सफलता प्राप्त की।

6.3.3 मुसोलिनी का अभ्युदय और उसका कार्य (Rise of Musolini and his work)

साधारण परिवार में जन्में मुसोलिनी अठारह वर्ष की अवस्था में एक शिक्षक बना। इसके बाद और अधिक शिक्षा की प्राप्ति के लिए वह स्विट्जरलैंड चला गया और वहाँ उसने लीजेन और जेनेवा के विष्वविद्यालयों में ि"ाक्षा पाई। वहाँ उसने एक मजदूर दल का संगठन किया और अपने नेतृत्व में कारखानों में हड़ताले कराई। इस कारण वहाँ की सरकार ने उसे स्विट्जरलैंड से निकाल दिया। इसके बाद वह आस्ट्रिया गया पर उसे वहाँ भी शरण नहीं मिला। आस्ट्रिया से निकाले जाने पर वह 1915 ई. में सेना ने भरती हो गया। 1917 ई. में वह जख्मी होकर युद्धभूमि से लौटा और अपने को सैनिक सेवा से मुक्त करा दिया। दृढ़–नि"चयी व्यक्तित्व का मुसोलिनी इटली की व्यापक अराजकता और अ"ाांति को देखकर उसमें सुधार लाने का नि"चय किया। उसने अपनी इस योनि को अंजाम देने के लिए भूतपूर्व सैनिकों की मदद से 23 मार्च 1919 को इटली के मिलान नगर में एक संगठन बनाया जिसे फासिस्ट या फासी पार्टी के नाम से जाना जाता है। फासिस्ट या फासी का सिद्धांत ही फासीवाद या फासिस्टवाद कहलाया।

फासिस्ट पार्टी के सदस्यों को उनकी काले वर्दी और बेनिटो मुसोलिनी के प्रति उनकी वफादारी के द्वारा पहचाना जाता था। इसीलिए फासिस्ट पार्टी के युवक सदस्य को ब्लैक शर्ट (Black Shirt) भी कहा जाता था। एक अनु"ाासित पार्टी के रूप में फासिस्ट पार्टी के अनुयायी रोमन ढंग से अपने नेता को सलामी देते थे। इटली में समय के साथ यह लोकप्रिय हो गई और वहाँ की जनता इसके कार्यक्रमों से प्रभावित होने लगे। विष्व में साम्यवादी आंदोलन को समाप्त करने के उद्दे"य को लेकर यह पार्टी आगे बढ़ रही थी। इस कारण इटली के प्रधानमंत्री जियोलिटी ने साम्यवादियों से छुटकारा पाने के लिए फासिस्टों का खुलकर समर्थन दिया।

फासिस्ट दल को संगठित करने के लिए मुसोलिनी ने अपनी पूरी शक्ति लगा दी। उसने इटली के लोगों के बीच यह प्रचार किया कि फासिस्ट दल की साम्यवादियों के प्रभाव को रोक सकता है। इटली के लोग समझने लगे कि फासिस्ट दल ही इटली में एक सबल और संगठित सरकार स्थापित कर सकती है। इटली की सरकार बहुत ही कमजोर थी और दे"ा में चारों और अराजकता फैल गई थी। 1921 ई. में चुनाव हुए पर किसी भी पार्टी को बहुमत नहीं मिला। मुसोलिनी के अनुयायियों के द्वारा आंतक फैलाए जाने पर भी उसकी फासिस्ट पार्टी को मात्र 35 स्थान मिले, जबकि कम्यूनिस्टों और समाजवादियों को 138 स्थान प्राप्त हुए। इतना होने पर भी मुसोलिनी का उत्साह कम नहीं हुआ। वह खुले आम शासन पर अधिकार करने की बात करने लगा। 1922 ई. में आते–आते वह इटली का सर्व"ाक्ति"ााली व्यक्ति बन गया। उसने इटली के नेपल्स नगर में एक सभा का आयोजन किया। इस

सभा में बहुत से स्वयंसेवक तथा दल के अन्य सदस्यों ने भाग लिया था। उसने 28 अक्टूबर, 1922 ई. को रोम घेरने के लिए एक अभियान का आयोजन किया और पार्टी को 'रोम चलो' का नारा दिया।

इससे इटली का सम्राट इमैनुएल गृह युद्ध की संभावना से डर गया और उसने मुसोलिनी को ही सरकार बनाने को आमंत्रित किया। इस तरह वह 1922 में असाधारण अधिकारों सहित इटली का प्रधानमंत्री बन गया। इस प्रकार बिना एक भी गोली चलाए मुसोलिनी के नेतृत्व में फासिस्ट इटली में सत्तारूढ़ हो गए। इटली में मुसोलिनी व उसके फासीवाद की सफलता का मुख्य कारण यह था कि वहाँ के शासक और जनता दोनों ही लोकतंत्र और समाजवाद को दे"ा के लिए खतरा समझते थे। उन्हें यह वि"वास था कि फासिस्टवाद ही समाजवादी आंदोलन का दमन करके देश को अराजक स्थिति से बाहर निकाल सकता है। इसलिए उन्हें बिना किसी विरोध के इटली का शासन सौंप दिया गया।

फासी दल को मजदूर वर्ग, बुर्जुआ वर्ग, किसान, बेरोजगार युवक, सैनिक सेवा से मुक्त सैनिक, निम्न मध्यम वर्ग आदि सभी को तात्कालिक अराजक स्थिति में असंतुष्ट थे का समर्थन प्राप्त हुआ।

मुसोलिनी इटली की सत्ता में आने के बाद कई आंतरिक व बाह्य कार्य किये इनका विवरण निम्न प्रकार है–

आंतरिक कार्य –

1. निरकुंश शासन की स्थापना –

इटली की सत्ता में आने पर उसने अपने आपको अधिनायक के रूप में स्थापित करके इटली में आंतक का राज्य कायम कर दिया। उसने अपने दल को छोड़कर अन्य सभी दलों पर प्रतिबंध लगा दिया। सेना को अपने अधिकार में ले लिया। उसने फासिस्ट अखबारों को छोड़कर अन्य सभी अखबारों को बंद कर दिया। समाजवादी आंदोलन को पूरी तरह कुचल दिया और उनके समाजवादियों तथा कम्युनिस्ट को जेलों में बंद कर दिया। इस प्रकार इटली में स्वेच्छाचारी एकाधिकारी सत्ता की स्थापना कर दी।

2. आर्थिक सुधार –

सत्ता प्राप्ति के बाद मुसोलिनी ने इटली की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए कठोर कदम उठाये। खर्च में कमी की गई और टेक्स बढ़ाया गया। उसने बेकारी की समस्या को इतनी सावधानी पूर्वक सुलझाया कि अब बेकारी इटली की राष्ट्रीय समस्या नहीं रही। मूल्य पर नियंत्रण स्थापित किया गया। खर्चे पर नियंत्रण रखने के लिए उच्च प्रषासनिक पदों में कमी की गयी। व्यापार एवं वाणिज्य की वृद्धि के लिए ठोस कदम उठाये। कृषि की उन्नति के लिए एक तरफ जहाँ दलदली जमीन को खेती के योग्य बनाया गया तो वहीं दूसरी ओर जरूरत की सभी चीजें

इटली में ही उपजाने के लिए किसानों को प्रेरित किया। उसने इटली में औद्योगिक विकास पर ध्यान देते हुए वहाँ अनेक उद्योगों की स्थापना पर बल दिया। उसने अपने समय में विषेष रूप से रेडियों, मोटर व हवाई जहाजों जैसे उद्योगों को वि"ोष प्रोत्साहन दिया।

3. शिक्षा–संबंधी सुधार –

उसने प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा सहित विज्ञान व कृषि शिक्षा की भी समुचित व्यवस्था राज्य में कायम किया। ि"ाक्षा–व्यवस्था में सैनिक प्रि"ाक्षण पर वि"ोष बल दिया। अपनी अधिनायकवादी प्रवृत्ति के अनुरूप उसने इटली में फासिस्टवादी सिद्धांतों को शिक्षा में शामिल किया। प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयों में सामान्य ि"ाक्षा के साथ–साथ फासिस्ट–संबंधी ि"ाक्षा भी दिया जाना अनिवार्य कर दिया गया। विद्यालयों में छात्रों को मुसोलिनी के चित्र के सामने बैठाकर रटाया जाता था कि मुसोलिनी बराबर ही सही काम करता है, वह कभी गलत काम नहीं करता। उन्हें यह मंत्र दिया जाता था कि 'वि"वास करो, आज्ञा मानो और युद्ध करो'।

4. यहूदियों का विरोध –

मुसोलिनी ने इटली में जातीयता तथा संस्कृति के विकास के लिए श्रेष्ठता की नीति का पालन किया। इसके अंतर्गत इटली में यहूदियों के लिए कोई स्थान नहीं था। उन्होंने तरह–तरह से नियम कानून बनाकर यहूदियों को विद्यालयों में पढ़ने, शादी–विवाह करने, व्यापार करने तथा इटली में बसने से रोकने के लिए प्रयास किये। इस कारण बहुत से यहूदियों ने इटली छोड़ दिया।

5. राष्ट्रीय आयोग का गठन –

समस्त प्रशासनिक व्यवस्था को फासिस्टों के हाथ में सौंपने के लिए मुसोलिनी ने राज्य में 22 राष्ट्रीय आयोग गठित किए। उसने वर्ग संघर्ष के स्थान पर वर्ग सहयोग का नारा देकर ट्रेड यूनियन को भंग कर दिया और मजदूरों पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया।

6. गुप्तचर संस्था का गठन –

उसने विरोधियों के दमन के लिए ओवरा (OVRA) नामक गुप्तचर संस्था का गठन किया। इसका मुख्य उद्दे"य दल के विरोधियों का खात्मा करना होता था।

मुसोलिनी का बाह्य कार्य (विदेश नीति Foreign Policy) –

देश की आन्तरिक समस्याओं से निपटने के बाद उसने अपना ध्यान वि"ोष नीति की ओर केन्द्रित किया। पेरिस शांति सम्मेलन के निर्णयों में इटली की उपेक्षा की गई थी। इससे इटली के प्रादे"ाक विस्तार की इच्छा पूरी नहीं हुई थी। मित्रराष्ट्र इटली को एक कमजोर राष्ट्र समझते थे। इस कारण इटली की राष्ट्रीय चेतना को गहरा आघात

पहुँचा। अतः सत्ता में आते ही मुसोलिनी की वैदेशिक नीति का प्रमुख उद्देश्य इटली को एक महान और मजबूत राष्ट्र बनाना था। इसके लिए उसने युद्ध और साम्राज्यवाद की नीति अपनाने में तनिक भी संकोच नहीं किया। उसके विदेश नीति के दो स्पष्ट उद्देश्य थे – अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में इटली को सम्मानित स्थान दिलाना एवं महान शक्तियों के समानांतर इटली को स्थापित करना।

दूसरा, भूमध्यसागर एवं अफ्रीका में इटली का विस्तृत साम्राज्य स्थापित करना।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए मुसोलिनी ने निम्न कदम उठाये –

1. विजय अभियान – 1924 ई. में उसने युगोस्लाविया के साथ संधि करके एड्रियाटिक सागर के शीर्ष पर स्थित फ्यूम नगर पर इटली का अधिकार हो गया। इसके बाद उसने अल्बानिया को अपने अधिकार में ले लिया।

इसके बाद 1936 ई. में मुसोलिनी ने किसी–न–किसी बहाने इथियोपिया और अबीसीनिया पर आक्रमण कर उन पर अधिकार कर लिया।

2. स्पेन की मदद – 1936 ई. में स्पेन में वहाँ की प्रजातांत्रिक सरकार के खिलाफ जनरल फ्रैंको के नेतृत्व में विद्रोह हुआ और गृहयुद्ध छिड़ गया। इसमें जर्मनी तथा पुर्तगाल के साथ–साथ इटली में भी फ्रैंको की मदद की, क्योंकि उन्हें भय था कि प्रजातंत्रियों की विजय होने से स्पेन में बोल्शेविक सरकार की स्थापना हो जाएगी। इन्हीं की मदद से जनरल फ्रैंको ने स्पेन की सत्ता पर अधिकार कर लिया।

3. विभिन्न देशों से संधियाँ – मुसोलिनी इटली को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर विशिष्ट स्थान दिलाने के लिए कई संधियाँ की थी।

उसने 1923 की लोसान की संधि द्वारा रोड्स और डार्डेकनिज द्वीप समूहों पर इटली का अधिकार स्थापित कर दिया था।

1927 के तिराना संधि द्वारा अल्बानिया को इटली का एक संरक्षित राज्य बना लिया।

1930 ई. में आस्ट्रिया के साथ इटली का मैत्री–संबंध स्थापित हुआ।

इतिहास में 1936 ई. 'रोम–बर्लिन धुरी' के नाम से प्रसिद्ध संधि इटली और जर्मनी के बीच हुई थी। इसके बाद जर्मनी ने 1936 में ही जापान के साथ एंटी–कौमिंटर्न पैक्ट किया। इसके एक वर्ष बाद 1937 में मुसोलिनी भी उसमें शामिल हो गया। इस प्रकार रोम–बर्लिन–टोकियो धुरी राष्ट्र के रूप में संगठित हो गए और आगे चलकर द्वितीय विश्वयुद्ध में भी थे सभी एक साथ लड़े।

6.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of the Text)

6.4.1 नाजीवाद का तात्पर्य व इसकी विशेषताएँ (Meaning of Nazism and its Features)

नजीवाद इटली के फासीवाद का ही जर्मन रूप था। इटली में फासिस्टों द्वारा सत्ता प्राप्ति के लगभग 11 वर्षों के भीतर ही जर्मनी में नाजीवाद का बोलबाला हो गया था। 'नाजी' शब्द हिटलर द्वारा 1921 ई. में स्थापित ने"ानल सो"ालिस्ट जर्मन वर्कर्स (National Socialist German Workers NSGWP) पार्टी के नाम से निकला है। इसी दल को संक्षेप में नाजी कहा गया। हिटलर ने इस दल का नेतृत्व किया। हिटलर के नेतृत्व में इस पार्टी ने जिस विचारधारा को लेकर 1933 से 1945 तक जर्मनी पर राज किया उसे नाजीवाद के नाम से जानते हैं। इस विचारधारा का विकास पूँजीवाद और साम्यवाद के विकल्प के रूप में हुआ था। इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ थीं –

1. **जनतंत्र का विरोधी** – नाजीवाद विचारधारा में राज्य को व्यक्ति से ऊपर माना गया था। इसमें प्रजातंत्र, संसद, राष्ट्रीय झंडा, अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं व मानवीय मूल्यों की उपेक्षा की गयी थी। यह संसदीय संस्थाओं का अंत करने का प्रबल समर्थक था। इसमें जनता के प्रतिनिधि के शासन करने का कोई प्रावधान नहीं था। नाजीवाद एक महान नेता के हाथों में शक्ति समर्पित कर देने की विचारधारा पर आधारित था। अतः नाजीवाद विचारधारा पूरी तरह से जनतंत्र का विरोधी था।

2. **एकाधिकारी के रूप में महान नेता का गुणगान** – इस विचारधारा में अधिनायकवाद पर बल दिया जाता था। एकाधिकार प्राप्त एक महान नेता ताना"ाह के रूप में सब कुछ होता था। एक प्रकार से वही महान नेता राज्य होता था। उनके आदेशों का पालन करना सबके लिए अनिवार्य होता था। राज्य के अंदर सबको उस नेता की महिमा का गुणगान करना होता था।

3. **व्यक्ति का गौण स्थान** – नाजीवाद विचारधारा में व्यक्ति के स्थान पर राज्य अथवा सरकार को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। अतः नाजीवाद में राज्य के अंतर्गत व्यक्ति की उपेक्षा की गई थी। यह विचारधारा इस मान्यता पर आधारित थी कि लोग राज्य के लिए है, न कि राज्य लोगों के लिए।

4. **उग्र राष्ट्रवाद का समर्थक** – नाजीवाद विचारधारा उग्र राष्ट्रवाद का प्रबल समर्थक था। इनके लिए राष्ट्रहित सर्वोपरि होता था। इस विचारधारा का प्रवर्तक हिटलर के लिए राष्ट्रीय स्वाभिमान और गौरव सदैव महत्त्वपूर्ण होता था। राष्ट्रहित को ही सर्वोपरि मानते हुए वह वर्साय की संधि के प्रावधानों के उल्लंघन की बात करता है और उसे अमल में लाता है तथा इसी की प्रतिक्रिया में इस विचारधारा का जन्म होता है।

5. **लक्ष्य–प्राप्ति में बलप्रयोग नीति में विश्वास** – नाजीवाद लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किसी भी हद को पार करने की नीति में विष्वास करते थे। बलप्रयोग व बर्बरतापूर्ण व्यवहार के प्रयोग द्वारा आंतक का वातावरण निर्माण कर लोगों को राज्य की आज्ञा के अधीन रहने के लिए मजबूर कर देते थे। लक्ष्य की प्राप्ति में विरोधी तत्वों को समूल कुचल देना व नष्ट कर देना उनकी प्राथमिकता होती थी।

6. यहूदियों के प्रति घृणा – नाजीवाद जर्मनी की विपरीत आर्थिक परिस्थितियों के लिए यहूदियों को जिम्मेदार मानते थे। अतः यह मान्यता पूरी तरह से उनमें स्थापित हो गयी थी कि यहूदी ही जर्मनी की आर्थिक कठिनाइयों के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार हैं। फलतः उनके प्रति घृणा का व्यवहार करने तथा उन्हें हर प्रकार से पीड़ित और अपमानित करने पर बल दिया जाता था।

6.4.2 हिटलर का उत्कर्ष (Rise of Hitler)

हिटलर का जन्म 1889 ई. में आस्ट्रिया के एक साधारण परिवार में हुआ था। गरीबों के कारण वह अपनी मनचाही वास्तुकला की षिक्षा नहीं प्राप्त कर सका। बाद में वह म्यूनिख चला गया और एक चित्रकार के रूप में कार्य करने लगा। इसी दौरान प्रथम वि"वयुद्ध शुरू हो गया और हिटलर जर्मनी की सेना में भरती हो गया। उसकी असाधारण वीरता के कारण उसे 'आयरण क्रास' का सम्मान मिला। वह घायल होकर अस्पताल पड़ा था। वहाँ यह खबर सुनकर उसे बड़ा रोष हुआ कि मित्रराष्ट्रों में जर्मनी से वर्साय की अपमानजनक संधि की है। उसने घोषणा की कि जर्मनी की पराजय का कारण उसके नेता ही हैं। उसने राजनीति में प्रवे"ा कर जर्मनी को इस अपमानजनक स्थिति से बाहर निकालने का उसी दिन दृढ़संकल्प किया।

अस्पताल से बाहर आने के बाद हिटलर को ऐसे नवयुवकों के संपर्क में आने का अवसर मिला जो 'जर्मन वर्क्स पार्टी' को लेकर संगठित थे। वह इस अवसर को अनुकूल जानकर अपने साथियों सहित उस पार्टी का सदस्य बना और उसे संगठित करने का नि"चय किया। अपनी योग्यता व प्रतिमा के बल पर हिटलर जर्मन वर्क्स पार्टी का नेता बन गया। बाद में दल का नाम बदलकर NSGWP (National Socialist German Works Party) कर दिया। यही ने"ानल सो"ालिस्ट जर्मन वर्क्स पार्टी कालांतर में नाजी पार्टी के रूप में प्रसिद्ध हुई। 1923 ई. में हिटलर में जर्मनी की गणतंत्र सरकार का तख्ता पलटने का प्रयास किया। प्रयास असफल रहा और उसे पकड़कर जेल में डाल दिया गया। कारावास मं ही उसने अपनी आत्मकथा मेन केम्फ (मेरा संघर्ष) लिखी, जो नाजी पार्टी के लिए बाद में बाइबिल के समान हो गयी। अपनी इस आत्मकथा में उसने जर्मनी की तात्कालिक समस्याओं पर प्रका"ा डाला तथा उन समस्याओं के समाधान से संबंधित एक कार्यनीति की भी रूपरेखा प्रस्तुत की। कु"ाल वक्ता व संगठनकर्ता के रूप में उसने जर्मनी की जनता की चिंता की राजनीति के मनोविज्ञान का भरपूर लाभ उठाया और अपनी घोषणाओं और कार्यक्रमों के द्वारा उनको अपने पक्ष में कर लिया।

हिटलर ने जर्मन जनता को उत्साहित करते हुए जर्मनी के उद्धार के लिए उनके समक्ष 25 सूत्री कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इसके माध्यम से उसने राष्ट्रीय समृद्धि एवं राष्ट्रीय एकता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को प्रकट किया। इसमें पूर्ण रोजगार पर बल दिया गया, साम्यवादी खतरे से बचाने का पूर्ण आष्वासन दिया गया तथा गणतंत्र के लिए पीठ पीछे धोखा देने वाले के रूप में व्यक्त किया गया। उसके इस कार्यक्रम व घोषणा से साधारण जनता के

मन में यह विश्वास पैदा हो गया कि नाजी पार्टी उनकी गरीबी दूर करने के लिए वचनबद्ध है। उसे समृद्ध जमींदार उद्योगपति व पूँजीपति वर्ग का भी समर्थन इसके द्वारा प्राप्त हो गया। हिटलर के समाजवादी रूझान से श्रमिक वर्ग आकर्षित हो गया। भूमि सुधार कार्यक्रम के द्वारा उसने किसानों को आकर्षित किया।

हिटलर वर्साय की संधि का विरोधी था, अतः जर्मन देशभक्त और भूतपूर्व सैनिक अफसर नाजी पार्टी के कट्टर समर्थन बन गए। हिटलर अपने को देश का फ्यूरर (नेता) कहता था। उसके अनुयायी बाँह पर स्वस्तिक का चिह्न लगाते थे।

हिटलर और उसकी नाजी पार्टी ने अपने सक्षम संगठन व कुशल प्रचार तंत्र के जरिए 1924 के चुनाव में 6. 5% जर्मन–जनता का विश्वास प्राप्त कर अपनी पार्टी की उपस्थिति दर्ज कर दी।

इन्हीं परिस्थितियों में जब 1932 में जर्मन संसद का चुनाव हुआ तो उसमें नाजी दल हार के बावजूद हिडेनबर्ग जैसे सम्मानित व्यक्ति के विरूद्ध जबरदस्त उपस्थिति दर्ज की और उसे हिटलर को प्रधानमंत्री पद के लिए आमंत्रित करने को मजबूर कर दिया।

अंततः 1933 में हिटलर ने राष्ट्रपति हिडेनबर्ग की उपस्थिति में जर्मनी के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ग्रहण किया। शपथ ग्रहण 30 जून, 1933 के दिन हिटलर के नाजी स्वयंसेवकों ने बर्लिन में वि"ााल जुलूस निकालकर अपने विरोधियों को अपनी शक्ति का अहसास कराया। परंतु 1934 ई. में हिडेनवर्ग की मृत्यु हो जाने के बाद हिटलर ने राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री (चांसलर) के पद आपस में मिला दिए और उस पद पर स्वयं आसीन हो गया और फ्यूरर (नेता) की उपाधि ग्रहण कर लिया। इस तरह वह जर्मनी में सर्वषक्तिमान बन गया और उसने ताना"ााही अधिकार ग्रहण कर लिया। हिटलर का नारा था – 'एक राष्ट्र, एक दे"ा, एक नेता'।

6.4.3 नाजीवाद के उदय के कारण (Causes of Rise of Nazism)

जर्मनी में नाजीवाद का उदय प्रथम वि"वयुद्ध के बाद जर्मनी में उत्पन्न सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक समस्याओं के वि"ोष संदर्भ में हुआ था। इसके पीछे कई कारण थे। इन कारणों का विवरण निम्न प्रकार है –

1. अपमानजनक वर्साय–संधि – वर्साय की संधि की शर्ते जर्मनी के लिए अपमानजनक थी। संधि के निर्णयों के अनुरूप वि"वयुद्ध के लिए जर्मनी को उत्तरदायी ठहराते हुए इसकी क्षतिपूर्ति के लिए एक बहुत बड़ी कीमत देने को विव"ा किया गया। उसकी सैनिक शक्ति सीमित कर दी गई तथा उसके अनेक उपनिवे"ा भी छीन लिए गए। इस कारण प्रत्येक जर्मन वर्साय की संधि को लेकर घृणा व आक्रो"ा के भाव से भरा था। हिटलर जन–भावना के मनोविज्ञान को समझते हुए अपने भाषणों में इस संधि की कड़ी आलोचना किया करता था। अतः सभी जर्मन उत्साहित होकर उसका साथ देने को तैयार हो गए और नाजीवाद को प्रोत्साहन मिला।

2. आर्थिक संकट – वर्साय की संधि के बाद जर्मनी की आर्थिक व्यवस्था बुरी तरह लड़खड़ा गयी थी। वर्साय की संधि ने उसे पंगु बना दिया। उसके अधिकां"ा उपनिवे"ाों पर कब्जा कर लिया गया था। जर्मनी में व्यापारिक व वाणिज्यिक गतिविधियाँ सीमित हो गयी थीं। उद्योग बंद होने की कगार पर पहुँच गये थे। मजदूरों की छटाई की जा रही थी। इस कारण बेरोजगारों की संख्या दिन–ब–दिन बढ़ रही थी। मजदूर संगठित हो रहे थे और साम्यवाद का प्रभाव बढ़ता जा रहा था। ऐसे ही परिस्थितियों में जर्मनी की जनता में अपनी आर्थिक समस्याओं के समाधान को लेकर नाजी दल के प्रति वि"वास जगा, जिसके पास प्रत्येक वर्ग के लिए कोई–न–कोई कार्यक्रम था।

3. पंगु राजनीतिक व्यवस्था – युद्ध के बाद जर्मनी की राजनीतिक व्यवस्था जो वाइमर रिपब्लिक के नाम से जानी जाती है जर्मनी की तात्कालिक समस्याओं के समाधान को पूरी तरह असफल रही थी। इसके अतिरिक्त वाइमर रिपब्लिक के ऊपर वर्साय की संधि पर हस्ताक्षर करने का आरोप भी लगा था। जर्मनी के सेनापतियों का मानना था कि यह हस्ताक्षर राजनीतिज्ञों के समर्पण का परिणाम था। वर्साय की अपमानजनक संधि का हवाला देते हुए हिटलर राष्ट्रीय स्वाभिमान की बात को सामने रखकर जर्मन नागरिक का हृदय जीत लिया। बाइमर रिपब्लिक उदारवादी विचारधराओं में वि"वास करता था जो अंततः पूँजीवादी व्यवस्था से जुड़ा था। इस गणतंत्र में बहुत सारे असामाजिक तथा परस्पर विरोधी तत्व शामिल हो गए थे, जिससे यह गणतंत्र समुचित ढंग से कार्य नहीं कर पा रहा था और इसके प्रति जर्मन जनता में असंतोष बढ़ता जा रहा था। इस अंसतोष की स्थिति में नाजीवाद को प्रोत्साहन मिला।

4. साम्यवाद का उदय – वर्साय की संधि के बाद लड़खड़ाती आर्थिक व पंगु राजनीतिक व्यवस्था के माहौल में जर्मनी में साम्यवाद एक शक्ति के रूप में उभर रहा था। साम्यवादी विचारधारा को जर्मनी का बुर्जुआ वर्ग सहित पूँजीपति व उद्योगपति सभी राष्ट्रीयता के लिए खतरनाक मानते थे। अतः वे लोग इसके विरूद्ध किसी भी सीमा तक जाने को तैयार थे। हिटलर ने जनता को साम्यवाद के विनाशकारी परिणामों से अवगत कराया। अतः जर्मनी के जन–सामान्य साम्यवादी चंगुल से बचने के लिए नाजी दल में शामिल होने लगे।

5. यहूदी–विरोधी भावना – जर्मनी के मध्यमवर्ग तथा बेकार लोग यहूदी विरोधी थे, क्योंकि जर्मनी की सिविल सेवा, उद्योग, व्यापार, वाणिज्य तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी में यहूदियों का ही वर्चस्व था। हिटलर ने जनता के इस मनोभाव का पूरा फायदा उठाया। उसने यहूदियों को प्रथम वि"वयुद्ध में जर्मनी की हार का ही नहीं बल्कि जर्मनी की दुर्दशा के लिए भी उत्तरदायी ठहराया। हिटलर के इन विचारों का सेना, उद्योगपतियों, जमींदारों तथा गणतंत्र विरोधी राजनीतिज्ञों पर बड़ा प्रभाव पड़ा। वे सभी हिटलर को जर्मनी का भाग्यविधाता समझने लगे।

6. मजदूरों व बड़े किसानों का समर्थन – मजदूरों को नाजी दल से यह आ"वासन मिला कि बड़े उद्योगों का राष्ट्रीयकरण कर लिया जाएगा। बड़े किसानों, जिन्हें जर्मनी में जुंकर वर्ग कहा जाता था को यह आ"वासन मिला कि भूमि का सामूहीकरण नहीं किया जाएगा। इस कारण इस वर्ग ने नाजी पार्टी को अपना समर्थन प्रदान किया।

उपर्युक्त कारणों के अतिरिक्त हिटलर द्वारा जर्मन की सैनिक मनोवृत्ति को उभारकर तैयार किया गया स्वयंसेवक दल ने भी जोरदार तरीके से नाजीवाद को प्रोत्साहन दिया। वर्साय की संधि के द्वारा जर्मन की इस सैनिक मनोवृति को दबाया गया था। इस मनोभाव को प्रबलता से उभारकर नाजीवाद को आगे बढ़ाने में हिटलर ने इसका पूरा फायदा उठाया। इन सबसे ऊपर हिटलर की सफलता का सर्वप्रमुख कारण उसका आकर्षक और प्रभावोत्पादक व्यक्तित्व था। उसने जर्मन जाति के मनोभाव को समझते हुए जनमत को अपने पक्ष में करने में सफल रहा। जनमत को अपने पक्ष में करने के लिए उसने नारा बुलंद किया कि 'वर्साय के संधिपत्र को फाड़ डालो'।

6.4.4 हिटलर की नीति (Policy of Hitler)

सत्ता प्राप्ति के बाद हिटलर ने अपने आपको मजबूती से जर्मनी में स्थापित करने के लिए कई गृह–नीति (Domestic Policy) व विदेश नीति (Foreign Policy) लागू किये।

अपनी गृह नीति के अंतर्गत सत्ता प्राप्त करते ही उसने चुनाव के बदले जनमत संग्रह पर बल देते हुए सत्ता व राजनीति का नाजीकरण करना आरंभ कर दिया। 23 फरवरी, 1933 को बाइमर संविधान में सं"ाोधन करके सामान्य नागरिक स्वतंत्रता को समाप्त कर दिया। राज्य में चलने वाले गुप्त–से–गुप्त घटनाओं का पता लगाने के लिए उसने 'गेस्टापो' नाम से गुप्तचर पुलिस का संगठन किया था।

साम्यवादी दल व इनके नेताओं को समाप्त करने के लिए उसने उचित व अनुचित हर तरीकों का इस्तेमाल किया। उनके ही नाजी दल के जो सदस्य समाजवादी विचारधारा में वि"वास रखते थे, उनको भी उसने रातो–रात गिरफ्तार करके फांसी पर लटका दिया। राष्ट्रपति हिंडेनबर्ग की मृत्यु के बाद हिटलर सेना का सर्वोच्च कमांडर भी बन गया। अब वह जर्मनी का एकाधिकार नेता बन गया था। सेना उसके प्रति वफादारी की शपथ लेती थी।

हिटलर परिस्थितियों को समझने में बड़ा कु"ाल था। जब उसको लगा कि निः"ास्त्रीकरण नीति त्यागने से बात बनेगीतो उसका त्याग करके उसने सेना का समर्थन प्राप्त कर लिया। सेना ने अपने विरोधी कारकों को हटाने व नाजी वफादारों की नियुक्ति के लिए उसने सेना में शुद्धीकरण की नीति चलाई।

तत्कालीन जर्मनी की सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी को देखते हुए इसके समाधान के लिए हिटलर ने निः"ास्त्रीकरण के स्थान पर पुन"ास्त्रीकरण की नीति पर बल दिया। इन सैनिकों की नियुक्ति सार्वजनिक कार्यों में भी की गयी। इससे बेरोजगारी की समस्या पर बहुत हद तक अंकु"ा लगाया जा सका। बेरोजगारी की समस्या के समाधान के लिए उसने प्र"ाासन से यहूदियों के बहिष्कार की नीति को अपनाया। उसने एक विधि पारित कर सभी

यहूदियों को सिविल सेवा से वंचित कर दिया। यहूदी व्यावसायिक वर्ग के विरूद्ध राष्ट्रीय बहिष्कार की नीति अपनाई गयी। इसके अंतर्गत विद्यालयों, न्यायालयों एवं अस्पतालों से यहूदी छात्रों, वकीलों और डॉक्टरों को पदच्यूत कर दिया गया। हिटलर यही तक नहीं रूका उसने 1935 के न्यूरेमबर्ग कानून के द्वारा यहूदियों को नागरिकता से वंचित कर दिया तथा साथ–ही गैर–यहूदियों के साथ उनके वैवाहिक संबंधों को प्रतिबंधित कर दिया।

1938 में यहूदियों के विरूद्ध दंगे छिड़ गए और योजनाबद्ध तरीके से उनकी हत्या की जाने लगी। इस प्रकार से उत्पन्न खाली स्थानों को जर्मनवासियों से भरकर उनके लिए बड़े पैमाने पर रोजगार उपलब्ध कराने की खतरनाक नीति भी हिटलर ने अपनायी।

प्रथम वि"वयुद्ध के बाद जर्मनी के सामने प्रमुख समस्याओं में आर्थिक विकास का अवरूद्ध होना भी एक प्रमुख समस्या थी। हिटलर ने इसके लिए 1934 में प्रथम चार वर्षीय योजना की नीति की शुरूआत की। जिसका मुख्य उद्देष्य था जर्मनी की अर्थव्यवस्था को सक्षम बनाना। इस योजना हेतु धन की प्राप्ति के लिए उसने कर अधिमार बढ़ाए, कुछ उपकर भी प्रारंभ किए तथा मूल्य और लाभ पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित करने की नीति अपनाई। आर्थिक विकास के नाम पर समस्त श्रमिक संबंधों को राज्य द्वारा संचालित करने की नीति पर बल दिया गया। साथ ही श्रमिकों पर नियंत्रण स्थापित करते हुए हड़ताल को पूर्ण रूप से प्रतिबंधित कर दिया। कृषि के विकास के लिए कृषि–सब्सिडी की व्यवस्था की गयी। सब्सिडी की व्यवस्था के द्वारा एक वि"ाल एवं स्वस्थ ग्रामीण जनसंख्या के निर्माण के लक्ष्य को प्राप्त करना उसका मुख्य उद्दे"य था।

हिटलर की नाजी विचारधारा में 'रक्त एवं मिट्टी' को राष्ट्र की शक्ति के रूप में प्रचारित व मानने की नीति पर बल दिया गया।

हिटलर ने मानव के निजी जीवन में धर्म की महत्ता को स्वीकार करते हुए धर्म और नाजी विचारधारा में तालमेल बिठाने का प्रयास किया। अपनी इस नीति के तहत हिटलर ने 1933 में रोमन कैथोलिक चर्च के साथ एक समझौता किया, जिसके तहत आर्थिक सुविधाओं के बदले में जर्मनी की नाजी सरकार को मान्यता प्रदान कर दी गयी।

हिटलर ने अपने आपको राज्य के रूप में स्थापित करने के लिए कलाकारों एवं लेखकों पर भी नियंत्रण स्थापित करने की नीति चलायी। उन्हें नाजी दल और नाजी प्रचार का एक हिस्सा बना दिया गया। उस समय के लेखकों ने इस बात पर जोर दिया कि व्यक्ति के हित की तुलना में राज्य के हित सर्वोपरि है। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए यह जरूरी है कि वह अपने नेता के बनाए गए मार्ग का अनुसरण करे। हिटलर की यह नीति पा"चात्य संवैधानिक एवं उदारवादी परम्परा के विरूद्ध थी। इसलिए कुछ पश्चिमी आलोचकों का मानना है कि नाजी दल ने फ्रांस की क्रांति का अंत कर दिया।

हिटलर इस बात को अच्छी तरह से समझता था कि युद्धोत्तर जर्मनी की समस्याओं का मूल कारण आंतरिक नहीं बल्कि बाह्य था। अतः आंतरिक समस्याओं से एक हद तक उबरने के बाद हिटलर ने अपना ध्यान विदे"ा नीति पर केन्द्रित किया। उसने विदे"ा नीति के प्रमुख सिद्धांत निम्न प्रकार थे –

1. जर्मनी के राष्ट्रीय स्वाभिमान व गौरव को पुनर्स्थापित करने के लिए वर्साय की संधि को भंग करना।

2. सारी जर्मन जातियों को संगठित करके वि"ााल जर्मन राज्य का निर्माण करना। इसमें पड़ोसी देशों की जर्मन जनता को भी शामिल करने की उसकी नीति थी।

3. जर्मन साम्राज्य का विस्तार करना। इस नीति के अंतर्गत पूर्वी क्षेत्र में यूराल पर्वत तक का भू–भाग प्राप्त करना था ताकि भविष्य में अतिरिक्त जर्मन, जनसंख्या को बसाया जा सके।

4. जर्मनी के साथ किए गए अन्यायों का बदला लेना। इस नीति के तहत वर्साय की संधि द्वारा लागू किए गए सैनिक निःशस्त्रीकरण को शस्त्रीकरण में बदलना था जिससे जहाँ जर्मनी को एक और सैन्य दृष्टि से मजबूत करना था, वहीं दूसरी ओर जर्मनी की बेरोजगारी समस्या से बाहर निकालना था।

5. वि"व पर अपनी प्रभुता स्थापित करना।

अपनी उपर्युक्त सिद्धांतों को प्राप्ति के लिए हिटलर ने 1953 ई. में राष्ट्रसंघ के तत्त्वाधान में हो रहे निरस्त्रीकरण सम्मेलन से जर्मन प्रतिनिधियों को वापस बुला लिया और राष्ट्रसंघ से संबंध–विच्छेद कर लिया।

वर्साय की संधि की शर्तों को मानने से उसने इन्कार कर दिया क्योंकि वह मानता था कि यह जर्मनी के लिए कलंक है।

आस्ट्रिया एवं चेकोस्लोवाकिया के एक क्षेत्र में जर्मन जाति को अधिकता का हवाला देते हुए हिटलर ने इन पर आक्रमण करके इन्हें अपने अधिकार में ले लिया।

रोम–बर्लिन–टोकियो धुरी के साथ मिलकर वि"व में जर्मनी की प्रभुता स्थापित करने की नीति को आगे बढ़ाने का प्रयास किया।

अपनी इसी प्रभुता को मजबूत करने के लिए उसने अगस्त, 1939 में रूस के साथ अनाक्रमण संधि की जिसमें यह तय हुआ कि जर्मनी और रूस एक दूसरे पर आक्रमण नहीं करेंगे।

1 सितम्बर, 1939 को हिटलर ने पोलैंड से डेजिंग बंदरगाह तथा बालिस्ट सागर तक पहुंचने के लिए गलियारे के माँग की। जिसे पोलैंड द्वारा ठुकराये जाने पर उसने पौलेड पर आक्रमण कर दिया। इसके साथ द्वितीय वि"वयुद्ध शुरू हो गया।

6.5 प्रगति समीक्षा (Check your Progress):

भाग (क) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks.)

(i) फासिज्म का उदय .... देष में हुआ था।

(ii) फासिस्टों का नेता .... था।

(iii) .... ई. में हिटलर जर्मनी का चांसलर बना।

(iv) नाजीवाद का उदय .... दे"ा में हुआ था।

(v) .... द्वारा 1921 ई. में ने"ानल सो"ालिस्ट जर्मन वर्कस पार्टी की स्थापना की गयी थी।

(vi) मुसोलिनी ने जनरल फ्रैंको की ....की सत्ता पर अधिकार करने में मदद की थी।

(vii) जर्मनी ने .... ई. में राष्ट्रसंघ से संबंध विच्छेद कर लिया था।

(viii) हिटलर ने 1939 ई. में .... के साथ अनाक्रमण संधि की थी।

(ix) .... ने नारा दिया 'वर्साय की संधि–पत्र को फाड़ डालो'।

(x) .... पार्टी के युवक सदस्य को Black Shirt (काली कमीज) भी कहा जाता था।

भाग (ख) सत्य–असत्य कथन पर आधारित प्रश्न (True-False Statements bases questions)

(i) वियना शांति सम्मेलन से उत्पन्न असंतोष और शून्यता की स्थिति ने फासीवाद जैसी वैकल्पिक विचारधारा के उत्पन्न होने का मार्ग प्र"ास्त कर दिया। ( )

(ii) फासीवाद को पूँजीवाद और साम्यवाद के विकल्प के तौर पर प्रस्तुत किया गया था। यही कारण है कि यह प्रजातंत्र, संसद, राष्ट्रीय झंडा तथा राजनीति में आम जनता की भागीदारी की आलोचना करता है। ( )

(iii) वि"वास, आज्ञापालन और संघर्ष (Trust, Obey & Fight) के नारों के साथ मुसोलिनी के नेतृत्व में फासीवादी दल पूरे इटली और उसके तंत्र पर हावी हो गया। ( )

(iv) विरोधियों के दमन के लिए मुसोलिनी ने ओवरा (OVRA) नामक गुप्तचर संगठन का गठन किया था। ( )

(v) हिटलर ने गेस्टापो नाम से गुप्तचर पुलिस का गठन किया था। ( )

(vi) हिटलर का जन्म स्वीट्जरलैंड के एक गाँव में 1889 ई. में हुआ था। ( )

(vii) 1927 के तिराना संधि द्वारा स्पेन इटली का एक संरक्षित राज्य बन गया। ( )

(viii) मुसोलिनी ने इटली के बहुसंख्यक कैथोलिक जनता की भावनाओं का दोहन करने के लिए रोम के तात्कालिक पोप पियस–XI से एक समझौता कर लिया, जिसके तहत मुसोलिनी ने वेटिकन सिटी को एक स्वतंत्र राज्य मान लिया और उसे समुचित मुआवजा भी दिया। बदले में पोप ने इटली को मान्यता प्रदान कर दी। ( )

(ix) जर्मनी में बड़े किसानों को जुंकर वर्ग कहा जाता था। ( )

(x) इटली में मुसोलिनी ने न्यूरेमबर्ग कानून के द्वारा यहूदियों को नागरिकता से वंचित कर दिया था। ( )

6.6 सारांश / संक्षिप्तिका (Summary)

- प्रथम वि"वयुद्ध के बाद वि"ोष परिस्थिति वष दो दे"ाों में ताना"ाही ने उग्र रूप धारण कर लिया।
- इसमें एक था इटली। वहाँ फासीवाद / फासिस्टवाद का उदय हुआ।
- इनमें दूसरा दे"ा जर्मनी था, जहाँ नाजीवाद का उदय हुआ था।
- फासीवाद प्रजातंत्र का विपरीत अर्थ रखता है और ताना"ाही का परिचायक है।
- फासीवाद की वि"ोषताएँ हैं –
  - (i) राज्य में व्यक्ति का महत्त्व नहीं
  - (ii) जनतंत्र–विरोधी
  - (iii) शांति का विरोधी
  - (iv) कमजोर राज्यों के अस्तित्व में वि"वास नहीं
  - (v) आतंक का शासन
  - (vi) समाजवाद विरोधी
  - (vii) उग्र विदे"ानीति का समर्थक
- इटली में फासीवाद / फासिस्टवाद के उदय के कारण –
  - (i) प्रथम वि"वयुद्ध के बाद असंतुष्टि
  - (ii) इटली की आंतरिक स्थिति
  - (iii) सरकार की उदासीनता
  - (iv) समाजवादियों की गतिविधियाँ
  - (v) मुसोलिनी का व्यक्तित्व

- मुसोलिनी ने फासिस्ट/फासी पार्टी की स्थापना कर अपनी संपूर्ण शक्ति उसे शक्ति"ााली बनाने में लगा दी। शीघ्र ही उसके नेतृत्व में फासिस्टो की सरकार इटली में सत्तारूढ़ हो गई।
- मुसोलिनी के आंतरिक कार्य

  (i) अधिनायकवाद की स्थापना

  (ii) आर्थिक सुधार

  (iii) ि"ाक्षा–संबंधी सुधार

  (iv) यहूदियों का विरोध
- मुसोलिनी के बाह्य कार्य

  (i) विजय अभियान– फ्यूम नगर, अल्बानिया, इथियोपिया, अबीसीनिया आदि पर विजय

  (ii) स्पेन की मदद

  (iii) विभिन्न दे"ाों में संधियाँ
- फासिस्ट नेता के रूप में मुसोलिनी का निष्कर्ष यह है कि मुसोलिनी ही राष्ट्र बन गया और राष्ट्र मुसोलिनी के व्यक्तित्व में समाहित हो गया।
- मुसोलिनी ने नारा दिया –

  (i) 'वि"वास करो', 'आज्ञा मानो' और युद्ध करो' (Believe ! Obey ! Fight !)

  (ii) Action, Action, Action
- नाजीवाद फासिज्म का जर्मन रूप था।
- इसका विकास 1930 के दषक में जर्मनी में हुआ था।
- हिटलर के नेतृत्व में नाजी दल ने 1933 में जर्मनी की सत्ता पर अधिकार कर लिया था।
- 1933 से 1945 तक का जर्मनी का इतिहास और कुछ नहीं बल्कि नाजीवाद का इतिहास है।
- हिटलर की आत्मकथा का नाम था – Mein Kamf (मेरा संघर्ष)
- नाजीवाद की वि"ोषताएँ –

  (i) महान नेता का गुणगान

  (ii) जनतंत्र का विरोधी

  (iii) व्यक्ति का स्थान गौण

  (iv) उग्र राष्ट्रवाद का समर्थक

  (v) लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बल प्रयोग में वि"वास

(vi) यहूदियों के प्रति घृणा

- हिटलर का उत्कर्ष –

  प्रथम वि"वयुद्ध के बाद जर्मनी की आर्थिक स्थिति जर्जर थी। ऐसी ही स्थिति में हिटलर ने राजनीतिक क्षेत्र में पदार्पण किया। उसने देष की स्थिति को सुधारने के लिए नाजी पार्टी की स्थापना की। शीघ्र ही वह जर्मनी का सर्वेसर्वा बन गया।

- नाजीवाद के उदय के कारण –

  (i) वर्साय की अपमानजनक संधि

  (ii) आर्थिक संकट

  (iii) साम्यवाद का उदय

  (iv)यहूदी–विरोधी भावना

  (v) सैनिक प्रवृत्ति

  (vi) हिटलर का व्यक्तित्व

- हिटलर की गृहनीति –

  (i) अधिनायकतंत्र की स्थापना

  (ii) गेस्टापो का संगठन

  (iii) आर्थिक स्थिति में सुधार

  (iv)यहूदियों पर अत्याचार

  (v) एकरूप ि"ाक्षण प्रणाली

  (vi) अनुकूल जनमत के लिए प्रयास

- हिटलर की विदे"ा नीति –

  (i) राष्ट्रसंघ से अलग होना

  (ii) वर्साय की संधि का अंत

  (iii) आस्ट्रिया एवं चेकोस्लावाकिया पर अधिकार

  (iv) रोम–बर्लिन–टोकियो धुरी

  (v) रूस के साथ समझौता

  (vi) पौलेंड पर आक्रमण

6.7 संकेत–सूचक (Key Words)

- अध्ययनोपरांत – अध्ययन के बाद
- अभिजात्य/कुलीन– उच्च, श्रेष्ठ
- युद्धोपरांत – युद्ध के बाद
- अभ्युदय – उदय, विकास
- बुर्जुआ – यूरोप में 18वीं सदी में इस वर्ग को पूँजीपति और पूँजी से संबंधित संस्कृति पर नियंत्रण रखने वाला समझा जाता था।

6.8 स्वं–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test (SAT)

(क) बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Based Questions)

(i) मुसोलिनीइ की पार्टी का नाम था ....

(क) नाजी पार्टी (ख) फासिस्ट पार्टी

(ग) समाजवादी पार्टी (घ) साम्यवादी पार्टी

(ii) फासीवाद विचारधारा .... में वि"वास करता था।

(क) सर्वसत्तावाद (ख) उग्र राष्ट्रवाद

(ग) नस्लवाद (घ) इनमें से सभी

(iii) बेनितो मुसोलिनी के नेतृत्व में फासीवाद व्यवस्था का आरम्भ इटली में .... ई. में हुई थी।

(क) 1921 (ख) 1922 (ग) 1923 (घ) 1933

(iv) .... सम्मेलन से उत्पन्न असंतोष और शून्यता की स्थिति ने फासीवाद जैसी वैकल्पिक विचारधारा को जन्म दिया।

(क) वियना (ख) पेरिस (ग) रोम (घ) बर्लिन

(v) स्पेन में गृहयुद्ध कब आरंभ हुआ ?

(क) 1933 (ख) 1941 (ग) 1936 (घ) 1938

(vi) .... ई. में हिटलर ने जर्मनी की सरकार का तख्ता पलटने का प्रयास किया।

(क) 1921 (ख) 1922 (ग) 1923 (घ) 1924

(vii) फ्यूरर (नेता) .... की उपाधि थी।

(क) हिंडेन बर्ग (ख) हिटलर

(ग) मुसोलिनी (घ) इनमें से कोई नहीं

(viii) हिटलर ने .... कानून के द्वारा यहूदियों को नागरिकता से वंचित कर दिया था।

(क) न्यूरेमबर्ग कानून (ख) शुद्धीकरण कानून

(ग) रक्त एवं मिट्‌टी कानून (घ) सामाजिक बहिष्कार कानून

(ix) .... ई. के वि"वव्यापी आर्थिक संकट ने जर्मनी को जर्जर बना दिया था।

(क) 1929 (ख) 1931 (ग) 1933 (घ) 1935

(x) .... ई. में हिटलर जर्मनी का ताना"ाह बन गया।

(क) 1933 (ख) 1934 (ग) 1935 (घ) 1936

(ख) निबंधात्मक / दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Essay/Long Answer based Questions)

1. इटली में फासिस्टवाद / फासीवाद के उदय के कारणों पर प्रका"ा डालें।

   (Highlit the causes of Rise of Fascism in Italy)

2. इटली में मुसोलिनी के उदय का विवरण दें।

   (Give details of Rise of Mussoline in Italy.)

3. जर्मनी में नाजीवाद के उदय के कारणों की विवेचना कीजिए।

   (Discuss the Causes of Rise of Nazism in Germany.)

4. नाजीवाद की विजय के क्या परिणाम हुए ?

   (What were the consequences of Victory of Nazism.)

(ग) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer based Questions)

1. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें। (Write Short Notes on the following)

(i) फासीवाद (Fascism)

(ii) नाजीवाद (Nazism)

(iii) फासीवाद की प्रमुख वि"ोषताएँ (Important Characteristics of Fascims)

(iv) नाजीवाद की प्रमुख विशेषताएँ (Important Characteristics of Nazism)

(v) मुसोलिनी का उदय (Rise of Mussolini)

(vi) मुसोलिनी की गृह नीति (Domestic Policy of Mussolini)

(vii) मुसोलिनी की विदे"ा नीति (Foreign Policy of Mussolini)

(viii) हिटलर की गृह नीति (Domestic Policy of Hitler)

(ix) हिटलर/नाजी दल की विदे"ा नीति (Foreign Policy o9f Hitler/Nazi Party)

(x) जर्मनी में नाजीवाद के मुख्य परिणाम (Important results of Nazism in Germany)

6.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your Progress)

6.5 (क) उत्तर –

(i) इटली (ii) मुसोलिनी (iii) 1934 ई. में (iv) जर्मनी

(v) हिटलर (vi) स्पेन (vii) 1933 ई. में (viii) रूस

(ix) हिटलर (x) फासिस्ट पार्टी

6.5 (ख) उत्तर –

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) सत्य (iv) सत्य

(v) सत्य (vi) असत्य (vii) असत्य (viii) सत्य

(ix) सत्य (x) असत्य

6.8 (क) उत्तर –

(i) ख (ii) घ (iii) ख (iv) ख

(v) ग (vi) ग (vii) ख (viii) क

(ix) क (x) ख

6.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

- वि"व इतिहास
  1500–1950
  जैन एवं माथुर
  जैन प्रका"ान मंदिर, जयपुर–3

- आधुनिक विश्व का इतिहास
  डॉ. ए.सी अरोड़ा व डॉ. आर. एस. अरोड़ा
  New Millennium Edition 2007
  Pardeep Publications – Jalandhar (India)
- संक्षिप्त इतिहास
  NCERT सार
  (कक्षा VI-XII सहित)
  विश्व इतिहास सहित
  महेश कुमार बर्णवाल
  Cosmos Publication

B.A. IIIrd Year Semester VIth	
HIST – 304	**Author : HARI SINGH**
LESSION- 7	**UPDATED: MOHAN SINGH BALODA**
द्वितीय विश्व युद्ध (**WORLD WAR - II**)	

अध्याय संरचना (Lesson Structure)

7.1 अधिगम उद्देश्य (Learning objectives)

7.2 परिचय (Introduction)

7.3 विषय- वस्तु के मुख्य बिंदु (Main Body of Text)

7.3.1 द्वितीय विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि

7.3.2 द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण

7.3.3 द्वितीय विश्वयुद्ध की घटनाएं

7.4 मुख्य पाठ के आगे का भाग (Further Main Body of the Text)

7.4.1 द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रभाव एवं परिणाम

7.5 स्वयं प्रगति जांच (Check Your Progress)

7.6 सारांश (Summary)

7.7 संकेतक शब्द (Keywords)

7.8 स्वयं मूल्यांकन परीक्षण (Self Assessment Test)

7.9 अपनी प्रगति की जांच हेतु उत्तर देखें (Answer to Check Your Progress)

7.10 संदर्भ ग्रंथ / निर्देशित पुस्तकें (Refrences / Suggested Readings)

7.1 अधिगम उद्देश्य (Learning objectives)

प्रस्तुत अध्याय पढ़ने के उपरांत आप निम्न योग्यताएं अर्जित कर पाएंगे।

- द्वितीय विश्व युद्ध के संप्रत्यय की समझ का विकास कर पाएंगे।

- द्वितीय विश्व युद्ध के उद्गम होने के कारणों को जान जाएंगे।
- द्वितीय विश्व युद्ध के स्वरूप को समझ पाएंगे।
- विश्व युद्ध की प्रमुख घटनाओं के बारे में जान जाएंगे।
- द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामों को जान पाएंगे।

7.2 परिचय (Introduction)

पेरिस के शांति सम्मेलन की समाप्ति पर महा शक्तियों के प्रतिनिधियों ने आशा व्यक्त की थी कि भविष्य में पुरानी त्रुटियों को दोहराया नहीं जाएगा और कोई भी राष्ट्र पाश्विक शक्ति का स्थान ग्रहण नहीं करेगा, किंतु यह सभी आशाएं पूर्णत: मिथ्या प्रमाणित हुई, प्रथम विश्व युद्ध के बाद जो घटना चक्र चला, वह विश्व को दूसरे महायुद्ध की ओर ले चला। फ्रांस द्वारा जर्मनी से क्षतिपूर्ति वसूल करने की कठोर नीति, विश्वव्यापी आर्थिक मंदी , जापान की साम्राज्यवादी नीति, मुसोलिनी की साम्राज्यवादी लिप्सा और जर्मनी में हिटलर की तानाशाही शक्ति का विकास आदि कुछ घटनाएं ऐसी थी जिन्होंने 1919 में स्थापित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को घातक आघात पहुंचाया। इंग्लैंड ने तुष्टिकरण की नीति अपनाकर आक्रामक राज्यों को अधिक प्रोत्साहित किया। फलस्वरूप अंतरराष्ट्रीय स्थिति भयावह हो गई। 1936 के बाद तो युद्ध के बादल चारों ओर मंडराने लगे और अंत में 1 सितंबर 1939 को द्वितीय विश्व युद्ध आरंभ हो गया। प्रथम विश्व युद्ध के ठीक 20 वर्ष पश्चात जर्मनी द्वारा पोलैंड पर आक्रमण करने के कारण द्वितीय महायुद्ध का आगाज हुआ। सम्भवतः इन 20 वर्षों में ही महायुद्ध की पृष्ठभूमि तैयार हुई।

7.3 विषय- वस्तु के मुख्य बिंदु (Main Body Of Text)

7.3.1 द्वितीय विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि

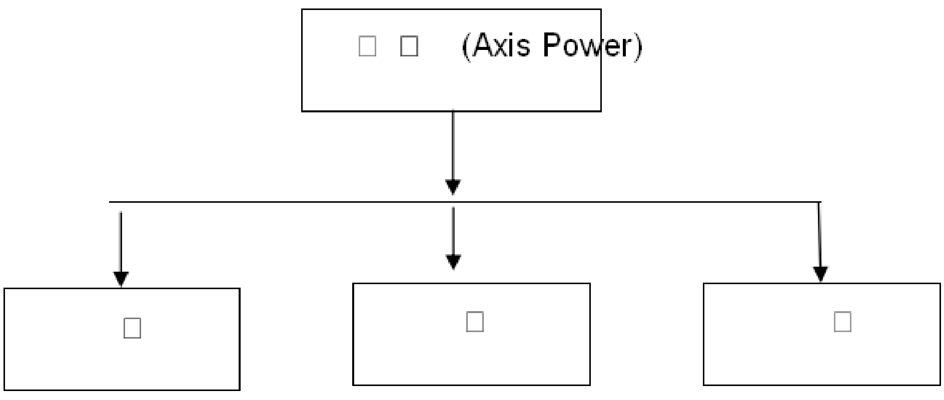

20 वर्षों की शांति के बाद पहली बार सितंबर ,1939 को युद्ध की अग्नि ने फिर से सारे यूरोप को लपेट लिया और संघर्ष विश्वव्यापी हो गया। इसमें कोई शंका नहीं है कि युद्ध की संभावनाएं 1919 के पेरिस शांति सम्मेलन में शुरू हो गई थी एवं वर्साय की ' आरोपित' एवं ' अपमानजनक संधि' पर जर्मनी के प्रतिनिधियों ने बड़ी निस्सहाय एवं बाध्यता की स्थिति में हस्ताक्षर किए थे। जर्मन जनता व शासक वर्साय की संधि को एक कलुषित दस्तावेज मानते रहे और उसके द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों को समाप्त करना अपना पुनीत कर्तव्य समझते रहे। प्रोफेसर ए०जे० पी० टेलर ने लिखा है की " प्रथम विश्व युद्ध में जर्मनी की समस्या को न केवल अनसुलझा छोड़ दिया ,वरन अंत में उसे अधिक प्रखर बना दिया।" फ्रांस की 40 मिलियन जनसंख्या के विरुद्ध 65 मिलियन जनसंख्या वाले जर्मनी को, चाहे उस समय पराजित एवं पद दलित कर दिया गया था, किंतु उसकी कभी भी उपेक्षा नहीं की जा सकती थी। पेरिस की शांति संधि के समय जर्मन प्रतिनिधि एरजबर्जर (Erzberger)ने भी बड़े आत्मविश्वास से कहा था," 60 मिलियन उत्पीड़ित देशवासियों का राष्ट्र कभी मर नहीं सकता।" यथार्थ में दोनों विश्व युद्ध के बीच के काल में ' जर्मनी की समस्या ' यूरोप की सबसे जटिल एवं अशांति कारक बनी रही और अंततोगत्वा प्रमुख रूप से उसी के कारण द्वितीय विश्व युद्ध आरंभ हुआ। फ्रांसीसी इस तथ्य से परिचित थे की जर्मनी अपने राष्ट्रीय अपमान का बदला लेने के लिए पुन: आक्रमण करेगा। फिर भी, जर्मनी के प्रति उचित व्यवहार नहीं किया गया। फ्रांस द्वारा जर्मनी से कठोरता पूर्वक क्षतिपूर्ति की राशि वसूल करने की नीति ने जर्मनी के आक्रोश को बढ़ाने में सहयोग दिया। फ्रांस का यह दुर्भाग्य रहा कि उसके युद्ध कालीन मित्रों में से अमेरिका शनैः शनैः नि:संगता (Isolationism) के नीति की ओर अग्रसर होता गया। इटली शांति संधियों से असंतुष्ट होकर संशोधन वादियों से जा मिला और इंग्लैंड के साथ उसके दृष्टिकोण और नीतियों में बड़ा भारी परिवर्तन आ गया। जहां फ्रांस जर्मनी को हमेशा के लिए मृत प्राय: बना देना चाहता था, वही इंग्लैंड यूरोप में शक्ति संतुलन बनाए रखने, अपने व्यापार का विकास करने और साम्यवाद के विरुद्ध जर्मनी को एक ढाल के रूप में उपयोग करने के लिए जर्मनी को पुन: समृद्ध देखना चाहता था । दोनों देशों के कूटनीतिक मतभेद जीतने बढ़ते गए, उतना ही जर्मनी को वर्साय संधि की शर्तों में एकपक्षीय संशोधन करने का अवसर मिलता गया।

जर्मनी के साथ-साथ जापान भी पेरिस की शांति संधियों से असंतुष्ट था। उसने भी सैन्यवाद दवारा अपनी प्रसार- वादी नीतियों पर कार्य करना आरंभ कर दिया था। इस समय जापान ने चीन के प्रांत मंचूरिया पर आक्रमण किया और सितंबर, 1931 में जापानियों ने मुकदेन नगर से चीनी सेना को

खदेड़ कर उस पर अपना अधिकार कर लिया। चीन ने जापान के विरुद्ध राष्ट्र संघ में अपील की किंतु जापान ने राष्ट्र संघ के प्रस्ताव की अवहेलना करते हुए अपना विजयी अभियान जारी रखा। फरवरी, 1932 तक जापान ने संपूर्ण मंचूरिया पर अधिकार कर वहां ' मांचुकूओ राज्य' के रूप में अपनी कठपुतली सरकार स्थापित कर दी। जब राष्ट्र संघ ने जापान को दोषी ठहराया तो इसके प्रत्युत्तर में जापान राष्ट्र संघ से पृथक हो गया। यह सामूहिक सुरक्षा प्रणाली पर भयंकर प्रहार था।

इसी समय इटली में मुसोलिनी के राष्ट्रवाद को प्रोत्साहन मिला और उसने अबीसीनिया पर आक्रमण कर दिया।मुसोलिनी अफ्रीका में अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहता था। प्रथम विश्व युद्ध में इटली मित्र राष्ट्रों के साथ रहा था परंतु अब वह परवर्ती युग में अधिकाधिक असंतुष्ट होता चला गया तो जर्मनी की ओर इस का झुकाव अधिक बढ़ता गया। उसी समय रोम- बर्लिन- टोकियो धुरी की स्थापना हुई,जिसके परिणामस्वरूप विश्व के शक्तिशाली देश दो गुटों में बंट गए। एक और धुरी राष्ट्र(Axis Power) और दूसरी और लोकतांत्रिक राज्य(Democratic States)थे। हिटलर राष्ट्र संघ की कमजोरियों को देखता रहा। उसने वर्साय की संधि की अवहेलना कर दी। सैनिकवाद फिर पनपा। जर्मनी की सेनाओं ने राइन के प्रदेश में प्रवेश किया और कॉमिनटर्न विरोधी संधि की। ऑस्ट्रिया के गणतंत्र का अंत और आस्ट्रिया पर जर्मनी का अधिकार एक महत्वपूर्ण घटना थी। 10 अप्रैल, 1938 को ऑस्ट्रिया को जर्मनी में मिला लिया गया।

इसी प्रकार एक महत्वपूर्ण घटना जर्मनी द्वारा चेकोस्लोवाकिया का अंत किया जाना था। यहां 32 लाख जर्मन रहते थे। चेकोस्लोवाकिया के एक प्रदेश सुदतेनलैंड (Sudtenland) में तो जर्मन आबादी 50% से अधिक थी। यह प्रदेश जर्मनी की सीमा पर था।इंग्लैंड और फ्रांस ने इसकी अखंडता बनाए रखने का आश्वासन दिया था परंतु दोनों ने हिटलर को संतुष्ट करने के लिए उसका अंग मान लिया और दोनों ने सुडेटनलैंड का जर्मनी में मिल जाना उचित माना। इससे इंग्लैंड और फ्रांस का सामूहिक सुरक्षा का दायित्व संदिग्ध हो गया। इन देशों की कायरता पूर्ण नीति का पर्दाफाश हो गया । फिर भी, म्युनिख से लौटकर चैंबर्लेन ने कहा था कि "मैं सम्मान सहित शांति लेकर आया हूं।" इस समझौते पर विंस्टन चर्चिल ने कहा था कि "इंग्लैंड और फ्रांस को युद्ध और अपमान में से किसी एक को चुनना था, उन्होंने अपमान को चुना है किंतु वे युद्ध से भी नहीं बच सकेंगे।" चर्चिल की यह भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई इंग्लैंड की " यह नीति आरंभ से ही एक आत्मघाती मूर्खता के अतिरिक्त और कुछ नहीं थी।" जर्मनी ने कूटनीति द्वारा बाल्टिक सागर के प्रदेशों को अपनी ओर मिला लिया

तथा रूस से संधि कर ली। इंग्लैंड चाहता था कि जर्मनी पोलैंड की समस्या को शांतिपूर्वक सुलझाए। फिर भी हिटलर ने पोलैंड के प्रति कठोर नीति अपनाई। हिटलर ने पोलैंड से मांग की कि वह डैंजिग (Danzing)का बंदरगाह तथा समुद्र तट तक पहुंचने के लिए पोलिश गलियारे (Corridor)को जर्मनी को सौंप दें। इस मांग को लेकर हिटलर ने 1 सितंबर, 1939 को प्रातः पोलैंड पर आक्रमण कर दिया। यह द्वितीय विश्व युद्ध का आरंभ था।

7.3.2 द्वितीय विश्व युद्ध के कारण

आकृति - 1

आकृति -1 में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हथियार लिये खड़े सैनिक दिखायी दे रहे है। जर्मनी द्वारा डेजिंग एवं पॉलिश गलियारे की मांग के फल स्वरुप उत्पन्न हुआ संकट द्वितीय विश्व युद्ध का तात्कालिक कारण था किंतु इस युद्ध की पृष्ठभूमि प्रथम विश्व युद्ध के समय से ही तैयार हो रही थी। इस महा युद्ध के कुछ मूलभूत कारण निम्न थे-

i) वर्साय संधि की कठोर शर्तें: प्रथम विश्व युद्ध में जर्मनी की पराजय हुई और उसे वर्साय की अपमानजनक संधि पर हस्ताक्षर करने पड़े। किंतु जर्मनी के प्रतिनिधियों एवं जर्मन जनता में आरंभ से ही वर्साय की कठोर व अपमानजनक संधि के प्रति भारी असंतोष एवं रोष था। मित्र राष्ट्रों ने विल्सन के 7 सूत्रों की दुहाई देते हुए लायड जॉर्ज, क्लेमेंशू एवं उसके सहयोगी राजनेताओं ने प्रतिशोध, राष्ट्रीय स्वार्थों एवं भविष्य की सुरक्षा की चिंता से अभिभूत होकर ऐसी व्यवस्था का निर्माण करने का प्रयास किया, जिस से पराजित जर्मनी कभी भी सिर न उठा सके।वर्साय की संधि का जर्मनी पर जो विनाशकारी प्रभाव हुआ, उसका वर्णन करते हुए लैंगसम ने लिखा है " इससे यूरोप

में जर्मन प्रदेश का आठवां भाग और 70 लाख व्यक्ति कम हो गए, उसके सारे उपनिवेश, 15 प्रतिशत कृषि योग्य भूमि, 12 प्रतिशत पशु, 10 प्रतिशत कारखाने छीन लिए गए, उसके व्यापारिक जहाज 57 लाख टन से घटाकर केवल 5 लाख टन तक सीमित कर दिए गए,ब्रिटेन की नौसैनिक शक्ति से प्रतिस्पर्धा करने वाली उसकी नौसैनिक शक्ति को नष्ट कर दिया गया और स्थल सेना की संख्या एक लाख निश्चित कर दी गई। उसे अपने कोयले के 2/3 भाग से, लोहे के 2/3 भाग से और जस्ते के7/10 भाग से तथा आधे से भी अधिक शीशे के क्षेत्र से हाथ धोना पड़ा। उपनिवेशों के छीन लिए जाने से रबड़ और तेल की कमी का सामना करना पड़ा। इसी प्रकार क्षतिपूर्ति के नाम पर उसे कोरे चेक पर हस्ताक्षर करने को बाध्य किया गया।" जर्मन वर्साय की संधि में संशोधन चाहता था परंतु मित्र राष्ट्रों ने आक्रमण का भय दिखाकर जर्मनी से इस कठोर एवं अपमानजनक संधि पर हस्ताक्षर करा लिए। चर्चिल ने इस संधि के बारे में लिखा है " संधि की आर्थिक धाराएं अहितकर एवं मूर्खतापूर्ण थी। उससे संबंधित समस्त लेनदेन को इतिहास में पागलपन की संज्ञा प्रदान की जाएगी।" संधि की 'युद्ध अपराध' संबंधी धारा के परिणाम स्वरूप जर्मन जनता में तीव्र उत्तेजना एवं रोष उत्पन्न हुआ। जर्मनी जैसा स्वाभिमानी राष्ट्र इस प्रकार की कठोर एवं अपमानजनक शर्तों को दीर्घकाल तक बर्दाश्त नहीं कर सकता था।

वर्साय संधि के समय विजेताओं ने दूरदर्शिता से कार्य नहीं किया। उन्होंने प्रतिशोध की भावना से प्रेरित होकर जर्मन का दमन एवं अपमान किया। फलत:अवसर मिलने पर अपने अपमान का प्रतिशोध लेने के लिए जर्मनी ने पुन: मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध हथियार उठाए।

ii) तानाशाहों का उत्कर्ष: प्रथम विश्व युद्ध के बाद पराजित राष्ट्रों तथा नवनिर्मित राज्यों में लोकतंत्र शासन व्यवस्थाएं इस आशा के साथ स्थापित की गई थी कि इन राज्यों में यह व्यवस्थाएं स्थाई रूप से बनी रहेगी किंतु यह आशा व्यर्थ गई। जर्मनी में प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात वाइमर गणतंत्र की स्थापना की गई। वाइमर गणतंत्र पर वर्साय की संधि पर हस्ताक्षर करने का आरोप था, अतः नाजी दल का उदय हुआ। यह दल वर्साय की संधि को भंग कर अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में जर्मनी की प्रतिष्ठा पुनः स्थापित करना चाहता था। आर्थिक मंदी ने हिटलर के उदय में महत्वपूर्ण योगदान दिया। हिटलर ने विश्व के देशों को यह विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया था कि उसका उद्देश्य शांति स्थापित करना है किंतु वह अधिक समय तक अपने असली लक्ष्य को छिपा नहीं सका। शीघ्र ही उसने आक्रमणकारी रुख अपना लिया । 1935 में हिटलर ने वर्साय के सैनिक उपबंधो का परित्याग करके

पुनःशस्त्रीकरण करने की घोषणा की। इसके पश्चात उसने 1938 में ऑस्ट्रिया का अधिग्रहण किया और चेकोस्लोवाकिया का अंग भंग किया, जिससे चारों और युद्ध के बादल मंडराने लगे।

इटली में भी प्रथम महायुद्ध के बाद तानाशाही का उदय हुआ। इटली निवासियों में असंतोष को दूर करने तथा साम्राज्य प्रसार के उद्देश्य को लेकर मुसोलिनी ने अपनी अधिनायक वादी सत्ता स्थापित की। उसने वर्साय की संधि का विरोध किया। इटली ने अबीसीनिया पर आक्रमण कर अपनी साम्राज्यवादी भावना प्रदर्शित की। अबीसीनिया ने राष्ट्र संघ में अपील भी की, राष्ट्र संघ ने इटली को आक्रामक देश घोषित करके उसके विरुद्ध आर्थिक प्रतिबंध लगाए, किंतु प्रतिबंधों को कठोरता से लागू नहीं किया गया। वास्तव में राष्ट्र संघ कुछ भी नहीं कर सका, इस घटना ने राष्ट्र संघ की निर्बलता को स्पष्ट कर दिया।

इस समय तक जापान में भी साम्राज्यवादी भावनाएं उत्पन्न हो चुकी थी। उसने राष्ट्र संघ की उपेक्षा करते हुए मंचूरिया पर अधिकार कर लिया। जब राष्ट्र संघ ने जापान को दोषी ठहराया तो प्रत्युत्तर में जापान राष्ट्र संघ से पृथक हो गया। इस समय यदि पश्चिमी शक्तियां सामूहिक रूप से जापान के विरुद्ध कार्रवाई करती तो जापान को मंचूरिया से हटने के लिए विवश किया जा सकता था। इटली 1937 में साम्यवाद विरोधी संघ में सम्मिलित हुआ और इस प्रकार रोम- बर्लिन- टोक्यो धुरी का गठन हुआ। मई, 1939 में इटली ने जर्मनी से 10 वर्षीय संधि की। दोनों देशों ने प्रतिज्ञा की कि कूटनीतिक मामलों में परस्पर परामर्श करेंगे और युद्ध की अवस्था में परस्पर सहयोग करेंगे। इटली और जर्मनी के तानाशाहों ने स्पेन के गृहयुद्ध मे जनरल फ्रैंको की सहायता की, जिससे कुछ समय पश्चात स्पेन मे भी फ्रैंको का अधिनायक तंत्र स्थापित हो गया। इस प्रकार इन तानाशाहों ने विश्व के देशों को युद्ध की सीमा तक पहुंचा दिया।

iii) राष्ट्र संघ की असफलता: सामूहिक सुरक्षा प्रणाली की समाप्ति: राष्ट्र संघ की स्थापना मुख्य रूप से अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ाने तथा शांति एवं सुरक्षा की व्यवस्था के लिए की गई थी परंतु वह अपने इन उद्देश्यों को पूरा करने में असफल रहा। राष्ट्र संघ का जन्मदाता विल्सन स्वयं अमेरिका को इसका सदस्य नहीं बना सका। फलस्वरूप एक शक्तिशाली राष्ट्र के समर्थन एवं सहयोग से यह वंचित रहा। प्रारंभ में पराजित राष्ट्रों को राष्ट्र संघ की सदस्यता से वंचित रखना, इस बात का प्रतीक हो गया कि राष्ट्र संघ विजयी राष्ट्रों का गुट है।

यद्यपि 1925 से 1929 तक राष्ट्र संघ में कुछ क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्य किया जिससे प्रभावित होकर 50 राष्ट्रों ने इसकी सदस्यता ग्रहण कर ली थी, किंतु यह स्थिति क्षणिक रही। ज्यों ही बड़े राष्ट्रों के स्वार्थ का प्रश्न आया तो केवल आयोगों की नियुक्ति के अतिरिक्त राष्ट्र संघ ' विधवा स्त्री की तरह' हाथ- पांव पीट कर रह गया । मित्र राष्ट्रों ने राष्ट्र संघ को अपने स्वार्थों की सिद्धि के लिए प्रयोग किया। राष्ट्र संघ के माध्यम से इंग्लैंड रूस की साम्यवादी प्रवृत्तियों पर अंतरराष्ट्रीय नियंत्रण रखना चाहता था। फ्रांस का उद्देश्य शांति सम्मेलन की शर्तों का पालन कराना था। अनेक शक्तिशाली देशों ने राष्ट्र संघ की उपेक्षा की, जैसे मंचूरिया कांड के समय जापान राष्ट्र संघ के प्रस्ताव को ठुकराते हुए राष्ट्र संघ की सदस्यता से अलग हो गया। 1935 में जब मुसोलिनी ने अबीसीनिया पर आक्रमण किया, तब राष्ट्र संघ ने उसके विरुद्ध कुछ सक्रिय कदम उठाए। किंतु अंत में इंग्लैंड और फ्रांस की दब्बू नीति के कारण इटली, अबीसीनिया को हड़पने में सफल हो गया। इटली के इस नग्न एवं निर्लज्ज आक्रमण की सफलता का संपूर्ण विश्व पर गहरा प्रभाव पड़ा। हिटलर का तो कहना था कि " खोए हुए प्रदेशों की पुनः प्राप्ति ईश्वर से प्रार्थना करने से अथवा राष्ट्र संघ के प्रति पवित्र आस्था रखने से नहीं वरन सैनिक शक्ति से ही हो सकती है।" अंतर्राष्ट्रीय संकटों के समय भी राष्ट्र संघ कोई कारगर कदम नहीं उठा सका। राष्ट्र संघ के प्रति संदेह और अविश्वास की भावना शीघ्र ही विस्फोटक बनकर युद्ध के रूप में परिणित हो गई।

iv) नि :शस्त्रीकरण के प्रयासों की असफलता: विश्व राजनीतिज्ञों का यह मानना था कि शांति एवं सुरक्षा के लिए शस्त्रों की होड़ को समाप्त करना आवश्यक था। वर्साय की संधि के द्वारा जर्मनी को पूर्णत: शक्तिहीन करने के लिए निःशस्त्रीकरण की योजना प्रस्तुत की गई। मित्र राष्ट्रों ने जर्मनी को यह आश्वासन दिया कि कुछ समय बाद व्यापक निःशस्त्रीकरण किया जाएगा, जिससे सामूहिक सुरक्षा स्थापित हो सके। राष्ट्र संघ की परसंविदा में भी "राष्ट्रीय सुरक्षा का ध्यान रखते हुए, राष्ट्रों के शस्त्रों की निम्नतम सीमा निर्धारित करना, शांति बनाए रखने के लिए आवश्यक" माना गया और इसके लिए व्यापक योजना बनाने का कार्य राष्ट्र संघ परिषद को सौंपा गया। सिद्धांत रूप से इस योजना का समर्थन किया जा सकता था किंतु इस संबंध में अलग-अलग राष्ट्रों द्वारा जो नीति अपनाई गई, उससे निःशस्त्रीकरण की बजाए शस्त्रीकरण की भावना को बल मिला।

निःशस्त्रीकरण के लिए पहला प्रयास 1921 में वाशिंगटन सम्मेलन में किया गया था, जिसमें प्रमुख नौसैनिक राष्ट्रों ने अपनी नौसेनाओ को टन भार के अनुपातों की योजना से परीसीमित करना

स्वीकार किया। किंतु इसके पश्चात लंदन नौसैनिक सम्मेलन में केवल ब्रिटेन, अमेरिका और जापान के बीच कुछ सीमित समझौता हो सका और फ्रांस व इटली के बीच पारस्परिक मतभेदों के कारण कोई समझौता नहीं हो सका। जापान में भी समानता के सिद्धांत के आधार पर ब्रिटेन तथा अमेरिका के समकक्ष नौसैनिक शक्ति बढ़ाने की मांग की किंतु इन बातों को स्वीकार नहीं किया गया। 1932 में जेनेवा निःशस्त्रीकरण सम्मेलन फ्रांस जर्मनी के मतभेदों के कारण कोई निर्णय नहीं कर सका और हिटलर ने सम्मेलन से पृथक होने की घोषणा कर दी, जिससे सम्मेलन का उद्देश्य ही लगभग समाप्त हो गया गया। जर्मनी का कहना था कि यदि जर्मनी को शस्त्र हीन किया जाता है तो निःशस्त्रीकरण का सिद्धांत दूसरे राज्यों पर भी लागू किया जाए। इसके पश्चात छोटे बड़े सभी राष्ट्रों ने अपनी सैन्य शक्ति का विस्तार आरंभ कर दिया और संसार उसी अंतरराष्ट्रीय अराजकता की स्थिति में पहुंच गया, जिसमें यूरोप प्रथम विश्व युद्ध के पूर्व था। फ्रांस ने अपनी उत्तर पूर्वी सीमा पर भूमिगत किलो की श्रंखला बनाई, जिसे मैजिनो लाइन(Magino Line)कहा जाता था। प्रत्युत्तर में जर्मनी ने भी सीगफ्रीड लाइन (Siegfried Line)तैयार की। अब यूरोप का कोई भी राष्ट्र निःशस्त्रीकरण की बात सुनने को तैयार नहीं था। चारों और ऐसा वातावरण उत्पन्न हो गया जिससे निकट भविष्य में युद्ध अनिवार्य दिखाई देने लगा।

v) पश्चिमी राष्ट्रों की नीति में अंतर्विरोध एवं तुष्टीकरण की नीति: मित्र राष्ट्रों के पारस्परिक झगड़ों ने भी जर्मनी तथा इटली की शक्ति के विकास में बहुत योगदान दिया था। पेरिस शांति सम्मेलन के पश्चात "5 मित्र राष्ट्रों" का गठबंधन समाप्त हो गया पेरिस की शांति संधियों व व्यवस्था बनाए रखने का भार मूल रूप से फ्रांस और ब्रिटेन पर आ गया। वर्साय की संधि के पश्चात क्षतिपूर्ति, सामूहिक सुरक्षा एवं निःशस्त्रीकरण आदि के संबंध में दोनों देशों में अंतर्विरोध बढ़ गया था। फ्रांस जर्मनी के प्रति कठोर नीति अपनाना चाहता था किंतु ब्रिटेन उसके साथ सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करने के पक्ष में था।

ब्रिटेन अपने व्यापार की वृद्धि के लिए जर्मनी का औद्योगिक पुनर्निर्माण करना आवश्यक समझता था, साथ ही वह यूरोप में शक्ति संतुलन बनाए रखने का प्रयास कर रहा था। प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात यूरोप में फ्रांस की शक्ति काफी बढ़ गई थी। उसे नियंत्रित रखने तथा पूर्वी एवं मध्य यूरोप में साम्यवाद के प्रसार की रोकथाम के लिए ब्रिटेन जर्मनी को शक्तिशाली बनाना चाहता था। अतः ब्रिटेन ने हिटलर के प्रति तुष्टीकरण की नीति अपनाई। फल स्वरुप मित्र राष्ट्र उससे नाराज हो गए। इसके अतिरिक्त वर्साय संधि के समय यह निर्णय लिया गया कि ब्रिटेन और अमेरिका दोनों फ्रांस की सुरक्षा

का दायित्व ग्रहण करेंगे, किंतु अमेरिका की सीनेट ने इस संधि को अस्वीकृत कर दिया। इसके परिणाम स्वरूप फ्रांस ने निराश होकर पोलैंड, बेल्जियम और चेकोस्लोवाकिया से अलग-अलग संधियाँ की। हिटलर और मुसोलिनी ने ब्रिटेन और फ्रांस के मतभेदों एवं तुष्टीकरण की नीति से पूरा लाभ उठाया। ब्रिटेन और फ्रांस ने मुसोलिनी को संतुष्ट रखने के लिए उसके विरुद्ध राष्ट्र संघ द्वारा लगाए गए आर्थिक प्रतिबंधों का पूर्ण रुप से पालन नहीं होने दिया। जब मार्च, 1938 में जर्मनी द्वारा ऑस्ट्रिया का अपहरण करने पर भी ब्रिटेन और फ्रांस ने कोई विरोध नहीं किया, तो इससे हिटलर की विस्तार वादी इच्छा और भी बढ़ गई। इस प्रकार पारस्परिक विश्वास के कारण मित्र राष्ट्रों का मोर्चा कमजोर हो गया तथा वे तानाशाहों की बढ़ती हुई शक्ति को रोकने में कठिनाई अनुभव करने लगे।इस कारण चर्चिल ने लिखा था " हमारी तुष्टीकरण नीति का एक दुर्भाग्यपूर्ण परिणाम यह हुआ कि हिटलर को यह विश्वास हो गया कि ब्रिटेन एवं फ्रांस उसके विरुद्ध युद्ध करने में सक्षम नहीं थे।" इस गंभीर स्थिति ने द्वितीय विश्वयुद्ध को अवश्यंभावी बना दिया।

vi) उग्र राष्ट्रवाद की भावना: प्रथम विश्व युद्ध की भांति द्वितीय विश्व युद्ध में भी उग्र राष्ट्रवाद संघर्ष का एक महत्वपूर्ण कारण था। इस समय तक विश्व में औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप आर्थिक प्रतिस्पर्धा बढ़ने लगी थी। यही आर्थिक राष्ट्रवाद युद्ध के लिए उत्तरदाई था। प्रथम विश्व युद्ध के बाद इस राष्ट्रवाद पर नियंत्रण स्थापित करने की आवश्यकता महसूस की जाने लगी थी। विल्सन ने इसी उद्देश्य से राष्ट्र संघ को पेरिस की शांति संधि का अविभाज्य अंग बनाया। किंतु युद्धोत्तर काल में अंतरराष्ट्रीयता की भावना नहीं पनप सकी और विभिन्न राज्य अपने राष्ट्रीय हितों एवं स्वार्थों को ही सर्वोपरि मानते रहे। इटली, जर्मनी तथा जापान में उग्र राष्ट्रवाद का प्रारंभ प्रबल था। हिटलर ने सर्वश्रेष्ठ प्रजाति(Master Race)के अपमान का प्रतिशोध लेने की इच्छा को उत्तेजित किया। राष्ट्रीयता की भावना को उत्तेजित करने में आर्थिक मंदी ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वास्तव में आर्थिक संकट ने विश्व की राजनीतिक एवं आर्थिक स्थिरता को हमेशा के लिए समाप्त कर दिया।

vii) दो प्रतिद्वंदी सैनिक गुटों का उदय: जिस प्रकार प्रथम विश्व युद्ध से पहले समूचा विश्व दो विरोधी सैनिक गुटों में विभाजित हो गया था, उसी प्रकार द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व भी संपूर्ण विश्व दो परस्पर शत्रु सैनिक खेमों में बट गया। एक तरफ, जर्मनी, इटली और जापान जैसे कभी संतुष्ट न होने वाले थे, जिन्होंने मिलकर रोम- बर्लिन- टोक्यो की धुरी का निर्माण किया था,तो दूसरी तरफ इंग्लैंड, फ्रांस, सोवियत रूस और अमेरिका जैसे मित्र राष्ट्रों ने मिलकर एक सुदृढ़ संधि संगठन स्थापित

कर लिया। जब हिटलर के नेतृत्व में जर्मन सेना ने पोलैंड पर आक्रमण किया तो इंग्लैंड और फ्रांस ने पोलैंड को समर्थन दिया तो द्वितीय विश्व युद्ध भड़क उठा।

viii) अल्पसंख्यक जातियों का संतोष: जहां पेरिस की संधियों द्वारा सीमा में परिवर्तन किया गया, वहां जातियों का अदल- बदल होना भी स्वाभाविक था। जहां ऑस्ट्रिया को जर्मनी से अलग किया गया, जहां चेकोस्लोवाकिया को स्वतंत्र राज्य मान लिया गया, वहां विभिन्न जातियों को एक ही राज्य में रहने को बाध्य होना स्वाभाविक था। जिससे बाल्कन प्रायद्वीप और मध्य यूरोप में बड़ी जटिल स्थिति उत्पन्न हो गई। संधियों के निर्माण के समय मित्र राष्ट्रों ने ' आत्म निर्णय' का सिद्धांत स्वीकार करके अल्पसंख्यकों को भय विमुक्त कर दिया था और उनकी आर्थिक आवश्यकताएं, सैनिक सुरक्षा तथा सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक अधिकारों की मान्यताओं पर पूरा ध्यान दिया गया ताकि ये अल्पसंख्यक 'पारस्परिक विरोध' उत्तेजना और असंतोष उत्पन्न करने के साधन बन गए। हिटलर ने इसी कारण पोलैंड का विभाजन कर दिया था। ऑस्ट्रिया तथा चेकोस्लोवाकिया में, जर्मन जाति थी,वे अपने को विदेशी शासन के अधीन मानती थी। हिटलर ने उनके असंतोष का पूरा लाभ उठाया। उसने ऑस्ट्रिया और सुडेंटनलैंड में अल्पसंख्यकों पर कुशासन का बहाना बनाकर उनका अपहरण कर लिया तत्पश्चात उसने पोलैंड पर आक्रमण किया। इस प्रकार ये अल्पसंख्यक जातियां भी विभिन्न देशों के बीच आपसी संघर्ष का कारण बनी।

ix) युद्ध का तात्कालिक कारण: जर्मनी का पोलैंड पर आक्रमण: उपर्युक्त कारणों से अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच पर बारूद का महल खड़ा हो चुका था, अब केवल एक चिंगारी लगाने की देर थी। यह कार्य हिटलर ने पोलैंड पर आक्रमण करके संपन्न कर दिया। 3 सितंबर, 1939 को ब्रिटेन और फ्रांस ने जर्मनी को युद्ध बंद करने की चेतावनी दी किंतु हिटलर ने इस चेतावनी की उपेक्षा की। फलस्वरूप ब्रिटेन तथा फ्रांस ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। कुछ ही समय में युद्ध ने विस्तृत रूप धारण कर लिया। यही द्वितीय विश्वयुद्ध का उद्गम था।

7.3.3 द्वितीय विश्वयुद्ध की घटनाएं

द्वितीय विश्व युद्ध की घटनाओं को सुविधा की दृष्टि से हम चार अवस्थाओं में बांट सकते हैं-

प्रथम अवस्था: इसमें 1 सितंबर 1939 से 21 जून, 1941 तक की घटनाएं, जिसमें जर्मनी ने पोलैंड, डेनमार्क, नीदरलैंड, बेल्जियम, लक्जमबर्ग, फ्रांस, ब्रिटेन तथा यूनान पर आक्रमण किए।

द्वितीय अवस्था: 22 जून, 1941 से 6 दिसंबर 1941 तक धुरी राष्ट्रों द्वारा अफ्रीका पर आक्रमण तथा जर्मनी का रूस पर आक्रमण।

तृतीय अवस्था:7 दिसंबर, 1941 से 7 नवंबर, 1942 तक। इसमें जापान का पर्ल हार्बर पर आक्रमण तथा मित्र राष्ट्रों के सैन्य बल का नीदरलैंड, वेस्टइंडीज तथा काकेशस पर अधिकार।

चतुर्थ अवस्था: 8 नवंबर, 1942 से 6 मई, 1945 तक। इसमें फ्रेंच, उत्तरी अफ्रीका पर अमेरिका का आक्रमण तथा जर्मनी का आत्मसमर्पण, साथ ही 7 मई 1945 से 7 अगस्त, 1945 तक जापान का आत्मसमर्पण।

- ❖ **पोलैंड पर आक्रमण और महायुद्ध का आरंभ**

1 सितंबर, 1939 को प्रातः 4:00 बजे जब सारा यूरोप अभी सोया हुआ था, हिटलर की सेना पोलैंड की सीमा पार कर गई। बिजली की चमक की तरह विशाल जर्मन सेना पोलैंड पर टूट पड़ी। एक तरफ से जर्मन हवाई जहाजों ने पोलैंड पर गोलाबारी करके उसके यातायात के साधनों और बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियों को नष्ट कर दिया, वही हवाई हमले के साथ-साथ जर्मन सेना वेहरमक्ट (Wehrmacht)पोलैंड को रौंदती हुई आगे बढ़ने लगी। पोलिश सेना को उसका मुकाबला करने का मौका ही नहीं मिला। " तड़ित युद्ध प्रणाली"(Blitz Krieg)का प्रयोग करके जर्मन सेनाओं ने 2 सप्ताह के भीतर पोलैंड के पश्चिमी प्रदेश पर अधिकार कर लिया और उसकी राजधानी वारसा को घेर लिया गया।

इसी बीच, 3 सितंबर को ब्रिटेन तथा फ्रांस ने अपने वायदे के मुताबिक जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की। ब्रिटिश युद्ध घोषणा के बाद कॉमनवेल्थ के राज्य(ऑस्ट्रिया, न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रीका कनाडा और भारत) ने भी जर्मनी के विरुद्ध युद्ध में भाग लिया। जर्मन हवाई हमलों के कारण ब्रिटेन और फ्रांस वायु मार्ग से पोलैंड को सैनिक सहायता नहीं भेज सके। संपूर्ण पोलैंड पर जर्मन अधिकार हो जाने से जर्मनी और सोवियत रूस की सीमाएं मिल जाती थी, इससे रूस की सुरक्षा को खतरा था। 17 सितंबर को सोवियत रूस ने पोलैंड पर आक्रमण करके उसके पूर्वी क्षेत्र पर अपना अधिकार जमा लिया। 27 सितंबर को संपूर्ण पोलैंड पर विदेशी अधिकार हो गया। 28 सितंबर को जर्मनी तथा सोवियत रूस के बीच एक समझौता हुआ जिसके अनुसार पोलैंड का पश्चिमी भाग जर्मनी को प्राप्त हुआ और पूर्वी पोलैंड रूस को प्राप्त हुआ।

- ❖ **रूस का बाल्टिक राज्य पर अधिकार तथा फिनलैंड पर रूस का आक्रमण**

रूस- जर्मन समझौते के पश्चात जर्मनी पश्चिमी मोर्चे पर ब्रिटेन तथा फ्रांस के साथ युद्ध में व्यस्त हो गया। इस अवसर का लाभ उठाकर सोवियत संघ ने बाल्टिक क्षेत्र के तीन छोटे राज्यों स्टोनिया , लेटविया एवं लिथुआनिया के साथ परस्पर सहयोग संबंधी संधि कर ली और तीनों राज्यों में अपनी सेनाएं रखने का आश्वासन ले लिया। इतने से ही सोवियत रूस संतुष्ट नहीं था, वह लेनिनग्राड की रक्षा के लिए फिनलैंड में भी सैनिक अड्डा स्थापित करने की सुविधाएं चाहता था। इसी उद्देश्य से अक्टूबर 1939 में सोवियत सरकार ने फिनलैंड के प्रतिनिधियों से वार्ता के समय कुछ मांगे रखी, जिनमें हांगो बंदरगाह को पट्टे पर देने, फिनलैंड की खाड़ी के कुछ द्वीपों पर अधिकार, आदि प्रमुख थी। फिनलैंड की सरकार ने हांगो में रूसी नौसैनिक अड्डे की स्थापना को छोड़कर रूस की सभी मांगों को स्वीकार करने की बात कही परंतु रूस की सरकार अपनी सभी मांगों को पूरा करने के लिये दबाव डाल रही थी। इस कारण समझौता वार्ता भंग हो गई । 29 नवंबर, 1939 को रूस ने फिनलैंड पर आरोप लगाया कि उसके सीमांत सैनिकों ने सोवियत सैनिकों पर गोलियां चलाई है। रूस ने 1932 के सोवियत फिनलैंड समझौते को तोड़कर फिनलैंड पर आक्रमण कर दिया। 2 दिसंबर, 1939 को फिनलैंड में राष्ट्र संघ से अपील की, जिसके फलस्वरूप रूस को राष्ट्र संघ से निष्कासित कर दिया गया। फरवरी 1940 में सोवियत संघ ने सेना को सुसंगठित कर फिनलैंड पर जोरदार आक्रमण किया। परिणाम स्वरूप 12 मार्च, 1940 को उसे आत्मसमर्पण करना पड़ा । फिनलैंड को एक संधि के अनुसार लडोगा झील सहित बहुत बड़ा भाग रूस को देना पड़ा और हांगो में रूसी नौसैनिक अड्डे की स्थापना की स्वीकृति भी देनी पड़ी।

- ❖ **डेनमार्क और नार्वे का पतन**

  पोलैंड पर अधिकार करने के बाद हिटलर ने एक कूटनीतिक चाल चली। उसने इंग्लैंड और फ्रांस से कहा कि युद्ध बंद कर दिया जाए अब उसे अन्य किसी प्रदेश को प्राप्त करने की आकांक्षा नहीं है। किंतु मित्र राष्ट्रों ने उसकी बात पर विश्वास न करके उसकी इस मांग को ठुकरा दिया। अतः जर्मनी ने अप्रैल, 1940 में रूस, नार्वे तथा डेनमार्क पर आक्रमण किया। नार्वे की सेना ने जर्मनी का मुकाबला किया किंतु अंत में पराजय स्वीकार करनी पड़ी। डेनमार्क भी पराजित हुआ। वह जर्मनी के संरक्षण में चला गया और वहां की राजधानी कोपेनहेगन पर जर्मनी का आधिपत्य हो गया। इन दोनों की पराजय के फल स्वरुप चैंबर्लेन की सरकार बदनाम हो गई और उसे

त्यागपत्र देना पड़ा। चैंबर्लेन के स्थान पर चर्चिल प्रधानमंत्री बना। वह देश को एक महान युद्ध नेता के रूप में मिला, उसने युद्ध का कुशलता पूर्वक संचालन किया।

- **होलेंड और बेल्जियम पर जर्मनी आक्रमण(Germany's invasion of Holland and Belgium)**

10 मई, 1940 को जर्मनी ने लेक्जमबर्ग, बेल्जियम और हॉलैंड पर आक्रमण कर दिया। लेक्जमबर्ग पर उसी दिन अधिकार कर लिया गया। 5 दिन बाद होलेंड पर अधिकार हो गया तथा 28 मई, 1940 को बेल्जियम ने आत्मसमर्पण कर दिया। यद्यपि बेल्जियम की सहायता के लिए ब्रिटिश सेना गई थी किंतु वे स्वयं जर्मन सेनाओं से घिर गई। ब्रिटिश सैनिक अधिकारियों ने अपने कुशल रण कौशल का परिचय देते हुए अपनी अधिकांश सेना को बचा लिया।

- **फ्रांस का आत्मसमर्पण(Surrender of France)**

बेल्जियम पर आक्रमण करने का अर्थ ही यह था कि जर्मनी अब फ्रांस पर विद्युत प्रहार करने की तैयारी कर रहा था। अतः फ्रांस ने अपने बचाव के लिए तैयारी आरंभ कर दी। 10 मई को अपने पुराने शत्रु फ्रांस पर आक्रमण कर दिया। 16 मई को फ्रेंच बेल्जियम और ब्रिटिश फ़ौजे डायल की रेखा से शेल्ट की ओर पीछे हटने लगी।17 मई को जर्मन सेनाओं ने फ्रांसीसी रक्षा पंक्ति को तोड़कर, 60 मिल विस्तृत क्षेत्र पर अधिकार कर लिया,जिससे उत्तरी क्षेत्र में स्थित ब्रिटिश बेल्जियम और फ्रेंच सेनाओं का दक्षिण की फ्रांसीसी सेनाओं से संपर्क कट गया। फ्रांस तथा मित्र राष्ट्रों की स्थिति इस समय अत्यंत कमजोर हो गई थी। 19 मई को फ्रांस के मंत्रिमंडल में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। मार्शल पेंता को उप प्रधानमंत्री बनाया गया और स्वयं प्रधानमंत्री रेना ने राष्ट्रीय सुरक्षा एवं युद्ध मंत्री का कार्य संभाला। इसी दिन जनरल गोमली के स्थान पर जनरल वेगद (Weygand)को प्रधान सेनापति बनाया गया। 28 मई को बेल्जियम के शासक लियोपोल्ड ने आत्मसमर्पण कर युद्ध बंद कर दिया, इससे मित्र राष्ट्रों की उतरी सेना का वाम पार्श्व, शत्रु आक्रमण के लिए खुल गया और उनकी पराजय सुनिश्चित हो गई। 5 जून को जर्मनी ने फ्रांस के विरुद्ध पुनः आक्रमण किया। जर्मन टैंकों और हवाई जहाजों के हमलों के सामने फ्रांस की सेनाएं अधिक समय तक नहीं टिक सकी। परिणाम स्वरूप 10 जून को फ्रांस की सरकार पेरिस छोड़कर तूर(Tours)चली गई।

- **इटली का युद्ध में प्रवेश(Italy enters the War)**

मई, 1940 के अंत तक इटली की सैनिक तैयारी पूरी हो चुकी थी और मुसोलिनी ने हिटलर को सूचित किया कि वह जून के आरंभ में युद्ध की घोषणा कर देगा। 10 जून को इटली ने फ्रांस तथा ब्रिटेन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इस घोषणा से फ्रांस का मनोबल समाप्त प्राय: हो गया। इटली की सीमा पर लगी हुई फ्रांसीसी सेनाओं को पेरिस की रक्षा के लिए भेजना संभव नहीं था। 7 जून को जर्मन सेनाएं शांति पूर्वक पेरिस पहुंच गई क्योंकि फ्रांस की सरकार ने अपने सैनिकों को वहां से हटा लिया था। 16 जून को प्रधानमंत्री रैना ने त्यागपत्र दे दिया, उसके स्थान पर मार्शल पेंता प्रधानमंत्री बना। 22 जून को फ्रांस तथा जर्मनी के बीच युद्ध विराम संधि हुई, संधि की शर्तों के अनुसार फ्रांस को अपना आधे से अधिक भूभाग, जिसमें उसका अधिकांश औद्योगिक क्षेत्र तथा अटलांटिक सागर तटीय समस्त बंदरगाह सम्मिलित थे, जर्मनी को देने पड़े। 23 जून, 1940 को इटली के साथ भी युद्ध विराम संधि हुई जिसके अनुसार उसने इटली द्वारा जीता गया क्षेत्र देने तथा उसके साथ लगे 31 मील लंबे क्षेत्र,तुलो , ट्यूनीशिया, कार्सिका ,अल्जीरिया मे अपने प्रमुख ठिकानों को विसैन्यीकरण करने की स्वीकृति दे दी। किंतु बहुत से फ्रांसीसी जर्मनी के विरुद्ध युद्ध जारी रखना चाहते थे।

- **ब्रिटेन पर जर्मनी का आक्रमण(Germany's invasion of Britain)**

फ्रांस की पराजय से ब्रिटेन की स्थिति कमजोर हो गई। उसके सभी सैनिक हथियार और जहाजी बेड़े जर्मनी को प्राप्त हो चुके थे। जर्मनी के पास अब नार्वे से लेकर दक्षिणी स्पेन तक समस्त समुंद्री भाग आ चुका था। इससे प्रोत्साहित होकर 18 जून, 1940 को जर्मनी ने इंग्लैंड पर भीषण आक्रमण कर दिया। 5 माह तक जर्मन हवाई जहाज इंग्लैंड पर बम वर्षा करते रहे। अकेले लंदन पर 50 बम गिराए गए, किंतु चर्चिल की सरकार ने बड़े साहस से जर्मनी का मुकाबला किया तथा जर्मनी के 3000 से अधिक बम वर्षक विमानों को मार गिराया। 4 जून, 1940 को हाउस ऑफ कॉमंस में बोलते हुए चर्चिल ने कहा था " यद्यपि यूरोप के विस्तृत क्षेत्र और अनेक प्राचीन एवं प्रतिष्ठित राज्य कुत्सित नात्सी शासन तंत्र की अधीनता में चले गए हैं परंतु हम न तो झुकेंगे और ना ही असफल होंगे, हम अंत तक संघर्ष करते रहेंगे, हम फ्रांस में लड़ेंगे, समुंदरों एवं महासागरों पर लड़ेंगे, हम बढ़ते हुए आत्मविश्वास एवं बढ़ती हुई शक्ति से हवाई युद्ध करेंगे, अपने द्वीप की रक्षा अवश्य करेंगे, चाहे उसके लिए कितनी भी कीमत चुकानी पड़े हम कभी भी आत्मसमर्पण नहीं करेंगे।" चर्चिल ने केवल जोशीले भाषण ही नहीं दिए,वरन इंग्लैंड की रक्षा के लिए हरसंभव तैयारी की।अतः धीरे धीरे हिटलर

ने अपने आक्रमणों को धीमा कर दिया। दूसरी ओर इटली ने सोमालीलैंड, केन्या और सूडान पर अधिकार कर लिया । इटली ने उत्तरी मिस्र पर भी आक्रमण किया और तत्पश्चात यूनान पर चढ़ाई की। यूनान ने अन्य देशों की सहायता से इटालियन सेना को यूनान से बाहर निकाल दिया, इस पर जर्मनी ने इटली की सहायता की, जिससे अप्रैल 1941 में यूनान पर जर्मनी का अधिकार हो गया।

- **जर्मनी का रूस पर आक्रमण(Germany's invasion on Russia)**

यद्यपि रूस तथा जर्मनी के बीच अगस्त, 1939 में अनाक्रमण समझौता हो चुका था। किंतु हिटलर की महत्वाकांक्षा के सम्मुख संधि तथा समझौतों का कोई औचित्य नहीं था, वह रूस को पराजित कर पूर्वी सीमा के खतरे को समाप्त करना चाहता था। रूसी सेनाओं ने एस्तोनिया,लेटेविया और लिथुआनिया पर अधिकार कर लिया परंतु जर्मनी ने इसका विरोध नहीं किया। 22 जून, 1941 को जर्मन सेना ने रूस पर आक्रमण कर यूक्रेन, एस्टोनिया, लेटेविया,लिथुआनिया, इंग्लैंड और पूर्वी पोलैंड पर रूसी सेनाओं को हटाकर अधिकार कर लिया,जर्मन सेना लेनिनग्राड तक पहुंच गई। किंतु हिटलर अपने प्रमुख लक्ष्य अर्थात मास्को पर अधिकार करने और रूसी सेना का विनाश करने में असफल रहा। अपनी विशाल यंत्रीकृत एवं कवचित सेनाओ तथा वायु सेना की प्रबल शक्ति का प्रयोग करने के बाद भी जर्मनी, 6 माह में सोवियत संघ को समाप्त नहीं कर सका, मास्को पर आक्रमण करके जर्मनी ने भूल की, रूस के प्रत्येक नागरिक ने जर्मनी के विरुद्ध संघर्ष में भाग लिया था। साथ ही शीत ऋतु के आरंभ होने से जर्मनी का आगे बढ़ना कठिन हो गया और जर्मनी का प्रमुख लक्ष्य मास्को पर अधिकार करने का सपना पूरा न हो सका, किंतु रूस की 5 लाख वर्ग मील भूमि अवश्य प्राप्त हो गई।

- **जापान का अमेरिका पर आक्रमण(Japan's invasion of America)**

जापान पहले से ही एशिया और प्रशांत महासागर में अपना प्रभाव स्थापित करने का प्रयास कर रहा था, आरंभ में उसे कुछ सफलता भी प्राप्त हुई थी। जर्मनी के साथ मिलकर जापान ने रोम- बर्लिन - टोक्यो धुरी का निर्माण किया था। जर्मनी चाहता था जापान उसके साथ युद्ध में सम्मिलित हो।फ्रांस के पतन से लाभ उठाकर जापान ने फ्रेंच इन्डो चीन में सैनिक एवं नाविक अड्डे प्राप्त कर शीघ्र ही उस पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। जापान की इस गतिविधि से इंग्लैंड तथा अमेरिका चौकन्ना हो गए, अमेरिका ने जापान को चेतावनी दी कि यदि इन द्वीपों में हस्तक्षेप किया गया, तो प्रशांत महासागर की शांति के लिए संकट उत्पन्न हो सकता है। इसका जवाब जापान ने जर्मनी तथा इटली से सितंबर, 1940 में एक सैनिक संधि करके दिया। उसने देखा कि रूस हार रहा है, इंग्लैंड

एकांकी एवं निर्बल है और संयुक्त राज्य युद्ध के लिए तैयार नहीं है ,प्रशांत महासागर में अपने एकमात्र बचे हुए प्रतिद्वंदी संयुक्त राज्य को चुनौती देने का यही सुअवसर दिखाई दिया। अतः 7 दिसंबर, 1941 को युद्ध की घोषणा किए बिना, अचानक प्रशांत महासागर में हवाई द्वीप समूह में स्थित पर्ल हार्वर पर हवाई जहाजों तथा पनडुब्बियों से आक्रमण करके, उसका बहुत बड़ा भाग नष्ट कर दिया। इस आक्रमण के फल स्वरुप 19 नौसैनिक जहाज, जिनमें आठ बड़े जंगी जहाज भी सम्मिलित हुए थे, डुबो दिए गए अथवा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए, 177 विमान नष्ट हो गए, 2343 सैनिक मारे गए और 2000 से अधिक घायल हुए। संयुक्त राज्य को इससे बड़ी हार कभी नहीं खानी पड़ी थी। इस घटना के दूसरे दिन 8 दिसंबर को अमेरिका और इंग्लैंड में जापान के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। 3 दिन बाद जर्मनी तथा इटली ने संयुक्त राज्य के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की इस प्रकार युद्ध ने एक वास्तविक विश्वयुद्ध का रूप ले लिया।

- **महायुद्ध का नया मोड़ अफ्रीका व यूरोप में धुरी राष्ट्रों की पराजय**

वर्ष 1942 के पूर्वार्ध तक यूरोप, अफ्रीका और पूर्वी एशिया में धुरी राष्ट्र का विजय अभियान सफलतापूर्वक चला और ब्रिटेन, अमेरिका तथा रूस को सभी स्थानों पर पीछे हटना पड़ा। किंतु 1942 के अंत में धुरी राष्ट्रों की प्रगति रुक गई। नवंबर 1942 में ब्रिटेन में अमेरिका की सेनाओं ने संयुक्त रूप से उत्तरी अफ्रीका से जर्मन और इटालियन सेनाओं को खदेड़ना शुरू कर दिया था, अंत में उत्तरी अफ्रीका पर मित्र राष्ट्रों का अधिकार हो गया।

- **इटली की पराजय(The Defeat of Italy)**

1943 में मित्र राष्ट्रों की स्थिति में सुधार हुआ। 10 जुलाई, 1943 को मित्र राष्ट्रों ने सिसली पर आक्रमण किया। इटली की सेनाएं काफी कमजोर थी, उन्हें प्रत्येक स्थान पर हारना पड़ा। मुसोलिनी ने हिटलर से सहायता मांगी किंतु इस समय जर्मन सेना रूस में पराजित हो रही थी, अतः कोई सहायता नहीं भिजवा सका। इस प्रकार इटली का जनमत मुसोलिनी के विरुद्ध हो रहा था। 18 जुलाई को मित्र राष्ट्रों की संयुक्त सेना ने इटली पर आक्रमण किया, भयंकर संघर्ष के बाद 23 जुलाई को मुसोलिनी को गिरफ्तार कर लिया। फासीवाद गैरकानूनी घोषित किया गया और वहां नई सरकार स्थापित की गई। 3 दिसंबर, 1943 को इटली ने आत्मसमर्पण कर दिया। इस बीच जर्मन छाता धारी सैनिकों ने मुसोलिनी को कैद से छुड़ा लिया। मुसोलिनी ने जर्मनी की सहायता से पुनः इटली को अपने प्रभाव में

लाने का प्रयास किया किंतु असफल रहा । अंत में 4 जून, 1944 को रोम पर मित्र राष्ट्रों का अधिकार हो गया।

- **जर्मनी की पराजय(The Defeat of Germany)**

जर्मनी की पराजय स्टालिनग्रांड से आरंभ हुई। रूसी सेना ने जर्मन सेना को चारों ओर से घेर लिया। फरवरी, 1943 तक एक लाख से अधिक जर्मन सैनिक मारे गए। इससे रूस में एक नई स्फूर्ति पैदा हुई, मास्को का खतरा टल गया था। ग्रीष्म काल में रूस ने जर्मन सेना को पराजित किया, रूस के इतिहास में यह एक बड़ी घटना मानी जाती है। रूस में इस युद्ध को इतिहास का सबसे महान युद्ध कहा गया है। लगभग 2 माह के संघर्ष में एक लाख 80 हजार जर्मन सैनिक मारे गए, जर्मनी के करीब 3000 हवाई जहाज नष्ट हो गए, 20000 सैनिक वाहन एवं अन्य शस्त्र नष्ट हो गए और 1300 टैंक नष्ट हो गए। रूसी सेना अब पोलैंड पहुंची, वहां नात्सी सेना को नष्ट कर दिया और रोमानिया, फिनलैंड बुल्गारिया को जीता। अंत में 8 मार्च, 1944 को 2 हज़ार अमेरिकन बम वर्षक विमानों ने बर्लिन पर बमबारी की। फ्रांस के उत्तर-पश्चिमी समुंदर के किनारे पर मित्र राष्ट्रों की सेनाएं उतारी गई, दिसंबर 1944 तक 3 लाख सेना फ्रांस पहुंच गई। फ्रांस की सीमा पर जर्मन किलेबंदी को ध्वस्त कर दिया, 15 अगस्त 1944 को फ्रांस के पूर्वी भूमध्यसागरीय तट पर मित्र राष्ट्रों की सेनाएं उतारी गई, जिन्होंने तुलो और मार्सेली के बंदरगाह पर अधिकार कर लिया। 25 अगस्त को जर्मन अधिकृत पेरिस का भी पतन हो गया और जर्मन सेनाओं ने आत्मसमर्पण कर दिया । 22 अप्रैल 1945 को रूस ने बर्लिन पर आक्रमण किया, ब्रिटेन, फ्रांस तथा अमेरिका की फौज भी वहां पहुंच गई, 2 मई, 1945 को बर्लिन का पतन हो गया। हिटलर ने अपनी पत्नी इवाब्रान सहित आत्महत्या कर ली और इटली के देशभक्तों ने मुसोलिनी और उसकी पत्नी को गोली से उड़ा दिया। 7 मई, 1945 को संधि पर हस्ताक्षर करने के पश्चात 8 मई को यूरोप में युद्ध बंद हो गया।

- **जापान की पराजय और विश्व युद्ध का अंत**

आकृति -2

आकृति -2 में दर्शाया गया प्रतीकात्मक विमान है जिन्होंने जापान के शहरों पर परमाणु बम गिराए थे। अब केवल जापान ही ऐसा राष्ट्र बचा था, जिसने आत्मसमर्पण नहीं किया था। अतः जर्मनी की पराजय के पश्चात जापान की ओर मित्र राष्ट्रो का ध्यान जाना स्वाभाविक था। अब ब्रिटिश फौजें सुदूर पूर्व में तेजी से आगे बढ़ने लगी और उन्होंने बर्मा को मुक्त करवा लिया। तत्पश्चात मलाया, फिलीपींस व सिंगापुर मुक्त कराए गए अंत में जापान पर भीषण आक्रमण हुआ। 26 जुलाई 1947 को पोट्सडम सम्मेलन में मित्र राष्ट्रों ने जापान से बिना शर्त आत्मसमर्पण की मांग की किंतु जापान ने इसे स्वीकार नहीं किया। परिणाम स्वरूप 6 अगस्त, 1945 को जापान के समृद्ध नगर हिरोशिमा पर अमेरिका द्वारा पहला परमाणु बम गिराया गया, इसके 3 दिन पश्चात 9 अगस्त को नागासाकी नगर पर दूसरा परमाणु बम गिराया गया। इन परमाणु बमों के प्रलयकारी विनाश से भयभीत होकर जापान ने 10 अगस्त को 'पोट्सडम घोषणा' की शर्तों के आधार पर आत्मसमर्पण करने का प्रस्ताव भेजा। 7 अगस्त को युद्ध बंद हो गया, इस प्रकार 6 वर्ष के बाद भयंकर व विनाशकारी द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त हो गया।

7.4 मुख्य पाठ का आगे का भाग (Further Main Body Of The Text)

7.4.1 द्वितीय विश्व युद्ध के प्रभाव एवं परिणाम(Causes and Consequences of the Second World War)

द्वितीय विश्व युद्ध लगभग 6 वर्ष तक चला। यह मानव इतिहास का सर्वाधिक क्रूर ,भयानक और विनाशकारी युद्ध था तथा इतना व्यापक और प्रभाव कारी था कि इसके साथ ही एक युग का अंत हो गया। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात यूरोप के इतिहास में अनेक नई प्रवृत्तियों का उदय हुआ। फ्रांस की राज्य क्रांति के पश्चात लोकतंत्र शासन और राष्ट्रीयता की जिन नई प्रवृत्तियों का प्रादुर्भाव हुआ था,

वह कालांतर में प्राय: सफल रही थी। किंतु विश्व युद्ध के पश्चात उनमें कई प्रवृतियां पुरानी पड़ गई थी और मानव समाज उनसे बहुत आगे बढ़ गया। राष्ट्रीयता की भावना क्षीण होने लगी, उसका स्थान अब वे नई विचारधाराएं लेने लगी थी, जो समाज को एक नए रूप में संगठित करना चाहती थी। व्यावसायिक क्रांति तथा वैज्ञानिक उन्नति के कारण जनसाधारण में जो एक नई जागृति, नई चेतना उत्पन्न हो गई थी उसने समाज के आर्थिक संगठन के प्रश्न को बहुत महत्वपूर्ण बना दिया। हम इस युद्ध के प्रभावों और परिणामों का निम्नलिखित शीर्षकों के द्वारा अध्ययन कर सकते हैं-

i) परमाणु युग का सूत्रपात(The beginning of the atomic age): संयुक्त राज्य अमेरिका के एक वायुयान बी-29 ने 6 अगस्त, 1945 को हिरोशिमा पर परमाणु गिराया। परमाणु के विस्फोट से हिरोशिमा की 90 प्रतिशत इमारतें नष्ट हो गई एवं लगभग 7 लाख 50 हजार व्यक्ति मारे गए। इस महासहार के साथ परमाणु युग का सूत्रपात हुआ। विश्व के सभी वैज्ञानिकों ने अनुभव किया कि परमाणु शक्ति के कारण मनुष्य को अतिमानुषी शक्ति मिल गई है। अल्बर्ट स्वीटजर ने 1954 में नोबेल पुरस्कार प्राप्त करते समय कहा था,"मानव अणु शक्ति के कारण अतिमानुषी शक्ति बन गया है, परंतु उसकी बुद्धि उस अतिमानुषी मान तक उन्नत नहीं हुई जिस मान तक उसे प्राप्त हुई है|" इससे स्पष्ट है कि परमाणु युग के साथ मानव सभ्यता पर विनाश की काली घटा छा गई। आजकल एक महाद्वीपों से दूसरे महाद्वीपों तक पहुंचने वाले और शब्द की रफ्तार से भी तेज रफ्तार से उड़ने वाले जेट विमान, नाभिकीय बम फेंकने वाले प्रेक्षपास्त्र और परमाणु से चलने वाले विमान तथा पनडुब्बियां बन चुके हैं। यदि इस नवीन हथियारों पर नियंत्रण स्थापित नहीं किया गया तो मानव सभ्यता पर संकट के बादल हमेशा छाए रहेंगे।

ii) दो विचारधाराओं में विभाजित समाज(Society divided into two ideologies): दूसरे विश्व युद्ध के बाद यूरोप के इतिहास में अनेक नई प्रवृत्तियों का प्रादुर्भाव हुआ। राष्ट्रीयता की भावना अब कुछ क्षीण होने लगी थी, उसका स्थान अब वह नई विचारधाराएं लेने लगी, जो समाज को एक नए रूप में संगठित करना चाहती थी। इस समय का समाज दो प्रमुख विचार धाराओं में विभाजित था। प्रथम साम्यवाद या कम्युनिज्म तथा दूसरा लोकतंत्रवाद या डेमोक्रेसी। साम्यवादी चाहते थे की उत्पत्ति के साधनों पर कुछ व्यक्तियों का स्वामित्व न रहे और वह समाज की संपत्ति हो जाये तथा कोई भी व्यक्ति श्रम किए बिना आमदनी प्राप्त न कर सके। समाज में ऊंच-नीच का भेदभाव मिट जाए, विविध श्रेणियों तथा वर्गों का अंत हो जाए और सब व्यवसाय राज्य के अधिकार में आ जाए। इसके विपरीत

लोकतंत्रवादी यह स्वीकार करते हैं कि समाज में छोटे-बड़े का भेद दूर होना चाहिए पर उनका विचार था कि संपत्ति की उत्पत्ति, विनिमय और वितरण पर राज्य कानूनों द्वारा इस प्रकार नियंत्रण स्थापित होना चाहिए जिससे पूंजीपति और मजदूर, जमींदार और किसान सब में समन्वय बना रहे और सब को संपत्ति का यथोचित भाग मिलता रहे।इन दोनों विचारधाराओं में प्रत्येक देश में राष्ट्र की जनता को दो पृथक वर्गों में विभाजित कर दिया। फ्रांस के साम्यवादी अपने विचारों के कारण रूस के साम्यवादियों के अधिक समीप थे, अपेक्षाकृत फ्रांस के ही उन लोगों के, जो साम्यवादी नहीं थे। विश्व युद्ध के समय इंग्लैंड और फ्रांस में बहुत से लोगों ने अपने राष्ट्रीय संस्कारों के विरुद्ध शत्रु देशों की सहायता करने में संकोच नहीं किया, कारण यह है कि उनकी विचारधारा वही थी, जिसके विरुद्ध उनकी राष्ट्रीय सरकार युद्ध कर रही थी। राष्ट्रभक्ति, देश प्रेम और मातृभूमि के लिए मर मिटने की भावना का स्थान अब विचारधारा के प्रति भक्ति लेने लगी थी।

iii) राष्ट्रीय भावना की निर्बलता(Weakness of national sentiment): वैज्ञानिक प्रगति द्वारा मनुष्य ने देश और काल पर अद्भुत विजय प्राप्त कर ली थी। भाषा, धर्म, नस्ल व संस्कृति आदि के कारण मानव समाज में जो भेद है, उनका महत्व अब इस वैज्ञानिक उन्नति के कारण कम हो गया है। किसी समय विविध कबीले, फिरके , गण आदि एक दूसरे से अलग होते थे। बाद में उनके भेद शिथिल पड़ते गए और विविध कबीले व बिरादरियाँ एक सूत्र में संगठित होकर राष्ट्र के हित में एक बड़ा संगठन बनाने में सफल हुई। यह राष्ट्र बड़े संगठनों में संगठित होने लगे। यही कारण है कि विश्व युद्ध के बाद यूरोप में यह प्रवृत्ति पैदा हुई की साम्यवादी विचारधारा के अनुयाई पूर्वी यूरोप के राज्य रूस की संरक्षा में अपना संगठन बना लें। इसी प्रकार लोकतंत्र के अनुयायी पश्चिमी यूरोप के राज्यों ने आवश्यकता महसूस की कि साम्यवाद से बचने के लिए संगठित हो जाए।

iv) सर्व सत्तावादी शासन की स्थापना पर बल(Establisment of an authoritarian regime): यद्यपि विश्व युद्ध में प्रजातंत्रीय व्यवस्था ने अपनी विजय स्थापित कर ली थी परंतु वास्तव में इस युद्ध ने प्रजातंत्रीय राज्यों को निर्बल तथा खोखला साबित कर दिया था। फ्रांस तथा ब्रिटेन विजयी होते हुए भी युद्ध के पश्चात अपने को आर्थिक संकट से नहीं बचा सके थे। अतः यूरोप के देशों में अब लोकतंत्र का स्थान सर्व सत्तावादी शासन(Totalitarianism) लेने लगा था। विविध विचारधाराओं के कारण राष्ट्रीय सरकारों की स्थिति अब कहीं भी सुरक्षित नहीं थी क्योंकि प्राय: प्रत्येक देश में इस तरह की राजनीतिक पार्टियां स्थापित हो गई थी, जो राज्य की सुरक्षा की अपेक्षा किसी विचारधारा को

अधिक महत्व देती थी, अतः राष्ट्रीय सरकारों के लिए यह आवश्यक हो गया था कि वे इन राजनीतिक दलों पर अनेक प्रकार की पाबंदियां लगाएं और अपने हाथों में इतने अधिकार रखें जिससे इन राष्ट्र विरोधी शक्तियों का भलीभांति दमन किया जा सके। यही कारण है कि ब्रिटेन जैसे स्वतंत्रता पसंद देश को भी कम्युनिस्ट पार्टी के विरुद्ध अनेक कारवाइयाँ करने की आवश्यकता महसूस हुई। अतः अब विचार स्वातंत्र्य और सच्चे लोग शासन का भी लोप होने लगा।

v) यूरोपीय प्रभुत्व का अंत(The end of European dominance): द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व तक यूरोप, विश्व इतिहास का निर्माता था किंतु इस युद्ध के बाद यूरोप के राष्ट्र आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से अपाहिज हो चुके थे। विश्व समाज को अनुशासित करने वाला यूरोप अब 'समस्या प्रधान' यूरोप बन गया। विश्व युद्ध के बाद जर्मनी पूर्णत: पंगु हो चुका था, इटली सर्वनाश के कगार पर खड़ा था और ब्रिटेन तथा फ्रांस की स्थिति तृतीय श्रेणी के राष्ट्र जैसी हो गई थी। आर्थिक दृष्टि से पंगु इन देशों में भोजन, वस्त्र तथा इंधन की अत्यंत कमी हो गई थी और लाखों लोग बेघरबार तथा बेरोजगार हो गए थे। यह समस्या इतनी विकट थी, इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि भारी प्रयत्नों के उपरांत भी युद्ध समाप्ति के 10 वर्ष बाद यूरोप में कोई 20 लाख बेघरबार व्यक्ति मौजूद थे। परिणाम स्वरूप विश्व का नेतृत्व दो महाशक्तियों - संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत रूस के हाथ में चला गया। विश्व के छोटे-छोटे राष्ट्र तेजी से उनके प्रभाव क्षेत्रों में बँटने लगे। इस प्रकार विश्व राजनीति का नेतृत्व इन दो महाशक्तियों के हाथों में चला गया था। रूस साम्यवादी विचारधारा   का पोषक बन गया और अमेरिका लोकतंत्र एवं पूंजीवादी आकांक्षाओं के लिए सहारा बन गया।

vi) शीत युद्ध का आरंभ(Beginning of the Cold War): द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात विश्व के राजनीतिज्ञों व नागरिकों को यह आशा थी कि संसार में अब दीर्घकालीन शांति स्थापित हो जाएगी और विजयी मित्रराष्ट्र युद्धकालीन मित्रता एवं सहयोग को बनाए रखकर युद्धोत्तरकालीन जटिल समस्याओं को भी आपसी सूझबूझ से सुलझा लेंगे। किंतु लोगों को यह आशा फलीभूत न हो सकी। युद्ध के बाद अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच पर रूस और अमेरिका जैसी दो महाशक्तियों का उदय हुआ। यह दोनों दो अलग-अलग विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व करते थे। अतः दोनों देशों के बीच विभिन्न समस्याओं के संबंध में शीघ्र ही तीव्र मतभेद उत्पन्न हो गए। इन मतभेदों ने इतना तनाव और वैमनस्य उत्पन्न कर दिया की सशस्त्र संघर्ष के न होते हुए भी दोनों के बीच आरोपों,प्रत्यारोपों एवं

परस्पर विरोधी राजनीतिक प्रचार का तो मूल युद्ध आरंभ हो गया जो अनेकों वर्षों तक चलता रहा। यही ' शीत युद्ध' कहलाता है। इस प्रकार परस्पर विरोधी राष्ट्रों के बीच कूटनीतिक संबंध तो बने रहे और कोई प्रत्यक्ष संघर्ष नहीं हुआ, किंतु उनका पारस्परिक व्यवहार शत्रुता पूर्ण बना रहा। इन देशों के समाचार पत्रों में आरोप-प्रत्यारोप 1991 ई० तक लगाए जाते रहे हैं।

vii) गुटनिरपेक्षता(Non - Alignment): द्वितीय विश्व युद्ध के उपरांत जब नए संप्रभु राष्ट्रों का जन्म हुआ तो उनमें से अधिकांश ने अपने आप को शीतयुद्ध की खींचतान से निरपेक्ष रखने का निर्णय लिया। इस क्षेत्र में भारत ने मार्गदर्शन किया और गुटनिरपेक्षता की आवाज बुलंद की। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने 7 दिसंबर, 1946 को एक रेडियो प्रसारण में कहा था ' जहां तक संभव हो हमें परस्पर विरोधी गुटों की राजनीति से दूर रहना चाहिए,जिसके कारण ही पहले 2 विश्व युद्ध लड़े जा चुके हैं '। उन्होंने इसे भारत की विदेश नीति का आधार बनाया और गुलामी की जंजीरों से मुक्त होने वाले एशियाई और अफ्रीकी देशों को एक अंतरराष्ट्रीय शक्ति बनाने का आह्वान किया। आज लगभग 102 देश गुटनिरपेक्ष आंदोलन से जुड़े हुए हैं। गुटों से अलग रहने वाले और उपनिवेशवाद के खिलाफ जूझने वाले राष्ट्रों को एक मंच पर लाने में गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलन सफल हुए हैं।

viii) प्रादेशिक संगठनों का विकास((Development of Territorial Organizations): संयुक्त राष्ट्र संघ भी अमेरिका और रूस के बीच चलने वाले शीत युद्ध का अखाड़ा बन गया था, परिणाम स्वरूप दोनों पक्षों ने अपनी भावी सुरक्षा के लिए प्रादेशिक संगठनों के निर्माण की ओर आगे बढ़ना शुरू कर दिया, कुछ देश साम्यवाद के प्रसार को रोकने के उद्देश्य से अमेरिका के नेतृत्व में संगठित हुए, तो दूसरी और रूस ने अपने और पश्चिमी राष्ट्रों के बीच साम्यवादी सरकारों की स्थापना करके सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने का प्रयत्न किया। पश्चिमी राष्ट्रों के सुरक्षा संगठनों में, उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (NATO),दक्षिणी पूर्वी एशिया संधि संगठन (SEATO),बगदाद पैक्ट उल्लेखनीय है। पामर एवं पर्किंस के अनुसार'नाटो' एक युगांत कारी घटना थी। साम्यवादी सुरक्षा संगठनों में' वारसा पैक्ट' प्रमुख रहा।

ix) एशिया अफ्रीका का जागरण एवं नए स्वतंत्र राज्यों का उदय(The awakening of Asia and Africa and the rise of new independent states): दूसरे विश्व युद्ध के पश्चात यूरोपीय उपनिवेशों में राष्ट्रीयता की भावनाएं प्रचलित हुई। एशिया और अफ्रीका के राष्ट्रीय जागरण ने यूरोपीय

राष्ट्रों के प्रभाव को भी समाप्त कर दिया। परिस्थितियों से विवश होकर महायुद्ध के बाद ब्रिटिश सरकार ने अपनी नीति में परिवर्तन किया जिससे भारत, वर्मा, मलाया, लंका, मिस्र आदि विविध देश ब्रिटेन के आधिपत्य से मुक्त हो गए। फ्रेंच हिंद चीन में फ्रांसीसी आधिपत्य के अनेक देशों को भी स्वतंत्रता प्राप्त हुई। कंबोडिया, लाओस, वियतनाम आदि देश स्वतंत्र हो गए। हॉलैंड के उपनिवेशो - जावा, सुमात्रा,बोर्निया आदि ने हिन्देशिया नामक संघ राज्य की स्थापना की और हॉलैंड से स्वतंत्र हो गए। इस प्रकार, दूसरे विश्व युद्ध के बाद के वर्षों में धीरे-धीरे यूरोप के औपनिवेशिक साम्राज्य का सूर्य अस्त हो गया। वस्तुत: 1919 के बाद से ही एशिया और अफ्रीका में यूरोपीय साम्राज्यवाद के विरुद्ध जो आंदोलन उठा था, उसको दूसरे महायुद्ध के बाद शानदार सफलता मिली और यूरोपीय साम्राज्य का पतन हो गया।

x) संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना(Establisment of the United Nations): प्रत्येक युद्ध के पश्चात लोगों में शांति स्थापित करने का विचार उत्पन्न होता है। अतः प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात शांति स्थापित करने के लिए 10 जनवरी, 1920 को राष्ट्र संघ की स्थापना की गई थी। इसी तरह द्वितीय विश्वयुद्ध के भीषण तांडव ने विचारशील राजनीतिज्ञों को मानव जाति की रक्षा के लिए शान्ति को सुरक्षित बनाए रखने वाले एक अंतरराष्ट्रीय संगठन के निर्माण की तीव्र आवश्यकता महसूस करायी । युद्ध काल में इसकी स्थापना के प्रयत्न आरंभ हो चुके थे,अक्टूबर, 1943 में मास्को सम्मेलन में सामान्य सुरक्षा के लिए एक अंतरराष्ट्रीय संगठन स्थापित करने का विचार स्वीकार किया गया था। तत्पश्चात विभिन्न बैठकों में इस संगठन एवं विधान का प्रारूप तैयार किया गया। अप्रैल-जून, 1945 में सैन फ्रांसिस्को सम्मेलन में इसे अंतिम रूप दिया गया। इसके बाद 24 अक्टूबर, 1945 को संयुक्त राष्ट्र के विधान को लागू किया गया।सेन फ्रांसिस्को सम्मेलन में चार्टर पर हस्ताक्षर करने वाले 51 राज्य, संघ के प्रारंभिक सदस्य माने गये । द्वितीय विश्व युद्ध के बाद नए राज्यों के उदय की प्रक्रिया अत्यधिक तीव्र गति से चली। 1960 में केवल एक माह में अफ्रीका महाद्वीप के ही 16 नए सदस्य देश संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य बने। 1990 तक इस संघ के सदस्यों की संख्या बढ़कर 159 हो गई।

xi) मानवतावादी जीवन दर्शन(Humanistic Philosophy of life): विश्व युद्ध के बाद 'मानवतावाद'(Humanism)प्रभावशाली रूप से सामने आया है। मानव की स्वतंत्रता तथा उसका कल्याण ही तमाम राजनीतिक क्रियाओं का प्रवर्तन लक्ष्य हो गया है। द्वितीय महायुद्ध के महाविनाश का मानसिक भय सर्वत्र रहा है,और युद्ध की संभावनाओं को मिटाने की आवश्यकता सर्वत्र अनुभव की

गई। मानवीय अधिकारों की चर्चा युद्ध के बीच चलती रही और संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा ' मानवीय अधिकारों की घोषणा' इस और एक महान कदम था।

xii) मध्य पूर्व और सुदूर पूर्व की महत्ता बढ़ना(Growing importance of the Middle East and Far East): द्वितीय महायुद्ध के उपरांत एशिया क्षेत्र मध्य पूर्व और सुदूर पूर्व अंतरराष्ट्रीय राजनीति में निरंतर महत्वपूर्ण होते गए और आज भी इस का अपना अलग महत्व है। तेल के बहुल भंडारों की खोज के कारण मध्य पूर्व न केवल अंतरराष्ट्रीय राजनीति का महत्वपूर्ण केंद्र बन गया है अपितु विश्व का एक प्रधान संकट स्थल भी बन गया है। दूसरी ओर एक महत्वपूर्ण निर्गुट लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में स्वतंत्र भारत के उदय ने तथा एक महान शक्ति के रूप में साम्यवादी चीन के विकास ने सुदूर पूर्वी क्षेत्र को विश्व के सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रदेशों की श्रेणी में ला दिया है।

xiii) विनाशकारी प्रभाव (Destructive effects): दूसरे विश्व युद्ध में धन और जन का कितने भयंकर रूप से विनाश हुआ, इसका सही-सही अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। पर यह निश्चित है कि इस युद्ध में दोनों पक्षों को अपार हानि उठानी पड़ी। युद्ध में कुल मिलाकर लगभग 2 करोड़ 20 लाख व्यक्ति मारे गए तथा 3 करोड 30 लाख व्यक्ति घायल हुए सैनिकों के अतिरिक्त जो सर्व साधारण नागरिक बमवर्षा, जहाजों के डूबने आदि द्वारा मृत्यु को प्राप्त हुए व बुरी तरह घायल हुए उनकी संख्या भी एक करोड़ के लगभग पहुंचती है। इस युद्ध पर विविध देशों को जो धन खर्च करना पड़ा उसकी मात्रा एक लाख करोड़ अनुमानित की गई है। युद्ध के कारण संपत्ति का जो विनाश हुआ, उसका अनुमान इस बात से किया जा सकता है कि अकेले इंग्लैंड में लड़ाई के कारण जो संपत्ति संबंधी नुकसान हुआ, उसकी क्षतिपूर्ति के लिए अट्ठारह सौ करोड़ रूपया अपेक्षित था। अनुमान है कि विश्व युद्ध के कारण रूस की कुल राष्ट्रीय संपत्ति का चौथाई भाग नष्ट हो गया।

7.5 स्वयं- प्रगति जांच (Check Your Progress)

रिक्त स्थान भरो:-

A) वर्साय की संधि................में हुई।

B) द्वितीय विश्व युद्ध के समय जर्मनी का चांसलर............ था।

C) राष्ट्र संघ की स्थापना...............में हुई।

D) द्वितीय विश्व युद्ध में धुरी राष्ट्रों की .... हुई।

E) संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना...............में हुई।

निम्न बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर दीजिये :-

i) द्वितीय विश्व युद्ध में कौन से देश शामिल थे?

a) ऑस्ट्रेलिया b) ब्रिटेन c) जर्मनी d) ये सभी।

ii) द्वितीय विश्व युद्ध के प्रमुख कारण क्या थे?

a) फासीवाद का उदय b) वर्साय की संधि द्वारा जर्मनी का हर्ष उपचार

b) वर्साय की संधि d) ये सभी।

iii) किस घटना को आमतौर पर द्वितीय विश्व युद्ध का जुझारू कृत्य माना जाता है?

a) रूस पर जर्मनी का हमला। b) जर्मनी का ब्रिटेन पर हमला।

b) पोलेंड पर जर्मनी का हमला। d) जर्मनी का आस्ट्रिया पर हमला।

iv) जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करने वाले पहले दो देश कौन से थे?

a) इटली ओर यूनान।

b) ब्रिटेन ओर फ्रांस।

c) नार्वे ओर डेनमार्क।

d) सयुंक्त राज्य अमेरिका और सोबियात संघ।

v) जर्मनी पर आक्रमण करने वाले पहले दो पश्चिमी यूरोपीय देश कौन से थे?

a) फ्रांस और बेल्जियम।

b) नार्वे ओर डेनमार्क।

c) स्विट्ज़रलैंड ओर नीदरलैंड।

d) स्पेन ओर पुर्तगाल।

vi) फ्रांस पर जर्मनी के हमले से बचाव के लिए मित्र राष्ट्रों ने कौन सी बड़ी गलती की?

a) वे यह अनुमान लगाने में असफल रहे कि हमला होगा ।

b) उन्हें एक नोसेना हमले की बजाय जमीनी बलों द्वारा हमले की उमीद थी।

c) उन्होंने गलत अनुमान लगाया कि मुख्य आक्रमण कहा होगा।

d) वे जर्मनी के साथ सीमा पर खदानों को स्थापित करने में विफल रहें।

कृपया उत्तर की पड़ताल पाठ के अंतिम हिस्से 7.9 में करें।

7.6 सारांश (Summary)

यह कहा जा सकता है कि द्वितीय विश्वयुद्ध अति भयंकर एवं विनाशकारी था। इसके प्रभाव से विश्व का कोई भी राष्ट्र अछूता नहीं रहा। यहां तक कि जो देश इस युद्ध में तटस्थ रहे थे, वे भी इसके प्रभावों से मुक्त नहीं रह सके। युद्ध के परिणाम स्वरूप साम्राज्यवाद का स्वरूप बदल गया। अब साम्राज्यवाद का स्थान विचारधाराओं पर आश्रित प्रभाव क्षेत्रों ने ले लिया। युद्ध के परिणाम स्वरूप शक्ति संतुलन ब्रिटेन के हाथों से निकलकर अमेरिका के हाथों में आ गया, राष्ट्र संघ की बुराइयों को दूर करने तथा भविष्य शांति एवं मैत्री के वातावरण को बनाए रखने के लिए राष्ट्र संघ की स्थापना की गई।यह द्वितीय विश्व युद्ध की सबसे बड़ी देन है।

7.7 संकेतक शब्द (Keywords)

धुरी राष्ट्र: आधार राष्ट्र जैसे -जर्मनी, जापान व इटली द्वितीय विश्व युद्ध में।

निशस्त्रीकरण: ताकतवर राष्ट्रों द्वारा आपस में हथियारों की होड़ को कम करना।

साम्यवाद: एक ऐसी विचारधारा जिसमें उत्पादन के साधनों पर पूरे समाज का बराबर अधिकार हो।

मानवतावाद: एक ऐसी विचारधारा जिसमें मानव कल्याण व मानव स्वतंत्रता को सर्वोपरि रखा जाता है।

शीत युद्ध: ऐसा युद्ध जो हथियारों से न लड़कर विचारों से लड़ा जाता है ।

7.8 स्वयं- मूल्यांकन परीक्षा(Self-Assessment Test)

i) द्वितीय विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।

ii) धुरी राष्ट्रों से क्या अभिप्राय है ? विस्तार से समझाइए।

iii) नात्सीवादी और फासिस्टवादी विचारधाराओं से आप क्या समझते हैं?

iv) द्वितीय विश्व युद्ध के कारणों को विस्तार से समझाइए।

v) द्वितीय विश्व युद्ध की प्रमुख घटनाओं पर प्रकाश डालिए।

vi) द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामों पर चर्चा कीजिए।

vii) द्वितीय विश्व युद्ध ने दुनिया के राष्ट्रों की मानवता के प्रति सोच को बदल डाला। समझाइए।

7.9 अपनी प्रगति की जांच के लिए उत्तर देखें (Answers to check your progress)

A) 1919 B) हिटलर C) 1920 D) पराजय E) 24 अक्टूबर, 1945

i) (d) ii) (d) iii) (c) iv) (b) v) (b) vi) (c)

7.10 संदर्भ ग्रंथ/ निर्देशित पुस्तकें(References/ Suggested Readings)

- Second World War, A complete history; by Martin Gilbert.
- The origins of The Second World War; by A.J.P. Tailor.
- A History of Second World War; by B.H.Liddell Hart.
- द्वितीय विश्वयुद्ध, मानव सभ्यता के इतिहास का निर्णायक मोड़; विकास मुखर्जी, जे पी सिंह।
- विश्व का इतिहास; डॉ. ए के चतुर्वेदी।
- www.google.com

B.A HISTORY PART- III YEAR SEMESTER-VI	
COURSE CODE: 304 **LESSON NO. 08**	**AUTHOR – MOHAN SINGH BALODA**
प्रथम विश्वयुद्ध से पूर्व देशों का ध्रुवीकरण **(Polarization of Countries before World War-I)**	

अध्याय सरंचना (Lesson Structure)

8.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objective)

8.2 परिचय (Introduction)

8.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main body of Text)

8.3.1 प्रथम विश्वयुद्ध : पृष्ठभूमि (First World War : Background)

8.3.2 प्रथम विश्वयुद्ध से पूर्व देशों का ध्रुवीकरण : उत्तरदायी कारक (Polarization of Countries before World War-I : Responsible Factors)

8.3.3 यूरोप में संघर्ष (Struggle in Europe)

8.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of Text)

8.4.1 गुटों का निर्माण (Formation of Groups)

8.4.2 युद्ध से पूर्व की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ (Important Events before the War)

8.4.3 युद्ध का आरंभ (The Beginning of the War)

8.5 प्रगति समीक्षा (Check Your Progress)

8.6 सारांश/संक्षिप्तिका (Summary)

8.7 संकेत–सूचक (Key-words)

8.8 स्व–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test SAT)

8.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your Progress)

8.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

8.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस पाठ के अध्ययन के बाद विद्यार्थी समर्थ होंगे –

- प्रथम विश्वयुद्ध के पृष्ठभूमि पर चर्चा कर सकेंगे।

- युद्ध पूर्व देशों के ध्रुवीकरण के लिए उत्तरदायी कारकों को बता सकेंगे।
- यूरोप की प्रमुख शक्तियों के बीच उपनिवेशों और व्यापार को लेकर उत्पन्न संघर्ष का वर्णन कर सकेंगे।
- युद्ध–पूर्व की महत्त्वपूर्ण घटनाओं का जिक्र कर सकेंगे।
- युद्ध के आरंभ पर चर्चा कर सकेंगे।

8.2 परिचय (Introduction) :-

1914 ई. विश्व–इतिहास का अत्यंत त्रासद वर्ष था। इसी वर्ष विश्व –पटल पर एक भयंकर युद्ध प्रारंभ हुआ, जो प्रथम विश्व–युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है। यह युद्ध 1914 से 1918 ई. तक चला। इसमें संसार के प्रायः सभी बड़े–बड़े राष्ट्रों ने भाग लिया। यह युद्ध प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तरीके से विश्व के सभी देशों को प्रभावित किया। दुनिया के सामने यह प्रथम युद्ध था, जो इतना व्यापक, विस्तृत एवं लंबा था। प्रथम युद्ध से पूर्व की स्थितियों व परिस्थितियों पर विचार करते है तो पाते हैं कि संधियों एवं प्रतिसंधियों का एक विकट चक्र ने प्रथम विश्वयुद्ध के लिए जमीन तैयार की थी। इसमें साम्राज्यवाद, राष्ट्रवाद एवं सैन्यीकरण की विचारधारा ने आग में घी का कार्य किया। पारस्परिक संदेह एवं भय ने इस युद्ध को और पक्का कर दिया।

इस युद्ध में एक और इंग्लैंड, फ्रांस, रूस, अमेरिका इत्यादि राष्ट्र थे जिन्हें मित्रराष्ट्र कहा जाता था। दूसरी ओर जर्मनी, आस्ट्रिया, इटली, तुर्की, बुलगारिया इत्यादि राष्ट्र थे जिन्हें केन्द्रीय शक्तियां कहा जाता था। चार वर्षों के भयंकर संघर्ष के बाद 1918 ई. में यह विश्वयुद्ध समाप्त हुआ। इस युद्ध में मित्र राष्ट्रों की विजय हुई।

8.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main body of Text)

8.3.1 प्रथम विश्वयुद्ध : पृष्ठभूमि (First World War : Background)

रूसी क्रांति का नायक लेनिन ने प्रखरता के साथ यह विचार प्रकट किया था कि साम्राज्यवाद पूँजीवाद का सर्वोच्च शिखर है।

वास्तव में पूँजीवादी व्यवस्था ही अलग–अलग चरणों से गुजरते हुए अंतिम रूप से उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद में बदल गया। साम्राज्यवादी देशों के बीच साम्राजय विस्तार को लेकर होड़ मच गई। साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्द्धा के कारण ही विश्व युद्ध की स्थिति बनी। 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध में प्रथम औद्योगिक क्रांति तथा 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में द्वितीय औद्योगिक क्रांति हुई थी।

औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप साम्राज्यवादी देशों के बीच कच्चे माल, सस्ता श्रम और बाजार की खोज में अपने–अपने उपनिवेश की स्थापना को लेकर संघर्ष होना स्वाभाविक था। अतः इन औद्योगिक क्रांति के राष्ट्रों के बीच हितों की टहराहट ने ही विश्व युद्ध को जन्म दिया।

18 वीं सदी के उत्तरार्द्ध हुए प्रथम औद्योगिक क्रांति में मुख्य रूप से ब्रिटेन और फ्रांस लाभान्वित हुए थे। अतः इन दोनों देशों ने अपने देश में उद्योग को बढ़ाने के लिए विश्व के प्रमुख देशों को अपने प्रभाव क्षेत्र में बांट लिया था। इसके बावजूद भी अभी एशिया, अफ्रीका व लैटिन अमेरिकी देशों में अनेक क्षेत्र ऐसे थे जहाँ उपनिवेशीकरण के मौके मौजूद थे। इस कारण इस समय तक साम्राज्यवादी देश को किसी क्षेत्र से हटना पड़ता था तो वे बिना किसी संघर्ष के हट जाते थे। इसकी पूर्ति वे अन्य क्षेत्रों पर अधिकार जमा कर कर लेते थे। इसलिए संघर्ष टलता रहा। परंतु 19वीं सदी के अंत तक की स्थिति पूरी तरह बदल चुकी थी। द्वितीय औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप जर्मनी, जापान, इटली, रूस, अमेरिका जैसे देशों में औद्योगिकरण अभी–अभी प्रारंभ हुआ था। अब इन देशों को कच्चे माल, सस्ता श्रम व बाजार की खोज में उपनिवेश की स्थापना की अनिवार्यता हुई। जबकि इस समय तक उपनिवेशीकरण अपनी पूर्णता पर पहुँच गया था।

ऐसी स्थिति में विभिन्न औद्योगीकृत राष्ट्रों के बीच साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्द्धा अत्यधिक तीर्व हो गयी। साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्द्धा के इस दौर में विभिन्न राष्ट्रों की शक्ति उपनिवेशों में खर्च होती रही लेकिन जब यह प्रक्रिया पूरी हो गयी तो सभी राष्ट्रों का जमावड़ा यूरोप में होना शुरू हो गया।

ये देश अलग–अलग गुटों में ध्रुवीकृत होने लगे। इन देशों के ध्रुवीकरण की प्रक्रिया ने यूरोप के शक्ति संतुलन को तोड़ दिया और अंततः विश्व को एक महायुद्ध में झोंक दिया।

इसमें एक ओर इंग्लैंड, फ्रांस, रूस, अमेरिका इत्यादि राष्ट्र थे जिन्हें मित्रराष्ट्र कहा जाता था। दूसरी ओर जर्मनी, आस्ट्रिया, इटली, तुर्की, बुलगेरिया इत्यादि राष्ट्र थे जिन्हें केन्द्रीय शक्तियाँ/धुरी राष्ट्र कहा जाता था।

8.3.2 प्रथम विश्वयुद्ध से पूर्व देशों का ध्रुवीकरण उत्तरदायी कारक (Polarization of Coutnries before World War-I : Responsible Factors)

साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्द्धा, राष्ट्रवाद की प्रवृत्ति व सैन्यीकरण की अवधारणा को लेकर औद्योगीकरण में अग्रणी देशों ने अपने–अपने गुटों के माध्यम से प्रथम विश्वयुद्ध से पूर्व देशों के ध्रुवीकरण की प्रक्रिया में लग गये। इसके लिए संधियों एवं प्रतिसंधियों का एक त्रासद दौर आरंभ हो गया।

देशों के ध्रुवीकरण की पृष्ठभूमि फ्रेंकफर्ट संधि (1871) के द्वारा ही तैयार हो चुकी थी। इस संधि के तहत जर्मनी ने आर्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण क्षेत्र एल्सस और लॉरेन का क्षेत्र फ्रांस से छीन लिया था। फ्रांस के लिए यह एक राष्ट्रीय अपमान की बात थी।

जर्मन चांसलर बिस्मार्क इस बात से पूरी तरह सहमत था कि फ्रांस एक राष्ट्रीय अपमान का बदला लेने के लिए हर प्रकार का प्रयास करेगा। इसको ध्यान में रखते हुए बिस्मार्क ने फ्रांस को यूरोपीय मंच से अलग–थलग करने के लिए ऑस्ट्रिया और रूस के शासनाध्यक्ष के साथ मिलकर जर्मनी, ऑस्ट्रिया व रूस का एक संघ 1873 में बनाया था। यहीं से यूरोपीय देश अपने–अपने राष्ट्रीय हितों को लेकर संधि व प्रतिसंधि की ओर बढ़ने लगे।

अब बिस्मार्क के सामने यह समस्या थी कि बाल्कन क्षेत्र को लेकर आमने–सामने रूस व आस्ट्रिया को एक संघ में बनाकर कैसे रखा जाए। इसी परिप्रेक्ष्य में 1878 ई. में बर्लिन सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें बिस्मार्क का झुकाव ऑस्ट्रिया की ओर हो गया और उसने बोस्निया और हर्जेगोबिना का क्षेत्र ऑस्ट्रिया को दे दिया। इस कारण रूस जर्मनी की ओर से उदासीन हो गया। जबकि बिस्मार्क एक कदम आगे बढत्रकर 1879 में ऑस्ट्रिया से एक संधि कर ली जिसके तहत यह निश्चित हुआ कि अगर कोई तीसरी शक्ति किसी एक पर आक्रमण करती है तो दूसरी शक्ति उसकी सहायता करेगी।

इसके बाद बिस्मार्क इटली जिसकी निष्ठा जर्मनी और फ्रांस के बीच विभाजित थी को अपने गुट में मिलाने को लेकर ध्यान केन्द्रित किया। इधर एक ऐसा अवसर प्राप्त हुआ जब फ्रांस ने ट्यूनीशिया पर अधिकार कर लिया। ब्रिटेन, जर्मनी, आस्ट्रिया–हगरा, रूस, फ्रांस और इटली। इससे इटली नाराज होकर बिस्मार्क की ओर झुक गया। इन्हीं परिस्थितियों में 1882 ई. में जर्मनी, ऑस्ट्रिया और इटली के बीच त्रिगुट संधि हुई।

जर्मनी को विश्वमंच पर स्थापित करने के लिए बिस्मार्क ने 1887 में रूस के साथ अलग से भी एक संधि की थी। परंतु 1887 में जर्मनी के नए शासक विलियम कैसर द्वितीय ने बिस्मार्क की नीति के विपरीत रूस की उपेक्षा करनी प्रारंभ कर दी थी। इससे रूस का झुकाव फ्रांस की ओर हो गया और विलियम कैसर की इन गतिविधियों से आहत होकर चांसलर बिस्मार्क ने 1890 में इस्तीफा दे दिया।

इन सबके बीच अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अलग–थलग पड़ा फ्रांस के हित रूस के साथ परस्पर मिल गये थे और उसने रूस में पूँजी निवेश भी शुरू कर दिया था। इसका परिणाम यह हुआ कि 1894 में रूस और फ्रांस के बीच संधि हो गई।

संधियों व प्रतिसंधियों के इस दौर में यूरोपीय राष्ट्रों के ध्रुवीकरण की प्रक्रिया में इंग्लैंड जर्मन शासक विलियम द्वितीय की नीतियों से क्षुब्ध था। जर्मनी नौसेना के क्षेत्र में ब्रिटेन की सर्वोच्चता को तोड़ने के लिए आतुर था। ऐसे में ब्रिटेन का फ्रांस के साथ समीपता स्वाभाविक था। इस कारण 1904 में इंग्लैंड और फ्रांस के बीच एक संधि हुई। अब यद्यपि रूस और इंग्लैंड एशिया क्षेत्र में तिब्बत और अफगानिस्तान पर कब्जे को लेकर आमने–सामने थे फिर भी 1905 में रूस के जापान से पराजित होने के कारण उसने इंग्लैंड से संधि करने में ही अपनी भलाई समझी। इन्हीं परिस्थितियों में फ्रांस, रूस और इंग्लैंड के बीच एक त्रिपक्षीय संधि हुई। यह संधि 1907 में हुई थी। इस प्रकार प्रथम विश्वयुद्ध से पूर्व फ्रांस, रूस और इंग्लैंड का गुट बना था उसे ट्रिपल एतांत (Triple Entente) के नाम से जाना जाता है।

इस प्रकार प्रथम विश्वयुद्ध से पूर्व परस्पर हितों को लेकर संधियों एवं प्रतिसंधियों के द्वारा यूरोपीय देशों के ध्रुवीकरण के फलस्वरूप यूरोपीय शक्तियाँ दो गुटों में बँट चुकी थी। दोनों गुट अपने–अपने हितों को देखते हुए अन्य देशों को अपने पक्ष में करने लगे। निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप

उत्पन्न साम्राज्यवादी व उपनिवेशवादी विचारधारा, राष्ट्रवादी विचारधारा तथा सैनिक लामबंदी ने यूरोपीय देशों को प्रथम विश्वयुद्ध से पूर्व ध्रुवीकरण के लिए प्रेरित किया था।

8.3.3 यूरोप में संघर्ष (Struggle in Europe)

औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप यूरोप की प्रमुख शक्तियों के बीच उपनिवेशों व व्यापार को लेकर टकराव जोरों पर था। इस दौरान यूरोप में 6 प्रमुख शक्तियां थी – ब्रिटेन, जर्मनी, ऑस्ट्रिया–हंगरी, रूस, फ्रांस और इटली। ये सभी देश ध्रुवीकरण प्रक्रिया द्वारा परस्पर हितों को ध्यान में रखते हुए गुट बनाने में लगे थे।

इनके गुटों के निर्माण व टकराहट में एक प्रमुख कारण साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्द्धा तो थी ही और दूसरी तरफ यूरोप के ंअंदर होने वाली कुछ घटनाओं ने इस टकराव को और अधिक बढ़ा दिया था। जिय एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न को लेकर यूरोपीय शक्तियाँ आपस में उलझ रही थी, वह था – यूरोप के बालकन प्रायद्वीप का प्रश्न।

यहाँ यह स्पष्ट रहे कि दक्षिणी यूरोप का सबसे पूर्वी प्रायद्वीपीय भाग जिसमें संपूर्ण अल्बानिया, यूनान, बुल्गारिया, युगोस्लाविया, सोमानिया आदि के कुछ भाग को बाल्कन प्रायद्वीप के नाम से जाना जाता है।

बाल्कन प्रायद्वीप के देश उस्मानिया साम्राज्य के अधीन थे। उस्मानिया साम्राज्य को तुर्क साम्राज्य या ओटोमन साम्राज्य के नाम से भी जानते हैं। यह साम्राज्य 1299 से 1922 तक 600 वर्ष से भी अधिक समय पर अपने अस्तित्व को बनाये रखा था। यह साम्राज्य यूरोप, एशिया तथा अफ्रीका महाद्वीप पर फैला था।

बाल्कन प्रायद्वीप के देश उस्मानिया साम्राज्य के अधीन थे। परंतु 19वीं सदी में उस्मानिया साम्राज्य का पतन आरंभ हो चुका था। इस परिस्थिति में एक तरफ जहाँ अनेक जातियां स्वाधीनता के लिए इस साम्राज्य के विरूद्ध विद्रोह कर रही थीं तो वहीं दूसरी ओर यूरोप की प्रमुख शक्तियां इस पर अधिकार को लेकर सक्रिय हो गये।

बाल्कन प्रायद्वीप के क्षेत्र को अपने नियंत्रण में लाने के लिए उस्मानिया साम्राज्य और आस्ट्रिया हंगरी दोनों के खिलाफ आंदोलनों को बढ़ावा दे रहे थे। क्योंकि स्लाव जाति का एक बहुत बड़ा भाग आस्ट्रिया–हंगरी के अनेक क्षेत्रों में रहते थे। रूस के जार शासक की आंदोलन के पीछे यह मान्यता थी कि पूर्वी यूरोप के सभी स्लाव एक ही जनगण के लोग है। सर्बिया को रूस ने अपना संरक्षण दे रखा था। बाल्कन क्षेत्र में रूस के बढ़ते प्रभाव से यूरोप की प्रमुख शक्तियां खास कर ऑस्ट्रिया और जर्मनी ने अपनी सक्रियता बढ़ा दी। इस प्रकार बाल्कन प्रायद्वीप के प्रश्न को लेकर यूरोप में संघर्ष आरंभ हो गया।

8.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of the Text)

8.4.1 गुटों का निर्माण (Formation of Groups)

साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्द्धा व अपने–अपने उपनिवेश की स्थापना को लेकर यूरोप शक्तियों के बीच टकराव के कारण 19 वीं सदी के अंतिम दशक और उसके बाद के काल में यूरोप में तनाव की स्थिति पैदा हो गई। इस समय

यूरोप की जो 6 प्रमुख शक्तियाँ थी, वे अब परस्पर विरोधी गुटों में शामिल होने लगे। उस समय अग्रणी भूमिका निभाने वाली 6 प्रमुख शक्तियां थीं – ब्रिटेन, जर्मनी, ऑस्ट्रिया–हंगरी, रूस, फ्रांस और इटली। उस समय की परिस्थितियों के अनुरूप ये सभी शक्तियां अपनी सैनिक शक्ति बढ़ाने, अपनी सेनाओं और नौसेनाओं की संख्या बढ़ाने, नए और पहले से अधिक घातक हथियार विकसित करने में पूरी सक्रियता के साथ लग गये। युद्ध की तैयारियां करने पर वे अपार धन खर्च करने की प्रवृत्ति की ओर बढ़ने लगे। इन देशों की कार्यशैली व स्वरूप से यूरोप धीरे–धीरे एक विशाल सैनिक शिविर का रूप लेता जा रहा था।

इसके साथ ही इन देशों में युद्ध का महिमामंडल, इसका प्रचार, दूसरे देशों के खिलाफ नफरत भड़काना तथा अपने देश को दूसरे देशों से श्रेष्ठ बतलाने का कार्य जोरों के साथ आरंभ हो गया था। यद्यपि इस समय कुछ शक्तियां ऐसी भी थी जो युद्ध के खतरे के खिलाफ और सैन्यीकरण के खिलाफ आवाज उठाई फिर भी युद्ध के उन्माद में ये सभी आवाजें दब कर रह गई।

इस प्रकार परस्पर विरोधी समूहों का सिलसिला यह निश्चित कर दिया कि विश्वव्यापी युद्ध छिड़ने वाला है। संधियों व प्रतिसंधियों के माध्यम से यूरोपीय देश 19 वीं सदी से ही गुटों का निर्माण करते आ रहे थे।

अंततः 20 वीं सदी के पहले दशक में देशों के दो परस्पर विरोधी गुट बन गए और वे अपनी–अपनी सैनिक शक्ति के साथ एक दूसरे के मुकाबले के लिए तैयार हो गए।

इस प्रकार जर्मनी, ऑस्ट्रिया–हंगरी और इटली का त्रिगुट 1882 में अस्तित्व में आ गया था और इस त्रिगुट के विरोध में फ्रांस, रूस और ब्रिटेन में 1907 में एक त्रिदेशीय संधि (The Tripple Entente) बनी।

8.4.2 युद्ध से पूर्व की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ (Important Events before the War)

यूरोपीय शक्तियों के बीच गुटों के निर्माण के फलस्वरूप देशों के बीच तनाव बढ़ चुका था। इसमें युद्ध के पूर्व की कई घटनाओं ने इस तनाव को और अधिक बढ़ा दिया था और अंततः युद्ध की स्थिति बन गई। इनमें से एक था – मोरक्को संकट।

1904 ई. के ब्रिटेन–फ्रांस समझौते के अनुसार ब्रिटेन का मिस्र में और फ्रांस का मोरक्कों में विशेष हित स्वीकार किया गया। जर्मनी इस समझौते से बहुत क्षुब्ध था। इस परिस्थिति में जर्मन सम्राट मोरक्को जाकर वहाँ के सुल्तान को पूर्ण समर्थन देने का वचन दिया। ऐसी स्थिति में एक बार तो ऐसा लगा कि मोरक्को को लेकर होने वाली दुश्मनी युद्ध का कारण बन जाएगी। परंतु युद्ध टल गया। आगे चलकर 1911 ई. में फ्रांस ने मोरक्को के अधिकांश भाग पर कब्जा कर लिया। उसने बदले मे जर्मनी को फ्रांसीसी कांर्गो का एक बड़ा भाग दे दिया।

अंततः किसी प्रकार युद्ध तो टल गया परंतु यूरोपीय शक्तियों द्वारा युद्ध की तैयारी के कारण स्थिति खतरनाक हो गई। प्रथम विश्वयुद्ध से पूर्व हुई इस घटना को मोरक्को संकट के नाम से जाना जाता है।

प्रथम विश्वयुद्ध से पूर्व दूसरी सबसे महत्त्वपूर्ण घटना जो यूरोप की खतरनाक स्थिति को और भी खराब बनाने वाली साबित हुई वह थी – बाल्कन प्रायद्वीप के देशों पर नियंत्रण का प्रश्न।

1904 ई. में उस्मानिया साम्राज्य के प्रांत बोस्निया और हर्जेगोबिना को ऑस्ट्रिया ने अपने नियंत्रण में कर लिया। जबकि रूस का समर्थन प्राप्त सर्बिया इन प्रांतों पर नियंत्रण को लेकर शुरू से ही निगाहें गड़ा रखी थी। सर्बिया रूस की सहायता से बाल्कन क्षेत्र में एक संयुक्त स्लाव राज्य कायम करना चाहता था। इस परिस्थिति में रूस ने ऑस्ट्रियाई कब्जे के खिलाफ युद्ध छेड़ने की धमकी दी परंतु जर्मनी ने ऑस्ट्रिया को खुलकर अपना समर्थन दिया और रूस को पीछे हटना पड़ा।

इसने रूस और जर्मनी की दुश्मनी को और भी बढ़ा दिया। यूरोप में स्थिति अब और भी तनावपूर्ण हो गई। ऑस्ट्रिया के बोस्निया व हर्जेगोबिना के अपने नियंत्रण में लेने के बाद बाल्कन क्षेत्र पर अधिकार को लेकर युद्ध आरंभ हो गये। 1912 ई. में चार बाल्कन देशों – सर्बिया, बुल्गारिया, मॉण्टीनीग्रो और यूनान ने तुर्की के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया। इस युद्ध के द्वारा तुर्की के लगभग सारे अधिकार यूरोप में समाप्त कर दिये गय।

परंतु तुर्की के पुराने अधिकार क्षेत्रों के बँटवारे के प्रश्न को लेकर बाल्कन देश आपस में लड़ पड़े। अंत में अल्बानिया को एक स्वतंत्र देश के रूप में स्थापित करने में ऑस्ट्रिया सफल रहा। जबकि वास्तव में अल्बानिया पर सर्बिया का दाबा था। इस कारण सर्बिया की महत्त्वाकांक्षा पूरी न होने पर वहाँ आस्ट्रिया के खिलाफ नाराजगी फैल गई। इन सभी घटनाओं ने यूरोप को युद्ध के कगार पर पहुँचा दिया। बाल्कन संकट के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध इस घटना ने 1912–13 ई. में बाल्कन युद्ध का रूप ले लिया और इसे प्रथम विश्वयुद्ध का पूर्वाभ्यास के रूप में देखा जाता है।

8.4.3 युद्ध का आरंभ (The Beginning of the War)

यूरोप में दो परस्पर विरोधी गुट वर्षों से युद्ध की तैयारी कर रहे थे। इस कारण एक मामूली घटना विनाशकारी व्यापक युद्ध का रूप ले लिया। दो परस्पर विरोधी गुटों में एक और इंग्लैंड, फ्रांस, रूस अमेरिका इत्यादि राष्ट्र थे जिन्हें मित्रराष्ट्र कहा जाता था। दूसरी ओर जर्मनी, ऑस्ट्रिया, इटली, तुर्की, बुल्गारिया इत्यादि राष्ट्र थे जिन्हें केंद्रीय शक्तियाँ कहा जाता था। इन दो परस्पर विरोधी गुटों की शत्रुता ने 28 जून, 1914 साराजेवो में ऑस्ट्रिया के राजसिंहासन के उत्तराधिकारी आर्क ऑफ ड्यूक फ्रांसिस फर्डिनेड तथा उसकी पत्नी की हत्या की घटना को विश्वयुद्ध के लिए तात्कालिक कारण बना दिया। इन दोनों की हत्या बोस्निया की राजधानी साराजेबो में की गई थी।

ऑस्ट्रिया ने इस हत्या का आरोपी सर्बिया को मानते हुए उसे चेतावनी दी। सर्बिया ने इस आरोप को मानने से पूरी तरह इन्कार कर दिया क्योंकि वह उसकी पूर्ण स्वतंत्रता के खिलाफ थी।

इस कारण 28 जुलाई, 1914 को ऑस्ट्रिया ने सर्बिया के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। उधर रूस सर्बिया को पूर्ण सहायता देने को लेकर युद्ध की तैयारी में जुट गया। जर्मनी ने 1 अगस्त, 1914 को रूस और 3 अगस्त, 1914 को फ्रांस के खिलाफ युद्ध की घोषणा की।

इस स्थिति में फ्रांस पर बढ़ाने के दृष्टिकोण से जर्मनी की सेना 4 अगस्त, 1914 को बेल्जियम में घुस गई। उसी दिन अर्थात् 4 अगस्त, 1914 को ही ब्रिटेन ने जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी।

23 अगस्त, 1914 को जापान ने भी सुदूर–पूर्व में जर्मनी के उपनिवेश पर अपने नियंत्रण को लेकर युद्ध की घोषणा कर दी। तुर्की और रूस एक–दूसरे के आमने–सामने युद्ध के लिए तैयार हो गये। इस प्रकार अनेक देश इन दो गुटों के माध्यम से युद्ध में शामिल हो गए और युद्ध का आरंभ हो गया।

8.5 प्रगति समीक्षा (Check your Progress):

भाग (क) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks.)

(i) .... का मानना था कि साम्राज्यवाद पूँजीवाद का सर्वोच्च शिखर है।

(ii) प्रथम विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि .... संधि में ही बन चुकी थी।

(iii) जर्मनी, ऑस्ट्रिया और इटली के बीच त्रिगुट संधि .... ई. में हुई थी।

(iv) 1888 के बाद जर्मनी के नए शासक .... ने बिस्मार्क की नीतियों को उलट दिया था।

(v) फ्रांस, रूस और इंग्लैंड के बीच की त्रिपक्षीय संधि को .... के नाम से जानते थे।

(vi) प्रथम विश्वयुद्ध से पूर्व .... देश ने 1912 ई. में एक जहाज इंपरेटर बनाया था जो उस समय का सबसे बड़ा जहाज था।

(vii) .... देश ने सर्वस्लाव (Pan Slav) आंदोलन को प्रोत्साहित किया, जो इस सिद्धांत पर आधारित था। जो इस सिद्धांत पर आधारित था कि यूरोप के सभी स्लावजाति के लोग एक राष्ट्र हैं।

(viii) 1904–05 में रूस को पराजित करने के बाद .... देश का सुदूरपूर्व में प्रभाव बढ़ गया था।

(ix) 1912 ई. में चार बाल्कन देशों – सर्बिया, बुल्गारिया, मॉण्टीनीग्रो और यूनान ने .... देश के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया था।

(x) प्रथम विश्वयुद्ध से पूर्व की एक महत्त्वपूर्ण संकट बाल्कन संकट .... ई. में बाल्कन युद्ध के रूप में बदल गई थी।

भाग (ख) सत्य–असत्य कथन पर आधारित प्रश्न (True-False Statements bases questions)

(i) फ्रेंकफर्ट संधि (1871) के तहत जर्मनी ने फ्रांस से एल्सस और लॉरेन को क्षेत्र छीन लिया था जो आर्थिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण था। (   )

(ii) बर्लिन सम्मेलन (1878) के द्वारा बिस्मार्क का झुकाव ऑस्ट्रिया की ओर हो गया और उसे बोस्निया और हर्जेगोबिना का क्षेत्र दे दिया गया। इससे रूसी भावनाओं को स्वाभाविक रूप से ठेस लगी और वह जर्मनी की ओर से उदासीन हो गया। (   )

(iii) जर्मनी, ऑस्ट्रिया और इंग्लैंड के बीच त्रिगुट संधि 1882 ई. में हुई थी। (   )

(iv) 1911 ई. में इंग्लैंड ने मोरक्को के अधिकांश भाग पर अधिकार कर लिया और इसके बदले जर्मनी को फ्रांसीसी कांगो का एक बड़ा भाग दे दिया। (   )

(v) बाल्कन क्षेत्र में सर्बिया एक संयुक्त स्लाव राज्य कायम करना चाहता था जिसके लिए उसे रूप का समर्थन प्राप्त था। (   )

(vi) विश्वयुद्ध से पूर्व इंग्लैंड, फ्रांस, रूस, अमेरिका इत्यादि राष्ट्रों के गुटों को धुरी राष्ट्र के नाम से जाना जाता था। (   )

(vii) जर्मनी, ऑस्ट्रिया, इटली, तुर्की, बुल्गारिया इत्यादि राष्ट्रों से मिलकर बने गुट की मित्रराष्ट्र कहा जाता था। (   )

(viii) 1912 ई. में इंग्लैंड द्वारा एक जहाज इंपरेटर बनाया गया था जो उस समय का सबसे बड़ा जहाज था। (   )

(ix) 1904 ई. में आपसी समझौता के अनुसार ब्रिटेन को मिस्र में उपनिवेश स्थापित करने की छूट मिली और फ्रांस को मोरक्को प्राप्त हुआ। (   )

(x) 28 जून, 1914 सारोजेवों में ऑस्ट्रिया के राजसिंहासन के उत्तराधिकारी आर्क ड्यूक फ्रांसिस फर्डिनेड तथा उसकी पत्नी की हत्या ने विश्वयुद्ध के लिए तात्कालिक कारण का काम किया। (   )

8.6 सारांश / संक्षिप्तिका (Summary)

- प्रथम विश्वयुद्ध संधियों और प्रतिसंधियों की अत्यंत दुःखद परिणति थी।
- साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, सैन्यवाद व राष्ट्रवाद की प्रवृत्ति ने इसकी पृष्ठभूमि तैयार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- साम्राज्यवाद को पूँजीवाद का सर्वोच्च शिखर बतलाने वाला महान विचार रूसी क्रांति का जनन लेनिन था।
- यही पूँजीवादी व्यवस्था विभिन्न चरणों से गुजरते हुए अंततः उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद में बदल गया।
- साम्राज्यवादी देशों के साम्राज्य–विस्तार के लिए होड़ एवं आपसी टकराव ही प्रथम विश्वयुद्ध के मूल कारण थे।

- इतिहासकारों के एक बहुत बड़े वर्ग के अनुसार विश्वयुद्ध और कुछ नहीं था बल्कि प्रथम औद्योगिक क्रांति एवं द्वितीय औद्योगिक क्रांति के राष्ट्रों के बीच हितों की टकराहट थी।
- प्रथम औद्योगिक क्रांति 18 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में हुई थी जिससे मुख्य रूप से ब्रिटेन और फ्रांस लाभान्वित हुए थे।
- द्वितीय औद्योगिक क्रांति जो 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुई थी और जिससे मुख्य रूप से जर्मनी, जापान, इटली, रूस और अमेरिका लाभान्वित हुए थे।
- बर्लिन सम्मेलन (1878) के द्वारा ऑस्ट्रिया को बोस्निया और हर्जेगोबिना का क्षेत्र प्राप्त हुआ था।
- जर्मनी और ऑस्ट्रिया के बीच 1879 ई. में एक संधि हुई थी जिसके तहत अगर कोई तीसरी शक्ति किसी एक पर आक्रमण करती है तो दूसरी शक्ति उसकी सहायता करेगी।
- 1882 ई. में जर्मनी, ऑस्ट्रिया और इटली के बीच त्रिगुट संधि हुई थी।
- जर्मन चांसलर बिस्मार्क ने 1890 ई. में जर्मनी के नए शासक विलियम कैसर द्वितीय की गतिविधियों से नाराज होकर इस्तीफा दे दिया।
- रूस और फ्रांस के बीच संधि 1894 ई. में हुई थी।
- 1904 ई. में इंग्लैंड और फ्रांस के बीच संधि हुई थी।
- 1904–05 ई. में हुए रूस–जापान युद्ध में जापान ने रूस को हरा दिया था।
- 1882 ई. के जर्मनी, ऑस्ट्रिया और इटली के त्रिगुट (Triple Alliance) के विरूद्ध 1907 ई. में इंग्लैंड, फ्रांस और रूस ने एक त्रिदेशीय संधि (Triple Entente) बनाई।
- Entente (एंता) शब्द का अर्थ है – आपसी समझदारी
- इस प्रकार बीसवीं शताब्दी के प्रथम दषक तक यूरोपीय शक्तियाँ दो गुटों में बँट चुकी थी।
- इनमें से एक ओर इंग्लैंड, फ्रांस, रूस, अमेरिका इत्यादि राष्ट्र थे जिन्हें मित्रराष्ट्र कहा जाता था।
- दूसरी ओर जर्मनी, ऑस्ट्रिया, इटली, तुर्की, बुल्गारिया इत्यादि राष्ट्र थे जिन्हें केन्द्रीय शक्तियाँ कहा जाता था।
- प्रथम विश्वयुद्ध के पूर्व की कुछ मह्रत्त्वपूर्ण घटनाएँ – मोरक्को का प्रश्न, बाल्कन संकट व बाल्कन युद्ध ने यूरोपीय शक्तियों के बीच पहले से ही व्याप्त तनाव और अधिक बढ़ा दिये।
- 1904 ई. में आपसी समझौते के अनुसार ब्रिटेन को मिस्र में उपनिवे"ा स्थापित करने की छूट मिली और फ्रांस को मारेक्को प्राप्त हुआ।

- 1911 ई. में फ्रांस ने मोरक्को के अधिकांश भाग पर अधिकार कर लिया और इसके बदले जर्मनी को फ्रांसीसी कांगो का एक बड़ा भाग दे दिया।
- बोस्निया और हर्जेगोबिना तुर्की साम्राज्य के क्षेत्र थे। 1904 ई. में ऑस्ट्रिया ने इन पर अपना अधिकार जमा लिया।
- सर्बिया बाल्कन क्षेत्र पर अपना नियंत्रण स्थापित करके एक संयुक्त स्लाव राज्य कायम करना चाहता था। इसके लिए उसे रूस का समर्थन मिला हुआ था। अतः रूस ने आस्ट्रिया को युद्ध छेड़ने की धमकी दी। दूसरी ओर जर्मनी ने आस्ट्रिया को खुलकर अपना समर्थन दिया। इससे रूस और जर्मनी में कटुता बढ़ गई। अंततः इस बाल्कन संकट ने युद्ध का रूप ले लिया।
- 1912 ई. में सर्बिया, बुल्गारिया, मोणिटेग्रो और यूनान चार बाल्कन देशों ने तुर्की के विरूद्ध युद्ध आरंभ कर दिया। इस युद्ध को बाल्कन युद्ध के नाम से जानते है। इस युद्ध में तुर्की की हार हुई।
- बाल्कन युद्ध (1912–1913) से तुर्की के सभी अधिकार क्षेत्र छीन गए और इसके बँटवारे को लेकर यूरोपीय शक्तियों में संघर्ष होने लगे।
- 28 जून, 1914 साराजेवो में आस्ट्रिया के राज सिंहासन के उत्तराधिकारी आर्क ड्यूक फ्रांसिस फर्डिनेंड तथा उसकी पत्नी की हत्या ने विश्वयुद्ध के लिए तात्कालिक कारण का काम किया।

8.7 संकेत–सूचक (Key Words)

- अध्ययनोपरांत – अध्ययन के बाद
- त्रासद – अत्यंत दुखद

8.8 स्वं–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test (SAT)

(क) बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Based Questions)

(i) त्रिगुट–समझौते में शामिल थे।

(क) इंग्लैंड, अमेरिका और रूस

(ख) फ्रांस, जर्मनी और ऑस्ट्रिया

(ग) जर्मनी, ऑस्ट्रिया और इटली

(घ) फ्रांस, ब्रिटेन और जापान

(ii) सर्वस्लाव आंदोलन को किसने प्रोत्साहित किया ?

(क) रूस (ख) जर्मनी (ग) इटली (घ) फ्रांस

(iii) प्रथम विष्वयुद्ध में कौन–सा प्रमुख देष बाद में शामिल हुआ ?

(क) रूस (ख) इंग्लैंड (ग) अमेरिका (घ) फ्रांस

(iv) यूरोप में गुप्त संधियों का जन्मदाता था –

(क) बिस्मार्क (ख) मेजिनी (ग) मुसोलिनी (घ) विलियम केसर

(v) लूसीतानिया एक ब्रिटि"ा .... का नाम था।

(क) पनडुब्बी (ख) वायुयान

(ग) पानी का जहाज (घ) बमवर्षक विमान

(vi) सोराजेनो .... की राजधानी थी।

(क) ऑस्ट्रिया (ख) बोस्निया

(ग) बुल्गारिया (घ) अल्बानिया

(vii) ऑस्ट्रिया सरकार ने .... विधि को सर्बिया के विरूद्ध युद्ध की घोषणा की थी।

(क) 28 जुलाई, 1914 (ख) 21 जुलाई, 1914

(ग) 28 अगस्त, 1914 (घ) 27 मई, 1914

(viii) 1917 ई. में कौन–सा देश प्रथम वि"वयुद्ध से अलग हो गया ?

(क) अमेरिका (ख) रूस (ग) इंग्लैंड (घ) जर्मनी

(ix) जर्मनी, ऑस्ट्रिया, हंगरी और इटली देशों ने मिलकर एक त्रिगुट .... ई. में बनाया था।

(क) 1882 (ख) 1887 (ग) 1889 (घ) 1907

(x) रूस–जापान युद्ध जिसमें रूस की हार हुई थी .... ई. में लडे गये थे।

(क) 1903–1904 (ख) 1904–1905

(ग) 1905–1906 (घ) 1906–1907

(ख) निबंधात्मक / दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Essay/Long Answer based Questions)

1. प्रथम वि"वयुद्ध से पूर्व देशों के ध्रुवीकरण के लिए उत्तरदायी कारकों का वर्णन करें।
   (Explain the Responsible factors for polarization of countries before World War-I)
2. प्रथम वि"वयुद्ध से पूर्व यूरोप की प्रमुख शक्तियों के बीच गुटों के निर्माण की प्रक्रिया का वर्णन करें।
   (Explain the process of the formation of groups among main European powers.)
3. प्रथम वि"वयुद्ध से पूर्व देषों के क्षेत्रीकरण को विश्व–मानचित्र पर अंकित करे।
4 विश्व–मानचित्र पर यूरोपीय शक्तियों के औपनिवे"ािक साम्राज्य को अंकित करें।

(ग) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer based Questions)

1. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें। (Write Short Notes on the following)

(i) त्रिगुट (The Triple Alliance)

(ii) त्रिदेशीय संधि (The Triple Entente)

(iii) सर्वस्लाव आंदोलन (Panslav Movement)

(iv) बाल्कन संकट (Balkan Crisis)

(v) मोरक्को का प्रष्न (Moroccan Crisis)

(vi) साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्द्धा (Imperial Competition)

(vii) बिस्मार्क (Bismarc)

(viii) ऑटोमन/तुर्क/उस्मानिया साम्राज्य (Ottoman/Turkish/Osmania Empire)

(ix) प्रथम वि"वयुद्ध का तात्कालिक कारण

(Immediate cause of First World War)

(x) प्रथम वि"वयुद्ध से पूर्व यूरोप में संघर्ष

(Struggle in Europe before First World- War)

8.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your Progress)

8.5 (क) उत्तर –

(i) लेनिन (ii) फ्रेंकफर्ट संधि (1871) (iii) 1882 (iv) विलियम केसर द्वितीय

(v) त्रिदेशीय संधि (The Triple Entente) (vi) जर्मनी (vii) रूस (viii) जापान

(ix) तुर्की (x) 1912–13

8.5 (ख) उत्तर –

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) असत्य

(v) सत्य (vi) असत्य (vii) असत्य (viii) असत्य

(ix) सत्य (x) सत्य

5.8 (क) उत्तर –

(i) ग (ii) क (iii) ग (iv) क

(v) ग (vi) ख (vii) क (viii) ख

(ix) क (x) ख

8.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

- विश्व का इतिहास – कुमार नलिन

  McGraw Hill Education (India) Private Limited, Chennai,

द्वितीय संस्करण 2020

- आधुनिक विश्व

  डॉ. प्रसाद गोपाल, लक्ष्मी Publishing House, Rohtak, प्रथम संस्करण : 2017

- संक्षिप्त इतिहास :

  NCERT सार, बर्णवाल महे"ा कुमार एवं सिंह जगत पाल

  Cosmos Publication, Delhi

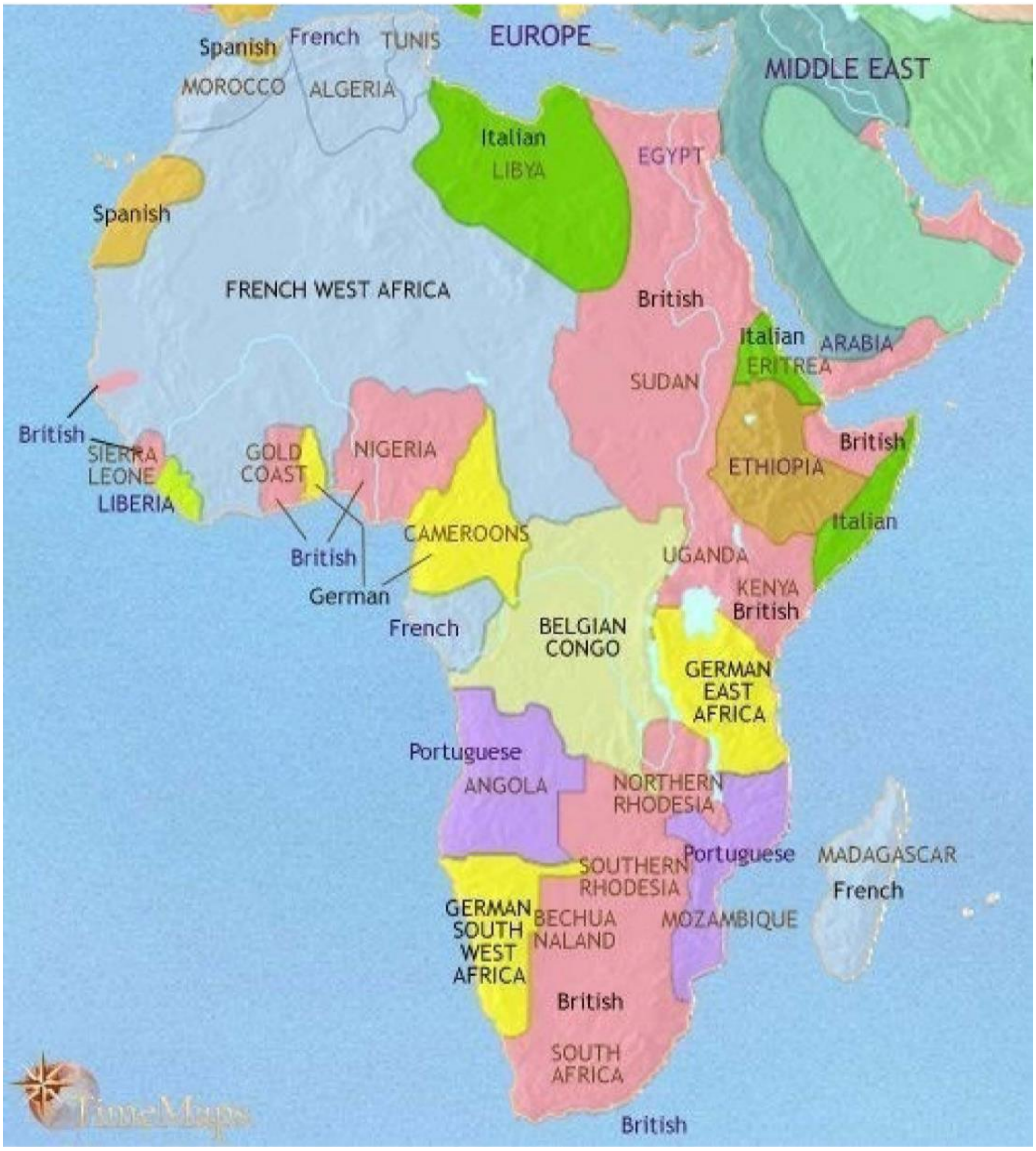

www.com

www.com

www.com

B.A HISTORY PART- III YEAR SEMESTER-VI	
COURSE CODE: 304 **LESSON NO. 09**	**AUTHOR – MOHAN SINGH BALODA**
द्वितीय विश्वयुद्ध से पूर्व देशों का ध्रुवीकरण **(Polarization of Countries before World War-II)**	

अध्याय सरंचना (Lesson Structure)

9.1 अधिगम उद्‌देश्य (Learning Objective)

9.2 परिचय (Introduction)

9.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main body of Text)

9.3.1 द्वितीय वि”वयुद्ध : पृष्ठभूमि (Second World War : Background)

9.3.2 द्वितीय वि”वयुद्ध से पूर्व देशों का ध्रुवीकरण : उत्तरदायी कारक (Polarization of countries before World War-II : Responsible factors)

9.3.3 द्वितीय वि”वयुद्ध से पूर्व उपनिवे”ावादी और साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्द्धा के कारण संघर्ष (Struggle due to the colonial and imperialistic Rivalaries before World War-II)

9.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of Text)

9.4.1 गुटों का निर्माण (Formations of Groups)

9.4.2 युद्ध का आरंभ (The Beginning of the War)

9.4.3 युद्ध का विस्तार (Expansion of the War)

9.5 प्रगति समीक्षा (Check Your Progress)

9.6 सारांश/संक्षिप्तिका (Summary)

9.7 संकेत–सूचक (Key-words)

9.8 स्व–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test SAT)

9.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your Progress)

9.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

9.1 अधिगम उद्‌देश्य (Learning Objectives)

इस पाठ के अध्ययनोपरांत विद्यार्थी समर्थ होंगे –

- द्वितीय वि"वयुद्ध के पृष्ठभूमि पर चर्चा कर सकेंगे।
- युद्ध–पूर्व दे"ाों के ध्रुवीकरण के लिए उत्तरदायी कारकों को बता सकेंगें।
- यूरोपीय शक्तियों के बीच के संघर्षों का वर्णन कर सकेंगे।
- युद्ध के आरंभ व उसके विस्तार का उल्लेख कर सकेंगे।

9.2 परिचय (Introduction) :-

प्रथम वि"वयुद्ध के बाद यद्यपि वि"व में शांति की स्थापना के लिए 1920 में राष्ट्रसंघ अस्तित्व में आ चुका था, लेकिन वास्तविक शक्ति के अभाव में शक्ति"ााली राष्ट्रों के बीच साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्द्धा को लेकर वैमनस्य के कारण यह युद्ध को रोकने में सफल नहीं हो सका। अतः प्रथम वि"वयुद्ध के समाप्त होने के बीस वर्ष बाद ही 1939 ई. में द्वितीय वि"वयुद्ध साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्द्धा का स्वाभाविक परिणाम था। यूरोप के कई देशों के पास विशाल साम्राज्य थे जिनके बल पर वे धनी और संपन्न बने हुए थे। यूरोप में जर्मनी और इटली तथा एशिया में जापान इसी स्थिति में पहुँचना चाहते थे। अतः वे किसी भी कीमत पर साम्राज्य–स्थापना के प्रयत्न में लगे हुए थे। युद्ध के लिए आतुर प्रमुख शक्तियाँ अपने–अपने औपनिवे"िाक हितों के लिए संघर्ष कर रही थीं। युद्ध से पूर्व ये सभी देश औपनिवे"िाक हितों और विचारधाराओं के आधार पर ध्रुवीकृत होकर गुटों के निर्माण में निरंतर प्रयासरत थे। पूँजीवाद दे"ाों का समूह मित्र–राष्ट्र के नाम से गुट के निर्माण में प्रयास कर रहे थें। दूसरी और फांसीवाद देशों का समूह धुरी राष्ट्र के नाम से गुट का निर्माण कर रहे थे। साम्यवादी देशों का समूह भी साम्यवादी राष्ट्र के नाम से गुटबाजी में लगे हुए थे।

इस प्रकार युद्ध से पूर्व यूरोपीय देशों की गुटबंदियाँ में जर्मनी की बढती हुई शक्ति को देखकर यूरोप के अन्य देश आंतकित हो गए और आत्मरक्षा के लिए गुटों का निर्माण करने लगे। इस दि"ाा में फ्रांस ने सर्वप्रथम कदम उठाया। उसने जर्मनी के चारों तरफ फैले हुए राष्ट्रों को मिलाकर एक गुट बनाया। इसके विरूद्ध जर्मनी और इटली ने मिलकर एक दूसरा गुट बनाया। बाद में जापान भी इस गुट में सम्मिलित हो गया। इस प्रकार जर्मनी, इटली और जापान का गुट धुरीराष्ट्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

उधर ब्रिटेन, फ्रांस, अमेरिका और रूस का जो गुट बना वह मित्र राष्ट्रों के नाम से प्रसिद्ध हुआ। दोनों गुट एक दूसरे के विरूद्ध घृणा, द्वेष और अवि"वास का प्रचार करने लगे। राष्ट्रसंघ की असफलता, यूरोपीय मामलों में अमेरिका की उदासीनता और जर्मनी के प्रति ब्रिटेन की तुष्टिकरण की नीति ने इस युद्ध को अवश्यंभावी बना दिया।

द्वितीय वि"वयुद्ध अत्यंत विध्वंसकारी व विना"ाक व व्यापक युद्ध के रूप में वि"व इतिहास में साबित हुआ। वि"व के लगभग सभी प्रमुख देष प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इसमें सम्मिलित थे। इस युद्ध में एक तरफ जहाँ

नवीनतम प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया गया था तो वहीं दूसरी ओर कुछ ऐसे कदम भी उठाये गये जो पूरी तरह से मानवीय गरिमा के खिलाफ था।

9.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main body of Text)

9.3.1 द्वितीय विश्वयुद्ध : पृष्ठभूमि (Second Wordwar: Background)

यद्यपि द्वितीय वि"वयुद्ध के लिए अलग–अलग प्रकार की परिस्थितियाँ तथा कई कारण जिम्मेदार थे, फिर भी नि"चत रूप से साम्राज्यवादी प्रवृत्ति इसका सर्वप्रमुख कारण बना। साम्राज्यवादी हितों को लेकर ही विभिन्न राष्ट्र अलग–अलग गुटों में बँटे थे। इस गुटबंदी की प्रक्रिया को उस समय यूरोप मे ंप्रचलित विभिन्न विचारधाराओं ने सैद्धांतिक रूप से मजबूती प्रदान करने का कार्य किया। इसमें एक ओर पूँजीवादी देशों – ब्रिटेन, फ्रांस व अमेरिका का एक प्रमुख गुट था। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद अस्तित्व में आये फांसीवाद देशों का एक दूसरा गुट था, जिसमें मुख्य रूप से जर्मनी, इटली और जापान थे। इसके अलावा एक तीसरा गुट भी साम्यवादियों का था जिसमें मुख्य रूप से सोवियत संघ तथा पूर्वी यूरोपीय देश और मध्य एशियाई देश शामिल थे।

द्वितीय वि"वयुद्ध के दौरान अमेरिका घोषित रूप से एक तटस्थ दे"ा था लेकिन एक पूँजीवादी देश के रूप में अंततः उसका झुकाव प्रथम गुट में होना स्वाभाविक ही था।

इस प्रकार अलग–अलग विचारधाराओं के आधार पर जो देशों के गुट बने थे उनका वास्तविक आधार औद्योगिक क्रांति ही था। एक ओर जहाँ प्रथम गुट प्रथम औद्योगिक क्रांति का परिणाम था वहीं दूसरी ओर द्वितीय और तृतीय गुट द्वितीय और तृतीय औद्योगिक क्रांति की उपज थे। बाद में औद्योगीकरण को प्राप्त होने वाले राष्ट्र चूंकि उपनिवे"ावादी और साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्द्धा में देर से प्रविष्ट हुए थे इसलिए इनका स्वाभाविक विरोध पहले से औद्योगीकरण को प्राप्त राष्ट्रों से था। इस प्रतिस्पर्द्धा के कारण वि"व को अलग–अलग गुटों में बाँट दिया था। इसमें एक ओर सोवियत संघ, इंग्लैंड, फ्रांस, अमेरिका, चीन एवं अन्य राष्ट्र थे। इन्हें मित्रराष्ट्र कहा जाता था और दूसरी ओर जर्मनी, इटली और जापान थे। इन्हें धुरीराष्ट्र कहा जाता था, क्योंकि ये राष्ट्र ही द्वितीय वि"वयुद्ध की धुरी अथवा आधार थे।

9.3.2 द्वितीय विश्वयुद्ध से पूर्व देशों का ध्रुवीकरण : उत्तरदायी कारक (Polarization of countries before World War-II : Reponsible Factors)

प्रथम वि"वयुद्ध के उपरांत उत्पन्न समस्याओं के निराकरण के लिए 1919 ई. में पेरिस शांति सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इस सम्मेलन में 27 राष्ट्रों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे। पेरिस सम्मेलन मे जर्मनी के साथ वर्साय की संधि तथा अन्य देशों के साथ अलग से संधियां की गई थीं। यद्यपि कहने को तो इस सम्मेलन में 27 राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था, फिर भी सभी संधियों की शर्तों को मुख्यतः ब्रिटेन, फ्रांस और अमेरिका के राष्ट्रनायकों ने ही मिलकर तैया किया था। इस प्रकार संधि की शर्ते कुछ विजित राष्ट्रों के द्वारा एकतरफा तय

कर दी गई और उन्हें विजित राष्ट्रों पर थोप दिया गया। इसमें सबसे प्रमुख संधि थी – वर्साय की संधि, जो जर्मनी के साथ की गयी थी। इसके तहत जर्मनी के सभी उपनिवे"ा छीन लिए गए, आर्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया गया और युद्ध की क्षतिपूर्ति के लिए भारी हर्जाने की माँग की गयी। उसकी सेना को भी नि"ास्त्र कर दिया गया। इस प्रकार वर्साय की यह संधि जर्मनी के लिए आर्थिक रूप से विना"ाकारी साबित होने के साथ–साथ एक राष्ट्रीय अपमान का विषय बन गया। फलस्वरूप जर्मनी की तत्कालीन सरकार इन प्रावधानों को पूर्ण निष्ठा के साथ कार्यरूप में नहीं ला सकी। परिणामतः जर्मनी आर्थिक अराजकता से घिर गया। इसी आर्थिक व राजनीतिक अराजकता ने हिटलर के नेतृत्व में नाजीवाद के उदय का मार्ग प्र"ास्त किया और हिटलर ने अन्य राष्ट्रों से जर्मनी के अपमान का बदला लेने के लिए गुटबंदी के द्वारा देशों के ध्रुवीकरण में लग गया।

इसी प्रकार विजेता राष्ट्र होने पर भी पेरिस सम्मेलन में इटली को उचित प्रतिनिधित्व नहीं दिया गया। इस कारण इटली में उत्पन्न राजनीतिक व आर्थिक अराजकता ने मुसोलिनी के नेतृत्व में फांसीवाद के उदय का मार्ग प्रशस्त कर दिया। इतना ही नहीं इस प्रकार की विभिन्न समस्याओं को लेकर जापान में भी फासीवादी विचारधारा लोकप्रिय हुई। जापान में यह फासीवाद सैन्यवाद के रूप में प्रकट हुआ। अतः यह स्पष्ट था कि तीनों असंतुष्ट राष्ट्र जर्मनी, इटली व जापान एक गुट के रूप में परिवर्तित हो गए। इस प्रकार यह पृष्ठभूमि रोम–बर्लिन–टोकियो धुरी के निर्माण में सहायक हुई।

आगे चलकर जर्मनी, इटली व जापान का यह गुट धुरी राष्ट्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ, जिन्होंने द्वितीय वि"वयुद्ध में धुरी अथवा आधार के रूप में भूमिका निभाये थे।

द्वितीय वि"वयुद्ध से पूर्व दे"ाों के ध्रुवीकरण में उपनिवे"ावादी और साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्द्धा की भी बहुत बड़ी भूमिका रही। जिन यूरोपीय दे"ाों में पहले ही औद्योगिक क्रांति हो चुकी थी, वे इस प्रक्रिया में काफी आगे थे। लेकिन जिन राष्ट्रों में बाद में औद्योगिक क्रांति हुई जैसे– यूरोप में जर्मनी और इटली तथा ए"ाया में जापान वे भी उपनिवे"ा व साम्राज्य को लेकर इसी स्थिति में पहुँचना चाहते थे। अतः ऐसी स्थिति दे"ाों का ध्रुवीकरण और उनका गुटों के निर्माण की प्रक्रिया में आगे बढ़ना स्वाभाविक ही था।

1929 की महान वि"व आर्थिक मंदी के द्वारा पूँजीवादी व्यवस्था की कमजोरिया प्रकट होने से दुनिया में इसके विकल्प के रूप में फासीवाद और नाजीवाद तथा साम्यवाद विचारधारा को प्रकट होने का अवसर मिल गया। दक्षिणपंथी के रूप में फासीवाद व नाजीवाद तथा वामपंथी के रूप में साम्यवाद जैसी विचारधाराओं तथा गुटबंदी की प्रक्रिया को प्रोत्साहित किया।

9.3.3 द्वितीय विश्वयुद्ध से पूर्व उपनिवेशवादी और साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्द्धा के कारण संघर्ष (Struggle due to Colonial and Imperialistic Rivalaries before World War-II)

औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप यूरोप के कई दे”ों में औद्योगीकरण की प्रक्रिया तीव्र गति से हुई। इसके फलस्वरूप निजी लाभ पर आधारित पूँजीवादी विचारधारा का जन्म हुआ। पूँजीवादी राष्ट्रों को उद्योगों के लिए कच्चा माल और उसके उत्पादों के लिए बाजार की आवश्यकता ने उपनिवे”ावाद व साम्राज्यवाद के लिए प्रेरित किया। साम्राज्यवादी दे”ों के साम्राज्य–विस्तार के लिए होड़ एवं आपस में टकराव ने युद्ध से पूर्व देशों के ध्रुवीकरण व गुटों में बँटने के लिए प्रोत्साहित किया। इन राष्ट्रों द्वारा अनौद्योगिक राष्ट्रों पर अपना नियंत्रण कायम करना, उनका आर्थिक शोषण करना और उन्हें अपनी साम्राज्यवादी लिप्सा का ि”ाकार बनाना अति आवश्यक हो गया था। ऐसे में इनके बीच संघर्ष होना स्वाभाविक था।

यूरोप के कई दे”ों के पास वि”ाल साम्राज्य थे जिनके बल पर वे धनी और संपन्न बने हुए थे। इन देशों में इंग्लैंड, फ्रांस, स्पेन व पूर्तगाल आदि यूरोपीय दे”ा शामिल थे। जिनमें स्पेन और पूर्तगाल तो इस साम्राज्यवादी दौड़ से बाद में बाहर हो गये परंतु इंग्लैंड और फ्रांस तो 19 वीं शताब्दी के आखिर में भी लगे रहे।

परंतु आगे चलकर द्वितीय व तृतीय औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप अन्य दे”ों में भी औद्योगीकरण की प्रक्रिया में तेजी आई तो वे भी औपनिवेि”ाक हितों को लेकर साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्द्धा में शामिल हो गये।

यूरोप में जर्मनी और इटली तथा एि”ाया में जापान इसी स्थिति में पहुँचना चाहते थे। अतः वे किसी भी कीमत पर साम्राज्य–स्थापना के प्रयत्न में लगे हुए थे। सभी औद्योगिक राष्ट्र बाजार और कच्चे मालों के लिए अधिक–से–अधिक उपनिवे”ों की चाह रखते थे। ऐसी स्थिति में उनके बीच संघर्ष होना स्वाभाविक था। ये सभी राष्ट्र अपने–अपने हितों को लेकर गुटों में बँटने लगे। अतः इन राष्ट्रों की इसी चाहत ने इनको ऐसी प्रतिस्पर्द्धा में उलझा दिया जिसकी अंतिम परिणति वि”वयुद्ध के रूप में हुई।

9.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of the Text)

9.4.1 गुटों का निर्माण (Formation of Groups)

प्रथम वि”वयुद्ध के बाद 1919 ई. में पेरिस शांति समझौता किया गया था ताकि वि”व के समक्ष आगे ऐसी विना”ाकारी युद्ध की नौबत न आये। परंतु इस शांति सम्मेलन प्रभावशाली राष्ट्रों ने किसी लम्बी रणनीति पर विचार नहीं कर सके। वर्तमान परिस्थिति को समझने में इन प्रभाव”ाली राष्ट्रों के राष्ट्रनायक विफल रहे। अतः इनके प्रयासों में तत्कालीन सुविधाओं, शक्ति संतुलन व घृणा की प्राथमिकता ही दिखाई पड़ी। यद्यपि इस सम्मेलन के द्वारा वि”व को संभावित युद्ध से बचाने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय संगठन राष्ट्रसंघ (League of Nations) की स्थापना भी की गयी, फिर भी पर्याप्त वास्तविक शक्ति के अभाव में यह संगठन वि”व को युद्ध से बचाने में विफल रही।

सम्मेलन में कई संधियां की गई थी। इनमें जर्मनी के साथ की गयी वर्साय की संधि सबसे प्रमुख थी। वर्साय की संधि के द्वारा जर्मनी को हर दृष्टिकोण से पंगु बना दिया गया। जर्मनी की सरकार व यहाँ के लोगों के

लिए यह संधि पूरी तरह से विना"ाकारी व अपमानजनक थी। इस स्थिति में जर्मनी अराजकता की ओर बढ़ी जिसका फायदा उठाते हुए वहाँ हिटलर के नेतृत्व में नाजीवाद की स्थापना हो गई। हिटलर अन्य राष्ट्रों से प्रतिशोध लेने तथा जर्मनी को सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र के रूप में स्थापित करने के लिए अपनी शक्ति को बढ़ाने लगा।

उधर विजेता राष्ट्र होने के बावजूद इटली को भी सम्मेलन में उचित प्रतिनिधित्व नहीं मिला था, जिससे वहाँ उभरी अराजकता का फायदा उठाते हुए मुसोलिनी ने फासीवाद सरकार की स्थापना कर दी। विभिन्न तात्कालीन समस्याओं के परिप्रेक्ष्य मे ंजापान में भी सैन्यवाद के रूप में फासीवाद का उदय हो गया था।

इन सब परिस्थितियों के बीच 1929 की महान वैं"वक आर्थिक मंदी ने पूँजीवादी व्यवस्था की कमजोरियों को उजागर कर दिया था। इस कारण यूरोपीय राष्ट्र, फासीवाद, नाजीवाद व साम्यवाद जैसे वैकल्पिक व्यवस्थाओं की ओर बढ़ने लगे। इन वैकल्पिक व्यवस्थाओं के कारण यूरोप विभिन्न गुटों में बँट गया और यूरोप का शक्ति संतुलन टूट गया।

द्वितीय वि"वयुद्ध से पूर्व यूरोपीय देषों की गुटबंदियों के परिप्रेक्ष्य में जर्मनी की बढ़ती हुई शक्ति को देखकर यूरोप के अन्य राज्य आतंकित हो गए और आत्मरक्षा के लिए गुटों का निर्माण करने लगे। इस दि"ाा में सबसे प्रथम कदम फ्रांस के द्वारा उठाया गया था। उसने जर्मनी के चारों तरफ फैले हुए राष्ट्रों को मिलाकर एक गुट बनाया। इसके विरूद्ध जर्मनी और इटली ने मिलकर एक दूसरा गुट बनाया। बाद में इस गुट में जापान भी सम्मिलित हो गया। इस प्रकार जर्मनी, इटली व जापान का यह गुट धुरीराष्ट्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ। ब्रिटेन, फ्रांस, अमेरिका, रूस का जो गुट बना वह मित्र राष्ट्रों के नाम से प्रसिद्ध हुआ। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि जर्मनी, इटली तथा जापान की साम्राज्यवादी नीतियों तथा राष्ट्रसंघ की असफलता के कारण यूरोप दो शक्तिषाली गुटों में विभाजित हो गया।

9.4.2 युद्ध का आरंभ (The Beginning of the War)

विश्व के इतिहास में द्वितीय वि"वयुद्ध को सबसे विना"ाकारी घटना के रूप में मान्यता है। इस समय जर्मनी, इटली तथा जापान जैसे देश अपनी साम्राज्यवादी प्रवृत्ति को लेकर उपनिवे"ाों की स्थापना व शस्त्रीकरण की नीति पर बल दे रहे थे। उधर राष्ट्रसंघ (लीग ऑफ नेषंस) पूर्ण निः"ास्त्रीकरण की प्रक्रिया में असफल रहा।

इन परिस्थितियों में यूरोप की राजनीतिक उथल–पुथल का लाभ उठाकर जर्मन–शासक हिटलर ने पौलैण्ड से डेंजिंग बन्दरगाह तथा समुद्र तक पहुँचने के लिए पोलि"ा गलियारे (Corridor) की माँग की।

यहाँ यह स्पष्ट रहे कि प्रथम वि"वयुद्ध के बाद पूर्वी पर्शिया (प्रषा) को शेष जर्मनी से अलग कर दिया गया था। पूर्वी एं"ाया को शेष जर्मनी से अलग करने वाले डेंजिंग नगर को जर्मन नियंत्रण से मुक्त एक स्वतंत्र नगर बना दिया गया था।

हिटलर ने इसी डेंजिंग नगर को जर्मनी को लोटाने की माँग की थी, जिसे ब्रिटेन ने मानने से इन्कार कर दिया था।

द्वितीय वि"वयुद्ध से पूर्व पोलैण्ड ने भी हिटलर की इस माँग को अस्वीकार कर दिया। फलतः जर्मनी और पोलैण्ड में संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो गई। यह घटना अप्रैल, 1939 की है। इस स्थिति में फ्रांस और इंग्लैंड ने बीच–बचाव करते हुए दोनों देशों को आपसी बातचीत के द्वारा शांतिपूर्ण समझौता के लिए सुझाव दिया। हिटलर के द्वारा इसे स्वीकार कर लिया गया।

दोनों दे"ाों में बातचीत के लिए समय और स्थान भी नि"चत कर लिये गये। परंतु पोलैण्ड ने इसमें कोई दिलचस्पी नहीं ली थी। उसने बातचीत के लिए अपना राजदूत नहीं भेजा। इस बात को लेकर जर्मनी को बड़ा क्षोभ हुआ और उसने ब्रिटेन की चेतावनी के बावजूद 1 सितंबर, 1939 को पोलैण्ड पर हवाई हमला कर दिया। इस प्रकार जर्मन सेनाएँ पोलैण्ड में प्रवेष कर गई। ब्रिटेन और फ्रांस ने दो दिनों के बाद 3 सितंबर, 1939 को जर्मनी के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी थी। हिटलर की सेना तीव्र गति से आगे बढ़ने लगी। इस प्रकार पोलैण्ड पर जर्मन–आक्रमण के साथ ही द्वितीय वि"वयुद्ध आरंभ हो गया।

पोलैण्ड को कोई सहायता नहीं मिल पाई। अतः तीन सप्ताह के भीतर ही जर्मन सेनाओं ने पूरी तरह से पोलैण्ड को जीत लिया।

युद्ध की घोषणा के बाद कई महीनों तक कोई वास्तविक युद्ध नहीं हुआ। इसलिए सितंबर, 1939 से 9 अप्रैल, 1940 तक (जिस दिन जर्मनी ने नार्वे और डेनमार्क पर आक्रमण किया था) के युद्ध को नकली युद्ध (फोनी वार Phone war) कहा जाता है।

9.4.3 युद्ध का विस्तार (Expansion of the war)

जर्मनी के 1 सिंतबर, 1930 को पोलैण्ड पर आक्रमण के साथ ही द्वितीय वि"वयुद्ध शुरू हो गया। हिटलर की सेना तीव्र गति से आगे बढ़ते हुए पोलैण्ड के अंदर घुस गई। तीन सप्ताह के भीतर ही उसने पूरी तरह पोलैण्ड को जीत लिया। जर्मनी के पोलैण्ड पर आक्रमण के दो दिनों बाद ही 3 सितंबर, 1939 को ब्रिटेन और फ्रांस ने भी जर्मनी के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी थी। इस घोषणा को अनदेखी करके जर्मन सेना लगातार आगे बढ़ रही थी। 9 अप्रैल, 1940 को जर्मनी ने नार्वे तथा डेनमार्क पर आक्रमण कर दिया और तीन सप्ताह के भीतर ही इन देशों को जीत लिया। हिटलर ने अपनी कूटनीति के द्वारा नार्वे की फासीवाद पार्टी के नेता क्विजलिंग को अपनी ओर मिला लिया। क्विजलिंग ने इस युद्ध में जर्मन सेना की मदद की थी। इसीलिए तब से लेकर आज तक क्विजलिंग नाम का प्रयोग उन दे"ाद्रोहियों के लिए किया जाता है, जो अपने दे"ा पर आक्रमण करने वालों की मदद करते हैं। हिटलर की जर्मन सेना को होसला युद्ध को लेकर बढ़ता ही जा रहा था। नार्वे और डेनमार्क को जीतने के बाद अब जर्मन सेना आगे बढ़कर जून, 1940 तक बेल्जियम, हालैंड और फ्रांस पर अधिकार कर लिया।

22 जून, 1940 को जर्मनी ने फ्रांस को आत्मसमर्पण के लिए मजबूर कर दिया। इसी बीच इटली भी जर्मनी की ओर से युद्ध में शामिल हो गया था।

ऐसे में अब जर्मनी का आत्मवि"वास और अधिक बढ़ गया था। वह फ्रांस को जीतने के बाद इंग्लैंड को अपने कब्जे में लेने को आतुर था। इसी उद्दे"य से जर्मन सेना ने अगस्त 1940 में ब्रिटेन पर हवाई हमले शुरू कर दिए। जर्मन सेना किसी भी प्रकार से डरा–धमकाकर ब्रिटेन को आत्मसमर्पण के लिए बाध्य करना चाहती थी। परंतु उस समय के ब्रिटेन के प्रधानमंत्री चर्चिल के नेतृत्व में ब्रिटेन ने जर्मन सेना का डटकर मुकाबला किया और जर्मनी ब्रिटेन पर अधिकार नहीं कर सका।

इसके बाद जर्मनी ने पूर्व सोवियत संघ पर 22 जून, 1941 को आक्रमण कर दिया। इसमें प्रारंभ में जर्मन सेना को थोड़ी बहुत सफलता मिली परंतु अंततः सोवियत संघ के कड़े प्रतिरोध के कारण उन्हें पीछे हटना पड़ा।

इस प्रकार युद्ध के विस्तार के क्रम में उधर पूर्वी ए"िाया में जर्मनी का मित्र जापान युद्ध की घोषणा किए बिना ही 7 दिसंबर, 1941 को हवाई स्थित पर्लहार्बर के अमेरिकी नौ–सैनिक अड्डे पर आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण में कई अमेरिका जहाज नष्ट हो गए और हजारों की संख्या में लोग मारे गए। परिणामतः अमेरिका में भी जर्मनी के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। अब अमेरिका के युद्ध में शामिल हो जाने पर सही अर्थ में यह वि"वयुद्ध का रूप ले लिया। इसमें एक ओर सोवियत संघ, इंग्लैंड, फ्रांस, अमेरिका, चीन एवं अन्य राष्ट्र थे। इन्हें मित्रराष्ट्र कहा जाता था। दूसरी ओर जर्मनी, इटली और जापान थे। इन्हें धुरीराष्ट्र कहा जाता था।

9.5 प्रगति समीक्षा (Check your Progress):

भाग (क) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks.)

(i) द्वितीय वि"वयुद्ध में जर्मनी की पराजय का श्रेय .... को है।

(ii) धुरीराष्ट्रों में .... ने सबसे पहले आत्मसमर्पण किया।

(iii) द्वितीय वि"वयुद्ध के फलस्वरूप .... साम्राज्यों का पतन हुआ।

(iv) जर्मनी का .... पर आक्रमण द्वितीय वि"वयुद्ध का तात्कालिक कारण था।

(v) रोम–बर्लिन–टोकियो धुरी की स्थापना .... ई. में हुई थी।

(vi) द्वितीय वि"वयुद्ध से पूर्व यूरोपीय गुटबंदी में एक गुट धुरीराष्ट्रों का था तो दूसरा गुट ....था।

(vii) जर्मनी ने इंग्लैंड पर .... ई. को आक्रमण किया था।

(viii) जापान ने पर्ल हार्बर पर .... ई. को आक्रमण किया था।

(ix) नाजीवाद का उदय जर्मनी में हुआ था, जबकि फासीवाद का उदय .... दे"ा में हुआ था।

(x) प्रथम वि"वयुद्ध के पश्चात् युद्धजनित समस्याओं के निदान के लिए .... सम्मेलन का आयोजन किया गया था।

भाग (ख) सत्य–असत्य कथन पर आधारित प्रश्न (True-False Statements bases questions)

(i) द्वितीय वि"वयुद्ध से पूर्व पूँजीवादी देशों का समूह मित्र राष्ट्र व फासीवाद देशों का समूह धुरी राष्ट्र के नाम से अलग–अलग गुटों में बँटे थे। ( )

(ii) द्वितीय वि"वयुद्ध से पूर्व फ्रांस, अमेरिका व ब्रिटेन पूँजीवादी विचारधारा को लेकर एक गुट में थे। ( )

(iii) द्वितीय वि"वयुद्ध से पूर्व दूसरा गुट, जो प्रथम वि"वयुद्ध के बाद पनपा था फासीवादियों का था जिसमें मुख्य रूप से जर्मनी, इटली और चीन थे। ( )

(iv) द्वितीय वि"वयुद्ध से पूर्व एक तीसरा खेमा भी साम्यवादियों का था जिसमें मुख्य रूप से सोवियत संघ तथा पूर्वी यूरोपीय देश और मध्य ए"ियाई देश शामिल थे। ( )

(v) द्वितीय वि"वयुद्ध में जापान एक तटस्थ देश था। ( )

(vi) द्वितीय वि"वयुद्ध से पूर्व जिस देष में फासीवाद सैन्यवाद के रूप में प्रकट हुआ वह था – जापान। ( )

(vii) फ्रेंकफर्ट की संधि द्वारा प्रथम वि"वयुद्ध में पराजित जर्मनी को राजनीतिक, आर्थिक और सैनिक सभी दृष्टियों से एकदम पंगु बना दिया गया था। ( )

(viii) द्वितीय वि"वयुद्ध में सोवियत रूस, इंग्लैंड, फ्रांस, अमेरिका, चीन एवं अन्य राष्ट्रों के समूहों वाला गुट मित्रराष्ट्र के नाम से प्रसिद्ध था। ( )

(ix) द्वितीय वि"वयुद्ध में मित्रराष्ट्र के खिलाफ दूसरा गुट जर्मनी, इटली और जापान का धुरीराष्ट्र के नाम से प्रसिद्ध था। ( )

(x) मुसोलिनी द्वारा पोलैण्ड से डेंजिंग बंदरगाह तथा समुद्र तक जाने के लिए पोलिस गलियारे की मांग की, इन्कार के साथ ही द्वितीय वि"वयुद्ध का आरम्भ हुआ। ( )

9.6 सारांश / संक्षिप्तिका (Summary)

- प्रथम वि"वयुद्ध के उपरांत पेरिस शांति सम्मेलन के द्वारा 1920 ई. में राष्ट्र संघ (League of Nations) की स्थापना की गयी थी।
- राष्ट्रसंघ के ऊपर वि"व को युद्ध से बचाने का दायित्व था, परंतु वास्तविक शक्ति के अभाव में शक्ति"ााली राष्ट्रों के बीच वैमनस्य के कारण वह युद्ध रोकने में सफल नहीं हो सका।
- परिणामतः प्रथम वि"वयुद्ध के समाप्त होने के बीस वर्ष बाद ही 1939 ई. में द्वितीय वि"वयुद्ध छिड़ गया।
- द्वितीय वि"वयुद्ध से पूर्व साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्द्धा के कारण औपनिवे"िाक हितों को लेकर शक्ति"ााली राष्ट्रों के बीच संघर्ष ने गुटबाजी को बढ़ावा दिया।

- युद्ध से पूर्व ये देश औपनिवेशिक हितों और विचारधाराओं के आधार पर पूँजीवादी, फासीवाद व साम्यवादी राष्ट्रों के गुटों में बँटने लगे थे।
- पूँजीवादी खेमे में मुख्य राष्ट्र थे – ब्रिटेन, फ्रांस और अमेरिका।
- फासीवाद राष्ट्रों का दूसरा खेमा था, जिनमें मुख्य राष्ट्र थे – जर्मनी, इटली और जापान।
- तीसरा खेमा साम्यवादियों का था जिसमें मुख्य रूप से सोवियत संघ तथा पूर्वी यूरोपीय देश और मध्य एशियाई देश शामिल थे।
- द्वितीय विश्वयुद्ध से पूर्व गुटबंदी की प्रक्रिया में तटस्थ देश संयुक्त राज्य अमेरिका था लेकिन एक पूँजीवादी देश होने के कारण अंततः उसका झुकाव पूँजीवादी खेमे की ओर होना स्वाभाविक था।
- पेरिस शांति सम्मेलन के अंतर्गत जर्मनी के साथ वर्साय की संधि की गयी थी।
- वर्साय की संधि द्वारा प्रथम विश्वयुद्ध में पराजित जर्मनी का घोर अपमान किया गया था। राजनीतिक, आर्थिक व सैनिक सभी दृष्टियों से पूरी तरह से जर्मनी को पंगु बना दिया गया था।
- फलतः जर्मनी में उत्पन्न अराजक वातावरण का लाभ उठाकर हिटलर ने नाजीवादी की सरकार स्थापित कर दी।
- प्रथम विश्वयुद्ध में मित्र राष्ट्रों की ओर से लड़ने वाला इटली भी जर्मनी की तरह अंसतुष्ट था। असंतुष्टि के इस वातावरण में वहाँ मुसोलिनी के नेतृत्व में फासीवाद का उदय हुआ।
- असंतुष्ट राष्ट्र द्वितीय विश्वयुद्ध से पूर्व गुटबंदी की ओर अग्रसर हो गये।
- इन्हीं असंतुष्ट राष्ट्रों के द्वारा रोम–बर्लिन–टोकियो धुरी की स्थापना 1936 में हुई थी।
- 1929 की महान वैश्विक आर्थिक मंदी ने पूँजीवादी व्यवस्था की कमजोरियों को उजागर कर दिया। इन्हीं कमजोरियों के कारण विश्व के समक्ष जो वैकल्पिक व्यवस्था दक्षिणपंथी के रूप में फासीवाद और नाजीवाद तथा वामपंथी के रूप में साम्यवाद उपलब्ध को अपनाने के लिए विवश किया। इन वैकल्पिक व्यवस्थाओं के कारण यूरोप विभिन्न गुटों में बँट गया और यूरोप का शक्ति संतुलन टूट गया।
- नाजीवाद का उदय जर्मनी में हुआ।
- नाजीवाद का प्रवर्तक हिटलर था।
- फासीवाद का उदय इटली में हुआ।
- फासीवाद का प्रवर्तक मुसोलिनी था।

- हिटलर ने पोलैण्ड से डेन्जिग (Danzig) बंदरगाह तथा समुद्र तक जाने के लिए पोलिस गलियारे की माँग की। पोलैण्ड ने उसकी इस माँग को मानने से इन्कार कर दिया। यही द्वितीय वि"वयुद्ध का तात्कालिक कारण बना।
- इस प्रकार 1 सितम्बर, 1939 को पोलैण्ड पर जर्मनी के आक्रमण के बाद द्वितीय वि"वयुद्ध शुरू हो गया।
- ब्रिटेन और फ्रांस ने 3 दिसंबर, 1932 को जर्मनी के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी थी।
- हिटलर की सेना पोलैण्ड में प्रवे"ा कर गई और तीन सप्ताह के भीतर ही उसने पूरी तरह से पोलैण्ड को जीत लिया।
- युद्ध की घोषणा के बावजूद कई महीनों तक कोई भी वास्तविक युद्ध नहीं हुआ। इसलिए सितंबर, 1939 से 9 अप्रैल, 1940 तक (जर्मनी द्वारा नार्वे और डेनमार्क पर हमले के समय तक) के युद्ध को नकली युद्ध कहा जाता है।
- 9 अप्रैल को जर्मनी ने नार्वे तथा डेनमार्क पर आक्रमण किया और तीन सप्ताह के भीतर ही इन दोनों देशों को जीत लिया।
- 9 अप्रैल, 1940 को जर्मनी की नार्वे की जीत में वहाँ की फासीवाद पार्टी के नेता क्विजलिंग ने जर्मन सेना की मदद की थी। इसलिए आजकल क्विजलिंग नाम का प्रयोग उन दे"ाद्रोहियों के लिए किया जाता है, जो अपने देश पर आक्रमण करनेवालों की मदद करते हैं।
- जून, 1940 तक जर्मन सेना ने बेल्जियम, हालैंड और फ्रांस पर अपना अधिकार जमा लिया था।
- 22 जून, 1941 को जर्मनी ने रूस पर भी आक्रमण कर दिया।
- पूर्वी ए"िाया में जापान जर्मनी का मित्र था।
- 7 दिसंबर, 1941 को जापान ने युद्ध की घोषणा किए बिना ही हवाई स्थिति पर्लहार्बर के अमेरिकी नौ–सैनिक अड्डे पर आक्रमण कर दिया।
- 18 जून, 1940 को जर्मनी ने इंग्लैंड पर आक्रमण कर दिया।
- बेल्जियम के शासक ने 28 मई, 1940 को हिटलर के सामने आत्मसमर्पण किया।
- 27 सितंबर, 1939 को जर्मनी तथा रूस ने पोलैण्ड को आपस में बाँटा।
- 7 दिसंबर, 1941 के जापान के पर्ल हार्बन पर आक्रमण के बाद अमेरिका ने भी जर्मनी के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इसके साथ ही वास्तविक अर्थ में यह वि"वयुद्ध का रूप ले लिया था।

- इस युद्ध में एक ओर सोवियत संघ, इंग्लैंड, फ्रांस, अमेरिका, चीन एवं अन्य राष्ट्र थे। इन्हें मित्रराष्ट्र कहा जाता था।
- मित्रराष्ट्र के खिलाफ दूसरी ओर जर्मनी, इटली और जापान थे। इन्हें धुरी राष्ट्र कहा जाता था।

युद्ध विस्तार क्रम में एषिया की लड़ाई में जापान को बड़ी सफलता मिली। पर्ल हार्बर पर आक्रमण करने के लगभग 6 महीने के भीतर उसने मलाया, बर्मा, इंडोनेशिया, सिंगापुर, थाइलैंड आदि व अन्य कई क्षेत्रों को जीत लिया।

9.7 संकेत–सूचक (Key Words)

- अध्ययनोपरांत – अध्ययन के बाद
- साम्राज्यवाद – एक ऐसी व्यवस्था जिसमें एक शक्ति"ााली राष्ट्र दूसरे दे"ाों पर अपना नियंत्रण रखता है।
- फासीवाद – प्रजातंत्र के विपरीत ताना"ााही का परिचायक विचारधारा जिसे एक शासन–प्रणाली के रूप में इटली में मुसोलिनी ने चलाया था।
- नाजीवाद – यह फासीवाद का ही जर्मन रूप था। जर्मनी में हिटलर ने इसे शासन–प्रणाली के रूप में चलाया था।
- वैमनस्य – शत्रुतापूर्ण भावनाएँ, दुश्मनी का भाव
- साम्यवाद – एक विचारधारा, जिसमें वर्गविहीन समाज की स्थापना पर बल दिया जाता है तथा संसाधनों का वितरण सभी सदस्यों के हित में समान रूप से किया जाता है।
- ध्रुवीकरण – किसी वि"ाष्ट राजनीतिक उद्देष्य के लिए किसी खास वर्ग, समुदाय या एक समान विचारधारा वालों का एक हो जाना।

9.8 स्वं–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test (SAT)

(क) बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Based Questions)

(i) द्वितीय वि"वयुद्ध से पूर्व बने मित्रराष्ट्र गुट में शामिल देश थे –

(क) इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, इटली

(ख) जर्मनी, इटली, जापान, भारत

(ग) अमेरिका, इंग्लैंड, चीन, भारत

(घ) इंग्लैंड, फ्रांस, अमेरिका, चीन एवं अन्य राष्ट्र

(ii) द्वितीय वि"वयुद्ध से पूर्व फासीवाद विचारधारा पर आधारित गुट में ए"ािया से .... दे"ा शामिल था।

(क) भारत (ख) चीन (ग) कोरिया (घ) जापान

(iii) द्वितीय वि"वयुद्ध से पूर्व गठित साम्यवादी खेमा में शामिल दे"ा थे –

(क) सोवियत संघ, पूर्व यूरोपीय देष व मध्य एर्”ायाई दे”ा

(ख) चीन, अमेरिका, स्पेन

(ग) जर्मनी, कोरिया, पोलैण्ड

(घ) इनमें से कोई नहीं

(iv) द्वितीय वि”वयुद्ध में .... दे”ा घोषित रूप से एक तटस्थ दे”ा था।

(क) जर्मनी (ख) अमेरिका (ग) इटली (घ) जापान

(v) प्रथम वि”वयुद्ध के बाद युद्धजनित समस्याओं के निदान के लिए पेरिस शांति सम्मेलन के अंतर्गत ....संधि के द्वारा जर्मनी को पूर्ण रूप से पंगु बना दिया गया था, जो द्वितीय वि”वयुद्ध से पूर्व यूरोपीय दे”ाों के गुटबंदी का प्रमुख कारण बना था।

(क) वर्साय की संधि (ख) फ्रेंकफर्ट की संधि

(ग) रोम की संधि (घ) वियना–संधि

(vi) प्रथम वि”वयुद्ध के बाद व द्वितीय वि”वयुद्ध से पूर्व आर्थिक व राजनीतिक अराजकता के फलस्वरूप .... के नेतृत्व में जर्मनी में नाजीवाद का उदय हुआ था।

(क) मुसोलिनी (ख) वुडरो विल्सन (ग) हिटलर (घ) जॉर्ज क्लीमंशु

(vii) द्वितीय वि”वयुद्ध के समय इंग्लैंड के प्रधानमंत्री कौन थे।

(क) लॉर्ड एटली (ख) विस्टन चर्चिल

(ग) लॉर्ड लॉयड (घ) वुडरो विल्सन

(viii) द्वितीय वि”वयुद्ध के विस्तार के क्रम मे जर्मनी की पराजय का श्रेय .... देष को है।

(क) इंग्लैंड को (ख) फ्रांस को

(ग) पूर्व सोवियत संघ (वर्तमान रूस) (घ) चीन को

(ix) प्रथम वि”वयुद्ध के बाद आयोजित पेरिस शांति सम्मेलन में इटली को उचित प्रतिनिधित्व नहीं मिलने के कारण वहाँ उत्पन्न राजनीतिक व आर्थिक अराजकता का फायदा उठाते हुए .... ने इटली में फासीवादी शासन–प्रणाली की स्थापना की थी।

(क) मुसोलिनी (ख) वुडरो विल्सन (ग) जॉर्जलॉयड (घ) क्विजलिंग

(x) .... दे”ा पर जर्मनी का आक्रमण द्वितीय वि”वयुद्ध का तात्कालिक कारण बना था।

(क) इंग्लैंड (ख) पोलैण्ड (ग) फ्रांस (घ) डेनमार्क

(ख) निबंधात्मक / दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Essay/Long Answer based Questions)

1. द्वितीय वि”वयुद्ध से पूर्व देशों के ध्रुवीकरण के लिए उत्तरदायी कारकों का वर्णन करें।

(Explain the Responsible factors for polarization of countries before World War-II)

2. द्वितीय वि"वयुद्ध से पूर्व यूरोपीय गुटबंदी का उल्लेख करें।

(Discuss the formation of Europian groups before World War-II)

3. द्वितीय वि"वयुद्ध से पूर्व यूरोपीय देशों का विश्व–मानचित्र पर स्थिति का वर्णन करें।

(Explain the position of European countries on the map of World before World War-II)

4. द्वितीय वि"वयुद्ध के बाद यूरोपीय दे"ाों का वि"व–मानचित्र पर स्थिति।

(Position of European Countries on the map of World before World War-II)

(ग) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer based Questions)

1. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें। (Write Short Notes on the following)

(i) वर्साय की संधि (Treaty of Versailles)

(ii) रोम–बर्लिन–टोकियो धुरी (Rome-Berlin-Tokyo Axis)

(iii) द्वितीय वि"वयुद्ध का तात्कालिक कारण (Immediate cause of World War-II)

(iv) यूरोपीय गुटबंदी (Division of Europe)

(v) नकली युद्ध (Phoney War)

(vi) क्विजलिंग (Quizzling)

(vii) उपनिवे"ावादी और साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्द्धा (The Colonial and Imperialistic Rivalaries)

(viii) फासीवाद का उदय (The Rise of Fascism)

(ix) द्वितीय वि"वयुद्ध से पूर्व वि"व आर्थिक मंदी (Depression World Economic before World War-II)

(x) ब्रिटेन की तुष्टिकरण की नीति (The Policy of App.)

9.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your Progress)

9.5 (क) उत्तर –

(i) पूर्व सोवियत संघ (वर्तमान रूस) (ii) इटली (iii) औपनिवे"ाक (iv) पोलैण्ड

(v) 1936 (vi) मित्रराष्ट्र (vii) 1940 ई. (viii) 7 दिसंबर, 1941

(ix) इटली (x) पेरिस शांति सम्मेलन

9.5 (ख) उत्तर –

(i) **अ**सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) सत्य

(v) असत्य (vi) सत्य (vii) असत्य (viii) सत्य

(ix) सत्य (x) असत्य

9.8 (क) उत्तर –

(i) घ	(ii) घ	(iii) क	(iv) ख
(v) क	(vi) ग	(vii) ख	(viii) ग
(ix) क	(x) ख		

9.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

- विश्व का इतिहास – कुमार नलिन
  McGraw Hill Education (India) Private Limited, Chennai,
  द्वितीय संस्करण 2020
- आधुनिक विश्व
  डॉ. प्रसाद गोपाल, लक्ष्मी Publishing House, Rohtak, प्रथम संस्करण : 2017
- संक्षिप्त इतिहास : NCERT सार,
  बर्णवाल महे"ा कुमार एवं सिंह जगत पाल
  Cosmos Publication, Delhi
- वि"व इतिहास
  दृष्टि पब्लिके"ान्स
  641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली–110009
  द्वितीय संस्करण : जुलाई 2023

Iceland
Atlantic Ocean
Great Britain (U.K.)
Ireland
London
Norway
Sweden
Finland
Denmark
Netherlands
Belg.
Lux.
West Germany
East Germany
Poland
Czechoslovakia
Austria
Switz.
Hungary
Romania
Yugoslavia
Bulgaria
Albania
Greece
France
Spain
Portugal
Italy
Sicily
Moscow
The Soviet Union
(includes Russia)
Black Sea
Turkey
Iran
Syria
Iraq
Lebanon
Israel
Jordan
Saudi Arabia
Mediterranean Sea
Suez Canal
Morocco
Algeria
Tunisia
Libya
Egypt
© David Burns
www.fasttrackteaching.com

www.com

© westermann
Reykjavik
Iceland
Norway
Faroe Is.
(Den.)
Sweden
Finland
Helsinki
Oslo
Stockholm
Union of Soviet
Socialist Republics
(USSR)
1917
Moscow
Latvia
1934
Riga
Denmark
Copenhagen
United Kingdom
of Great Britain
and Northern Ireland
Dublin
Ireland
London
Amsterdam
Berlin
Warsaw
Poland
1926
German Reich
(Third Reich)
Belgium
Brussels
Bohemia
and Moravia
Lux.
Paris
France
Slovakia
Pressburg
Budapest
Austria
1933
Hungary
1920
Romania
1938
Bucharest
Belgrade
Yugoslavia
1929
Monaco
San Marino
Zadar
(Italy)
Sofia
Bulgaria
1934
Portugal
1928
Lisbon
Madrid
Andorra
Spain
1923–30/1939
Rome
Italy
1922
Tirana
Ankara
Turkey
Athens
Dodecanese
(Italy)
Algiers
Algeria
Tunisia
Malta
(UK)
Cyprus
(UK)
Morocco

www.com

NOTES